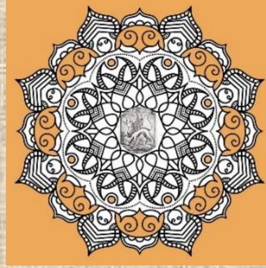
ISSN 2229-547X VIDEHA

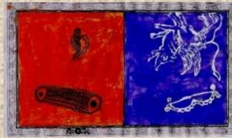


विदेह ३६९ म अंक ०१ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३६९)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर







Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share

their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 369 at www.videha.co.in



𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱- *𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒣𑒢𑒏𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰*

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒖𑒑𑒖𑓂𑒖𑒢𑒢𑒲 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒨𑒰𑓁 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂𑒮𑒲𑒞𑓂। 𑒯𑒢𑒴𑒧𑒢𑓂𑒞𑓁 𑒅𑒏𑓂𑒞𑒫𑒰𑒢- 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂।

𑒁𑒏𑓂𑒐𑒩 𑒐𑒧𑓂𑒦𑒰 (𑒂𑒐𑒩 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒯)

𑒞𑒱𑒯𑒳𑒁𑒢 𑒐𑒹𑒞𑓂𑒞𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒘𑒱 𑒞𑒮𑒳 𑒏𑒱𑒞𑓂𑒞𑒱𑒫𑒪𑓂𑒪𑒱 𑒣𑒮𑒩𑒹𑒃। 𑒁𑒏𑓂𑒐𑒩 𑒐𑒧𑓂𑒦𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒖𑒅 𑒧𑒘𑓂𑒔𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱 𑒢 𑒠𑒹𑒃॥ *(𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒪𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧𑓁 𑒣𑒪𑓂𑒪𑒫𑓁 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒼𑒯𑒰।)*

𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂𑒐𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒯 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑓄 𑒅𑒞𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢 (*𑒑𑒠𑓂𑒨-𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒩𑒴𑒣𑒲*) 𑒧𑓀𑒔 𑒖𑒿 𑒢𑒻 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒿 𑒄 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒦𑒳𑒫𑒢𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒛𑒰𑒏𑒩 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒪𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒣𑒮𑒩𑒞।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ƒ

ওঁ স্ত্রী: শান্তিনন্দনিঅ গ্নংগ শান্তি:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিরন্তরিক্ষ Ẇ শান্তি:

অনুক্রম

ঐ অংকমে অছি:-

১.১.গজেন্দ্র ঠাকুর- নূতন অংক সম্পাদকীয়

১.২.অংক ৩৬৫ পর টিপ্পণী

রচনাকার অশোক বিশেষাংক

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

२.२.अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय

२.३.अशोक- हम आ हमर परिचय

२.४.कल्पना झा- ओहि-पओहिँ बाजब/लिखब सहज नहि

२.५.आशा झा-उतीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा

२.६.दिलीप कुमार झा- मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['माणवक' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']

२.७.अजित कुमार झा- उतीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह

२.८.कुमार राहुल- मैथिल आँखि सँ उतीगाम देखबाक सहंता (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय टिप्पणी)

२.९.लाल देव कामत- कथाकार अशोक मादे

𑓒.𑓑𑓐.𑒯𑒩𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰- 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯: 𑒢𑒲𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒃𑒮𑓂𑒏𑒰𑒣

𑓒.𑓑𑓑.𑒬𑒱𑒫𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮- 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰

𑓒.𑓑𑓒.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 '𑒁𑒢𑒱𑒪'- 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒧 𑒏𑒟𑒰𑒨𑒢 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬

𑓒.𑓑𑓓.𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒖𑒲- 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒰𑓀𑒏𑒢- 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒖𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒫𑒻𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙𑓂𑒨

𑓒.𑓑𑓔.𑒬𑒱𑒫 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢

𑓒.𑓑𑓕.𑒬𑒻𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠- 𑒁𑒬𑒼𑒏: 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩

𑓒.𑓑𑓖.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒏𑒫𑒱 𑒁𑒬𑒼𑒏

𑓒.𑓑𑓗.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏

𑓒.𑓑𑓘.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒏𑒟𑒹𑒞𑒩 𑒑𑒠𑓂𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒁𑒬𑒼𑒏

𑓒.𑓑𑓙.𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲-𑒧𑒰𑒢𑒫𑒩 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩

२.२०.आशीष अनचिन्हार- मैथिल दृष्टिदोष

२.२१.मुन्ना जी- त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक

२.२२.श्रीधरम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिप्पणी

३ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल- निनन्दन (लघुकथा)

३.३.रुद्र विलास राय- स्वादर्श ३

३.४.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २६-३० म खण्ड

३.५.कुमार मनोज कश्यप-दृश्यावलोकन

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१८)

४.पद्य खण्ड



𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑓀 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি রনস্পতয: শান্তির্বিশ্বে দেরা: শান্তির্ব্ৰহ্ম

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒁𑒨।

𑓇-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ব্ৰহ্মণসঁ প্ৰাৰ্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাংতি হোঅয।

ওঁ-ব্ৰহ্মণ, দ্যৌ-সূৰ্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক রীচ, আপ:-জল, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্ৰহ্ম- সৰ্জক।

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं सर्वं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্যা↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित कए अछि, दस आंगुरक गनतीक नणम नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिᳫं सर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरसँ भूमियाक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ঋঁগ- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

(Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६८ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर स्कूलक प्रमाणपत्रक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ कर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जाहिमे तीनू गोटेक ७-७ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मुख्यधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार कएलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ओ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगीमे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दबाव पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ओ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरा विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखन ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि

जाइत छथि जे लोककथामे मात्र उठौवला घात आदि रहैत छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेसी छै। प्रेमचन्दक ई गपसँ हम भिन्न विचार नहि छी आ दिनाक गोनखयूनीक कथनसँ सहमत छी। दिनाक गोनखयूनी अपन नूवाइक संग्रह 'नूय' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे रचना देत अछि से उकेरा माननीय आ स्वर्गीय संगीत बना दैत छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबस्त सेहो रचना नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दैत छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ खाटी पर्वत रची, आङन रचा निदेश।"

महाराजाक आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'शील महाराजाक' एकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाराजाक आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से रचना नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अनन्तिम ठाकुर अपन पोथी नोशनाइक लोकयज्ञक कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ई शब्दावलीक प्रयुक्त कऽ रहल छी।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to

+919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६८ पर टिप्पणी

निर्मला कर्ण

आदरणीय संजू दास जी क चित्र पर हमर प्रतिक्रिया- आदरणीय संजू दास जी बहुत नीक चित्रकार छथि। हुनक श्रेष्ठ कलाकार हेबामे कनिको संदेह नहि। विदेह पत्रिकाक अंक 368 में हुनक लिखल आलेख पढ़ल। ओ कला में नक्शा पर बहुत सारगर्भित आलेख लिखलथि। हुनक आलेख सँ अपार प्रसन्नित भेलहुँ।

आदरणीय संजय दास जीक चित्रकारिता सँ हम अति-प्रभावित सहमत छी। कारण चित्र मे नग्नता देखs सs पूर्व उनकर भावना देखबाक चाही। मुदा एहि अंक मे हुनक किछु बोल्ड चित्र देखलहुँ। ओहि चित्र मे मात्र तीन चित्र पर हमरा किछु आपत्ति अछि। ओहि तीनू चित्र पर हम आदरणीय संजय दास जी सँ किछु जानकारी चाहैत छी। एक स्त्री संपूर्ण नग्न भेल छथि एवं हुनका किछु कामुक पुरुष ललचाएल दृष्टि सँ देख रहल छथि। निकट लटल छैन पर्दा जे संभवतः हुनक अपन कर्मचारी थिक। दोसर स्त्री संपूर्ण नग्न रूप मे छैन पर लटल आराम कs रहल छथि। मादा पशु क स्त्री रूप मे चित्रण। ओ मादा नग्न रूप मे बैसल दर्पण मे अपन सौंदर्य देखि रहल छथि एवं एक छोट कामुक पुरुष रूपी हिंस्र जीव जे संभवतः वृद्ध अछि ओहि स्त्री क आलिंगन मे कएने अछि।

हम कला मर्मज्ञ जानकार चित्रकार नहि छी। हुनक कला क प्रशंसा करैत हम मात्र एक बात आदरणीय संजय दास जी सs पुछs चाहैत छी। तीनू चित्र मे महिला पात्र क संपूर्ण नग्न रूप मे चित्रण करबाक औचित्य की थिक? कोन भावना क वशीभूत स्त्री क नग्न देखाओल गेल ?

प्रणव झा

इंटरनेट क जाल पर विचरण करैत जखन कखनो विदेहक पेज पर पहुँचय छी श्री गजेन्द्र ठाकुर क आलेख वा लिंक स किछु न किछु इम्पॉर्टेन्ट चीज मैथिली भाषा क माध्यम स भेंट जाय अछि।

एहि क्रम मे निरी नवल दिनेश कुमार मिश्र आलेख सीरीज के अंतर्गत ए अंक मे महानंदा स जुड़ल दिनेश मिश्र के सूचनात्मक लेख के सान मैथिली मे पढ़ लेल भेटल ज सुखद अनुभूति।
विदेह ए अंक मे संज्ञा दास के कलाकृति के ल के कै टा आलेख छापलक अछि ज हालिया हुनकर काला पेंटिंग विवाद के केंद्र मे घूमैत अछि। फेसबुक पर प्रमुख रूप स कुमार पद्मनाभ द्वारा उठाओल ए मुद्दा के ऊर्द गिर्द अनकां लोक आपन राय आ दृष्टिकोण रखला य। पद्मनाभ जी द्वारा आपन बात बहुत दृढ़ता स आ तर्क के साथ राखल गेल आ ओतब दृढ़ता आ तर्क स संज्ञा दास अपन आलेख द्वारा ओकर खंडन करैत नजरि आबय छलीथि। किएकि हम चित्रकला के पारखी नै छी तैं अपन कोनो अंतिम पढ़ा नै राखि सकय छी मुदा ए तरहक मामिला मे तार्किक रूप स वाद प्रतिवाद के उन्मुक्त कला स ए तरहक विषय मे समाज के रुचि मे अपन विचार बनबाक लेल तार्किक सामाग्री भेट सक अछि।

प्रहसन उधा बोधनी

कला,कला होइछ। ओ अश्लील नहि भ सकैछ।ई हमरा लोकनिक नजरिया थिक,ज हम ओहिना की देखि रहल छी।अपन दृष्टिकोण मे परिवर्तन कैल अनेक अर्थ निकलैत अछि।

कल्पना झा, पटना

बहुत नीक विदेहक नवका अंक। पठनीय ओ संग्रहनीय। अत्यधिक व्यस्तता नहेंओ, तथापि पढ़ब सुरु कलहुँ, तँ बहुत किछु पढ़ि गेलहुँ, तेहेन इंटरेस्टिंग टॉपिक सब अछि। डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'

ठीक आलेख "गामक नामकरण: एक परिशीलन" बहुत नीक लागल। दरभंगा-मधुबनी सँ नेपालक धनुषा,जनकपुर आ समस्तीपुर, सीतामढ़ी धरिक बहुत गामक नामकरणक चर्चा बहुत रोचक ढंग सँ कएलनि अछि। मिथिलाक गामक नामकरणक पाछाँक इतिहास सँ लोककेँ अवगत करबओलनि अछि लेखक,चाहे ओ राजनीतिक इतिहास हो वा सांस्कृतिक इतिहास। एहन नीक आलेखक लेल लेखककेँ साधुवाद !अगिलक लिखल "(श्वेता झा चौधरी-एकटा परिचय" पढ़ि आह्लादित भेलहुँ। एहि तरहक लोकक कृत्यकेँ चर्चा होबाक चाही। कतेक लोक (श्वेता झा चौधरीक नाम सँ अपरिचित छल होएत। अगिलक लिखल "कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला-एकटा परिचय" सेहो पढ़लहुँ। एहन एहन व्यक्तिक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक चर्चा होबाक चाही पत्र-पत्रिका सभमे। रवीन्द्र कुमार दास जीक- "परिवारक सहयोग सबसँ जरूरी" एकटा नीक संदेश दैत अछि।

आचार्य रामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार, सीतामढ़ी

कलाकृति बनाम अश्लीलता/ कला साहित्य मे संजू दास के कलाकृति आइ काल्हि विवाद मे हय। कुछ लोग के दृष्टि मे कला मे अश्लीलता हय। असल मे अश्लीलता आ श्लीलता दृष्टिय होइ छैय। संत तुलसीदास के अनुसार जा के रहि भावना जैसी हरि मूरत देखि तिन तैसी। पौराणिक साहित्य के द खियौ त अश्लीलता स भरल हय। परंतु धार्मिक दृष्टि स वा अश्लील दृष्टि (गोचर न होइ हय। जना भगवान शंकर के लिंगाकार रूप शंकर पूजा कैल जाइ हय। नागा साधू आ दिगम्बर जैन मुनि जइ के दर्शन में अश्लील ता दृष्टि(गोचर न होइ छैय। मां काली के नग्न मूर्ति में अश्लीलता दृष्टि(गोच

न न होइछ हय। सति अनुसूया क कथा एगो चर्चित कथा हय। अनुसूया क सतीत्व परीक्षा क लेल ब्रह्मा विष्णु महेश कहलथिन कि अहाँ नग्न होक ह मरा सब क भोजन करायब त हम सब अहाँ क हाथ भोजन करब। सति अ नुसूया हुनका सब क तप बल क आधार पर बच्चा बना देलथिन आ नग्न होक गोद म रख क भोजन करैलथिन। कारण कि बच्चा निर्दोष होइछ छैय । ता श्लीलता आ अश्लीलता स अंजान होइछ हय। बौद्ध कालीन मूर्ति अजंता -
एलोरा आ भगवान जगन्नाथ आ दक्षिण भारत क मंदिर पर उत्कीर्ण मैथुन मूर्ति मं अश्लीलता नजर न अबैय हय। भगवान रजनीश संभोग स समा धि मं एगो घटना क उल्लेख करैय छथिन। जो एक युवा प्रेमी -
प्रेमिका क प्रेमिका मं माता -
पिता मैथुन मूर्ति क देखैय खजुराहो मं टकरा गेलन। घटना इ बताबैय हय कि साधारण नुय मं अश्लील हय परंतु निर्मल नुय मं अश्लील न हय। सं इ दास क कला साधारण नुय मं लाग क अश्लील भले लगैय परंतु निर्मल नु य स अश्लील न हय। कलादृष्टि निर्मल होय क चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

चित्रकार अशोक विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

२.२.अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय

२.३.अशोक- हम आ हमर परिचय

२.४.कल्पना झा- ठाँहि-पठाहिँ बाजब/लिखब सहज नहि

२.५.आशा झा-तेतीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा

२.६.दिलीप कुमार झा- मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातवर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']

२.७.अजित कुमार झा- तेतीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह

२.८.कुमार राहुल- मैथिल आँखि सँ तेतीगाम देखबाक सेहंता (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया)

२.९.लाल देव कामत- कथाकार अशोक भाइ

२.१०.हरिनाथ झा- कथाकार अशोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक बाटस्काय

२.११.शिवशंकर श्रीनिवास- अशोकक कथा

२.१२.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- अशोकजीक कथामे कथापन

विमर्श

२.१३.नारायणजी- मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य

२.१४.शिव कुमार मिश्र- अशोक झा मैथिली साहित्य संस्थान

२.१५.शैलेन्द्र आनन्द- अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार

२.१६.गजेन्द्र ठाकुर- कवि अशोक

२.१७.गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार अशोक

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- कथेतर गद्यक लेखक अशोक

२.१९.प्रदीप बिहारी-मानवर कथाकार

२.२०.आशीष अनचिन्हार- मैथिल दृष्टिदोष

२.२१.मुन्ना जी- त्रिकोणक धुनी- श्री अशोक

२.२२.श्रीधरम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिप्पणी

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीवित मुदा उपेक्षित' शृंखला शुरुआत कएल गेल छल २०१७ सँ जकरा आब २०२३ मे एहि विशेषांक संग विदेहक जीवित मैथिलकर्मी", संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक - "निर्देशक-रंगकर्मी विशेषांक शृंखला-रंगमंच आ रंगमंचकर्मी नामसँ जानल जाएत। दिसम्बर २०२२ मे विदेह प्रकाशित "अशोक विशेषांक" करबाक सार्वजनिक घोषणा कएलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। -एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी घोषणा। मैथिलकर्मीसँ हमर सभक आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली लेल -मैथिली-क माध्यमसँ भेल हो। ई संगठनकर्ता सेहो भऽ सकै छथि, आन भाषाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मी मने गीतसंगीतसँ जुड़ल -लोक।

एहन शृंखलामे, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह ८ टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छी। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकत्र करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जाहि लेख केर उम्मेद कएल रहैत छी हम ताहि नै आबैए, जाहि लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत -अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारण छै, किनको ई लागै छनि जे आनयन लिखब से हम अपन रचना कियै ने लीखि लेब, किनको लग समय नै रहै छनि, जखन कि हम

सए यात्रकँ निकाल्थ नूयम याथीक यीञरह हाञ्ज्ल सहो हवाक .ञी. छथि दूखी नूयसँ समानशी निदरहक किया लल गैयान नहेग छी।, गँ किनका मित्रकँ निदरहसँ दिक्कत छनि गँऽ ञा नहि दगा। ञकरा हम संकट बूझै छियै ञ सए हसवूकयन लंवालंवा लख ना कमंट - टाऽय कs लै छथि सेहो सए निदरह लल हाथसँ लिखल यात्रावेग छथि। ञ सए कहिया काल हसवूकयन टाऽय कs लीखै छथि गिनकन आलख हम सए टाऽय कनिग छी। खञन यहिन कहलहूँ ञ संकटसँ वसी समर्थन अछि गँऽ आऽ यहिलसँ लs कs नवम निशेषांक धनि यहूँचलहूँ हम। २०१७सँ लs कs २०२२ धनि ६ टा निशेषांक प्रकाशित हल मन वर्खम ञकटा। निश्चित समर्थन वसी हटल हमना। जखन कि निदरहक ऽी आ(0। निशेषांक कन अलाव आना निषयपन निशेषांक प्रकाशित हल अछि। ञकन अगिनिक्क ऽीहो वात सांगसदायक अछि ञ निदरहक हनक निशेषांक अभिनंदनग्रंथ हवासँ वाँचि गेल अछि। मुख्यधाना जकाँ निदरहकँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दूआग नै चाही ञ ञाहिसँ लखक ना जिनकायन निकालल गेल छनि गिनकाम सुधानक गुंजाऽश खतम हs जाऽग छै। गँऽ निदरहक निशेषांकम आलाचना-प्रसंगा सए हटग।

ञहन नै छै ञ अशाक जीयन लिखल नै गेलै मुदा ञा सए ञकहा नै हs सकल छै गँऽ ञाकन प्रयास हञा गेल छै। ञहि संदर्भम हम कहि सकै छी ञ निदरहक ऽी प्रस्तुत निशेषांक ञहन यहिल प्रयास अछि जाहिम ऽी वूमवाक प्रयास कञल अछि ञ अशाक जीक नचना कहन छनि। ऽी अलग वात ञ हम सए कागक सहल

ना असफल रहलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरुआत विदेहक आन विशेषांक जकाँ अछि। संगसंग ई क्रम ने तँ - उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैत आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एकर ध्यान जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से साफ-साफ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई ध्यान रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी वला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैत। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरा सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा साबिये जे १२-४० पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करए पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधाराक हो कि

सामग्रीक छी। हमरा लोकनि वर्तनीक मानकीकरण समझौता कऽ रहल छी मुदा कारणक सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद सुधारल नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा दोसर प्रिंट लेल जौं) तेँ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इन्टरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इन्टरनेटसँ प्रिंट होबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रीकेँ बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहित नव अध्याय नै खुजि सकत तेँ हमरा लोकनि वर्तनी बला मूल्यायन समझौता कएलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि आ करलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एनाक शुद्ध मानैत छी एकर नवनाम तीनू रूप रहत जाएत। आन शब्दक लेल एहन बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आन विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ यदि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक कए पोथी रूप कए नामसँ प्रकाशित "स्वतंत्रता" भेल उम्मेद जे हरिश्चम अशोक जीवन काँन्ति एहि विशेषांक कए पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा विशेषांक शृंखलामे प्रकाशित भेल विशेषांक सभहक सूची एना अछि, एठाम ई सूची देल गेल अछि तेँ सभपर क्लिक करबै तँ ओ अंक सभ खुजि जायत।

१) अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१७ अंक १८९ (ई) विशेषांक २०२० मे पोथी रूपमे सेहो आयल अछि)

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल

विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.अशोक जी कन संक्षिप्त परिचय

एहिठाम प्रस्तुत अछि अशोक जी कन संक्षिप्त परिचय। साशल मीतियायन हुनका कथाकार अशोक कन नामसँ बसी जानल जाइत छनि। एहि परिचय कन अधिकांश तथ्य पहिनसँ सार्वजनिक छै। किछु तथ्य छुटाउल गेल अछि आ हुनका सए स्वयं अशोकजीक सौजन्यसँ रखल अछि।



नामअशोक-

जन्म ितथि :18 जनवनी, 1953

माता नन्दा देव .स्व :ी

पिता उमापति झा .स्व :

स्थान लोहना :, मधुवनी (विहान)

िशक्षा .सी-एस.वी :, बी(माथ्स) .एम .सी .

वृत्ति- विहान सरकानिता सेवाक सेवानिवृत्त पदाधिकानी

अशोक जी कन परिवानक अन्य सदस्य :

पत्नी पूर्णकला .स्व :

पुत्र : 1(डिनक पत्नी पल्लवी) प्रवीण (, 2 डिनक) प्रशान्त (पत्नी शिल्पा(

प्रकाशित कृति मौलिक: (एखन धनि अशोकजीक जनक मौलिक पाथी प्रकाशित हलनि ताहिमसँ अधिकांश निदह पाथी उाउनलाउयन नाखल गेल अछि आ एहिOम ज पाथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिम पाथीक नामपन क्लिक कनवै गँ उा पाथी खुजि जाएत(-

1) चक्रव्यूह) (कविता संग्रह)1986(

2) त्रिकोण) (कथा संग्रह)1986(

3) उाहि नातिक रात) (कथा संग्रह)1991(

4) मागवन) (कथा संग्रह)2001(

5) मैथिल आँखि (2007)

6) संनाद) (साऊात्कान संग्रह)2007(

7) कथाक उयन्यासःउयन्यासक कथा (2012)

8) आँखिम वसल) (यात्रा कथा)2013(

9) वाग2015) (आलावना) निवान-)

10) उँउीगाम) (कथा संग्रह)2017(

11) नीक दिनक वाङ्मृमाय) (व्यंग्य संग्रह)2018(

12) नाजमाहन मा निनिनन्ध), 2019(

13) कथायाO- (2022)

निदह एनं आन यत्रिकाम प्रकाशिग नचना सए उ कि एखन याथी नुयम नहि अछि-

1) अशोक(निनिध) सलङ्कास-

2) अशोकनन कनिगा-

3) मून्ना जी द्वाना साऊात्कान .यृ)382-385(

4) वनैग कम विगउैग वसी .यृ)2023-2031(

5) सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत .पृ)119-122(

6) रामलोचन ठाकुरक कविता यात्रा .पृ)327-341(

7) केदार नाथ चौधरीक उपन्यास .पृ)101-106(

8) भनदिग्गजी .पृ)70-73(

प्रकाशित कृति सम्पादन:

1) प्रतिमान (निबन्ध (गोष्ठीक आलेख आ विमर्शक संग्रह)

2) सन्धान अंक) 1- 2- 3- 4, अनियतकालीन पत्रिका(

3) मैथिली आलोचना) (सम्पादन)2017)



अशोक जीक माता-पिता, स्व. उमापति झा एवं स्व.नन्दा देवी



अशोक जी पत्नी स्व. पूर्णकला जीक संग

अशोकजी अपन पौत्री श्रेया कान संग



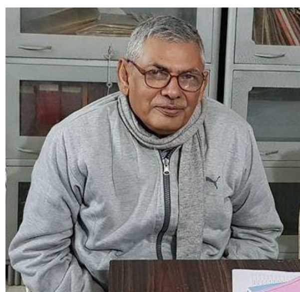
अशोक जी, अपन पत्नी, दुनू पुत्र आ पुत्रवधू क संग(पल्लवी)



𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩, 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒑 𑒗𑒰 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒫𑒡𑒴 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣𑒰

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.३.अशोक- हम आ हमर परिचय



अशोक

हम आ हमर परिचय

हमर जन्म १८ जनवरी १९५३ कँ लोहना (मधुबनी) मे भेल। हमर पिता छलथि स्व. उमापति झा एवं माता छलथि स्व. नन्दा देवी। हमर जन्मक बहुत पूर्वसँ हमर पिता काशीमे रहैत छलाह। महारानी लक्ष्मीवती द्वारा निर्मित राम मंदिरक व्यवस्थापक छलथि ओ। लक्ष्मीवती अपन जीवनकालमे कटिहार ट्रस्ट मिलसँ बजा कऽ हुनका मंदिरक व्यवस्थापक बनौने छलथिन। हम सपरिवार ओतहि रहलहुँ। हमर जेठ भाइ स्व. प्रो. सुशील झा ओतहि पढ़लनि-लिखलनि। बी.एच.यूसँ एम.ए कलनि। जखन ओ एम.ए कलनि तँ हम छह वर्षक रही। भाइ एम.ए पास कऽ १९५९ ईस्वीमे सरिसब गाममे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालयमे प्राध्यापक भऽ गेलाह। हुनकासँ छोट हमर बहीनि स्व.गीता देवीक बियाह हमर जन्मसँ एक मास पूर्व

दिसम्बर १९७२ म भऽ गेल छनि। भाइ हमरासँ पंद्रह वर्ष आ बहीनि बारह वर्षक जेठ छथि। सामाजिक रूपसँ हमर स्थिति परिवारम एक ललबबुआ सन छए। सभ अल्ला-मल्लाम लागल छए। ताहियनसँ नेनहिसँ हम बहुधा दूखीत रहि जाइ। ई क्रम मैट्रिक तक चलल। परिवारक लेल भाइ एक पैघ चिन्ताक कारण बनल छल।

भाइ क प्राध्यापक बनि गाम चलि अएबाक कारण माए संग हमहूँ गाम आबि गेलहुँ। एक वर्ष गामम पैटघाट स्कूलम पढलहुँ। मुदा ठीकसँ नहि पढबाक कारणे माए हमरा १९६० म पिता संग फेर आगू पढबाक लेल काशी पठा देलनि। हमर स्कूली जीवनक आरम्भ सुनियोजित रूपसँ बसिक पाठशाला, हौजकटरा, वाराणसीसँ भेल। ओतहिसँ पचमा क्लास उत्तीर्ण भेलहुँ। फेर छठमाम पढबाक लेल हरिश्चंद्र इंटर कालेजम एलहुँ। १९६९ ईस्वीम मैट्रिक केलहुँ। इंटरम टी.एन.बी कालेज आबि गेलहुँ। मुदा उत्तीर्ण नहि हेबाक तेँ परीक्षा छोडि देलियैक। गाम आबि गेलहुँ। सरिसब कालेजसँ आइ.एस.सी केलहुँ। गोयनका कालेज, सीतामढीसँ बी.एस.सी (बनस्पति शास्त्रम प्रतिष्ठा) केलहुँ। बी.एस.सीक रिजल्ट १९७३क जनवरीम निकलल आ ओही वर्ष जूनम हमर विवाह मधुबनीम डा. जयधारी सिंहक सुपुत्री पूर्णकला देवी संग भेल। ओकर बाद हम प्रतियोगिता परीक्षा सभक तैयारी करए लगलहुँ। प्रतियोगिताक माध्यमसँ पहिल नौकरी जनसंपर्क विभागम अपन जिला जनसंपर्क अधिकारीक रूपम १९७७ म शुरू केलहुँ। तकर बाद बी.पी.एस.सीक संयुक्त परीक्षा द्वारा सहकारिता विभागम सहायक निबंधक, स.स.

कत पदपर इटाढ़ी (बक्सर) मे १९७८ मे योगदान देलहुँ। ओही विभागमे विभिन्न पदपर काज करैत वर्ष २०१३ मे ३१ जनवरीकेँ सेवानिवृत्त भेलहुँ।

एहि अवधिमे हमर माताक देहावसान १९८१ ईस्वीमे, पिताक १९८८ ईस्वीमे, बहिनक १९८९ ईस्वीमे आ भाइक १९९० ईस्वीमे भऽ गेलनि। चारि वर्षमे हमरासँ जेठ चारू गोटा चल गेलाह। आब हमरासँ जेठ परिवारमे हमर भौजी बौआ देवी छथि जे गाममे रहैत छथि। हुनका संग हमर भातिज नवीन सपरिवार रहैत छथि। ओ सचिवालयमे सहायक के पदमे कार्यरत छथि। संपूर्ण परिवारकेँ सम्पन्न छथि। भौजी आ नवीन के गाममे रहलाक कारणे हमरा आ हमर परिवारक संबंध अनवरत गामसँ बनल रहल अछि।

साहित्य के प्रति हमर झुकाओ कालेजमे मैथिल छात्र संघक गतिविधिकेँ देखला-सुनलासँ भऽ गेल। छात्र संघ द्वारा मैथिलीमे अनेक कार्यक्रम होइत छल। ई सभ कार्यक्रम [illegible] होइत। हम बढ़िसँ सहटा देखऽ लगलहुँ। नाटक, कविता-पाठ, भाषण प्रतियोगिता, जयन्ती, सरस्वती पूजा आदि कार्यक्रममे क्रमशः भाग लिअ लगलहुँ। मिथिला-मैथिलीक माद सुनऽ लगलहुँ। हमर पहिल रचना कविता छल जे बरुक पत्रिकामे १९६८ ईस्वीमे छपल "शशि बच्चा के समान"। बच्चा माके जयन्तीमे पढ़ने रही। पुन १९६९ मे मिथिला-मिहिरमे दासन कविता छपल। पहिल कथा "विवाह सँ पहिने" १९७१ ईस्वीमे मिथिला-मिहिरमे छपल रहए। तकर बाद

क्रमशः साहित्यमे रमैत गेलहुँ। साहित्य जीवनक अंग बनि गेल। अनिवार्य बनैत गेल।

नौकरी जीवनमे हम बम्बइ आ कटिहार पदस्थापनक अतिरिक्त बसी अवधि पटनामे विभिन्न पदपर रहलहुँ। हमर दुनू बालक प्रवीण ओ प्रकाश पटनामे पढ़लनि-लिखलनि। प्रवीण देहरादूनसँ बी.टेक कए स्टील अथॉरिटी आफ इंडियामे कार्यरत छथि। वर्ष २००९ मे हुनकर विवाह पल्लवीसँ भेलनि। एकटा बेटी छनि श्रेया जे एहि बेर छठमा क्लास पास कएलक अछि। ओ सब बालानी (उड़ीसा)मे रहैत छथि। एहिसँ पहिने बोकारो (झारखंड)मे छलाह। प्रकाश अंग्रेजीमे एम.ए, पी.एच.डी कए एखन पटना वीमेंस कालेजमे पढ़ा रहल छथि। वर्ष २०१६ मे हुनक विवाह शिल्पासँ भेलनि। साहित्यमे हुनक खुब अभिरुचि छनि। अंग्रेजीमे बेसी लिखैत छथि से कविता। मैथिलीमे सेहो लिखए लगलाह अछि लेख सब। अनुवाद सेहो करैत छथि। नागानंद नियोगीक कविता सबहक अनुवाद अंग्रेजीमे पोथीक रूपमे प्रकाशित छनि। हमर पत्नी पुष्पकला झाक देहावसान २०१९ ईस्वीक जनवरीमे भए गेलनि। वर्ष २००२-०३ मे हुनका गंभीर बिमारीक कारणे दिल्लीक गंगाराम अस्पतालमे अढ़ाइ मास रहए पड़लनि। आपरेशन भेलनि। एकैस दिन धरि आइ.सी.यु मे मृत्युसँ लड़ैत रहलीह। देहमे सामर्थ्य लए बहुत समय लगलनि। २००४ ईस्वीमे धरि ओ विभिन्न आपरेशनक अपार कष्ट भोगलनि। कतेक बेर लागए जे ओ आब नहि बचती मुदा बचि त गेली आ ओकर बाद बारह वर्ष धरि जीवित रहलीह। मुदा सामान्य जीवन नहि जीबि सकलीह जकर हुनका बहुत अभिलाषा रहनि। अंतिमा

समयम ऊा मनव नहि चाहैत नहथि। जावत धनि स्वस्थ नहथि तावत धनि घन-यनिवान, दुनू वालककँ नजह सम्हानल नहथि। ननाम दुनूकँ नजह यढौलनि-लिखौलनि। हम गँ सनकानी काज, सना-संघक काज, साहित्यिक-सांस्कृतिक काज सरम हनदम व्यस्त नहैत छलहुँ।

आव हम सम्हनि नर्षक रऽ गेल छी। याछू घुमि कऽ तकैत छी गँ लगैत ज ॐटनम यढैत काल काशीम का0लीक रनालयन अयन राॐक लिखल याँती "मरुप्राकंआ का माती निष्ठनता की सीयी मं नहता है" क यढि गँ गेल नही मूदा आव जा कऽ ऊकन अर्थ लागव शुनू रल अछि।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.४.कल्पना झा- ओहि-पओहिँ बाजब/लिखब सहज नहि



कल्पना झा

ओहि-पओहिँ बाजब/लिखब सहज नहि

विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव पर जखन आदरणीय अशोक सर नवका पोथी सबहक लिस्ट देखलहुँ, तँ कथा संग्रह, कविता संग्रह, साक्षात्कार संग्रह, यात्रा कथा, आलोचना, विविध आ नव कविताक पोथी सबहक संग एक गोट व्यंग्य संग्रह पर नजरि पड़ल। "नीक दिनक वाट्सआप" शीर्षक व्यंग्य संग्रह पर नजरि पड़िते हम बिनु एकहु क्षण गमओने ओहि पोथी कँ डाउनलोड कलहुँ। मान प

आएल "अशोक सन आ ग्रंथ संग्रह?" कनि अविश्वसनीय सन लागल,तेँ जिज्ञासा अत्यधिक प्रबल छल, जे देखी,आखिर कहन अछि याथी। जावत हम अशोक सन केँ देखलियनि/सुनलियनि,स्वभाव सँ ओ बहुत बसी सौम्य, मृदुभाषी लोक बूझलथि हमरा। तेँ अविश्वसनीय सन बाग लागल,जे एहन लोक ग्रंथ कोना लिखि सकैत छथि। ककरो यन कटाउ कनव,ओहि-यओहिँ बाजव/लिखव सहज नहि । आ जखन ओ स्वभावक विपरीत हुअए, तखन तेँ आरो नहि। ओहि-यओहिँ बाग अधिक काल कटुए होइत छै,आ कटु बाजव सहक बूझाक बाग नहि।

याथी पढ़व सुरू कलहुँ, तेँ लेखक द्वारा दु शब्द कहवाक क्रम मे "कहवाक अछि......"मे सहटा खिस्सा लिखल देखलहुँ/पढ़लहुँ,जे कोना संजोग बनलनि दैनिक हिन्दुस्तानक एकटा स्तम्भ "ओहि-यओहिँ" लेल ग्रंथ लिखवाक। आ कोक अबूह लागैत छलनि लेखक केँ ग्रंथ लिखव,तकर चर्चा सहो कलनि अछि। लेखक स्वयं ई बाग स्वीकार कएने छथि,जे "ओहि-यओहिँ लिखव महाग मुश्किल।" आगाँ लेखक इहो बाग स्वीकार कनैत छथि जे एहि स्तम्भ लेल लिखैत "किछु सामयिक घटना-समाचार यन सोचवा-विचारवाक अवसर देलक। संगहि इहो महत्वपूर्ण नहल जे अयन स्वभावक विपरीत कन-मन ओहि-यओहिँ कहवाक-वजवाक अवगति देलक। हिम्मति देलक। "अवगतिए टा नहि देल सन ! खूव सुन्दर ग्रंथ लिखव। आगाँ आरो एहन ग्रंथ संग्रह पढ़वालेल देटए,से अयेक्षा।

सर सँ यहिन गद्य कनव जीवनक लल सर सँ महत्वपूर्ण प्राधनायुक श्राण गाछ-वृक्ष सँ संबंधित विषय यन लिखल गेल "हाऊल यन हनियाली"क। लखक कणक नीक संदश दलनि अछि स दखल जाउ- "हाऊलक निर्माण म जना वृक्ष-संहान हाऊण अछि,स जीवन लल मानूक ह'नहल अछि। मुद्दा सनकान यन सरटा दाष मढि दव,अयन जिम्मदानी सँ हागव हला गँ सनकानक संग हमना सर कँ याजनाक शण-प्रशिशण यालन लल मास्टद नह' यठण। जँ अयन वाँकि नहि नहण,ण' आन कँ कान गनज छै। "

लखकक मान हगुआ आ वृनानक गोवंधन दखि गानतन गानतन हल छलनि, हमना गँ "अणणदह" यढि मान गानतन गानतन ह' गेल। कणक सूक्ष्म ▯ञ्ज्वर्णिण्न ! मिण्ना ण'अणणदह,शण्ना ण' अणणदह। सण्द,प्रकृणि आ मानव म आऊ काल्हि अणि क उंका वाजि नहल अछि। अणणदह ह' नहल अछि। काना सीमाक आव माजन नहि नहि गेल अछि। सहन्धा गँ सीमा याना। प्रम गँ सीमा णाठि क'। क्राध गँ अकास ठकल।

उाना "अणणदह" सन आना वहण टाँयिक सर वहण नीक लागल यठण। "उमक कुहस", "मुखौटा","सयनाक नल",सरटा वजाठ टाँयिक।

"विलाऊण गाम"म यथार्थक चित्रण कनैण लिखैण छथि -"गाम अछि कि गायव ह' गेल। निहाह गायव ह' गेल कि किछुउा वचल अछि। छहन आ वाँध उाकना गीठ गेल। उम उाकन अण्च्छि लाय क' दलक। " गामक विश्वास निशाल वठक गाछ,घनगन यीयठक

गाछ,माँछक यांत्रिक गाछक चर्चा, बतक-गाय-महींसक चर्चा,कुम्हार,खस्सी,डाल,पानक सागक चर्चा करैत विलुप्त गामक मार्मिक चित्रण कएलनि अछि। लेखकक कहब छनि जे शहर सभक आधुनिकीकरण मे बदलल सरकार गाम केँ एना बना देलक,जे काज-धाजगारा हेतु ओ अपन समाज-परिवारक संग नहिया सकी। मुदा एहिलेल बाजत के?

"गुनक कनू मान"मे अपना मिथिलाक प्रचलित हकत सभ पढि नीक लागल। कतेक सार्थक, सटीक होइत छलए, सभटा हकत सभ। जे आब बालबाल मे एकदम प्रयोग मे नहि नहि गेल। अपना केँ पैघ लोक आ मॉडर्न देखा करबाक चक्कर मे डुमनाएल समाज आब ओ गमैआ,देहाती हकत सभ किएक बाजत। बहुत नीक प्रश्न ठाढ़ कएलनि अछि लेखक,जाहि पर विचार करबाक बेगरता छै-"ओ कोना भेल जे हित-अहितक बात बिसरि पैघ-छोटक फेर मे पड़ि गेलहुँ? एना एक दिसाह,एक हेगाह किएक भ' गेल छी हमसभ?"

"पाखनि सभ के कहिया उतारत" बहुत महत्वपूर्ण विषय लागल। मनघासन्न भेल हुकुर-हुकुर करैत पाखनि सभ लेल लेखकक चिंता उचित छनि। लेखक कहैत छथि,"अपना सभक इलाका नदी-पाखनिक मामला मे धनीक रहए। मुदा आब पहिना गरीब आ विपन्न भेल जा रहल अछि।"एकटा चौंका देमए बला आँकड़ाक उल्लेख सेहो कएलनि अछि लेखक। देशक आजादीक समय अपना मिथिला मे जाहिठाम चौबीस लाख पाखनि छलए ताहिठाम आब

मात्र साढ़े पाँच लाख बाँचल अछि। विडम्बना ई जे (लेखकक शब्द मे)-

"गाम-गाम मे पूजा-पाठ बढ़ि रहल अछि। जत' कहियो बासंती दुर्गा पूजा नहि होइत छल, आइ लाख-लाख खर्च क' धूमधाम सँ पूजा भ' रहल अछि। राति-राति जागि रितिया चलैत अछि। नाच-गान होइत अछि। मुदा कुशासन, तानाशासन नहि होइत अछि। इनार आ पोखरि खुना क' उत्सव नहि मनाओल जाइत अछि। एहन उत्सव नहि होइत अछि जाहि सँ लोकक उपकार हुअए। "समाज केँ बाटबैत लेखक कहैत छथि-" पानि बिना की जीवन। पोखरि बिना की गाम घर। आउ, जीवन बचाओल जाए। पोखरि खुनाओल जाए। "

सभटा विषय-वस्तु बहुत महत्वपूर्ण आ सार्थक चुनल गेल अछि लेखक द्वारा। समसामयिक विषय सभ, जाहि मे राजनीति आ राजनेता सभ पर व्यंग्य सेहो सम्मिलित अछि। "चुनावक रंगुआ","ई ककर बजार छियै हौ राइ","टमाटर आ पियाजक सपना सुख" एहि श्रेणी मे आएत। मौसमक मिजाज सँ संबंधित सेहो किछु विषय अछि, जेना-"नामी भेल पटनाक गर्मी" ,"आब' रे अखाढ़!"समाजोपयोगी काज दिस लोकक ध्यान दिअबैत विषय सभ सेहो अछि। समाजक प्रति सेहो हमरा सभक किछु जिम्मेदारी अछि, से आबक लोककेँ विस्मृत भ' गेल छनि। सभ अपनहि बेहाल रहैए। लोक आत्ममंथन करए। मनुष्य-जन्मक सार्थकता मात्र अपनाहि जीबए मे नहि छै, से लोक बुझए।

कथान साहित्यक प्रेमी म आवऽ वला याथी "नीक दिनक वाट्स्आय" समाजक लल उपयागी गँ अछिऽ,संगहि पावक सहा लगानि याOक कँ।

अयन मंगाय editorial.staff.videha@gmail.com**यन यOाउ।**

२.७.आशा सा-उँतीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा



आशा झा

उँतीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा

संस्कृत मे एकटा वाक्यांश छैक -' गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' अर्थात् कवित्वक कसौटी गद्य होइछ। छन्द,लय गति यतिक बन्धनसँ मुक्त होयबाक कारणे गद्यम भाषागत अथवा विषयगत छूट भेटबाक कारण गुंजाइश नहि होइत छैक। एत' एकटा गप ध्यातव्य अछि जे संस्कृतम गद्य,पद्य,नाटक, चम्पू सब काव्यक श्रेणीम अबैत अछि।

कथाकार अशोक मैथिली कथाक सुपरिचित नाम छथि। यद्यपि ओ याOकवर्गक कविता- संग्रह एवं आलोचना आदि विधाम सेहो सशक्त रचनाक उपस्थान देने छथिन,तथापि स्थापित कथाकारक कथाऊम्रीय।

आइ किछु गप हुनक कथासंग्रह 'उँतीगाम'क। प्रारंभ करैत छी शीर्षकथासँ। प्रवास मनुष्यक लेल विवशता अछि आ महत्वाकांक्षा सेहो। मुदा जेना- जेना वयस बितैत छैक,कार्यालयीय दायित्व कम होइत छैक,धिया-पुताक जिम्मेवारी खतम जकाँ होइत बुझाइत छैक,यानी समयक ह्रासगति होइत छैक,अपन जडि तीव्रताक(शिद्दत) संग मोन पडैत छैक। किछु एहन सन अनुभव होइत छनि कथानायक रघुवंश बाबूक जीवनक साध्यवेलाम आ ओ विकल होइत लगैत छथि गाम घुरबा लेल। मुदा एत' सकारात्मक पक्ष ई जे पत्नी आ धिया-पुता सेहो रघुवंश बाबूक इच्छाक समर्थक।

यद्यपि देखल गेलै अछि जे बाहर रहनिहार बालबच्चा सभ एहेन मेटेरियलिस्टिक भऽ जाइत छैक जे मायबापक भावना सेहो हानि-लाभक बटखरा पर जोखैत अछि। मुदा साहित्यकारक काज मात्र यथार्थ देखायब नहि,ओहि धरातल पर आदर्श स्थापित सृजन सेहो होइत अछि। से कथाकार एत' परोक्षतः कह' चाहैत छल होएत- एहना भ' सकैछ, प्रयास त' करह।

गामक लोक मंदिर-निर्माणक नाम पर स्वागत करत,एतेक दिन धरि कयल गामक उपेक्षा मोन नहि पाडत, तेँ राममंदिर- निर्माण निर्णय कए रघुवंश बाबू सपरिवार गाम एलाह। मुदा गामक नवयुवकक प्रश्नक मारेँ लेखक संस्कार: अपन मनोभाव व्यक्त करबाक प्रयास करैत छथि, धनिक प्रवासीक◌ॅ◌ं कर्तव्य मोन पाडैत छथि-

'कने विचारि क' देखियौ मालिक बाबू, कोनकनास मंदिर तँ अछिए चारूकात। तेँ फेर एक नव मंदिर बनि क' की होयत? ताहि त' एक टा 'लाइब्रेरी' भ' जायत। एहि सँ बरु अहाँ सभ अस्पताल बनबितहुँ। स्कूल खोलि दितहुँ। कॉलेजक निर्माण करितहुँ। दुनियाम एक सँ एक स्थानक प्रचार-प्रसार भ' रहल छै। ओकर शिक्षण-प्रशिक्षणक व्यवस्था करितहुँ। लोक के काज उपकार होइतै।'

एत' एक दिशि गामक नवयुवक लोकनिक जागरूकता व्यक्त भेल अछि त' दोसर दिशि धनाढ्य लोकनिक सामंती प्रवृत्ति पर चोट सेहो पड़ैत अछि। 'गामक लोकक एतबहि टा अकाश' एहि सोचम परिवर्तनक खगता देखाओल गेल अछि।

ई एकटा आशावादी कथा अछि,जाहिमे सभ बुझनुक बुझना जाइत छथि,कथानायक,हुनक पुत्रद्वय,पत्नी आ समाज सभ। आ सभ मिलि जीवनक सुखमय बाट गढ़ैत अछि।

'गामक कातक हाइन' भौतिक विकासक संग गामक अधःपतन,निश्छलता आ नैसर्गिकताक अंत देखि भावुक भेल साहित्यकारक अंतर्वेदनाक उद्गार अछि ।

'छुट्टीक एक दिन' समयक संग सामञ्जस्य-विधान करैत लेखकक एकटा सुखान्त कथा अछि,जाहिमे दू टा शिक्षित युवक-युवती सामाजिक विधानक विरुद्ध प्रेम विवाह करैत मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाजक प्रति अक्षुण्ण अनुराग रखैत छथि।

किछु अही भाव पर आधारित कथा सभ बुझाइत अछि 'स्वाधीन'। मुदा,ओतऽ वैवाहिक बलात्कारक पुरजोर विरोध देखाओल गेल अछि। एकटा स्वाभिमानिनी स्त्री कोनहु परिस्थितिमे ओ गर्भ रखबा लेल तैयार नहि छथि,जे जबर्दस्तीक सम्बन्धक प्रतिफल हएत। हँ,ओ बुझैत छथि जे जबर्दस्ती करैवला पुरुष नितान्त अधलाह लोक नहि छथि, तेँ तलाक नहि लैत छथि,ई कहैत जे 'हम खिस्सा खतम नहि शुरू करऽ चाहैत छी'। मुदा तैयो वैवाहिक मूल्यक अवहेलना स्वीकार नहि करैत छथि।

स्त्रीक अस्मिता-दलन कुपुरुषक प्रवृत्ति रहल अछि, मुदा स्त्रीक ओहि बाटसँ उपजल टीसक अनुभूति सेहो पुरुष लेखक कए सकैत अछि,कारण लिखबा काल ने ओ पुरुष रहैछ आ ने स्त्री,ओ रहैछ

मात्र डा यात्रा यात्रक संग मानवीकरन्ध आ समानुभूति नीक लखकक वह्न हाऽऽग अछि। स अनूरुव कनेग लखक अयन टीस कथाम नायिकाक मानक संवदना लिखेग छथि -

जल म शान्द आ स्ठिन रल वैसल विमला क वन-वन अक्काटा वाग मान म घूमि-रीनि कं' अवेग छलनि-' अखरु वनौलनि ग' अखरुक काज किछ नहि दलनि? हम ग' हूनकन सहधर्मी छलियनि। सहकर्मी किछ नहि वनौलनि? हमना दसखग किछ अयन क' दलथिन ? अहन वऽऽमानी किछ? **की वऽऽमान समOाम वऽऽमान हाऽऽग अछि? वाहना म वऽऽमान आ घना म वऽऽमान। '**

'उमकी' ऊयनसँ प्रमकथा वूसाऽऽग अछि, यनञ 'अगि सर्वत्र नउयग्' सिद्धांगक अनूसान डाकन अंग आगंकिग कनेग अछि। की प्रमक अहना नूय र' सकेग छैक?की प्रमक सहा काटा हाऽऽग छैक - अगवा जनूनगि,अगवा आयूर्गि,गकन वाद काना सूख,दू:खक असनि नहि?

निस्संदह नहि, गँ नाम थिक उमकी।

मनूष्य कगवा व्यग्न नहउा,कगवा दायित्नम किउेक नहि डासनायल नहउा,डाकना अयन नूचि- प्रवृत्ति यन अनथ्थ श्यान दवाक चाही। लाक की कहग?हमन ऽऽमज की अछि? आदि- आदि निनर्थक सावम अयन खूशीक आहूगि दव वूद्धिमानी नहि, यनञ डाहि अक उधक खूशीक अनूरुव कनव जिनगीम न'व ऊर्जा रनेछ,ऽऽी सान अछि 'लाथ' कथाक।

'छल' कथा जबरदस्त नाटकीय कथा अछि। कोना व्यक्ति (शालीमा) किछु उधार लऽ कोना पाटि लैत अछि त' जेना ओ ओतहि र' जाइत अछि ।परिणयक जीवन्तताक उत्कृष्ट निदर्शन अछि एहि कथामे।

'मनसुखा' मे कैरियरमे बुलंदी पएबाक उन्मादमे युवावर्ग द्वारा घर-गृहस्थीक जिम्मेवारीसँ पलायनक बढ़ैत प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करैत छथि लेखक त' 'खुशीक नाम जीवन' मे अन्तर्जातीय विवाह पर स्वीकृतिक मोहर लगबैत छथि। ओना लेखकक मध्यमार्गीय दृष्टिक पाछाँ, सामाजिक स्वीकृति आदि बदलैत समयक संग कदमताल करैत अछि जे आवश्यक।

आशावादी दृष्टिकोण देखबैत अछि कथा 'अरण्यक बटाकेँ दूटा दाँत हरलनि अछि' त' मानसिक बीमारी दिश इंगित करैत अछि 'एना ह' क किया'। ओकर अतिरिक्त 'ओ टूटू साइकिल सिखैत अछि','नाग','रमन आइसक्रीम' आदि कथा नीक बनल अछि।

संग्रहमे जँ कहै त' ठेठीगाम ओकरा संवेदनशील कथाकारक पन्द्रह गोट नमहर कथाक संग्रह अछि। कथाक प्रस्तुति छोटा सुंदर आ मारक अछि। मात्र चिंता व्यक्त करब, साहित्यकारक उद्देश्य नहि, अपितु अपन पात्रक माध्यमसँ ओकर निवारणक उपाय देखायब,मुदा ओना सन जेना हम कहलौं किछु कहलहुँ,हम त' खिस्सा कहैत छलहुँ।

कथाकारकेँ ओकरा अपार सामान्य पाठकक अभिनन्दन!

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.दिलीप कुमार झा- मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातवन' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']



दिलीप कुमार झा

मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातवन' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']

समकालीन मैथिली कथाकारमे वछय नाम छथि कथाकार अशोक। हिनक कथा कें ताकि - तकि कें पढ़ने रहलहुँ अछि। हिनक कथाक विषयमे टिप्पणी करब सहज नै छैक। निष्ठा आ समीक्षकीय दृष्टिकोण सँ देखल जाय तँ बहुत विशद विश्लेषणक माँग करैत अछि हिनक कथासभ मुदा से अवगति हमरा नहि अछि तथापि हम ई मानैत छी हिनक कथाक भाव,कथ्य आ बहुत हद धरि कथाक अभिष्ट साधारण सँ साधारण पाठक बुझि पबैत छथि ताहि परिप्रेक्ष्यमे हिनक दोसर कथा संग्रह 'मातवन' जे बहुत पहिने पढ़ल छल ओहि बीच एकर पुनर्पाठ कयलहुँ। ताहि क्रममे इच्छा भेल किछक

न ओहि पाठीयन अपन किछु पाठकीय टिप्पणी नाखल जाय। एकर ओकरा प्रयास अछि ओहि विशिष्ट कथा संग्रहयन ऽऽी दुटयी।

हिनक कथा संग्रह परठगकाल सबसँ पहिल हमना ऽऽी हान हल ज कथाकान अशोक समयक संग वहुत यथार्थवादी ढंग सँ चलवाम विश्वास करैत छथि। ऊ लकीन क हकीन नहि छथि। कथा कहैत नहि छथि, नवैत छथि स सम्पूर्ण गथ्यक संग। हुग, वर्तमानक गालमल वैसवैत हविश्वासमुख कथाक सृजनशीलयी छथि कथाकान अशोक। ओकैसम शताब्दीक आनंद म (२००१ऽऽी.)ऽऽी कथा संग्रह अवैत अछि। ओकैसम शताब्दीक आनंदिक वर्षम दुनियांम अनेक पनिवर्तन हल। दुनियाँक कम्पूटनीकनण,मुक्त व्यापान समझौता,ऽऽटननटक अनिर्वनक प्रहान वैश्विक पउय लागल। हानत सहा प्रहानित हल सहजहि मिथिला सहा। ओहि सह वातक प्रहान ओहि कथा संग्रहम संग्रहित कथा सहयन दखल जा सकैछ।

पाठ आ पुनर्पाठ क पछाति हम ज किछु बुझि सकलहुँ एकन ऽऽी आत्मिक अनुभूति मात्र थिक। हम सबसँ पहिल ओहि संग्रसक 'नाँउ' कथायन चर्च कनय चाहब। विधवाक जीवनयन मैथिली म घनना कथा लिखल गेल अछि मुदा नाँउ कथा ऊहि कथा सहसँ वहुत हनाक अछि, ओना कहि ज क्रान्तिकानी अछि गँ वजाय नहि। ऽऽी ओकरा विद्यार्थी मनीषक कथा सँ आनंद हाऽऽछ ज वाम्हनम वदलैत पनिवेशम स्त्री- पुरुषक साम्यताक कथा कहैछ। विधवा जीवनम आयल वदलावक कथा कहैछ। मनीष अपना मामी सँ आत्मिक स्नेह करैत छथि जखन हुनका मामीक वैधव्य हवाक खवरि हटैत छनि

गेँ ओ बच्चा ह' जाइत छथि जे ओकर सुन्नरि मामी कोना क' उठेता साड़ी पहिरि क' रहती? कहिन लगती? आदि आदि चित्रक मनोदशा बनैत छनि। एहि छल हुनका मान पड़ैत छथिन अपन विधवा पितामही, अपन पितियौत बाल विधवा बहिन। मामाक मृत्यु सँ मनीषक मान विचलित होइत छनि आ ओ मामीक लाल मूँगा। रंगक शाल ल' जेबाक आ हुनका ओ शाल ओढ़ा देबाक निर्णय करैत छथि। जखन मनीष मामी सँ भेंट करबाक लेल काशी जाइत छथि गेँ हुनका मानम अत्यधिक संतोष होइत छनि ओ मामीक परिधान देखि क'। मामी आसमानी रंगक नूआ ब्लाउज पहिरने छथि। हाथम सोनाक चूड़ी आ घड़ी। एहि हमरा समाजम एकटा पैघ बदलाव भेल अछि। विधवाक जे अभिशप्त जीवन छल तहिम बहुत सुधार भेल अछि। आब गेँ नहिनहिं विधवा विवाह सेहो ह' रहल अछि। कथाक माध्यम सँ मिथिलाक विधवा स्त्रीक काशीम कहिन दुर्दशा छलनि तकरा उल्लेख भेल अछि। ओ लेखक नानी काOक'नयारात्रि'क वर्णन आङान विश्वनाथ गलीम रीख माँगनाली सहक स्थितिक चित्रण सँ बहुत सटीक तुलनात्मक अध्ययन कयलनि अछि। एतबहि नै एहि कथाक माध्यम सँ स्त्री काज क'क अपन पैनपन 0।८ हुआ। अपन पनिश्रमक पाय सँ अपन धियापुताक रहनक पोषक करय। सगरहि अपन स'ख सिंगान पन अपन कमायल किछु टाका व्यय करय। एहिम बजाय की? मामीक प्रसंग मनीष कहै छथि अहाँ कँ काजक ज्ञीलम अवैय, गँ अपन सना कँ पाय म किय न बदलब। सनाउत्र बहुत दिन धनि उपेक्षित रहलैक अछि। एहि कथाक माध्यम सँ कथाकान सनाउत्रक महत्वक ज नखांकत कयल अछि स

अति महत्वपूर्ण अछि। आइ सँ बीस वर्खक पछानि हम सभ उत्रक बढ़ैत डेग कँ अकानि सकैत छी।

'मागवन' ज एहि संग्रहक शीर्षक कथा अछि। आइ सभ किछु यू यूँजीयन टिकल अछि। बाय बटाक सम्बन्ध गक टाकायन आबि क' ठमकि गेल अछि। काना धनानी सब मागवन बनय चाहैत अछि। आइ डेग -डेग पन महानाज बैसल अछि। उाकन संग दवाक लल ,जी हजनी कनबाक लल कनिया आ महत्वुब सनहक मूँहलगुआक काना कमी नहि छैक। मुदा एहिम पीढ़ीक संघर्ष सेहो देखाइत अछि। हँ, एकटा बाग शेख साहेब सन मूँहपन कनियां उचित बजनिहानक दिन- दिन अभाव भेल जा नहल अछि।

एकटा कथा अछि 'दसखत'। एहि कथाम आचार्यजी सन आइ .ए. एस आइक पूगम भेल पड़ल छथि। ब्रह्माबान आउान निलासिता आइक नौकनशाहीक पर्याय भ' गेल अछि। निलासिताक पननाकाष्ठा भ' गेल अछि ज आचार्यजी सनक लाक जीवन ज अपन हाथ पैन साह हिलब' नहि चाहैत छथि। एगय धनि ज हाइलपन दसखत सांकेतिक कनय लगैत छथि। पनिणाम एहन- एहन लाकक स्थिति आचार्यजी जकाँ भ' जाइत छनि ज हुनक अंग सब शिथिल भ' जाइत छनि अनेक नंगक व्याधि गछानि लैत छनि। शक्तिहीन भ' टुकुन- टुकुन ताकैत नहैत छथि।

'काठ' आइक नाजनीतिक व्यवस्थाक सटीक चित्रण अछि। आइ डेग डेग पन नाजनीतिक व्यवस्थाम नामलाल मंडल सन नेता भेल पड़ल अछि। मजाल छै ज किया कल्ला अलगा सकय। ओ काज जेह किछु

साहित्यकार क' सकैया। स कथाकार बहुत हनिठा क' ,वकठाक' मंत्रीक किरदानी कँ उघार क अछि। ऐ मात्र मंत्रीक किरदानी नहि आजुक लोकतांत्रिक व्यवस्थाक सहज परिवार ए' गेल अछि। ककरा कहबै?नागनाथ क हटाउ सांपनाथ कँ लाउ ,की बाघनाथ कँ लाउ ,सब एक नंग। बदलैत- बदलैत जनताक मान सहो अगुताय लागल अछि। जाति धर्मक स्वर्ग गुलायल लोल क' भ्रष्टाचार,आतंकक सबटा सौ हिसदी ठंच फार्मुला सरक अनिर्वाय नेता लोकनि क' ललनि अछि। देखियौ कथाकारक येनी नजनि काना दौडैत छनि," यादव,हर्जी,किश्री ,घाट...। सब आ मात खलाऽऽत नहैत छथि। ब्राह्मण,दलित,पिछडा,मुसलिम...गोटी यन गोटी। गर्जनी आ डौंट। दिमाग क खेल। दिमाग गज आ बुद्धा प्रखर हल जाऽऽत छनि। एतराऽऽस लौन छथि ब्राह्मण सँ नाशि लौन छथि दलित सँ नाटी बटी पिछडा सँ सम्मान लौन छथि मुसलिम सँ "

अंतिम नामलाल मंडलक यासल साँय बसस्थान ए' जाऽऽठ आ सौंस साँय सनसनाऽऽत सनसनाऽऽत नहैत अछि। भ्रष्टाचारक साँय,सामाजिक वैमनस्यक साँय। मुदा ज हौक मंत्री ,संत्रीक काठ। यन काठ। गँ बनिय नहल छैक।

एकटा कथा अछि सहज- असहज' ऐ दु मित्रक कथा अछि,ज ननयन सँ मित्राक बहनम बहल छथि । कामश्वर चौधरी आ नारेश्याम बाबू दुनू ननयनक संगी छथि स संगियार प्रौढावस्था धनि निमहि नहल छनि। कामश्वर गाम यन नहि गेलाह ,डागहि खतीवारी कनैत छथि आ निवैन सँ जीवन गुदस्त कनैत छथि। खलि क' महनति कनै

छथि आ जमि क' राजन करै छथि। सूख सँ रनि नागि सूरौ छथि मूदा ना(वथ्याम येघ यदाधिकानी छथि,यरना सन नगनम सरटा सूख सूनिधाक अछैग नागिक' निन्न यना (गेल छनि। विनू (गाटी खयन आँखि नहि मूनाइग छनि। ना(वथ्याम यरनाम आलीशान घन वनवै छथि स अयन मित्र कँ दखव' चाहैग छथि। उा एक गनहं जवनदस्ती कामधेनु चौधनी कँ अयन घन दखवाक लल यरना लवै छथि। कामधेनु घन दखि क' खुव प्रसन्न हाइग छथि। कामधेनुक खुव आदन सम्मान कनैग छथि। कामधेनु गाम सँ नगन आयल छथि मूदा जीवनचर्या अयनसन छथि काना वदलाव नहि जलखै म याँवरा यनौ0। आ रनि वड़ा गनकानी खाइग छथि। एयनकंडीशन का0नी सँ निकासि हूजल छायन अकासक नीचां अखना यरियायन खुव चैन सँ सूरैग छथि मूदा सवरा सूख सूनिधाक अछैग ना(वथ्याम वावूक आँखि सँ निन्न यना जाइग छनि। ई कथा मनूक्ख निकासिग हाइग एकरा नव गनहक जीवन (शैली कथा कहि' नहल अछि। सूनिधा सँ सूख नै कीनल जा सकैछ। सूख राागक लल चाही चैन, स रटैछ यथालार संताष सँ । मनूक्ख आव जिनिस' र' (गेल आछि। याइक हवस मनूक्ख कँ काय यहूंचा दन छैक? स जिनिस कथाम दखल जा सकैछ। एकवन उँ गला काजक दलदलम हँसलहूँ गँ वाहन निकसव वहूग मासकिल अछि। नूया आ सरीशक दाम्यग्र जीवन नूगू र' जाइछ। एहि नूगूगाक कानध काना यानिवानिक आ नीजी समस्या नहि अछि। एकन कानध अराान सहा नहि अछि। एकन कानध अछि लिस्सा। एकन कानध अछि मूँहम खुन लागव। नूया ई वूम्सिा उ श्रम कनैय स सूखी नहैय गथायि उा सरीश यन अनर्गल दवान वनौन नहैग छथि। एकन कानध स्नयं सरीश छथि । आइ लाक

ऽऽमानदानीक टाकायन गुजन कनव नहि जनौ अछि ना ओना कहि ज ओहियन असाकर्य हाऽ्न छैक। उपरोक्तानादी संस्कृतिक दौनम क बाँचल अछि स कहव काठिन?

काना चीजक 'हिस्सक' व७ खनाय नीका वागक हिस्सक कखना -कखना मनुक्ख कँ संकट म आनि देग छैक ।गखन वजाय काजक कान वाग?ग्रष्टाचान कनव, अनैतिक आचनण कनव आव लाजक गय नहि नहल। जहल जायव आव मर्यादा हनन क गय नहि नहल। आव लाक ग्रष्ट आचनणक लल जहल जाऽ्ष्ठ आ जखन जमानग यन छूटैग अछि गँ हाथी यन चढि क' झलुसक न्पयम नगन ग्रमण कनैछ। हिस्सक कथा म ओकटा साहव लाजक यनिटाषा व७ नीक सँ दन छथि,"लाजक ओहिम कान प्रश्न छैक? हम सट जाहि उद्यागम(ग्रष्टाचानक उद्याग) लागल छी गाहिम लाजक काना महत्व नहि छैक। लाज गँ यहिनहि संग छाडि देग अछि। अथवा लाक लाजक छाडि देग छैक। लाज धाख ग' गाना सटक लल अछि"

ओहि टाकाक उद्यागम किछु संरव छैक। जलम नहिगा जानन्धा सुविधाक उपराग क' सकैग छी। नागि विनाऽ्न ज ल सं निकसि क' घुमिया सकैग छी।

'राज' कथाक माध्यम सँ ब्रह्मण समाजक ज अन्तर्विनाध अछि स हनिष्ठ सँ उजागन कयलनि अछि। ओखना समाजम छाटका- व७का लाकक अवशेष बाँचल अछि। मात्र कर्मकांड धनि ब्राह्मण नहव गँ

की होएत? होड़ शीर्षक कथा अनेक तरहक सामाजिक प्रश्न ठाढ़ करैय।

एकटा कथा अछि 'खुशीक प्रश्न' कथा मे बाल मनोविज्ञान प्रयोग कयल गेल अछि मुदा अछि विशुद्ध रूप सँ एकटा शहरी मध्यम वर्गीय परिवारक कथा। शहरी मध्यम वर्ग कोना अपना दैनिक जीवनमे तनाव आ कुंठा सँ जीवन जिबैत अछि जाहिमे नेना लोकनिक कोमल मोनक कोन तरहेँ उपेक्षा होइत अछि। कोना एकटा कवि अपना पुत्र कें कवि बनबा सँ रोकैत अछि। एहि संवेदना के की कहबै? होएत सिंह हाथि मुदा हमरा घरमे नहि से कोना चलत? आजुक समाजक ई चरित्र आम भेल जा रहल अछि।

लोक एतेक तनावमे रहैत अछि। ईर्ष्या आ द्वेष सँ ततेक ने ग्रसित रहैत अछि जे अपन दैनिक जीवनक खोंस आ तामस कोमल मोनसबला नेना सभपर उतारैत अछि। ई कथा एखनुक मध्यमवर्गक सही प्रतिनिधित्व करैत अछि।

'तानपूरा' कथामे कोना लोक अपन अपूर्ण महत्वाकांक्षा के अपन बेटा- बेटी पर लादि रहल अछि से नीक सं देखार भेल अछि। विनोद बाबू अपन संगीत सिखय चाहलनि हुनका अपन पिता सँ सहयोग। भेटलनि मुदा अपन अयोग्यता वा परिश्रम नहि क' सकबाक कारण ओ संगीत नहि सिख सकलाह मुदा जखन हुनक पुत्र गौतमक अभिरूचि संगीत दिस जगलनि तँ ओकरा उत्साह करय सँ बढ़बितथिन उन्टे ओकरा हतोत्साहित कयलखिन। लोक एखनो बच्चा सभक रुचिक अपना हिसाबें तय करैत अछि। ओहि हिसाब बच्चाक

व्यक्तित्वक निर्माण करय बाला अछि जाहिमे ओकरा बस टाका भेटै, ओकर ख्याति आ गौरवगान होइ। बब्बाक अतिरिक्त कोनो महत्व नहि। एहि तरहक कुंठित मिजाजसँ समाज क उबरबाक बेगरता छैक। गौतम क संगीतक प्रति एतेक उत्साह नहिता एकटा तानपूरा ओ नहि किनैत छथि। ई एकटा सामंतवादी सोच अछि। एहि संग्रहमे एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि 'हरिसिंहदेव'। सामन्तवादी समाजमे एहन- एहन वर्गीकरण कयल गेल जे समाज बँटल रहय आ शोषणक कारखाना चलैत रहय। समाज अनेक जातिमे तँ बँटल छल फेर अनेक उपजाति बनाओल गेल ताहिमे ब्राह्मण आ कायस्थ वर्गक लेल जे पंजी व्यवस्था बनाओल गेल ताहि व्यवस्थापर एहि कथाक माध्यम सँ बस घनगर प्रहार कयल गेल अछि। एहि व्यवस्थाक सभटा अवगुण रहल। अन्तत: एहि वर्गीकरण सँ सामाजिक एकता कमजोर भ' गेल आओर व्यवस्था लागू करयवला राजा हरिसिंहदेव क स्वयं तुगलक आक्रमणक सामना नहि क' भेलनि आ हारि क' जंगल दिस पड़ा गेलाह। जँ समाज एकताबद्ध रहितय तँ हुनका एहन स्थितिक सामना नहि करय पड़तनि। पंजी व्यवस्था मे जाति -उपजातिमे विभाजन सँ समाजकमे झूठक दिखावटी, एक दासताक उपहास करब, हीन बूझब एहि सबसँ सामाजिक तानी भरनी बहुत तन्नुक होइत गेल। अन्तत: एकैसम शताब्दीयो मे मिथिलामे जातिक श्रेष्ठताक दंभ एखनो बहुत किछु बाँचल अछि। बूड़ि कहाइयो क' साति बनल रहब ई कोन श्रेष्ठता भेल? एहि कथाक माध्यम सँ कथाकार जाति व्यवस्थामे श्रेष्ठताक झूठक दंभ पाल'वला लोक सभकेँ नीक सँ देखार करबामे बहुत सफल भेलाह अछि।

एहि संग्रहमे एकटा कथा अछि 'सीनन नजरक दिगविन्दक' सीनन नजरक धावि जानिक अछि । मौलिक यास अछि। बैंक मे आदर्शयाल अछि। एनय गक व३ वढियां मूदा जखन ओ प्रान्न ह'क', नाक३याल (कौसियन) ह' जाइ३। हाव' लगैग छैक ओकर उखाहे स गामक बाबू रैया सँ आरहिसक बाबू आ आरहिसन सह अपना -अपना गनीका सं सीननकं उपजा आ गिनस्थान कनैय। सीनन ऽॢीमानदानी सँ कौसियनक काज कनैग नहैग अछि गाहियन ककना धियान नहि जाइग छैक। बैंकक हिस्तु आरहिसन द्वाना ज मृथ लवा म किसानक सहक शोषण कयल जाइग अछि गकन सीनन विनाध कनैग अछि। सीनन वयनमौन नामदहिन मिश्रक व३ आदन कनैग अछि। हुनका कहला यन ओ शनाव यिअव छाडि देग अछि। सीनन नीक लाक ह' जाइग अछि मूदा ओ अपन स्वाभाविक क्रिया- कलाय विसनि जाइ३ स एहि वाग कँ ओकन यत्नी गक अकानि लैग छैक। सीननक यत्नी कहैग छै,' हँसिया कनै छियै गँ मूसकिया दै छै। एना किय ह' गेलै३ दुनियाक वाय कं? आव वजवा कम कनै छै। 0हक्का ग' एकदम विसनि गेलै३। धौन एहिसँ ग' यहिन नीक नहै। ' हाय नामलखन ग' ओकनायन साम साम आनाय लगा देग छैक ज ओ आव व३का लाक नाहिग गय कनैय। सीनन कं एकाएक अपन स्थिगिक हान हाइग छैक। ओ हुन सँ अपन यूनना सहजाम आयस आवि चाहैय। निश्चय कनैय ज ओ यहिन जकाँ हँसग,वाजग,गय कनग। जीननम आगू व८व वजाय नहि मूदा ओहि संग अहाँक वदलैग सहजा अहाँकं जीनन नाग सँ वहुग दून धकालि सकैया।

'महगा'वदलौग कुदृष्टि कथा थिक। अपना नायक कार्यालयी संस्कृति कँ जीवन्त दर्शन करयवला कथा अछि। सरकारी कार्यालय कोना नि0ल्लायनक अड्डा अछि। किया विना ययनलट क काज करवाक लल गैयान नहि अछि। ईमानदार आ सांच लाक कँ वूरवक,वहुदा वूसल जाइछ। जना एहि कथाक महगां कँ वूसल जाइत छैक। अयन कार्यालयम यी. एक सँ अग्रिमक लल कान दणा होइत छैक महगाक। काना कार्यालय म काजक अतिरिक्त सवटा मसखरायन होइत नहैत छैक। हद गँ गखन र' जाइत जखन कार्यालयक स्टाफ गुलावचान वठा वावूक सहयाग सँ साहवक यत्नीक सम्बन्ध म अश्लील वात करय लगैत अछि । गखन महगा सटटा विसनि क' गुलावचान कँ कालन यकड़ि क' गीन- चानि चमटा घीचि देत अछि। ई छियै वहुदा लाकक प्रति प्रतिवाध थिक। कखनाकाल महगा सन सुधूआ व्यक्ति कँ जखन वात हद सं आगां वूसाइत छैक त' एहन प्रतिक्रिया देत अछि। डाग्य जँ किया यढल लिखल काविल व्यक्ति नहैत त' हँ हँ हँ क'क' अयन काज निकलवा लौत।

'सनथ' कथा वहुत मार्मिक कथा अछि। अपना समाजम एखना सटटा जातिक नयनायन नायल जाइछ। अयना जातिक स्वर्ण गुलायन लौलल जाइछ मुदा वात सांच डाग्य छैक ज काना गरीवक अयना जातिक धनीक वा वड़का लाकक समउ काना सम्मान नहि छैक । चाहे डा मिसनजी होथि वा दिवाकन चनिदास। ई सट जनित गैया सट दिनदिन जाति- जाति खलाइत नहैत अछि। मिसनजी आ चनिदासजी संगे नहैत छलाह। एक दासनायन खर्च करैत छलाह। वात आयल

गेल त' गेल। एकदिन दिवाकर रविदास मिसरजीक आगाँ पुरना स्टीलक औँठी जे हुनका मिसरजी देने छलखिन। ओहि बदला एकटा सोनाक अँठी लाल पाथर लागल मिसरजीक आगाँ एकटा पत्रक संग दिवाकर द' गेलाह। एहि सन्दर्भमे मिसरजीक प्रतिक्रिया आ पत्रक मजमून दुनू सोचबाक विवश करैत अछि। आखिर हम सब कतय जा रहल छी?

राग - विराग बहुत हल्लुकसन कथानक कँ कथा बनाओल गेल अछि। एहि कथाकेँ पढ़लाक पछाति हमरा लागल जे एकटा माँजल कथाकार कतेक आसानी सँ अपन कथानकक चयन करैत छथि। एहि कथामे कथानायक कँ पटना सँ दरभंगाक यात्राक क्रममे एकटा सहयात्रीक संग जे संवाद होइत छनि ओकर महीनी सँ कथा मे परिवर्तित क' देने छथि। एकटा सामान्यो लोक कँ कोना साकांछ कयल जा सकैछ। कथा बहुत रोचक ढंग सँ लिखल गेल अछि।

'आबस' आइ धियापुताक कैरियरक प्रति लोक बेस साकांछ त' गेल अछि, से नीक बात मुदा कैरियरक अतिरिक्त जीवनमे आन बहुत किछु छैक,जे सिखबाक अनुरूप करबाक दरकार रहैत अछि। लोक बुझै अछि बच्चा पढ़ि लिखि ला नीक नोकरी- चाकरी त' जौ बस आन की ?मुदा बात ओतहि धरि सीमित नहि रहि गेल छैक। उचित संस्कार प्राप्त करब,जीवन संघर्षमे आगां उत्पन्न होइबला समस्या सभ सँ कोना लड़ल जाय? ई सभ रहैत छैक पारिवारिक आ सामाजिक जीवनक अनुरूप सँ। मुदा आइक जे संस्कृति विकसित त' रहल अछि तहिमे बच्चाक गलती कम आ अभिभावकक बेसी बुझना

जाइछ। आबस आ दुलार तपाबय जकाँ आवश्यक। जाय हरन-तरन जरूरी ताय ताहि हुए। असहायता, नम्रता मनुष्यक जीवनक आभूषण अछि। दिनेश बाबू आतान अनिता अपन बेटा केँ घ'र ल' जेबाक लेल गेल छथि। कतेक घंटा सं टीशनपर प्रतीक्षामे बैसल छथि। आतान बिनु बेटाक ननहि टिशनपर सँ घर आयिस आबि जाइत छथि। हुनक पुत्र महेश अपन संगी प्रशान्तक संगे बनि आइत नहि जाइत। माय बापक कोना परवाहि नै करैत देखाइत। तकर चालि- चलनिमे माय- बापक प्रति काहूँ अनुराग नहि झलकैत छैक। ई बहुत चिंताक विषय छैक आजुक पीढ़ीक लेल। सब चाहैत अछि हमर बेटा दूर, बहुत दूर देश चलि जाय, खूब टाका कमाय। समाजमे एहि तरहक हमर चर्चा होइत रहय त हल्लाँ बाबूक बेटा पूनाय, अमेरिकामे एक अमेरिकन तालन कमाइत छनि। हल्लाँ बाबू खुशी सँ हुइइर जकाँ हरैत रहैत छथि। अवस्था खसलापर तानेह बेटा घूमिया क' जखन नहि देखैत छनि हुन आहि अबैत छनि। आबस एतबय जा जरूरी। 'बूढ़ा जिबैत रहलाह' एकटा निलउध कथा अछि। एहि कथामे लोक बूढ़ा केँ बेवकूफ बुझैत अछि मुदा हमरा जनैत बूढ़ा सबकेँ बेवकूफ बुझैत छथि। समाज कतेक संवेदहीनअछि? हुनक परिवारमे एक गोटा मरि जाइछ तैयो बूढ़ा जिबैत छथि। ई बूढ़ाक जिजीविषा छनि। स बूसवाक स्थान एखना हमरा समाजमे निकसित नहि हलैक अछि वा लोप भ' गेलैक अछि। स त कही। बूढ़ा एहू अवस्थामे लोकक स्नागत- सत्कार करैत छथि। उपकार करैत छथि। मुदा बूढ़ा समाजक चालि चरित्र कं नांगट सहि करै छथि। ता अठारह वर्षक युवती सँ बियाह करबाक घोषणा करैत छथि। न अठारह सँ कम आ न बेसी। किय अँ तैस वरखक

युवती सँ विवाह करैथि तँ जुलुम भ' गेलै? बाम्हनमे बूढ़ा केँ विवाह नै करबाक छनि। ओ समाजक चरित्र केँ देखार करय चाहलनि अछि। ताहिमे ओ सफल भेलाह अछि। कथाकार सेहो सफलतापूर्वक कथा केँ बुनावटि मे, ओहिमे रंगटीय दवे बहुत सफल रहलाह अछि। एकटा कथा अछि 'प्रतिलाभ' ई कथा एकदिस कथाकार श्रोत्रीय समाजक यथास्थितिवादिता पर धनगर प्रहार कलनि अछि तँ दोसर दिस समाजमे जे जातीय दुर्भावना चरमपर अछि तकर नमूना सेहो भेटैत अछि। अर्जुन क जीह कटबाक क प्रयास करैत छैक? ओकर जातिक लोक। ओहि जातिक कहबैका सभ अर्जुन सनक नि:सहाय लोकक लेल किछु जीविकाक ओरियान किय न करैत छथि? कियक नहि अर्जुन कं पढ़बाक लिखबाक ओरियान समाज करैय? तखन पेट पालैक लेल जत' कतौ किया चाकरी करैय तकर मजाक उड़बैबला, ओकरा प्रताड़ित करैबला ई केहन समाज अछि? ई दोष बहुत भयंकर अछि। से सभ जातिमे बनाबनिय अछि। श्रोत्रीय समाजक भोजक वर्णन अद्भुत अछि एहि कथामे। भोज खेबाक आ करबाक संस्कृति श्रोत्रीय ओ ब्राह्मण समाजमे कर बसिय अछि। से व्यंग्यात्मक शैलीमे भोजकअद्भुत संगीतात्मक वर्णन कलनि अछि।

" भोज शुरू भेलैक त' प्रारंभमे वातावरण तरिआयल छल। क्रमश: मुसकी,कनफूसकी,टाकाटाकी,हँसी,ठठ,ठहक्का,पिहकारी,सात सूर बाज' लागल। आस्ते -आस्ते भोजमे एकटा आलाप आयल।......... आवाह वा अववाह मे दही,अम्मट,श्रीखण्ड,लड्डू,रसगुल्ला आ पायसक स्वाद वातावरण मे पसरैत रहल । भोज एकदम संगीतमय

र' उOला " कथाकान ञ्गाय व्यंश्रम ञ संगीताग्मकता उत्पन्न कलनि अछि गखन सरुजहिं प्रा. रुनिमारुन मा मान यञय लगैग छथि।

स सव ग' Oीक मूदा कथाक अंग प्रदीय लग आवि क' रहञ्ञय । उाञरु प्रदीय ञ 'दास- दासिनक' दानक प्रगीक प्रानधानक निरावध कयलनि। रुलांकि रुनक निरावध यथास्थिगिनादक छ्गाग्न मया गेला रुल मया गेल, निरावध ग' रुला।

ञहि संग्ररुक अOानरु कथा यढलाक यछागि वहुग आनंदक अनुरुव क' नरुल छी । रुमना गर्वानूरुगि र' नरुल अछि ञ रुमना वीच मैथिली रावाम ञरुन उङ्कङ कथाकान सव छथि। कथाकान अशोकजीक ञ छवि रुमना मानम अंकिग अछि 'ञ उा मैथिली कथा कँ लाकल सँ श्लावल वना दलनि अछि। ञ्ञी धनञा ञहि याथीक यूनर्याO सं कन वसी मजगुग रुल अछि। रुवनिम हिनक प्रकाशिग कथासंग्ररु 'उँ उीगाम'यढलाक यछागि ञ आन आग्न्निक रुटल छल स 'मागवन' कथा संग्ररुक यूनर्याO सँ रुमन धानञा आन वहुग वसी मजगुग रुल अछि। वीस वर्ख यहिन प्रकाशिग ञहि याथीक कथासर ञखना टटका वूमा नरुल अछि। प्रस्फुग याथी दीर्घ अनवि धनि मैथिली कथाक प्रगिनिधिन्न करैग नरुग,गकन रुमना यूना रुगास अछि।।ञ याOक ना कथाकान ञहि याथी कँ नहि यढन रहञ्ञ कृयया अयन अनश्य यढी स निनम्र आग्ररु।

-संपर्क-6207627509

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१.अजित कुमार झा- ऊँतीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह



अजित कुमार झा

ऊँतीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह

विदेह जे काज क' रहल अछि से निस्संदेह प्रशंसनीय अछि। अहि नीक काज मे कोनो रूप मे शामिल होनाइ मोन केँ प्रफुल्लित करैत अछि। अहि बेर कथाकार अशोक जी पर विशेषांक निकालबाक हेतु संकल्प बद्ध छथि। हम बड असमंजस मे छलहुँ कारण हिनका पढ़ने त' छलियनि मुदा मैथिली पत्रिकाक माध्यम सँ। सब पत्रिका हमरा उपलब्ध भेल हो आ हिनकर सब कथा हमरा पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल हो से त' संभव नहि। अजीब दुविधा मे छलहुँ जे हिनकर कोना पोथी कोना प्राप्त करी? एहन मे आशीष जी सँ गप्प भेल आ हम अपन समस्या सँ हुनका अवगत करेलियनि आ लगले ओ हमर समस्याक समाधान क' देलाह। विदेह आर्काइव पर उपलब्ध मैथिली रचना संसार केँ विषय मे विस्तृत जानकारी भेटल आ पोथी डाउनलोड करनाइ आसान भ' गेल। कथाकार अशोक जी कर किछु कथा संग्रह जे कि अहि पर उपलब्ध छल से डाउनलोड कैलहुँ

आ पढ़लहुँ जेना कि: आँखि मे बसल (यात्रा कथा), ओहि रातिक भोर, मातवर आ ओतीगाम। ओना बहुत कथा त' विभिन्न पत्रिका सब मे पढ़ने छलहुँ मुदा पोथी रूप मे सब कथा एकठाम भेटि गेल त' मजा द्विगुणित भ' गेल। एक-सँ-बढ़ि एक कथा सब पढ़लहुँ आ ओहि बीच कोनो आन काज करबा मे मोन नहि लागि रहल छल। हिनकर माध्यम सँ हमरा अमूल्य निधि हाथ लागल अछि आ सेहो बिना कोनो कष्ट केँ। एहि अपूर्व काज लेल हिनका सब केँ साधुवाद । विषय सँ विषयांतर नहि भ' जाइ तेँ घुरि अबैत छी कथाकार अशोक जी पर।

ओहि रातिक भोर सन् 1991 मे, मातवर सन् 2001 मे, आँखि मे बसल (यात्रा कथा) सन् 2013 मे आ ओतीगाम सन् 2017 मे प्रकाशित भेल। आइ हम अपने सब सँ चर्चा करब हिनक कथा संग्रह 'ओतीगाम' पर। नवारम्भ प्रकाशन, पटना सँ सन् 2017 मे प्रकाशित कथाकार अशोक जी कर पोथी 'ओतीगाम' मे कुल 15 टा कथा शामिल अछि। एहि पोथीक प्रथम कथा 'लाथ' एक साधारण कथा लागल। कथा नायक प्रोफेसर साहेब एकटा कुर्सी खरीद क' अनैत छथि आ ओहि पर सबहक केहन प्रतिक्रिया रहैत छन्हि तकर नीक चित्रण कर छथि। दोसर कथा अछि 'छल'। को-आपरेटिव सोसाइटी कर आम सभा मे डेलीगेट सब केँ स्मृति स्वरूप एकटा ब्रीफकेस भेटबाक छल तेँ को-आपरेटिव सोसाइटी कर अध्यक्ष अपन मित्र भोली मा केँ फर्जी डेलीगेट मुहम्मद असलम बना क' ल' जाइत छथि। भोली मा एकबेर अपन गामक नाटक मे

बहादुर शाह जफर कर यादि रखने छलथि आ हुनकर खूब प्रशंसा भेल छलनि। अहिना डेलीगेट मुहम्मद असलम कर किरदार नियत लाइके मे निशा रहल छलाह आ सब पूछ त' अपन किरदार मे जबरदस्त ढलि चूकल छलथि। वास्तव मे जीवन सेहो एकटा नाटक त' छैक। एसन कथा अछि 'स्वाधीन' जे कि आजुक नारी सशक्तिकरण पर अछि। अजय-जया कर प्रेम विवाह होइत छन्हि आ जया कहैत छथिन्ह - " हम अहि सन्तान क जन्म नहि द' सकैत छी। " अजय पूछैत छथि- "किए जन्म नहि द' सकैत छी?" जवाब मे जया कहैत छथि- " पतिक बलात्कार सँ उत्पन्न संतानक माय हम नहि बनय चाहैत छी। एनि जन्म ई अपमान हम नहि सहि सकैत छी। " एक पिता-पुत्र आ पति-पत्नीक संबंध मे द्वंदक अद्भुत चित्रण भेल अछि अहि कथा मे। चारिम कथा अछि 'ऊ दुनू साइकिल सिखैत अछि'। दंगा आ कर्फ्यू सँ ग्रस्त शहर मे दुटा बच्चा भाठा पर साइकिल ल' क' चलनाइ सिखैत अछि आ एकटा मुसलमान कँ धक्का लागि जाइत छैक। नीक बजाय लोग त' सब धर्म मे रहैत छैक।

पाँचम कथा कर चर्चा अन्त मे करब चाहब। छठम कथा अछि 'नाग'। इहो कथा हिन्दू मुस्लिम कर धार्मिक एकता पर आधारित अछि। सातम कथा अछि 'लेमन आइसक्रीम'। परदेसिया बेटा जिनकर गाम पर कोनो संगी साथी नहि छैक एकर गामक यात्रा आ वापस शहर आबि अपन पिता सँ गामक चर्चा कर नीक चित्रण भेल अछि। आठम कथा अछि 'उमकी'। दु बाल सखा प्रकाश

एवं दिनेश कँ बहुत सालक बाद भेँट आ बालपनक नास्टेलजिक स्मृति करैत सजीव वर्णन भेल अछि। नवम कथा अछि 'मनसूबा'। आइक प्रगतिशील युवा पत्नी करैत होअ एवं आधुनिकताक चकाचौंध मे न' त' अपना लेल पलखति छन्हि आ न' त' माता-पिताक मनसूबा पूर करबाक लालसा। दसम कथा अछि 'अहयक बटा कँ दुटा दाँत भेलनि'। गामक यात्रा एवं स्मृति सँ जुड़ल कथा। अपन गाम मे गाम खोजैत लोकक कथा। बाढ़ि मे गाम मे आब गाम कहाँ बचैत अछि। गाम त' बचैत अछि आजी आटीक जगह मे प्रवासी बनल लोकक हृदय मे।

एगारहम कथा अछि 'खुशीक नाम जीवन'। विधवा युवा करैत खुशी मे अपन खुशी खोजय बाला माता पिताक कथा। आइक बदलैत सामाजिक परिवेशक कथा। बारहम कथा अछि 'टीस'। नारी सशक्तिकरण करैत पाल खोलय बाला कथा। विमला अपन पति कँ देखि सदैव शोषित बाध करैत रहलीह आ हुनकर पति लक्ष्मीनारायण हुनका बस मातिक मूरत बुझैत रहलनि। वृद्धावस्था मे लिखल लक्ष्मीनारायण कँ बचल मात्र कागज कलम पर बनल का-आयनटिन साम्राज्ञी करैत अधिक विमला पुलिसक गिरफ्त मे पड़ि जाइत छथि। जेल मे गेलाक उपरांत विमला कँ बोध होइत छन्हि जे बर्तमान त' सर्वोत्तम बर्तमान होइत अछि, बाद कोन होइ कि बादहि। तेरहम कथा अछि 'छुट्टीक एक दिन'। अहि कथा कँ पढि कालकाताक कारसिकी हाउसक अनुराग मान पड़ि गेल। मैथिली साहित्य पर चर्चा हेतु मैथिलीक एक साहित्यकार साहेब कँ घर पर उपस्थित

होइत छथि एक नव दम्पति अंकिता आ अभिनव आ प्रासंगिक परिचय पात कें बाद आइ छुट्टीक दिन शुरू होइत अछि साहित्य पर चर्चा। साहित्यकार महोदय मैथिली मे किएक लिखैत छथि ताहि प्रश्नक जवाब मे कहैत छथि- " साँचे छी मैथिली मे, तेँ लिखै छी मैथिली मे। " उनाहुना मैथिली अपन मातृभाषा थीक। मगर अभिनव कहैत छथि- " लेकिन सर, मैथिली अपन भाषा नहि कहाँ गेल छैक जखन माउँक अपन धिया पुता सँ मैथिली मे गप्प नहि करै छै त' आ अपन भाषा कोना होएत?" अंकिता साहित्यकार महोदय सँ पुछैत छथि ज जौं कोनो प्रेम कथा मैथिली मे पढ़बाक हो त' कोन किताब पढ़ी? अचानक सँ कोनो किताबक नाम हुनका मोन नहि पड़ैत छन्हि। वास्तविकता छैक जे अइका साहित्यकार कें अपन रचना कें अलावा अन्य साहित्यकार सबहक रचना पढ़बाक कोनो प्रयोजन नहि बुझाइत छन्हि। वर्तमान साहित्यकारक रचना कर प्रश्न पर सवाल उठैत अछि तखन साहित्यकार महोदय कर पत्नी नीलम सेहो अहि चर्चा मे शामिल होइत छथि चाय आ भुजल मखान कर संग आ बाजि उठैत छथि- " मैथिलीक साहित्यकार के एक वासनाक अदगोइ-बदगोइ सँ फुर्सत होइन तखन ने पढ़बा जोगर रचना करताह। "

चौदहम कथा अछि 'नामक कारक होइब'। बर्बाद होइत पर्यावरणक आ ताकर दुष्प्रभाव कर नीक चित्रण भेल अछि। प्रकृतिक संतुलन बिगड़ि गेल अछि आ आधुनिकताक होड़ मे साँस लेब दुर्लभ भेल जा रहल अछि मुदा हमरा सब लेल धन्न सन। वास्तविकता त' इएह

अछि जे गामक नामो निशान मेटा गेल अछि। अन्तिम कथा अछि 'एना हे' क' किया'। बड़का हाकिम चौधरी जी कें अधीनस्थ कर्मचारी सब हुनकर कमजोरी कें गमि लेने छनि आ सब मिलि हुनकर परिहास मे जुटल रहैत छथि। चौधरी जी कें पचपनक उमिर मे बचपन वाला हुनका देखि संजय कें ग्लानि होइत छन्हि मुदा चौधरी जी कृष्ण आ गोपी कर नाच मे कृष्ण बनि जागल मे स्वप्न देखैत रहैत छथि । एक दिन जखन संजय कें बर्दाश्त नहि होइत छन्हि त' अपन बड़का हाकिम चौधरी जी कें आँखि खोलबाक अभियान काज करैत छथि आ चौधरी जी हुनका गला सँ लगा लैत छथि।

कथाक विषय मे अपन बात कहैत काल क्रम रंग करबाक कोन प्रयोजन छल से साफ भेल होयत। पंचम कथा कर शीर्षक रहल 'तेतीगाम' आ हुनकर कथा संग्रह कर सेहो इएह नाम अछि। कथाकार अशोक जी कर रचना संसार मे एक-सँ-बढ़ि एक अनुपम कथा सब अछि। पढ़ैत काल कोनो कथा कें बिनु खतम कयने पोथी छोड़नाइ मुश्किल अछि। सब कथा वर्तमान सामाजिक परिस्थिति पर लिखल बुझायत। हुनकर कथा सब मे यथार्थ कर दर्शन होयत, कल्पना लोक मे इ विचरण नहि करबैत छथि। पंचम कथा कर विशेषता हमरा इ लागल जे यथार्थ कर संगहि अहि मे आदर्श सेहो झलकैत अछि। गाम गाम ठउआ ठाकी मन्दिर बनि गेल छैक आ वास्तविकता त' इएह छैक जे उहि मे पूजा अर्चना करय वाला तक कठो नहि रहैत छथि। दासन गप्प जे आइक समय मे लाग

सेवानिवृत्ति कर उपरान्त घूमि क' अपन गाम नहि आबय चाहैत छथि आ एहन मे हुनकर रघुवंश लन्दन सँ वापस गाम लौटैत छथि आ संग सपरिवार। ई जे अपन माता-पिताक मृत्युक उपरान्त गाम नहि अबैत छथि तिनका अपन मातृभूमि मे जीवनक अन्तिम क्षण बिताबय कर इच्छा जागृत होइत छन्हि। अपन गाम पर सीतानामक एकटा मन्दिर बनाबय केँ विचार ल' क' गाम पहुँचल छलाह। एक तरफ हुनकर साहब कर बड़का पुत्र सुन्दर मन्दिर निर्माण कर अभियान मे लागल रहैत छथि, त' दोसर तरफ छोट पुत्र मालिक टोल टोल घूमि लोग सब सँ भेँट कय मिथिलाक संस्कृति आ साहित्यिक चर्चा मे। गाम आबय सँ पूर्व मालिक अपन पिता सँ पुछैत छथि जे - "मिथिला मे एतेक गरीबी किएक छैक? जबाव मे हुनकर साहब कहैत छथिन्ह- " अपना ओहि ठाम गरीबी केँ ग्लैमराइज करबाक परम्परा रहल अछि।" मन्दिर निर्माण केँ लेल गामक लोग सँ एक बेर विचार करब जरूरी बुझि पड़ैत छन्हि तेँ ओहि मादे विचार विमर्श हेतु गामक संस्कृत पाठशाला कर प्रांगण मे एकटा सभाक आयोजन होइत अछि। गामक लोग मन्दिर बनबाक खबर सुनि क' प्रफुल्लित छलथि मुदा मालिक कर किछु नवका नवतुरिया साथी सब सभा मे प्रश्न ठाढ़ करैत छथि जे मन्दिर बनला सँ गामक कोन उपकार होयत? ओहि केँ स्थान पर स्कूल, कालेज अथवा अस्पताल किएक नहि बनाओल जाय जाहि सँ गामक उपकार होयत? पुनः सभा मे किछु लोक मन्दिर त' किछु लोक अस्पताल क पक्ष मे बँटि जाइत छथि। अपन बाल सखा रूकन केँ विचार अस्पतालक पक्ष मे सुनि हुनकर साहब अपन दुविधा केँ खत्म करैत गामक बगना आ अपन अनुरूप केँ ध्यान मे राखि स्वेच्छा सँ अपन

गाम म अस्पताल बनेबाक निर्णय लेने छथि। सरल समाज हाल्ल्न अछि आ सुन्दर अस्पताल निर्माण कनै डानिआडान म झटि जाल्ल्न छथि। गाम म नहि मुदा आसपास कनै गामक लोग सेहो ल्ली खबन सुनि प्रसन्न हाल्ल्न छथि। ताक्न नघुनंश अपन गाम डा माटि यानि म अन्तिम साँस ल' सकथि स साचि गाम अपवाक निर्णय लनै छलथि मुदा जखन सँ अस्पताल बनयबाक निर्णय ललनि अछि जीवय कनै सिहन्ता बढि गेलनि अछि आ अपन पत्नी सँ कहैत छथि - "गाम मनवाक लल नहि, जीवाक लल हाल्ल्न छैक।"

- संपर्क-9472834926

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.कुमार नाहुल- मैथिल आँखि सं डेङीगाम देखवाक सहेगा (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया)



कुमान नाहूल

मैथिल आँखि सं उँतीगाम दखवाक सहँगा (कथाकान अ(शोकक कथा यन ७करा याOकीय हस्फ़उय(

मिथिला म खिस्मा कहवाक प्राचीन संस्कृति नहलैं७ आ खिस्मा - कहवाक ज लुत्क आ कला छैक तकन प्रहाव मैथिलीक आधुनिक वैचानिक स्फन यन हानसीय .कथा साहित्यक यनंयना वनि (गल साहित्य सं कदमगाल कगैत नहलाक वाद मैथिली कथा साहित्य 'कहन' म अलग नहलअछि :संरचना . 'दखन' कं कांचीनाथ मा किनध, अ(शोक आ निस्ुति आनंद प्रसृप्ति मैथिली साहित्यकान 'मैथिल आँखि' कहैत छथिउ संदर्भ म ज वनिष्ठ . कथाकान अ(शोकक कथा कं दखी तं दृष्टिक ७क नव दृआनि खुजैत कथाकान अ(शोकक कथा यढलाक वाद सूनवाक सहँगा .दखा यउग .जगवैत छै

कथाक नूयक यनिमार्जन आ उकन सामर्थ्यक निस्फान मैथिली कथा साहित्य म हाठ्यूत नहलै .अ(शोकक कथा उ सं हनाक वै नहल .७-कथाकानक सहलता या असहलताक निर्णय कनव तं कठिन, मुदा ॐ तं मानल जा सकैछ ज अयन यनंयना सं प्रहाव ग्रहध कगैत

अ(शाकक कथा अलग लीक वनवैंगहिनक प्रार्नरिक कथा हमना . हिसावें ह७वठी म लिखायल वूसा॰॰ छै आ कषीकषी हार्मुलावद्ध -सहा, मूदा ॰॰ कथाकानक प्रार्नरिक अयास नहल हा॰॰गनि ज 'हयनयिन' सं 'वौका चूय अछि' हा॰॰ग 'ठेठी गाम' गक यहुंचलजं . ठे गीनू कथा कं एक संग यढी गं अलग नहिगा नस निस्यफि एक वाना-सामाजिक गाना-गीनू कथा मिथिलाक यानिनानिक .वूसा य७ग कं दखवैग ठेघन महीन वदलाव सं अहां -जं मिथिलाक गाम . यनिचिग छी, गं ॰॰ कथा सर समयक नडु कं जनवाक लल थर्मामीटनक काज कनायैह वाग मैथिली कथा कं मैथिल आंखि . ॰॰ गीनू कथा गीन ध्रुव यन ०।८ .सं दखवाक लल प्रनिग कनैग छै गीनू गीन कथ्यक संग आगू वढैछ .ठे, मूदा ॰॰ वूसा जायग ज ॰॰ अ(शाकक कथा थिक, ज य८वा सं वसी सूनवाक ॰॰श्च्छा जगवैग छै . हयनयिन म कामल रावना अयन चनम यन ठे गं वौका चूय अछि म (शाषद्यक एकटा अलग गनीका दिस समाज कं ॰॰गिग कनैछ गीनू कथा .आ ठेठी गाम वदलैग समयक दस्मावजी कथा थिक अ(शाकक कथाकान मन कं मायक लल वैनामीटनक काज सहा क' सकैछहयनयिन य८ला सं यहिन लागग ज कथाकान कं वहुगा . हुनका लग वहुग नास खिस्सा छनि .गय कहवाक छनि, मूदा ओ कहि नै नहला अछिगहिना .किछु यंकि सं काज चला ललनि . वौका चूय अछि म एक संग वहुग नास कथ्य छै, जकना निस्मान ययवाक छलै, मूदा कथाकान काना ह७वठी म छथिओ यूना वाग . एकन कानद्य ॰॰ र .खां॰॰चा छा७ा कं नै कहलनि' सकैछ ज जखन ॰॰ कथा लिखल (गल ओहि समय म यैह यनियाटी नहल हा॰॰ ज सव किछु नै कहल जा॰॰ठे .जं कहला जा॰॰ गं किछुए यंकि म .

वाग कँ वल अद्व सं रहि सकेंत ज अशोकक यहिल कथा संग्रह सं वसी दासन कथा संग्रहककथा म हूनक कथाकान मन विस्मान याउलक अछिगेया कम्भो न कम्भो .गसन संग्रह म आना वसी . हूनक लगरंग सर कथा म एकटा हजवजी अथवा अधुनायन उना येह अधुनायन अशोकक कथा साहित्य कँ .वूसा यउ छै एकान दासन यउ सहा छै .यढवाक लल उकसविगा छैक, ज अशोकक कथा कँ अलग यहवान देछउा थिक कथा म कविता . कम शब्द म विंवक प्रयाग कनेग अयन वाग .सन सूकवद्व यंकि .ॐ वाग अशोकक कथा साहित्य कँ यउेग जानल जा सकैछ .कहव सिद्दीयिन कथा म कविता रानक कम प्रयाग छै, वोका वूय अछि म उॐ सं वसी आ उेजी गाम म गद्व सं वसी.

ख्यान दवाक गय ॐहा छैक ज अशोक जं एक दिस मार्क्सवादी निचानधाना सं प्रशानिग छथि गं दासन दिस क्रांॐउक मनोविस्मान सं सहासामदनक साहित्य सं प्रनधा -हिनक कथाकान कँ धीनंद्र . रहेग छन्हि, गं नाजकमल चौधनीक साहित्य हिनक मान कँ सहा मथेग छन्हिॐ वीचक नस्मा अयनवेग छथि आ अयन कथा चा .स गेयान कनेग छथि.

उेजीगाम संग्रहक छह कथा कँ हम यढवा सं वसी सूनवाक ॐछा नखेग छीॐ हमन याOकक सीमा सहा र .' सकैत, मूदा ॐहा मानल जवाक चाही ज मैथिली कथाक ज खिस्सकन यनंयना छै, गकन वाहक अशोकक कथा उे, अर्थाग खिस्सा कहवाक कला अशोकक यनियक्ष कथाकान मन अर्जिग क'चूकल उे आ येह अर्जन मैथिली कथाक

संयन्दि थिक.

हयनयिन म नागि छै, गकिया छै, नीन छैसरएटा ওकटा विंव ...
उाहिना वोका वूय अछि म नागि छै .सन उरै छै कथा मध्य, नीन
छै, गकिया छैमूदा हयनयिन सं आगुक वाग ॐ कथा अयन ...
वोका कं वीमानी छै .विंवक माध्यम सं कहैও, सहा क्रदय नागउा .
ॐ कथाकान चाहिगथि गं स्पष्ट कहि सकैग .क्रदय वला लाक ওे
छलाह ज रूलां नाग, मूदा नैउाकना काना आन असाध्य नाग नै .
छै, क्रयक नाग छैयूना कथा क्रदय सं शुनु हाॐ छै आ क्रदय .
ওगय हयनयिन सं आगु वढि कथाकान ওकना .सं समाप्त
सामाजिक निक्कूयगा आ (शाषण दिस ल' जाॐ छथि, सहा नहूंও सं .
समाजक उा सांय ज ওखन .अजाध सांय .वोका कं सांय उसलकै
ॐ कथाकान चाहिगथि गं ওकना वीमानी .धनि रून काढन अछि
सं सहा मानि सकैग छलाह, मूदा गखन कथाक टान वदलि जॐॐगै
आ अर्थ निस्फान उागक व्यायक नै ए' सकिगैकजं ওे कथा कं .
नहूंও सं कामल ठंगः निस्फान नै दल (गल नहिगै गं संएन ज ॐ
कथा 'अंगिम शह' शीर्षक कथा सन लगिगैॐ कथा :संएनग .
.नक्सलवाउी आंदालन सं उयजल साहित्यिक प्रगिशाधी स्नन कथा थिक
हमना व्यक्तिगग नूयं ॐ कथा यसिन्न ওे .ওकदम ॐकलावी कथा, मूदा
ॐ खिस्रा नूयं अहां ওकना यढवै, गं ॐ उागक प्रएाली नै लागग .
वोका वूय अछि कथा सहा (शाषणक वाग कहै छै, मूदा सीधे
नै, विंवक माध्यमसमाजक अजाध कना निम्नवर्गीय नर्ग कं उसि .
नहल छै, गकना विंवक आननঘ म कथाकान कहैग छथि.

ह्म ९कना ङं दासन शट्ट म कही गं कहि सकैग छी ज अ(शाकक कथाक गानीरूननी सवसं यहिन मिथ-िलाक जीननक यथार्थक रूमि कं सांकगिक नुय म निर्वाह कनै९हूनका याछ्ठ अयन कथा कहवाक . निनाट यनंयना गं छहिं९, दासन दिस दाखनल नर्गमान सहा . नहनुकालीन स्वप्न युना नै रलाक वाद माहरंग आ गक वाद निव्राह, हन डाहि निव्राह अननगि आ गकन वीच म कथा कहवाक हिस्मकहिम्मग-ि अ(शाकक कथा कं ९क अलग मुत म ल' जा॰॰९ . मानक टूटन -९क दिस सामाजिक आला७न आ दासन दिस दह अलग धानाक निशेषगा कं -यनय्यन नियनीग वूसा य७ग दु अलग साधव ९कटा साहसिक काज छल ज समन्विग नुय सं अ(शाकक गैं हूनक किछ्ठ कथा स्कूल :संरूनग .कथा संसान म दखा य७छ आ किनका डासनायल वूसा सकैं९, मुदा कथाकान अशाक मैथिल समाजक मांसल रूमि कं कगैकगी छाि नाक्ष संकग सं ९कना -युना कनैग छथि, जैं सं कथ्य नस्पा नै रटकैं९ आ यैह कानक्ष छै ज हूनक कथाकान नुय आलावकीय नुय कं छाि अलग नस्पा चूनै९किछ्ठ कथा म कलाभक प्रराव यन दृष्टि नखैग डा अयन . वाग अरिधा म नै कहि कं ९क संकगक नुय म कहैग छथि . यथार्थक .गैं हूनक लखन डासनायल प्रगीग हा॰॰छ :संरूनग प्रामाधिकगाक संग सांकगिक प्ररानाल्विगिक समन्वयकक सरट प्रयत्न सरहल रल हा स हमन कहव नै ७, मुदा कगाक कथा ९हन ७, जैं म ७ निशेषगाक निर्वाह सरहलगायूर्वक रल अछिडाहि . नागुक रान, वौका चुय अछि सन किछ्ठ कथाक नागायन सजीन आ सक्रिय चनिग्रक नुय म प्रजगीक निर्माध कनै९.

ऄना ए'क' किया, गामक कागक द्दाॢ्न वदलैग समाजक गद्द कँ यकउैग ऄ, गँ ऄएयक वटा कँ दुटा दांग एलनि, खुशीक नाम डीवन, टीस सन कथा मान ऄा यनिवानक गद्दींन ॢ्नानक एछन दखवैग ऄऄर्थाग मान ., यनिवान ऄा ऄंगगसमाजक नड्ड कँ : समाजक वीमानी कँ ऄ(शाक .ऄ(शाकक कथा नीक जकां यकउैऄ कथा यकउैग ऄछिऄ, कगी .कगी निदानक नस्पा सद्द दखवैऄ- मनक निकृगिक चित्रध क-ऄ(शाकक कथा कगी मानव' डाॢ् वागानन्धक एयानदगाक संकग सद्द द्देऄ, ज डादि निकृगि कँ जन्म द्देग ऄकिछ्ठ 0म ऄक चनित्र ऄथवा ऄक वागानन्धक चित्रध सं . गँ द्दम ऄकटा या0कक .कथाकान सलाद्द दवाक प्रयत्न कनैग छथि .नुय म कद्दि सकैग छी ज ऄ(शाकक नवना संसान ऄकांगी नै ऄ .डा ऄकटा सुन्नन संसान नववाक गैयानी सद्द कनैग दखाॢ्ऄ

-संपर्क-8825288748

ऄयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन य0ाडा**

२.९.लाल देव कामत- कथाकार अशोक माद



लाल देव कामत

कथाकार अशोक झा

मैथिली साहित्याकाशमे एकटा ऐहन नाम उभरैत आयल अछि कथाकार अशोक। नामहुँसँ अर्थ लगाबी त,जिनका नै कोनो तरहक नहि छै शोक। से एकटा बुजुर्ग असाधारण व्यक्तित्वक अशोक कुमार झा,जिनक मधुबनी जिला आ दरिभंगा जिलाक मिलन स्थान प्रसिद्ध लोहना गाममे 18 जनवरी 1953 ई0 मे जन्म भेल छन्हि। 50 सँ अधिक कथा लिखनिहार मिथिला मे अपना रचनाकार भेल छथि। यएह नाम सँ पहिल कथाकार रूपेँ ख्याति हिनकर भेटलनि अछि। मैथिली साहित्य आन्दोलन मे जेक जानल - पहचानल आ मानल कथाकार भेलाह अछि, ताहिमे सबसँ पहिल ओ लोकनि कविता गढ़लनि; पछाति कथा दिसन उन्मुख भेल छथि। समय आनन्दिक लड़कपन हिनकामे देखमे अबैछ। मूर्धन्य विद्वानक ज्ञान बनारस मे होइत रहैक। ओतय मैट्रिकमे पढ़ैत करियाकल अशोक जी सभा रूपेँ कविता सुनल करथि। से मनमन हिनका किछ-किछ हुनाइत रहय आ ई ताहिक शब्द आ वाक्य रूपेँ अपना रह कागजमे उतारथि। हुयन करैत बाटीक विद्वान लोकमे अपन रचना देखाकय संशोधन करावथि। आनन्द मे हुनक रचल साहित्यक पन्ना क अपनेहे हाथे हानि देवाक आदेश सेहो होइन,जे कष्टप्रद लागैन। तैयो विद्वजन क बीच अपन मौलिक कविता ल'क' पाठ करवाक अवसर भेटनि। मुदा तव लोक छलाह,से कविताक काज छोड़ि किस्सा लिखय ल निर्देश भेटलनि। एही मान सँ लघुकथा - कथा लिखकय देखवाक अनुभव प्राप्त कयलनि। सन् 1960 सँ 68 धरिमे 10-15 कविता गोष्ठीमे सुना चुकल छलाह,जे धियापुता पत्रिका आ

मिथिला मिहिर मेँ कतेक दर्जनोंनि कथा छीनछ जीक देखलाक बाद 1971 दिसम्बर अंकमे छयलनि। 1980 मे हिनक कविता संग्रह चक्रव्यूह आयल। अशोक जीक कविताक वनशब्द कथाक लोक वेशी यसीन करैत। गाम-घरमे लोक अपना नानी - मैयाँ, नाना - बाबा मुँहेँ बालयन सँ मनलग्गू खिस्सा नाणिम सुणि सँ यहिल सुनल करय। ओही हिस्सक नहुत यत्र - यत्रिका मेँ कथा यढैत याठक तृमि जाथि। ओना कथा लखन कार्य युराय सँ आयल अछि, ओ वर्तमान समस्या केँ कन्द्रम नाखि लिखल जाइक। कुनीति उन्मूलन - यतन संदर्भम कथा लिखवाक प्रचलन वढल। करुण कथा सँ हनिमाहुन मा व्यंग कथा दिसन आगु वैढ नव ढंगक कथा यनसवाक यनियास याठक लग आनह कयलनि। स दरवा-दरवी आधुनिक कथा लखन क्रम चलैत गेल । एकनवाद छठम दशक सँ समकालीन दौर चलल अछि। कथाकार अशोक'क मत छन्हि- " 40 ई० सँ पूर्व करुण रावक नचना हाय,1940 - 50 कन वीच खुब ममटगन कथा लिखवाक मैथिली राषा मेँ यनियाटी रहलैक।" देश स्वतंत्र रहलासन्ता आमूलचूल यनिवर्तन'क नव - नव विषय यन कथाकार लोकनिक ध्यान ओठलनि । विहार सरकानिता सवा (1978) मेँ यदाधिकारी रूय सँ काज करैत, आव सवानिवृत्त रहल छथि अशोकजी। हिनक कथा लखन क्रम अनवरत चलैत नहलैन, आगुओ चलैत नहत । हिनक प्रथम कथामे शुमान "विनाम सँ यहिल" छैक। ओना नचना सक्रियता वढौलनि 'वौका चूय छल' नचिकय। ओखना मैथिली राषा मेँ कथा प्राय: ओ कानू नचनाकानक नीक लागैत छैक, तँ ओहिक याठक एकन नसास्वादन करैत रहलक कन कथा यन स्वंय राव सँ हँसनाई - कननाई वा जान-जान सँ हँसव,नादन करय लागव; ई तँ

अन्द:करणक कर असर होइछ। घासर वाण ज कथाक गरहेन जौँ ग्रंग यनक होइछ गँ पाठक अध्ययन- मनन करैत काल उहिक आशाक प्रशारम आबि उज्वलित होइछ। पाठकक उयन ज मानसपटल कँ गुदगुदी लगैछ स मूर्छा दना ल नहि-नहिक जान मारैत छैक। कनिता सँ कथा दिश उन्मुख होइत नहल अशोक जीक शनुआदि यनिवश कथा मात्र कडीत नहल। हुनका निषयम ना कहू ज हुनक कथा निषयम जौं मनायाग पूर्वक अध्ययन काय उहिक नाम्हनिक अखियास कनव,नाह पाठक हुनक समनयसक हाथि ना ज्येष्ठ-कनिष्ठ हाथि यठाकू लल सम नगन सँ दखैत छथि। यठाकू ना अध्ययनशील लाक कथाकान अशोक कँ 21म् शताब्दीम आन लखकक तुलनाम खूब यरैत छथि। श्री दीर्घ कथा यात्रा यन छथि। एखन वहुत किछ आना लिखव शेष हुनक निजी अरिष्ठ छथि। ननानरुक प्रकाशक अजीत आजाद अयन मधुवनी उनायन हमन यनिवय कनावैत हुनका कहलकैन - श्री लाल दन कामत हमन गामक संगी छथि आ हमन दुश्मन नहिँ छथि। संगहि श्रीहा वालकानि कामतजी मैथिली जगतक नव यूनान लखक यन अखेता छथि। उना ननध्र साहित्यकान जगदीश प्रसाद मंडल जीक गाम वनमा मँ आयाजित सगन नाति दीय जनय 'कथा गोष्ठीक' अवसन यन सहा आ कापका ठाम अशोक जी सँ स्टघांट स्ल अछि। हिनक नकाव्यम सुनन छी -: वसीतन ग्रामीण उत्तम कथा गोष्ठी " सगन नाति दीय जनय" कार्यक्रम आयाजन होइछ,जाहि सँ नव कथाकान वनैत अछि। " कथा पाठ कयलाक नाद लखक कँ समीक्षक लाकनि उहि कथा यन सामा सामीम अयन नव विचान प्रनाहित काय कथाक त्रुटि यन ध्यान दिअवैत छैक। आव गँ दीना आ संध्या काल उहि तिथिम

कथा प्रसंग आन - आन ठाम सेहो बैसारीक आयोजन हुअय लागल रहल। अनियमितकालीन संधान पत्रिका माध्यम आ संपादक होसियार सँ 'उपमान' त्रिमासिक साहित्यिक पत्रिका सँ अलख जगवाम अशोक जी मैथिली भाषा अभियानीक बीच अगुआलाह अछि। ओ बहुआयामी व्यक्तित्व क धनीक अशोक जीक खाताम हिन्दी क' समीक्षात्मक आलेखक प्रसंगक संग हिनका यशस्वी रचनाकार, कथाकार,कवि, सम्पादक,निबंधकार, ग्रंथकार आ आलोचक रूपेँ जगजियार र' लोकक बीच विख्यात छथि। हिनक चर्चित पोथी -: मैथिल आँखि (निबंध संग्रह) दाम 69 टाका, कथाक उपन्यास - उपन्यासक कथा (नावल) दाम 75 टाका , उँठी गाम (कथा संग्रह) दाम 200 टाका,बाट निहार (निबंध संग्रह) दाम 150 टाका , नीक दिनक बाट्टीक्षाय (लघु कथा) व्यंग संग्रह किमत 50 टाका आ आँखिम बसल (यात्रा कथा) दाम 150 टाका 'क मैथिली मेँ छन्हि। मैथिल बीच दृष्टिसम्पन्न रचनाकार अशोक जीक उद्दि नागिक भान, मागवन कविता संग्रह आ चक्रव्यूह निकलल छन्हि।

अशोक जीक गानयूना कथाक बानगी ऊ गनहक होइत छैक,यथा -: खर्चा आ आमदनी 'क लेखा जोखा संधानक लल सरकारी कार्यालयक ऊँतिट करय सँ विनाद बाबू छीहकेँ नहेँ छै। हुनका बस- ट्रेन मेँ सउक सँ यात्रा करैत आ आरा जगह तथा घराम आनाम सनिया कँ नहिँ होइत छै। घनक संसटि गँ आरा जानमाना बूझाइत छै। आफिस सँ आतिट काज करय उनाम अपलायन येतु सटैक बटन होलैत काल अप्रवस्थित होइत छै। लुंगी बदेलैत घरी टूटल बटन देखि पत्नी नमनोहेन ठाठ क' देइत छैक। पति-पत्नी

क' बीच नाश्कृब्ध सँ थाह चलैत छै जे दाम्पत्य जीवन नांकभांक सँ रनल छै। यनिक लाहछव नाधी जना वनठी राकल जाऽन हाउ। वटनां नँ आखिन यन्नी माया कँ टांकि टँच कनय यटैन छै। जेहनसन विकट स्थिति सँ वढल उलभन हन सँ मिलानम यनिधन हाऽली छै। एकवन यूर्थिया सँ आतिरन महादय घन अवैत छै, नँ नतिया यन प्रसानिन गीन ...वनक चकाठी........वजैन सूनैन या। ऽली गीन सूनि 15 साल यूनान समयक दृश्य मान यटैन छै। ऽयह गीन न निनाद वाव् मायाजी कँ यहिलखय गावि सूनौन छलैक। आ गीनक नस मूनी ग़ानिक माथ मुकौन माया गंरीन र' सूनन नहथिन। 15 नर्षीय वटा आव सहा संगीन सीखय चाहैन छैक। वालयनम अयन वावूक ज्ञटमिल वाला ननाम नहथि नँ डानय अयनां संगीन यढय गुधे चाहन छलैक। यनँच अंग्रेजी आउान गधिनक' नीक स्नान नहन, नाधा कृष्ण मंदिन यन आयल गानवजान मंडलिक गवैया दखि मानम आयल नहैन मूलगाऽलीन वनी। मूदा वावूजी गैयान नहिँ रल नहैक। हुनका नाकाल जे भिन नवानी सूनि आयल नहथि, स याँनि गवैन ....गोना गीन अंगना..अयन मी0 कं0 सँ यिनाजी कँ सूनौन धनि नहय। यिनाजी वंगाली टालक घोषवावू लग जाकय संगीन साँभखनक दूऽली घंटा २० टाका महिना दन यन नियमिन सिखवाक निश्चकी वान कनावैछ। यनिनानिक आन-आन खनचम कयैच वीश टाकाक जेनियान नँ वड कठिनना सँ र' सकलैक। आव की हा! नन वखना समझ ठाढ हाऽलीछ, सूनसाक मूंह वौना। स घनलू कान खर्च नानल जाए जाहि सँ २०० टाकाक हानमूनियाँ नैका आनल जायन ! एकटा किहायनी ज्ञगन धननैन यूनना मूस कटवा वाजा मँ माम सँ नुनकी रनि काज निकालवाक

निर्वाह योजना बनलैक। तखन एखन आब अभ्यास शुरू कएने सरगम गाबैक लेल सुर सँ लगनपूर्वक मेहनतिक आवश्यकता रहैक। से छूटि गेला सँ संतोष नहिँ होइत छैक। आब तँ पिताजी जहाँगि आर्थिक अभाव नहिँ छैक। तँ सहजहि सँ अपन दूनू बेटा गौतम केँ अलगसँ नियोजन कराओल। पत्नी सँग अंग्रेजी सिनेमा देखबाक एक पृथक आनन्दक अनुभूति होइत छैक। से आइयो पत्नी सँ विवाद बाबू आग्रह कएने छथि जे चलू रानका उखनाहाक शो मेँ ब्लू फिल्म देख अबैत छी। पत्नी निश्चय रहैत बजैत छथीन हम अंग्रेजी सिनेमा नहिँ देखय जाएब। ओइठाँ नारि सौंदर्यक लाज सब हमरा दिस घूरैत- घूरैत निहारैक। गँ घरम वीसीपी आनि फिल्म देखबाक नियम राखि होइत छै। पनंब निवान मँ पत्निक सम्पुष्टि नहिँ होइत छथि। कारण एहन फिल्म यानिवानिक नाएकनायक म देखब उसक - अनसोहान्त बुझाइत छै। अगिला मास सँ पुत्र गायत्री [illegible] मल्लिकजी सँ अलगसँ संगीत सिखत। मुदा येह हाकिम बनैत छी संगीत - गीत सीखनाइ बत बाधक रह सकैछ। ओ बाप एखन दूनू प्राणिक बीच विशेष नूयँ सहज सहमति बनि जाइत छै। साजबाज आ गीतनादक रहन पति बटा बंगट बनै सँ थरैत या। मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ एक समय एहना आओल जाहिमे कथाकार अशोक कर नायक कथा आ अशोक सँ पूर्वक कथा बीच अशोक युगक कथा विधा एखन सम्यक विमर्श होएत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.हरिनाथ झा- कथाकान अ(शोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक वायश्वाय



हरिनाथ झा

कथाकान अ(शोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक वायश्वाय

व्यंग्य लिखब अ्सान गय नहिँ छै। ई यन 0ाहि-य0ाहि । महाग मूश्किल। ई्री वाग श्री अ(शोकजी स्वयं कहैत छथि मूदा सहा काज अ्खवान हिन्दूस्तान,हिनकासँ कनवा०ं७ ललकनि।एलं ई्री अ्यनाकँ कथाकान मानथू (मानिग छथि,ईं न हसवूकयन अ्यन नामक यहिन कथाकान लिखन छथि) नीक कन छथि,हिनकन नामधानी अ्नका हसवूकयन छि7आयल छथि,ई म,हिनका विकछायव क0िन काज

रुय सकैत छलैक् सामान्य याठकर्कँ, स काज ओ स्वयं कय रुन छथि ।

ओ स्वयं नहिँ,मैथिली साहित्य संसान हिनका मैथिलीक विशिष्ट कथाकान मानि चुकल छनि । मुदा ओहा वान सत्य ज हिनकन अध्ययनशीलता, हिनकन वजवाक शैली,हिनकन वाँती लैंग्वेज,हिनकन सावक विस्तान,हिनकन लिखवाक कला आ मैथिलीक रुगु सदिखन चिन्ता नखवाक कानण हिनका कथा लिखवाम स्थिन नहिँ नहय रुलकनि । मैथिलीकँ जगय जरुन जना जनुनग यत्नैक,हिनकन उपयाग कयलकनि । साहित्यिक मंच हा,संयाजनक आ उद्घाषकक प्रयाजन यत्नैक,गँ श्री अशाक सामन ठाढ । कथा गँ सहजहिं,काना यत्रिकाक लल काना समीक्षाक विशेषक प्रयाजन यत्नैक,गँ श्री अशाक । कविताक याथीसँ अयन यात्रा प्रानंभ कनिहानि श्री अशाक एक विधा उवन नहिँ नहि सकलाह,जगय जना जाहि गनहक प्रयाजन यत्लैक,लिखैत चल गेलाह आ वजैत चल आवि नहल छथि,गैं न विविध विधाम हिनक अनक यूस्तक प्रकाशित छनि ।

हिनकन ग्रंथ साहित्ययन चर्चा कनवासँ यहिन,हिनकहिं मुँह सुनल गय्य कहय चाहैत छी,ज उा कमजाठी हमनायन लागू अछि । जखन हमन यात्रा संस्मनण निकलल,गँ एक याठक (नाम स्मनण नहिँ अछि,अछिया गँ एगय नहिँ कहव) यढलनि आ जखन उा नुस गेलाह गँ हुनका यात्रा संस्मनण लिखवाक मन रुलनि,ओ वुझि ज लिखव वहुत आसान काज छैक, ज रुखलियै,सुनलियै, गुनलयै

उकना लिखब कान रानी वात ! मूदा उा एक यजसँ वसी नहिँ वढा सकलाह,लिखल नहिँ रलनि ।

सत्फ लिखब वहुत दुनुह काज छैक,खास क' साहित्य । उा सट वूत नहिँ रय सकैत छैक,उना आऽऽ कालियन ऽऽी लागू नहिँ अछि,न हुसवूकयन,न यत्र-यत्रिकाम आ न सूहन,सूह्यस्थित माट (गटअय-सटअयम प्रकाशित कितावयन ।जना मान रल लिखि दलहुँ,जकनासँ मान रल प्रसंशा कनवा ललहुँ आ समयानुकुल जागाउम लागि (गलहुँ । साहित्यकान रनाऽऽ वहुत निनल आ कठिन काज छैक, जकनाम ऽऽीश्नन प्रदत्त प्रतिरा नहैत छैक ,निनन्तन साधनानत नहैत छथि,नैह साहित्यकानक नूपम चिह्नल,जानल आ मानल जाऽऽत नहलाह । वाँकी नर्तमानम ज लूटि लथू, नर्तमान टाम नहलाह । आगू क्का नामा लनिहान नहिँ !

श्री अशोकजी उाहि निनल साहित्यकानम छथि,जनिक मैथिलीकँ खगता छैक ।कथासँ समीक्षा दिस मूकाव,ऽऽी गँ अधिकांश लाक हिनकन निषयम वूझैत छनि,मूदा ऽऽी ग्रंथा लिखलाह, ऽऽी वात हमना जनैत कम लाक वूझैत हतानि । जना उयनम कहलहुँ,सहा काज हिनकासँ 2014सँ 2016क वीचम यटनाक दैनिक हिन्दुस्तान लिखवा ललकनि । दु सालम 31टा लिखलनि आ उा स्फुह वह्द रय (गलैक गँ हिनका ग्रंथ लिखव वह्द रय (गलनि,ऽऽी एहिसँ वूसा यउैत अछि ज उाकन दु सालक वाद यूस्तक प्रकाशित रलनि ,उाहिम उाएह 31टा । एका टा वसी नहिँ । गँ ज लिखलनि स मजवूनीवश लिखन हतााह,मूदा लिखलनि गँ उा सर्वत्र प्रसंशित रलनि,चर्चित

छलनि। हिन्दीक अखबारमे मैथिलीक स्तम्भ छपय,ओहो हिन्दुस्तान सन प्रसिद्ध अखबारमे, जकर एक अलग आ सजग पाठक रहैत छैक, निश्चित पृथक मैथिली जननिहार पढ़ैत छल होयताह आ ते श्री अशोकजी नीक कलनि,एकर पुस्तकाकार प्रकाशित कय,स्थायी महत्वक बना लेलनि,। हर कोनो अखबार पकड़ानि,तखन हिनकर कलम एहि दिशा लेल ससरलनि। श्री अशोकजी स्वयं स्वीकारैत छथि -

अखबारक कारणे चर्चित छलहुँ। जे सभ हमर कोनो पोथी नहिँ पढ़ने रहथि सेहो एकरा पढ़लनि।कतेक लोक फोन क' कए प्रसंशा कहिया क' कहथि।सेना जीवनक त' कतेको सहकर्मी हमर लेखनसँ एही माध्यमे परिचित छलाह।*

आब एहि पुस्तकक विषयमे। एखन बाढ़िक समयअछि, मिथिलाक बहुत क्षेत्र बाढ़िमे डूबल अछि। हिनकर एक व्यंग्य छनि "निबू चाट तन सहाय मलान *। कतेक सटीक व्यंग्य छनि - जखन कारी-कारी मेघ लगैत तखन कारी कॉपय लगैत। अंतमे कहैत छथि - एहन घर हो जाहिमे चूआठ नहिँ हो। निबू घर रहत तखन न सहायत मलान। स्मार्ट सिटीसँ लय नयाल सरकार सँ नागरिक तक नीक व्यंग्य छनि।

*पूर्ण समागम *मे कहैत छथि। नाटक देखि चकविदान लागि गेल। चकविदान एहि दुआरे जे एक्कैसम शताब्दीक तय बौद्धमे देखाओल गेल छल। सात सौ वर्षहुमे लोकमे कोनो बदलाव नहिँ। बढ़ियाँ तुलनात्मक व्यंग्य कयल छथि।

चुनावक हगुआ पहिल ग्रंथ छनि । बढ़ियाँ जकाँ पार्टी सभकेँ क्लास लेलनि अछि ।

22 मई 2014 क लिखल ग्रंथ *नीक दिनक वात्स्याय* आदि नामपर किताबक नामकरण पड़ल अछि ,पाँच सालक बाद पढ़ि रहल छी , नीक "वात्स्याय" देखने छलाह ।

एहिना एकसँ एक ग्रंथ छनि , किछु ग्रंथ तँ बहुत नीक सुतरलनि अछि ,ओना सभ रचना अपन नाम(शीर्षक)क सार्थकता देखबैत अछि । पुरना लिखल ग्रंथ एखन टटका लगैत अछि । आ आगुओ पढ़ब तँ लागत एखनुक तँ बात थिक । यैह एहि पुस्तकक सार्थकता अछि ।

लेखन प्रकाशन,पटनासँ प्रकाशित ई पोथी मात्र ₹50/-मे उपलब्ध अछि ।तँ हम आब हिनकर अधिक नवनायन नहिँ करब । स्वयं पढ़ी आ अपन निर्णय करी । हमरा विश्वास अछि ,हमरासँ अपन पूर्ण सहमत हायब ।

हँ ! श्री अशोकजीक काना विधा साहित्यक अमूल्य निधि रूप मैथिली साहित्यमे सभ दिन पढ़ल जयताह आ से एक मानदंड साबितक संग ।

-संपर्क-09430743070

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.११.शिवशंकर श्रीनिवास- अशोकक कथा



शिवशंकर श्रीनिवास

अशोकक कथा

'अशोकक कथा' [illegible]

[illegible]

— शिवशंकर श्रीनिवास

अशोक एहि समयक श्रेष्ठ कथाकार छथि। हिनक पहिल कथा 'विरामसँ पहिने' 1971 मे (26 दिसम्बर 1971) मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल। बादमे हिनक दोसर संग्रह 'ओहि रातिक भोर' मे संग्रहीत भेल— 1991 ई० मे।

एहि कथामे परीक्षा छोड़ि देलाक बाद नायक जेना पहिने स्वभाविक रूपसँ लेने छल, वैह स्वभाविकता ओकरा लेल अस्वभाविक भ' गेल रहै। एकर परीक्षा छोड़ि देला पर पिताक चुप्पीक ओकरा बेचैन क' देलक। ओ अपन पितासँ क्रोधक स्वर सुनबाक इच्छा करैत छल वा बोल-भरोस, किन्तु ओकरा पिताक चुप्पी सहन नहि भ' रहल छैक, ओ बीमार भ' गेल, ज्वर भ' गेलै। ज्वरावस्थामे पिताक ललता ओ स्नेह भेटलैक किन्तु परीक्षा छोड़बाक विषयमे कोनो शब्द नहि। किछु दिनक बाद माँक आइक पत्रमे सेहो ओकरा लेल निराशाक शब्द— आ ओ (नायक) गामसँ आइक कोठलीमे लिखल उपदेशात्मक ओ नीतिपरक शब्दक वाक्यक मोन पाड़' लगलैक, जीवन सँ ओझराइत रहे, से करैत परेशान होइतो ओ करैत अछि। ओ [illegible]

ई कथा कहैत अछि जे जीवनक संवेदना धारा वातावरण अनुसार चलैत छैक ओहिसँ फूट अपना अनुसार नहि। से अहाँक अपना मन लगने हैत जखन अहाँ ओहिसँ दूर भ' सकब। एहि कथाक नायक अपन पितासँ दूर, चलि जयतैक से संभव नहि छल। परीक्षा, छोड़ि देलासँ [illegible] पिता जेना ओकरा शोकक भेलाह से ओकरा शोकाकुल क' देलक आ वैह ओकरा विराम लेबासँ पहिने जीवन संघर्षक दिशा-प्रेरित क' देलक।

अशोक अपन पहिल कथासँ कथा-संसारमे [illegible] कथ्य सँ आगू बढ़लाह जे महत्वपूर्ण अछि।

हिनक चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित अछि— (1) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह) (1986), (2) ओहि रातिक भोर (1991), (3) मतवर (2004) आ (4) डेढ़ीगाम (2017)

1971 ई० सँ आइ तक एहि भूमि पर कतेको रूपें सामाजिक ओ राजनीतिक स्थिति बदललैक अछि। कथाकार अशोक एहि सभ स्थिति केँ गमलनि अछि आ अपन एहि कथाकार संवेदित भेलाह आ अपन कथाक चेतना लए क' ठाढ़ भेलाह।

हिनक एकटा कथा अछि 'हड्डी'। उक्त कथा 1 जनवरी 1984 केँ मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल जे बादमे 'त्रिकोण (1986)' मे आयल।

एहि कथामे कथाकार कहने छथि जे आइ ईमानदारीके नायक पहिने अपन नोकरी बचेबा लेल, प्रतिष्ठा लेल अपनौने छल ओ भयानक भ्रष्टाचारिताक समय ओ ओकर अपन आर्थिक संकटक समयमे तेना कोनो हड्डी जकाँ ज्यर कण्ठमे (जीवनमे) फँसल छै जकरा ने ओ निकालि सकैए आ ने गीड़ि सकैए। ओ कष्ट दै छै मुदा स्वाद सेहो दैत छैक। तात्पर्य जे कोनो संघर्ष सह दियाक लेल हो, त' ओ दर्द संग आनन्द सेहो दैत छै। उक्त कथा वस्तुत: ओही आनन्दक प्रतीत करैत अछि।

मैथिली साहित्यक आलोचक लोकनिक कहब छनि जे अशोक शहरक कथा लिखैत छथि किन्तु हमरा जनैत से सर्वथा सत्य नहि थिक। कहबा लेल तँ ओ विदेशोसँ कथा (धरती गोल है) लिखलनि अछि, आ ओहिठामक बातकेँ अपना हिसाबसँ कहलनि। हमरा जनैत अशोक गाममे कम रहितो गामक लोक छथि। मिथिला गामक छथि। अशोकक हृदयमे (विचारको) गामक सौरभ बसैत अछि। तेँ गाम रह' वा शहरक कथा। ई एकटा मैथिली कथाकारक जकाँ कहैत छथि। एहि उपन कथा "धरती गोल है" मे रूस गेल भारतीय मैथिल कथा कहैत छथि। असलमे ई अपनाकेँ प्रौढ़ि क' अपन रीति-विधि सुनबैत छथि यैह कारण अछि जे तमनकेँ कखनो कोनो छौड़ी 'रे ठनेनजोलखी जीबू बेटी' बुझाइत छैक तँ कखनो केओ गामक आदिआइन जकाँ तँ ओ बुढ़िया

(2)

माय जकाँ।' उक्त कथा कहैत अछि जे मनुष्य कोनो वस्तुकेँ अपनासँ फूट भ' क' नहि देखि सकैत अछि अत'सँ अपनोके देखैय। ओ कोनो वस्तुकेँ अपनेसँ जोड़ि देखैत, कहैत अछि। जे बात अशोकक कथा कहैत अछि, वैह बात हम इनकर कथा विषयमे कहैत छी जे ओ ग्रामीण कथा कहैत छथि, शहरी कथा कहैत अछि असलमे ओ मानवीय संवेदनाक कथा कहैत छथि, मैथिलीमे कथा कहैत छथि। समय ओ परिस्थिति समझ रखैत अपन कल्पनाक संसार रचैत छथि आहि संसारमे प्रेम हो, सद्भाव हो। आ एहि क्रममे अनेक विसंगति ओ मानवीय-विद्रोही रूपके कहैत-देखैत आगू बढ़ैत छथि।

हिनक कथा अछि 'ओहि रातिक भोर' (एहिनामसँ संग्रह सेहो अछि)। उक्त कथा वैदेहीक मई 1989 ई० मे प्रकाशित भेल। अवेन कि इरा देशमे जातीयताक उन्माद चरम पर छल। रनास क' मंडल कमीशन। जनवरी 1949 के गठन भेलै तहियेसँ बैकवार्ड-फारवार्डक बीचक दूरी बढ़' लागल जे सामाजिक सौहार्दके नष्ट कर' लागल। अपन उक्त कथामे अशोक इनक बीचमे एहि वैमनस्यताक यथार्थसँ परिचय करबैत सौमनस्य ओ सद्भावक स्थिति आनैत छथि जे हिनक कथाक ध्येय अछि, सुन्दर सहज मानवीय जीवनक समाजक संरचनाक स्थिति कायम करब।

कथाकार अशोककेँ अपन समाज ओ मैथिक जीवन संस्कृतिके कुछ-बाक जे क्षमता छनि ओहि बले जे एहि समाजमे जे विकृति अछि ओकरा देखार करैत ओ एकटा महत्वपूर्ण कथा लिखनि। ओहि कथा समूमे एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि- 'बूढ़ा जीवैत रहलाह।' असलमे उक्त कथा जिजीविषाक कथा थिक। किन्तु कथामे मिथिला समाजक प्रवृतिओ जीवनसँग छैक ओकरा देखार करैत कथा कहैत अछि जे जीवन ओ थिक जे समाजक बीच चर्चामे रहय। चर्चा सेहो दू तरहक होइत छैक। कहल गेल अछि जे कुकर्मे नाम कि सुकर्मे नाम। उक्त कथाक बूढ़ाकेँ चर्चामे बनल रहबाक इच्छा छनि ओ अपन करुणामे डूबल लोकक बीच अपन कुरूप चरित्रसँ बेल्लैन क' अपन करुणाक ताप पर पानि छीटि आनन्द लेब' चाहै छलाह। दुखक दिनमे हँस' चाहै छलाह।

मिथिलाक एहि समाजके भोजन विन्यास ओ स्त्री-पुरुष विषयक गपक चर्चामे बड रस भेटै छै। एहि समाजके एहन गप अद्भुत आनन्दक स्वाद दैत छैक। उक्त कथाक बूढ़ा मिनक स्त्री मीनवेरा मरि गेल छनि पुतोहु अभियोग लगा भागि गेलि छनि। एहन लोकक जीवनमे कतेक करुणा हेतै से सहजहि बूझल जा सकैए। किन्तु बूढ़ा ओहि करुणासँ बहरेबाक लेल लोकक बीच चर्चामे बनल रहबाक लेल भोजन विन्यासक सेहो आरिआओन करैत छथि आ अपने वियाह करताह से अठारह वर्ष कन्यासँ ने छोट, ने पैघ तकर चर्चा चला अपन समाजमे चर्चाक केन्द्र-बिन्दु बनि गेलाह अपना सम्पति छनि। खुलि क' खर्च क' रहलाह। लोकके खुआ रहलाह विवाहक चर्चा क' रहलाह आनन्द लए रहलाह। लोक हिनका पर हँसै छनि, ओ लोक पर हँसै छथि। कथाके ओहि विस्तारपूर्वक भोजन ओ गपके विन्यास सँग उपस्थित कयल गेल ए ओ पाठककेँ लाजबाब क' दैत अछि। अन्तमे बूढ़ाके अपन गामक बेरूरिन भावासँ करुणा फुटै छनि त' पाठको ओहि करुणामे नहा जाइत अछि। असलमे बूढ़ा वियाह नहि कए चर्चामे रहि जीब' चाहै छलाह। कथा ओहि सरलतासँ एहि मैथिक लोकक प्रवृति ओ जीवन जीबाक इच्छाके प्रदर्शन कयलक अछि ओ एहि कथाके मैथिलीक एक विशिष्ट कथाक आसन पर बैसा दैत अछि।

हिनक कथा 'सरिसब-साग' के बड़का आलोचकक संग मेघन प्रसाद सेहो कहैत छथि जे- 'रावा लेल लपकैत लोक कोना बिका रहल अछि से आजुक कथामे देखल सकैत छी। अशोकक 'सरिसबक साग' एकटा इलाका थिक ... किन्तु उक्तमे प्रभाक वृद्धि कुशलता इनर पतिक पत्नीक प्रति सहज भाव थिक।

अशोकक कथा पर टिप्पणी करैत डा० देवकान्त झा कहैत छथि — " अशोकक ओहि रातिक भोर (1991) ग्रामीण जीवन मध्य

(3)

सामाजिक जागरण पर आधारित पन्द्रह गोट कथाक स्वतंत्र शृंखला थिक जे समाजके सामञ्जस्य भावना पर बल दैत छैक। 'मिरजा साहेब' साम्प्रदायिक समस्या पर केन्द्रित एक मार्मिक कथा अछि। 'तेसर प्रश्न' नामक लोकक नासमझीक व्याख्या पर प्रहार करैत अछि जकर नायक गलत ढंगसँ अहल पता देल जाइत। फिर, ऊँच-नीचक भयक मानसिकता पर आधारित एक सुन्दर कथा थिक। 'सरिसबक साग' उपभोक्तावादी संस्कृतिक प्रभाव पर एक प्रभावी कथा थिक।

अशोक कथा कहैत अछि जे मनुष्यके अपन मौलिकता नहि छोड़क चाही, से छोड़ब ओतबा कठिनो छैक कारण कोनो ने कोनो रूपमे ओकर मौलिकता अवश्य प्रकट भ' जाइत छैक। यदि कोनो कारणवश केओ बनावटी चालि चलैत अछि तँ ओकर क्षमता जे मूल रूपमे ओकर व्यक्तित्वक विशेषता छैक, ओ ओकरा दबने रहि नहि पबैत अछि। तेँ जाहि स्थितिमे जे केओ अछि ओकरा ओही स्थितिसँ जीवनक पथ पर विकास करक चाही। इहो स्थिति कखनो ककरो विकासक स्थिति पर नहि पहुँचा सकैत। हिनक कथा 'सीवन रजकक हित चिन्तक' एही स्थितिक कथा थिक। सीवन रजक बैंकमे चपरासीसँ कैशियर भ' जाइत अछि। ओकरा बैंक-सेवाक सहज प्रक्रिया तहत पदोन्नति होइत छैक, किन्तु ओकरा भ्रम होइत छैक जे ओकर पदोन्नति अपन ऊँच अधिकारीक कृपासँ भेलैक। ओ भ्रम ओकर सहजता पर प्रहार करैत ओकर मानसिकता एहन भ' जाइत छैक जे ओहि ऊँच अधिकारी सन अपन व्यक्तित्व बनब' चाहैत। यैह बातकारणे ओ ऊँच अधिकारीक अभिजात्य गंभीरता ओढ़ि लैत अछि। फलतः ओकर जीवनक उन्मुक्तता सुसुप्त भ' जाइत छैक। जाहि कारणेँ ओ ओकर जीवनक सरलता, सहजता नष्ट भ' जाइत छैक किन्तु अन्तमे ओकरा अपन जीवनक मर्म सहजतामे छैक से बोध होइत छैक।

हिनक कथा 'प्रतिलोम' मे मिथिलाक ओहि वर्गक भोज-संस्कृति पर, कथाकार दलित चेतनाक व्यंग्यात्मक प्रहार करैत छथि। जे चेतना सामाजिक न्यायसँ आगू सामाजिक समरसतासँ उपजल सांस्कृतिक चेतनाक रूप थिक।

अशोकक प्रसिद्ध कथा अछि– 'छल'।

राज सत्ताक लोभमे एहि देशक विभिन्न राजनीतिक दल द्वारा जाहि प्रकारेँ धार्मिक उन्मादकेँ प्रज्वलित करबाक चेष्टा भ' रहल अछि ओ जनताक समक्ष अछि। हिन्दूकेँ उत्तेजित करैत जा रहल छ, मुसलमानकेँ उत्तेजित करैत जाय रहल छ। एही अनुसार सन्तुष्ट करबाक प्रयास, सेहो भ' रहल अछि। सभ राजनीतिक दल अपन-अपन वोट-बैंक बनेबामे लागल अछि। जाहिसँ एहि देशकेँ, एहि समाजकेँ भारी नोकसान भ' रहलैए।

एहि ठाम प्रश्न उठैत अछि जे राजनीतिक दल एहन षड़यंत्रक नाटक करैत दोसरकेँ अपना पक्षमे ठाढ़ करैत वा उग्र बनेबाक हेतु स्वयं किएक उग्र भ' जाइत छथि? एहि प्रश्नक उत्तर अछि जे लोक ओकर नाटकके नाटक नहि बुझय। यैह डर छै उक्त कथाक मुख्य पात्र भोली काकीकेँ। लोक ई नहि बुझै जे ओ 'छल' क' क' मुसलमान बनल अछि, कारण ओकरा ओहि सभामे मुसलमान डेलिगेट बनबाक मजबूरी छलैक। ओ मुसलमानक पाठ करैत ओहि नाटकमे खेला रहल छल। ओकरा भीतरमे जे डर छलैक ओ ई जे ओकर 'छल' देखार ने भ' जाइ, ओ ओकरा असहज बना देने छलैक तेँ मुसलमान पर टिप्पणी सुनैत-सुनैत ओ असहज भ' गेल। ओ मुसलमानक नाटक करैत-करैत जेना ठीके मुसलमान भ' जाइए आ ओ बेचैन भ' मुसलमान पक्षमे उग्र भ' जाइत अछि।

(4)

साम्प्रदायिक उग्रताक यथार्थकेँ कथाकार समक्ष अनैत समाजकेँ साकाङ्क्ष करैत छथि, जे कथाकेँ महत्वपूर्ण बना दैत अछि।

हिनक कथा अछि 'लाश'। लाश वस्तुतः लाश थिक। कथामे कथा-नायक एकटा 'कुरता' लैत छथि, वैह कुरता एकटा लाश थिक असलमे कथा प्रेमभे ओहि कुरता लागे रस भरैत छथि। ओ (कथाकार) एहि कथा माध्यमे बहुत सहजतासँ प्रेमकेँ अगेवाक लेल नव-नव उपक्रम केँ आवश्यक मानैत छथि।

अशोकक कोनो कथा एतेक सहज रहैत अछि जे लागत जे ओ की कहि रहला है? किन्तु कथाक समाप्तिक बाद जेना अन्हार घरमे भक्क द' इजोत भ' जाय तहिना हिनक कथा जीवन सूक्ष्म व्याख्याक बोध द' जायत। असलमे कथाकारक जीवन आहि सादगी आ मानव-मूल्यक रक्षा करैत रहल आ सादगी हिनक कथाक विशेषता बनि क' सेहो समक्ष अबैत अछि। जे हिनक कथाकेँ महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

प्रसिद्ध आलोचक प्रो० ललितेश मिश्र, हिनक कथाक महत्वकेँ लिखैत कहैत छथि— "हिनक (अशोक) सभ कथाक स्वरूप ओहिना अछि जेना चेखव कथाकेँ परिभाषित करैत कहल अछि— 'ए स्लाइस ऑफ लाइफ' अर्थात जीवनक कोनहुँ क्षण विशेषक कथा। हिनक कोनहु कथा रचना यथा हड्डी, हेयरपिन, मातवर राग-विराग, तानपूरा, शाँड़, हरिसिंह देवी, लाश, स्वाधीन डेमोक्रेसी, 'ओ ढूह साइकिल' सिलैत' अदि रचना भ' क' 'किये जीवन समग्रतामे नहि जीवैत अछि, जीवनक उत्थान-अवसानक वर्णन अभिष्ट नहि रहैछ अपितु क्षण विशेषमे रहैत जीवैत चरित्र सभक मानसिक वैचित्र्य आ मनोवैज्ञानिक यथार्थसँ ओतप्रोत रहैछ राग-विराग, दुविधा-सुविधासँ परिचालित होयब, उद्घाटित होइछ। सहज चित्रणमे रचना कौशलमे प्रगतिशील भावनाक यथेष्ट संचरण विदित होयत, जेना शाँड़ कथामे, तहिना प्रच्छन्न व्यंग्यक दर्शन होयत जेना मातवर हरिसिंह देवी कथामे।"

आइ उदारीकरण आ बाजारवादी हाबसक प्रहार सबसे बेसी मनुष्य संवेदना सकुचि रहलैक अछि। कतेक आगू सभ किछु निरर्थक बुझाइ छै। कर्तव्य ओ सम्बन्धक सीमा छोट भ' रहलैए। जीवन-चर्या बदलि रहलैए। एकरे कथा कहैत अछि हिनक 'मनसुबा', किन्तु हिनक कथा कहैत अछि माय (स्त्री) एखनो एहि स्थितिकेँ ठीक क' सकैत अछि। उक्त कथामे रणजीतकेँ माय कहैत छथि— "घरके अहाँ देवाल बुझै छियै की?" एहन कतेको प्रश्न करैत छथि, मुदा उत्तर रणजीत जेना पिताकेँ दैत छथिन तेना मायकेँ नहि द' पबै छथि। कथाकार उक्त कथाक कहैत अछि जे मनुष्यक जीवन अछि बल पर घरसँ संसार बसौलक वैह नष्ट भ' रहलैए। हमरा अबैत एहि कथामे मात्र ओहि बल (आर्थिक) केँ अनबैत अछि। कहल जाइत छैक स्त्रीये पत्नीक रूपमे घर बसौलक वैह बात ई कथा अपन प्रसंगसँ कहैत अछि जे ओ एखनो घरकेँ डूब' सँ बचा सकैए। कारण माय वा पत्नी कोनो रूपमे स्त्री, बेटीक लेल आ बेटियोक लेल आ पतियोक लगीच होइत अछि।

ऐतिहासिक कालमे मनुष्य भोजन लेल जंगले-जंगले

(5)

बौआइल छल । आइ कोनो रूपमे भोजन वा अधिक चमक लोकके शहरे-शहर, देश-विदेश बौआय रहलैए। भौतिक निजताके लोक बिसरि रहलैए। घर-परिवार ओ समाज सभ छिटिया रहलैकए। आ सभ मानवीय मुद्दाकेँ क्षति पहुँचा रहलैए। एहि पर सोचक छैक। ओहि सोचके रूगीये बढ़ा सकैए। मानवीय संवेदनाकेँ जोड़ि सकैए। हमरा जनैत उक्त कथा ओहि बातकेँ प्रेरित करैत अछि।

एहि पीढ़ीक कथाक विषय पर ध्यान देब तँ ओहिमे कोनो जमीन पर अधिकार लैल संघर्ष नहि भेटत वा कोनो श्रमिक आ मालिक बीच कोनो झमेला नहि भेटत से एहि कारणेँ नहि जे आइ समाजमे एहि तरहक बात नहि अछि, किन्तु समाज मे दोसर तरह संघर्ष बढ़ि गेल अछि जे मानवीय स्वरूप पर प्रहार कऽ रहल ए। आइ जातीय संघर्ष धार्मिक उत्पीड़न बढ़ल अछि, भूमंडलीकरण ओ बाजारवादक वातावरण मानवीय स्वभावकेँ आत्मकेन्द्रित कऽ रहल अछि, एहि स्थितिकेँ परिधि मैथिली कथा समाजकेँ सचेत करैत लिखा रहल अछि।

अशोकक कथा 'स्वाधीन' मे नायिका अपन अनिच्छाक विरुद्ध पतिक बलात्कारसँ अपन गर्भमे पलैत बच्चाक माय नहि बनऽ चाहैत छथि आ अन्तत: ओ नहिये बनैत छथि। उक्त कथामे नारी प्रबल स्वाधीनताक बोध आयल'ए जे परम्परासँ एकदम उलट अछि किन्तु ओहिमे एकटा स्वाभिमानक प्रबल वैचारिकता अछि जे कथाकेँ महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

हिनक प्रसिद्ध कथा 'डेडीगाम' कहैत अछि जे आमुक समयमे जेना कोनो भौमिक संस्कृति पर प्रहार भऽ रहलैए ओही वेगमे अपन परिचय, अपन संस्कृति बचेबाक भाव सेहो कोनो भू-खण्ड पर बढ़ि रहलैए। उक्त कथामे यैह बात आयल'ए जे जेना गाम सँ पलायन भऽ रहलैए ओही हिसाब लोक अपन गामक उन्नति सेहो चाहि रहल अछि। गामक लोक आब गाममे कोनो मंदिर निर्माणसँ बेसी अस्पताल खोलब पर प्रफुल्लित भऽ रहल'ए जे आवश्यको अछि, उक्त कथा एहि बातकेँ बहुत गंभीर तक लऽ जा गामक लोकके ओकर प्रगतिक सोच दैत अछि।

एहि रूपेँ हम देखैत छी जे अशोकक कथाक दृष्टि नव-निर्माणक अछि, जे एहि भूमि माटिसँ फूटि समस्त हाइत कथाक विकासके नव मोड़ दैलक अछि।

□

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- अशोकजीक कथामे कथापन विमर्श



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

अशोकजीक कथामे कथापन विमर्श

अशोकजीक कथामे मैथिली कथापन विमर्श आकर्षित करैत अछि।

मैथिली कथाक अतीत, वर्तमान आ भविष्यपर विमर्श अशोकजीक 'छुट्टीक एक दिन' सँ पहिने कोनो कथामे हम नहि पढ़ने छी। वर्तमान स्थिति ई अछि जे बहुत घरमे गप-सपमे मैथिलीक प्रयोग कम भ' गेल अछि। माइयो अपन धिया-पुतासँ

मैथिलीमे गद्य नहि करै छथि, पढ़ाइ-लिखाइ, नोकरी-चाकरी,बजार-हाट,टी.वी.-सिनेमा सभ ठाम हिन्दी-अंग्रेजी पसरल अछि । जीवनमे मैथिलीक लेल स्थान बहुत कम भ' गेल अछि, जकर परिणाम अछि जे मैथिलीक प्रति अपनत्व आ ममत्व कमल जा रहल अछि ।

बहुत मैथिल एहन छथि जे मैथिली बाजि त लै छथि मुदा पढ़ल-लिखल नहि होइत छनि । जखन मैथिली पढ़ल नै होइ छनि तखन मैथिली कथा-कविता कोना पढ़ता? पोथी पत्रिका कोना बिकतै? प्रकाशन व्यवसायक लेल व्यवसायी बुद्धि बला पूँजीपति आगाँ कोना एताह? मैथिलीक बजार नहि रहतै त साहित्यकार मैथिलीमे किए लिखताह?

बहुत साहित्यकार जे मैथिलीमे सोचैत छथि,अपन भाषामे अपनाकेँ बेसी नीक जकाँ अभिव्यक्त क' सकैत छथि,से मैथिलीमे लिखैत छथि, तेँ एखन पोथी त छपि रहल अछि ।

अतीत देखी कहैत अछि जे हरिमोहन झाक साहित्य पढ़बाक लेल बहुत गोट मैथिली सिखलनि । वर्तमानमे सेहो हरिमोहन बाबू आ यात्रीजीक साहित्य खूब पढ़ल जा रहल अछि आ हिनकासभक पोथी सभसँ बेसी बिकाइयो रहल अछि । तखन स्थिति चिंताजनक किए लागि रहल अछि? की मैथिलीमे पढ़बा जोगर साहित्य नहि रचल जा रहल अछि? की मैथिलीक साहित्यकार खाली एक-दोसरक खिधांसमे लागल रहैत छथि?

हरिमोहन बाबूक साहित्यक जे सामाजिक सौन्दर्य छनि से आइयो हुनका प्रासंगिक बनौने छनि।

की आजुक रचनामे सामाजिक सौन्दर्यक अभाव अछि? की साहित्यमे कलात्मकताक संग सामाजिक चिन्ताक अभाव भेल अछि? की सामाजिक सरोकारक व्यापकताक उपेक्षा होइत अछि? की रचनाकारक झुकाओ आ लगाओ समाजसँ कम भ' गेल छनि? की मैथिल समाज आगू भ' गेल अछि आ साहित्य पाछू चलि रहल अछि?

युवा वर्गक सोच बदलि रहल अछि।

हरिमोहन बाबू अपन कन्यादान उपन्यासमे ई कामना व्यक्त कयने छलाह जे शारीरिक आ मानसिक रूपे एक समान शिक्षित युवक-युवती यदि स्वेच्छापूर्वक विवाह करैत छथि त सैह आदर्श विवाह थिक, जाहिसँ समाज बदलत।

से भ' रहल अछि। प्रेम-विवाह भ' रहल अछि, जाति आ धर्मक बन्धन टूटि रहल अछि। समाज बदलि रहल अछि, नव समाज बनि रहल अछि, मुदा साहित्यमे जेना अभिव्यक्त होयबाक चाही से नहि भ' रहल अछि। प्रश्न ईहो उठैत अछि जे हमर समाज धर्म अथवा जातिक हानिक सहर्ष स्वीकार क' रहल अछि अथवा अभिभावकक असहमतिक कारण युवक-युवतीकेँ कोर्टक शरणमे जाय पड़ैत छनि।

प्रश्न अछि जे नव समाजक हलचल मैथिली साहित्यमे किए नहि देखाइ द' रहल अछि ? परिवर्तनक आकांक्षी युवा पीढ़ीक लेल की साहित्यक अभाव भ' गेल अछि ? की मैथिलीमे प्रेम प्रगट करबाक लेल 'आइ लव यू' सन शब्दक अभाव अछि ? एहि सब किछु प्रश्न अछि जाहिपर विमर्श अछि एहि कथामे ।

विमर्शमे चारि गोट भाग लैत छथि अश्विन,अंकिता,नीलम आ स्वयं कथाकार ।

अश्विन एम बी ए क' क' नोकिया मोबाइल कम्पनीमे काज करैत छथि, अंकिता अंग्रेजी साहित्यसँ एम. ए. कए पी.एच.डी. क'रहल छथि,नीलम डी.ए.वी.मे विज्ञानक शिक्षक छथि ।

अश्विन आ अंकिता अंतर्जातीय प्रेम विवाह कएने छथि । अंकिताकेँ साहित्यमे रुचि छनि, कथा, कविता सेहो पढ़ैत छथि, अनुवादक माध्यमसँ सेहो दोसर भाषाक कविता,कथा पढ़ैत रहैत छथि, मैथिलीसँ लगाओ छनि, मैथिली साहित्य बेसी नहि पढ़ने छथि मुदा, पढ़बाक इच्छा रहैत छनि । बजारमे ओल किनबाक लेल अश्विन आ अंकिताक बीच सम्वादक बात कथाकेँ सरस बनबैत अछि ।

अश्विन आ अंकितासँ इहो पता चलैत अछि जे समाज एखन एहि परिवर्तनक सहज स्वीकृति देबामे सक्षम नहि भेल अछि, एकरा पउ एकरा धनक हानि बूझैत अछि आ दोसर जातिक हानि ।

हिनका दुनू गोटेकेँ सङ्ग कार्तिक पनरहमे जाय पड़लनि। साहित्यमे एहि तरहक साधपन कम भेटबा एबाक ईहो एकरा कारण भ' सकैत अछि।

हिनका लोकनिक माध्यमसँ मैथिली साहित्यक प्रति शिक्षित युवा वर्ग,अन्य प्रौढ़ शिक्षित वर्ग आ मैथिली लेखकक दृष्टिकोण बूझबाक आ समस्याक समाधानक लेल सार्थक चिन्तन भेल अछि एहि कथामे।

वस्तुतः मातृभाषाक अस्तित्वपर जे संकट आएल अछि ताहिपर सङ्ग संवाद चलैत अछि कथामे।

ई कहब पूर्णतः सत्य नहि अछि जे नव समाजक हलचल वर्तमान मैथिली साहित्यमे नहि आएल अछि अथवा मैथिलीमे प्रेमकथाक अभाव अछि, तथापि जतेक अछि ताहिसँ संतुष्ट होयब उचित नहि अछि।

प्राथमिक कक्षामे मातृभाषाक माध्यमसँ पढ़ाइ नहि होएबाक विषय पर ई कथा मौन अछि, तथापि मैथिलीक संकटक समाधानक दिशामे एकटा स्वस्थ चिन्तन लेल प्रेरित करैत अछि अशोकजीक चर्चित कथासंग्रह 'उतीगाम'क कथा 'छुट्टीक एक दिन'।

-संपर्क-8789616115

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१३.नारायणजी- मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य



नारायणजी

मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य

मूल्यांकन

कथाकार अशोकजीक लेखन-वैशिष्ट्य

▫ नारायणजी

मैथिली साहित्यमे जे थोड़ रचनाकार अपन लेखनसँ आकृष्ट करैत छथि आ जिनकर रचना हम ताकि-ताकि पढ़ैत छी आ पाढ़ि अपनामे तृप्तिक अनुभव करैत छी, ओहिमे कथाकार अशोकजी अप्रतिम छथि।

कथाकार अशोकजी ओहि क्षेत्रक निवासी छथि, जाहि क्षेत्रमे मैथिली साहित्यक अनेक रचनाकार मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय अपन रचनात्मक विमर्शक सृजन कए आइयो केन्द्रमे छथि। ओही क्षेत्रमे मैथिलीक भाषाक महान आन्दोलनकारी तथा अतुलित साहित्य-सर्जक, श्रद्धेय किरणजीक आविर्भाव भेल छल, जे अपन रचनासभमे तुच्छसँ तुच्छ चरित्रमे मनुष्यताक सुन्दरत्व (मनोमुग्धकारी गुण)केँ आह्लादकारी ढंगेँ उजागर कयलनि, जे साहित्य-सृजन तथा अवलोकन लेल सर्वथा नव दृष्टिक विधान थिक।

मुदा, कथाकार अशोकजी सदैव किरणजीक प्रभावसँ मुक्त रहि समय आ समाजकेँ देखलनि तथा कथा-रचनामे सेहो इनकासँ दूर रहि सोहि कथा-धाराकेँ प्रशस्त कएलनि, जकर, प्रस्तोता ललित छथि, जिनकासँ मैथिली कथामे पुनर्जागरण पर्वैत छी।

कथाकार अशोकजी मैथिली कथाक एकटा एहन सुविचारित कथाकार छथि, जिनकर कथाक कथ्य सन्दर्भमे जे अर्थ ग्रहण करैत अछि आ एकटा नव विचारक जे उद्घाटन होइत अछि, ताहिमे मस्त भावना नहि, ओहिमे कथाकारक तार्किकताक महत्वकेँ देखल जाए सकैत अछि आहिमे शुद्ध बौद्धिक विश्लेषण (रेशनल एनालिसिस) रहैत अछि, जे एकटा युगचेता मनुष्यक चिन्तनकेँ प्रकट करैत अछि।

कथाकार अशोकजीक कथाक विशेषता थिक जे इनकर कथा, बिनु कोनो भूमिकाक आरम्भ होइत अछि, आ आरम्भ होइतहि [illegible]

आबि आइत अछि। आ आन कथाकार जकाँ अपना कथामे कथावाचकक गुणक बिनु कोनो लोल कैने वर्णन बाड़ि मोहन मालाक सृजन करैत छथि जकर तागरूपी विचार तँ अन्तर्निहित रहैत अछि, मुदा कथाक घटना आ प्रसंग अपन आकर्षणमे बान्हि कऽ वैचारिकीक उपस्थिति जनबैत अछि।

कथाकार अशोकजी दोतो [?] चालू फार्मूलासँ कातेँ भए अपन अपन स्वतंत्र चिन्तनकेँ अपन कथा द्वारा अभिव्यक्ति दैत छथि, तकर उदाहरण छनकर [?] जिवन रजक के छितचितक [?] कथामे देखल जाए सकैत अछि। कथा आरक्षण-सन्दर्भित छैक। आ देशमे सरकारी नोकरी लेल आरक्षण एकटा स्वतन्त्र मुद्दा छैक। ई एहि कथामे जिवन रजक सन एकटा चतुर्थवर्गीय कर्मचारीकेँ जातिक आधार पर आरक्षणक लाभ दऽ, इनका अपन कार्यालयमे तृतीय वर्गक कर्मचारीमे प्रोन्नति कए देल जाइत अछि। स्वभाविक

थिक. जे सिवन रजकक जीवन-स्तरमे
गुणात्मक वृद्धि एहि प्रौलतिक होइत, तैं
कार्यालयक प्रमुख, कर्मचारीक
एहि प्रयत्न होएबाक चाही।
आ जे अप्रसन्न छथि कदाचित
हुनका सेहो अपन अप्रसन्नता
व्यक्त निह्हि नहि करक
चाहियनि। एहन अप्रसन्नता व्यक्त
करए केओ उहापोह प्रगतिशील
डेग अथवा आरम्भ करल
गेल सुधारक प्रयत्नमे प्रयत्नक
प्रयत्नमे के बाधक बनत? मुदा,
अशोकजीक कथावाचक, आरक्षण द्वारा
समूल परिवर्तन चाहैत छथि,
आ अपन सुविचारित ~~भावनाकेँ~~ चिन्तनकेँ
अधीन चाहैत छथि, जे जैं
सिवन रजकक सम्पूर्ण परिवारक
स्थानान्तरण नहि होइत, तँ की
मात्र सिवन रजकके आरक्षणक
लाभ दए, व्यक्ति सिवन रजकक
जीवनक स्तरोन्नयन, की छलनइ
सम्भव अछि, जे कार्यालयक
कार्य निष्पादन कए पर, ओहि
परिवारमे आए रहत, जे परम्परित
रूपमे निम्न स्तरक जीवनक भोगि रहल अछि?

A

आ कथाकार अशोकजीक ई सूक्ष्म
वैचारिक सजगता हमरा दृष्टि
प्रदान करैत अछि. अमेरिकी कवि
रबर्ट फ्रास्टक 'द रोड नॉट टेकेन'
कविताक विषय, जकरा आहिमे कवि
कहैत छथि जे हम ओहि रस्ता
पर नहि चलब, हम ओहि पर
चलब. अर्थात् आ रस्ता छैक
ओहि पर भीड़ होइत चलल
छथि, ओहि पर चलैत नहि मात्र
हम मिल देखारब अपितु, अपन
वैशिष्ट्य संग आनल देखा जाएब।

5

मैथिलीमे मुसलमानलोकनिक
जीवन-चर्या पर अनेक कथासभ लिखल
गेल अछि। मुदा, जखन हिंदू आ
मुसलमानक बीचक वैवाहिक सम्बन्धकेँ
कथाक विषय बनाओल जाइत अछि,
आ समस्त समाज बनरबाक उद्घोषणा
करैल जाइत अछि, तखन हमरा
निराशा होइत अछि। एहनाहिन
अशोकजी स्वतंत्र भारतमे मुसलमान
आ हिंदूक सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धक
ओहि तन्तुसभकेँ, जे व्यावहारिक जीवनमे अछि,
अत्यन्त कुशलतासँ उद्घाटित करैत छथि

अपन कथासभमे जे पारस्परिक सम्बन्धकेँ
स्थापित कयने अछि। एहन विषय सन्दर्भित
हुनकर 'छल', 'राग' आ 'ओ दुनू
साइकिल सिखैत छल' कथासभ मोन पड़ैत
अछि। 'छल' कथामे देखाओल गेल
अछि जे असलम लोकमे आकि
एक टा हिंदू जे मुसलमानक अभिनय
करैत छथि, से अभिनयक उपरान्त
बिसरि जाइत छथि, जे ओ हिन्दू
छथि। आ से तखन मोन पड़ैत छनि,
जखन हुनका स्मरण दिआओल जाइत
छनि। कथाक उद्देश्य जाइत अछि जे
की भारतक कतेको मुसलमान भारतक लोकमे
आबि सेहो मुसलमान नहि छथि?
~~की इ~~ 'राग' कथा कहैत अछि
जे मुसलमान आ हिंदूमे फरक
खालि प्रथा एक छिक, आ दुनू
सम्प्रदाय मांसभक्षी छथि, दुनू
एके सम्प्रदायक लोक छथि। तहिना
'ओ दुनू साइकिल सिखैत छल'
कथा कहैत अछि जे इब्राहिम
मुसलमान छथि, कनेकमे लड़ाइ-झगड़ा
होइते रहैत छैक, मुसलमानक डरसँ
तँ स्कूल नहि जाएब? अर्थात इब्राहिम
मुसलमान छथि आ हुनकासभक बीच

6

हमरासभकेँ धार्मिकता, बनाए धरि
रहबाक चाही, रहबामे आडम्बरताक
अनुभव नहि हो, से रहब सीखब
चाही।

अशोकजी नीक कवि रहल छथि।
कवितादि कम्मे नहि लिखने छथि।
ओ ज्ञाण आ अनुभवक कवि छथि।
यद्यपि, हिनकर एकटा कविता-संग्रह—
'चक्र व्यूह' प्रकाशित छनि, मुदा, ई
पठनीय थिक। हिनकर एक टा, कविता
स्मरण भए आएल अछि—'दाँत'।
कविताक विषय, मनुक्खक बिदाइ कालमे
भार द्वारा देल जाइत [illegible]
थिक, जे मिथिलाक प्राचीन परम्परा
थिक, आइयो भार अपन संगी
बनैत छथि, जे [illegible] तापसकाल,
([illegible] [illegible] बनल [illegible] पर)
मेहतो पानि पड़ल छैक। मुदा,
बेटी उत्तर दैत छथि जे एना
करबाक हमर दाँत नहि छाड़ि
सकत? अर्थात्, ई कविता दू पाँतिक
[illegible] [illegible] प्रशंसनीय कविता
थिक। तहिना, 'मौध' कवितादि सुन्दर
राजनीतिक व्यंग्य प्रतीकात्मक अभिव्यक्तिपर्यन्त अछि।

मैथिली साहित्यमे विवेचना आ
आलोचनाकेँ एकै बुझल जाइत अछि।
भावनाकेँ फुनू कू पक्षपाति बिनु कोनो
कृति आ रचनाक विश्लेषणक।
अशोकजी नीक काज करने छथि
आलोचनामे। एहि लेल ओ हिनक
आलोचनात्मक आलेखमे पर्याप्त पादटिप्पणी
रहैत अछि, आ विषय-सन्दर्भित
अनेक उदाहरण प्रस्तुत कए
अशोकजी अपन मन्तव्य पर
ओहैत छथि, ओ हिनक आलोचकीय
दायित्वकेँ बोधकेँ जगैत अछि। एखनहि,
कोनो कृति अथवा रचनाक आलोचना
लेल अशोकजी कृतिकार अथवा
रचनाकारक व्यक्तित्वक सम्मुख
राखि आलोचना लिखैत छथि
जे हिनक आलोचकीय दृष्टिक
विशेषता थिक।

अशोकजी प्रचुर व्यंग्यात्मक आलेख सेहो लिखने छथि, जकर एकटा संकलन प्रकाशित अछि। हिनक व्यंग्यमे सर्वजन बोधगम्यता अछि, तेँ साहित्यिक मर्यादाक सेहो नीक अनुपालन भेल अछि। तकर पृष्ठभूमिमे हिनक संयमित भाषाक अनुपम योगदान अछि। हिनक यात्रा-वृतान्त, जे पुस्तकरूपमे प्रकाशित अछि, ओहिमे चित्रात्मक वर्णन (पिक्चरस्क डिस्क्रिप्शन) अत्यन्त आकृष्ट करैत अछि।

एहन विशिष्ट लेखनक पृष्ठभूमिमे हिनक विशिष्ट व्यक्तित्व छनि, जाहिमे अहाँ पाएब जे अशोकजी अपनासँ छोट आ पैघकेँ सगरि दूर आ निकट व्यक्तिकेँ समान आदरसँग देखैत छथि। हिनकामे महत्त्वाकांक्षा, आत्मप्रशंसा आ मिथ्या-भाषण कखनहुँ नहि देखब। आ हिनकर यैह विशिष्ट व्यक्तित्व हिनकासँ जे लेखन करबैत अछि, से विशिष्ट लेखन होइत अछि आ साहित्यिक अध्येताक संग सर्वसाधारणोकेँ आकृष्ट करैत अछि। ¤

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.शिव कुमार मिश्र- अशोक आ मैथिली साहित्य संस्थान



शिव कुमार मिश्र

अशोक आ मैथिली साहित्य संस्थान

प्रसिद्ध साहित्यकार अशोक कुमार झा अपन लेखनक बलें साहित्यकार विशेषरूपसँ कथाकारक माँझमे विशिष्ट स्थान पाबि गेल छथि। सरकारी पदाधिकारीक रूपमे जहिना हिनक विलक्षण दायित्व प्रसंशनीय रहल अछि तहिना साहित्यिक संस्थान सभक संगठन आ संचालनमे सेहो हिनक दीर्घ अनुभवक सहयोग भेटैत रहल अछि।

मैथिली साहित्य संस्थान,पटनाक क्रियाकलाप पुनः आरंभ कयल जाय ताहि विषय पर 2014 मे श्रीमान अशोक जी, भैरव लाल दास आ हम विद्वान निसर्ग सासायटीक कार्यालयमे विमर्श कयल। ओहिलेल ओकरा कार्ययोजना पर सेहो चर्चा भेल। हमरालोकनि ओहि लेल सेहो चर्चा कयने छलहुँ जे आन संस्था द्वारा नियमित पर्व मनाकय सांस्कृतिक

कार्यक्रमक परम्पराकें आगू बढ़ाओल जा रहल अछि मुदा मैथिली साहित्य संस्थान मैथिली दिवसक आयोजन कए मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा विषयक अनुसंधान कार्यकें आगू बढ़ौलक। मैथिली दिवसक आयोजनक पाछू एहि तथ्य पर विचार भेल छल जे संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली भाषाक प्रवेश जाहि तिथि क' भेल छल ताहि तिथिकेँ मैथिली दिवसक रूपमे मनाओल जाय। हमरा तीनू गोट एहि विषय पर एकमत रहय एकटा बैसारक आयोजन बिहार रिसर्च सोसायटीक सभागारमे कयल जाहिमे ओहि विद्वान सभकेँ आमंत्रित कयल गेल जे लोकनि एकर स्थापना कालसँ संबद्ध छलाह।

ओना मैथिली साहित्य संस्थानक स्थापनाक श्रेय स्वर्गीय राजेश्वर झाकें देल जाइत छनि जे 1969 ईस्वीमे ताहि कालक मैथिल ओ अमैथिल विद्वानसभक सहयोगसँ पटनाक बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यालयमे कयलनि। दीनानाथ झाक अध्यक्षतामे एकर गठन भेल जकर सचिव स्वयं राजेश्वर झा भेलाह। संरक्षक बाबू लक्ष्मीपति सिंह छलाह ओ रमानाथ झा, जटा शंकर झा, गौरी नंदन सिंह, गोपी रमण चौधरी, प्रोफेसर जगदीश चंद्र झा (मुख्य संपादक, मिथिला भारती), सुधांशु शेखर चौधरी,आचार्य रमानंदन शास्त्री,कुलानंद नंदन,बलदेव मिश्र, सुरेंद्र मिश्र, प्रोफेसर हेतुकर झा,लखनाथ मिश्र, इन्द्र कान्त झा,सुशील कुमार झा, शैलेंद्र मोहन झा,चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा, अभय कांत चौधरी, दया शंकर उपाध्याय, राधा कृष्ण चौधरी, उपेंद्र ठाकुर, रामदेव झा,जगदीश्वर पांडेय, विद्यानंद झा, कमल नारायण झा कमलेश, हंसराज, अमरेश पाठक, बी पी मजूमदार, परमेश्वर झा,जय नारायण ठाकुर, वैद्यनाथ झा, विजय

कुमार ठाकुर, राजेंद्र राम,नरेंद्र झा,रमाकांत झा, करुणानंद दास,सच्चिदानंद सहाय,जटाशंकर दास,रामनाथ झा,मंत्रेश्वर झा, प्रबोध नारायण झा,बाल गोविंद झा,गंगेश गुंजन, नवीन चंद्र मिश्र, कपिलेश्वर झा, गोलोक नाद मिश्र, इन्द्र नाथ सिंह ठाकुर, गिरीन्द्र मोहन भद्र, सीताराम राय,प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन',प्रकाश चन्द्र प्रसाद, उपेंद्र दोषी, उदय चंद्र झा 'विनोद' प्रभृति कतेक विद्वानसभक सहयोग एहि संस्थानकें भेटैत रहल।

त्रैमासिक शोधपत्रिका मिथिला भारतीक प्रकाशन 1969 सं प्रारंभ भेल छल। कुल पांच अंक प्रकाशित भेलापरांत 1977मे एकर प्रकाशन बन्न भय गेल। पंडित राजेश्वर झाक स्वर्गवास भेलाक पश्चात एकर कार्यकलाप ठमकि गेल। एहिमे जे शोधालेख प्रकाशित भेल छल ताहि सभ पर कतेक शोध प्रबंध पश्चात तैयार भेल मुदा एकर अभाव मिथिलाक अनुसंधान विधाकें बड़ आघात पहुँचलक। मिथिला भारतीक अतिरिक्त कतेक आओर शोधग्रंथ आ साहित्यसभ प्रकाशित भेल छल। अवहट्ठ :उद्भव आ विकास नामक पंडित राजेश्वर झाक पोथीकँ साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छल। लोकगाथा विवेचन नामक शोधग्रंथ एकटा विशिष्ट उपलब्धि छल। पंडित राजेश्वर झाक पश्चात एकर शोध आ प्रकाशन कार्य बन्न भेलापरांत दोसर स्थानीय शोधपत्रिकाक प्रकाशन नहि भय सकल। ओना रांटी ड्योढ़ीसं किछु अंक जिज्ञासाक अवश्य प्रकाशित भेल मुदा ओहो अल्पायु रहल। मैथिली साहित्य संस्थान द्वारा साल भरिमे मात्र विद्यापति स्मृति दिवसक एक गोट विधि पूरा कएल जाय लागल। बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यकलाप बन्न भेलापर 1997सं ओहो बन्न भय गेल।

बिहार निसर्ग सोसायटीक बचेबाक लेल प्रायः बारह वर्ष धरि संघर्ष करय पड़ल। बीस कोर्टसँ बेसी मामिला लड़य पड़ल। 2009मे एकर सरकार द्वारा अधिग्रहण कय एकरा संग्रहालयमे मिला देल गेल। एकर पछाति सब कोर्टक मामिलासभ चलैत रहल। 2014मे किछु संघर्ष विराम भेल।

ओकर बीच संघर्षक अवधिमे कोर्टक बुद्धिजीवी आ विद्वानलोकनिक सहयोग भेटल। एहि क्रममे 2008-9मे बिहार विधान परिषदक परियोजना पदाधिकारी भैरव लाल दासजीसँ संपर्क भेल। संघर्षक अवधिमे सदिखन हुनकर अभिलाषा रहल जे जहिया संघर्षक अंत हएत आ बिहार निसर्ग सोसायटी अपन कार्यकलाप प्रारंभ करत एकर पछाति मैथिली साहित्य संस्थानक क्रियाकलाप सेहो हुनकसँ प्रारंभ कयल जायत। हुनक विनम्रप्रीति अभिलाषाक कार्यान्वयनमे भैरव लाल दासजी आ अशोक कुमार झाजी सहयोग भेटल।

अस्तु, अशोक कुमार झाक संयोजनमे एकटा बैसार हुनक कार्यालय बिहार निसर्ग सोसायटीक सभागारमे भेल। प्रोफेसर हेतुकर झा, प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र, प्रोफेसर शंभु कान्त झा, प्रोफेसर महेन्द्र नारायण कर्ण, रामचंद्र खान, योगानंद झा, भैरव लाल दास प्रभृति कोर्टक विद्वानसभ उपस्थित भेलाह आ मैथिली साहित्य संस्थानकेँ पुनर्जीवित करबाक निर्णय लेल गेल। मिथिला भारतीक नवांक शृंखलाक प्रकाशनक सेहो निर्णय भेल जाहिमे अंग्रेजी भाषाक शोधालेख सेहो प्रकाशित करबाक निर्णय भेल। मैथिली दिवस ४ जनवरीकेँ मनेबाक निर्णय सेहो भेल। एकर पछाति पटना उच्च

न्यायालयक न्यायमूर्ति वी के वर्माजीक निर्देशानुसार एकर तिथि 7 जनवरी कयल गेल आ मैथिली दिवसक आयोजन सात जनवरी क' होमय लागल। एकर आयोजनमे आदरणीय अशोकजीक सहयोग सदिखन रहैत रहल अछि।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर हेतुकर झाक निर्देश पर हम आ रैमन लाल दासजी मिथिला भारतीक संपादक दायित्व ग्रहण कयलहुं। संपादक मंडल मे वरिष्ठ विद्वानसभकें स्थान देलहि। सभक सहयोगसं एखन धरि मिथिला भारतीक नौ अंक प्रकाशित भेल अछि। एकर स्तर बचबाक सदिखन चुनौती बनल रहैछ। बिहार - मानखंड नाथक ई एकमात्र शोधपत्रिका भय गेल अछि जकरा विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक आर्ट एंड ह्यूमनिटी शाखाक केयरलिस्टमे स्थान भेटल छैक। एहिमे मैथिलक अलावा अमेरिका, जापान, कनाडा, नेपालक विदेशी विद्वानसभक संगहि बंगाल, असम,मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश प्रभृति अन्य प्रांतक विद्वानसभक शोधालेख सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। एतम् प्रकारें मिथिला भारती अंतर्राष्ट्रीय शोधपत्रिकाक स्वरूप ग्रहण कय लेलक अछि।

एहि ठामहुँ मैथिली साहित्य संस्थानकें पुनर्जीवित करबाक लेल आदरणीय अशोक कुमार झाजीक योगदान स्मरणीय रहत। हम हुनक आभारी छी। हुनक स्वस्थ ओ सुदीर्घ जीवनक कामना करैत छी।

-संपर्क-9122686586

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓒.𑓑𑓗.𑒬𑒻𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠- 𑒁𑒬𑒼𑒏𑓁 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩



𑒬𑒻𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠

𑒁𑒬𑒼𑒏𑓁 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩

अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार

□ शैलेन्द्र आनंद

सम्भवतः सत्तरि ईं क ग्यारह कक्षा (?) छल हेतैं। हम बोर्ड परीक्षा पास कऽ गेल रही। मोन उल्लाससँ भरल रहय। सहि बीच पैठघाट पर 'नवयुवक नाट्यकला परिषद, लालगंज' द्वारा श्री जीवनाथ मिश्रक निर्देशनमे कोनो एकांकी (नाम विस्मृत भऽ गेल अछि) केर आयोजन भेल रहैक। लग-पासक गाममे जँ कोनो नाटक प्रदर्शित कएल जा रहल अछि आ हमरा लोकनि नाटक देखबाक लेल नहि जाय, ई सम्भवे नहि छल। नाटक देखबाक लेल पैदल तीन-चारि कोस जायबला एहि दलमे हमर अग्रज राज, सियाराम, हर्षपति, लक्ष्मण आदि रहथि। हमर सभक ई दल गामक रासलीला धरि देखब नहि छोड़ैत छल। रामलीलाक 'सुपारीलाल' आखनहुँ धरि विस्मृत नहि भेलाह अछि। से, बैनपनक ओ स्मृति कहियो-कहियो मोनक अकासमे उदित भऽ जाइत आ तखन विगत जीवनक कतेको पृष्ठ अनायास फड़फड़ाय लगैत।

अशोक, अर्थात कथाकार अशोक, ओहि समय बनारसमे रहैत रहथि। कहियो-कहियो गाम आबथि। हुनक घर भुइयाँथा अर्थात लोहना दछिनबारि टोलमे आ हमर पछबारि टोलमे। हुनक जेठ भाइ आदरणीय सुशील बाबू आ हमर जेठ भाइ आदरणीय धीरेन्द्र जी, दुनू मित्र। तावत हुनका लोकनिक छोट भाइ अर्थात अशोक-शैलेन्द्रक मैत्री नहि भेल छल। शिवशंकर, अर्थात कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास सँ मात्र अन्तरंगता रहय। हटाउ एहि पृष्ठकेँ। जीवनमे अहिना दृश्य बदलैत रहैत छैक। दृश्य बदलल आ हम कोना दूसँ तीन भऽ गेलौं, एकरो संदर्भित करैत अछि-हमर नाट्य-प्रेम। से कहऽ जे लागल रही जे अशोककेँ पहिले-पहिल पैठघाटक ओहि एकांकीमे देखने रहियनि। ई बात आब हुनको स्मृतिमे नहि छनि। मुदा परिचित ओ ओही दिन भऽ गेल छलाह, मुदा मैत्री नहि भेल छल। ओना ओ कहियो-कहियो हमर बड़का भाइ (धीरेन्द्र जी) क लग कविता-कथा लऽ कऽ आएल करथि। ओहू समय हमर मैत्री नहि भेल। मुदा, कतौ ने कतौ मैत्रीक बीजारोपण अवश्य कऽ गेल। हम अशोककेँ चिन्हय लगलियनि। 19७1 ई०मे 'गोविन्द दास नाट्यकला परिषद, लोहना'क स्थापना, परिसरक तीन-चारि गामक कलाकारक सहयोगसँ भेल। आदरणीय सुशील बाबू, सद बाबू आ जीबू बाबू एहि संस्थाक प्रधान रहथि। संस्था लोहना पाठशालापर प्रत्येक वर्ष शारदीय नवरात्रिमे तीन राति नाटकक आयोजन कएल करैत छल। एही क्रममे पूर्वाभ्यासक लेल हम आ शिवशंकर अशोकक घर पर गेल रही। अशोक गाम आएल रहथि।

JUMBO

①

शिवशंकर कहलक - भाइरे! ई नव विद्यार्थी ! हमु अशोकक पूरा परिचय ओकरा देलियै आ ओही दिन अशोकक संग मैत्री आरम्भ भेल, से तेहेन प्रगाढ़ भऽ गेल जे गामक लोक इहो बिसरि गेल जे अशोक बनारससँ लोहना आएल छथि। हमरा लोकनिक मैत्रीकेँ गामक लोक लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसब-पाहीसँ मानैत अछि। जखन कि 'महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय', सरिसब-पाहीक हम तीनू गोटे छात्र रहल छी। अशोक, विज्ञान संकायक आ हम आ शिवशंकर कला संकायक। आह, कखनहुँ कैँ हमहूँ भसिआइ लगै छी/कहबाक लेल चलल छलौं- अभिनेता अशोकक मादे आ मैत्रीमे भासि गेलहुँ।

अभिनेता अशोक, अपन किछु कीरदार सँ जनमानसमे अपन अभिनेता रूपकेँ सुरक्षित छथि। ओना १९६४ ई॰सँ 'मिथिला विकास क्लब, लोहनाक रंगमंचक हम कलाकार रहल छी। मुदा, १९७१ सँ आरम्भ आ १९८० ई॰मे अंत हमरा लोकनिक रंगयात्रा, कतिपय विशिष्ट पक्षकेँ उजागर करैत अछि।

मंचपर अशोक :— चतुर्भुजक नाटक 'बहादुर शाह'क अंग्रेज आफीसर 'हडसन'क भूमिकामे ओ क्रूर स्वभावक प्रदर्शन करैत, कहियो बिस्मृत नहि हएताह। थारमे सजाओल, बहादुर शाहक बेटाक नरमुण्डकेँ भेंट करैत, हडसन अशोक, जनताक दुरा गारिसँ तड़र भऽ गेलाह। ई छल खलनायकक सुफलताक सोपान जे हुनक स्वभावक बिपरीत भूमिका छल। अशोक भूमिकामे जीबैत छलाह। ओ कोनो भूमिका होअय, ओहि पर ओ चिंतन करैत छलाह, मनन करैत छलाह आ मंचपर ओकर सफलताक लेल, खूब परिश्रम करैत छलाह। एक बेर ओ जखन पटना कोपरेटिव बैंकक असिस्टेंट रजिस्ट्रार रहथि, अकलूक नाटक 'आगि धधकि रहल छै' पटनासँ लेने अएलाह आ कहलनि -'कल हमलोग इसे खेलेंगे।' काल्हि अर्थात अष्टमीकेँ। षष्ठी दिन हमरा ज्वर छल जे खसबाक नाम नहि लैत छल। आ सप्तमीकेँ अशोक आग्रह कऽ रहल छलाह। अशोक, माने हमर ओ मित्र, जकर विश्वासकेँ हम नहि तोड़ि सकैत छलहुँ। मुदा, लाचार छलहुँ। अशोक जिदिया गेल छलाह। बरहे, हमर ज्वर दूर करबाक लेल, तुरत दवाइ मङबौलनि। बलजोरी दवाइ खुआओल गेल। ज्वर खसि पड़ल। मुदा कमजोरी बढ़ि गेल छल। अशोक, गरीब पागलक भूमिकामे आ हम बेरोजगारक पागलक भूमिकामे चयनित कएल गेलौं।

हमर कोनहुँ अनुनय बेकार छल। अशोकके अधिकारक स्वर
किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छल। क्लबक अन्य कलाकार
बहुत उत्साहित रहथि, हमरा लोकनिकेँ मंचपर अभिनेताक
रूपमे देखबाक। डाइरेक्टरक रूपमे तँ ओ सभ देखि चुकल
छलाह। मुदा दशकक बाद मंचपर हमरा लोकनिकेँ एक संग
देखबाक सुयोग लगलनि, तकर विशेष उत्साह छल।
कुर्सी पर मूर्तिवत बैसल छी। अजय आ हरिशंकर हमर समीप
ठाढ़ उत्साहित करबामे सम्पूर्ण ऊर्जा लगा रहल छथि। अशोकक
मेकप जखन भऽ गेलनि, तखन हमर मेकप आरम्भ भेल।
आ मेकप समाप्त भेले छल कि नाटक आरम्भ हेबाक घोषणा कएल
गेल। पटओट संवादक लेल राजू भाइ अपन स्थान ग्रहण कऽ चुकल
छलाह। हमर कुर्सी विंगस केबगलमे लगा देल गेल छल। जाहिसँ
मंच पर उपस्थित कलाकारक भाव-भंगिमाक निरीक्षण कएल
जा सकय। किछुए कालमे अशोक अभिनेताक रूपमे मंचपर
उपस्थित छलाह। अशोकक अभिनयक सूक्ष्मतम संवाद-प्रेषण
भाव-भंगिमाक संग, जखन तेज होइत गेल आ सम्पूर्ण दर्शककेँ बान्हि
करुणाक रसधार बहा देलनि तऽ दर्शक चुप्प नहि रहि सकल।
थोपड़ीक गड़गड़ाहटि, हुनक नाट्यकलाक लोहा मानि लेलक।
हमर छाती धड़कि रहल छल। फूल बाबू (स्व० अरुण कुमार)
केँ हाथक इशारासँ जल पीबाक इच्छा देखौलियनि। ओह!
अद्भुत समर्पण रहनि, अपन डाइरेक्टरक प्रति। तुरत जल
हाजिर भऽ गेल। हम एक साँसमे पानि पीबि गेलौं। आब
हमरहि पारी छल। अशोक दर्शकके जीति चुकल छलाह।
एकहि रसक उपस्थापन, हमर स्थापनामे बाधक तत्व छल।
तत्क्षण निर्णय लेल आ आंगिक प्रदर्शन एवं विभिन्न हास्य-
कौशलसँ मंचपर प्रवेश लेलहुँ। कुनेत दर्शक समुदाय "ले
चल मुझे भुलावा देकर, नाविक धीरे-धीरे" के स्टाइलमे हँसय
लगलाह। आ तत्क्षण हमरा बोध भेल रहय जे गेंद
आब हमर हाथमे अछि, मात्र नेट तक ओकरा पहुँचा देबाक
छैक। हास्य, करुणामे बदलैत चल गेल। दर्शक थोपड़ी पर
थोपड़ी बजबैत चल गेलाह। भूमिकाक सफल निर्वाह कएल
आ ग्रीन रूममे जा चित्त भऽ गेलहुँ। कलाकार लोकनिक
तत्क्षण उपचार आ अशोकक थपकी, हमरा अखनहुँ मोन अछि
"जियो, मेरे मिट्टी के शेर, गजब ढा दिया तूने!" आ हमर ऊर्जा
एहि शब्दक अनुरागसँ ततेक मजबूत भऽ गेल जे लागै नै करय
जे हम कमजोरीसँ खसि पड़ल रही। हम दुनू गोटय परीक्षा पास कऽ

(8)

गेल रही। शिवशंकर, इन्द्रकांत आ विनोद सुमक अभिनय
कें सराहल गेल। मुदा हम आ अशोक चर्चाक विषय बनि गेलौं।
एकर अंतर्कथा मात्र कलबक कलाकार बूझि रहल छल। जबरकें
बलजोरी भगा, एक दशकक बाद, एकाएक मंचपर अपन
कलाकें प्रदर्शित करब, एसकें विपरीत दिशामे मोड़ि लक्ष्य प्राप्त
करब, मात्र कलाक प्रदर्शन नहि, हठयोग छल। जकर सूत्रधार
अशोक छलाह। वएह अशोक जे दसवर्ष पूर्व हडसनक
क्रूरताकें साकार करने रहथि आ आइयो गरीबी नहि देखड़
बला परिस्थितिमे जीबैत, गरीबक अनुकृति कोन रूपमे करलाके
ओकर गवाह गामक ओ प्रबुद्ध दर्शक अछि जे हुनका मंचपर
अभिनय करैत देखने अछि। अशोकक मोनमे गाम बसैत अछि,
गामक नाटक सदरिकाल चकमाडरा लैत अछि, भैत रहत।
कारण, नाटकक पियास करबनहुँ मिझाइत नहि छैक। ओ कहियो
'मीनाक्षी' नाटकक 'बल्लाल सेन' भऽ उभरय आकि 'बड़का साहेब' भऽ
नाटक जीवन थिक आ जीवन जीयब एक कला। कलाकें
कलाकार जीवंत बनबैत अछि। अशोक जीवन्त कलाकार छथि।
सम्पर्क सूत्र - 8521202514.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१६.गजेन्द्र ठाकुर- कवि अशोक



गजेन्द्र ठाकुर

कवि अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ कए जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जाहिमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आर कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मनी प्रिय

कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ए पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै रहऽ पबै छै। आ इहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगीमे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दबाव पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ए तीन सयमेसँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरा विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखन ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द इहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उछौवला घटना आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै। प्रेमचन्दक एतयसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन पोथीक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दैत छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबस्त सेहो हमरा नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दैत छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ई ड्योढ़ी पर्बत भयी, आङन भया बिदेश।"

महाभारत भाव लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' एकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

ई हमरा बुझने तीन रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अनचिन्ह ठाकुर अपन पाठी नागनाऽक लोकपउकँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहुँ ओ शब्दावलीकँ प्रयुक्त कs रहल छी।

कवि अशोक

पहिल चनधअशोकक : 'चक्रव्यूह' (सामान्य पाठ)

महाभारत एकटा अद्भुत ग्रन्थ अछि। ऐ जय संहिता कथा लेखकक नर्कशाय अछि, महाभारत कथा, मुदा ऐ कथा सभ पद्यम अछि ! गीत -महाभारतक अति लघु पद्यात्मक मैथिली रूप हमर ग्रन्थाहेळ प्रबन्ध म रहत।

हन पनहम दिनक युद्ध रल शुरू जखन,

संसप्तक आ त्रिगर्तकँ पछुआबैत गेल अर्जुन।

तखनहि युधिष्ठिरकँ पता चल चक्रव्यूहक,

अभिमन्यु देखि चिन्तित काकाकँ कहल,

गर्भमे सुनल पिता माताकँ वर्णन सुनबैत छल,

चक्रव्यूहक छह द्वारकँ तोड़बाक सहटा,

स्मनक युद्धक वर्णनक विधि बचल नहि कोनाटा।

मुदा साहस ज्ञानक युद्धक वर्णन सुनल नहि,

माता सुनलि जखन बचल एकटा ज्ञान सैह।

कनि थासक यटम सीखि अनुवाक विम्ब,

शब्दार्थ नहि वीनक अछि ई प्रतीक ।

सासँ जखन बढल अभिमन्यु ककरा नहि बुझाएल,

कोन अछि ज्ञान कोन प्रवेश जयद्रथ नकक जाए,

आउ दीम काक ई अछि प्रवेश ज्ञान यौवन एतहि।

अभिमन्यु कए प्रहार जयद्रथपर वाणसँ गेल दीगन,

दीम दासन सनानीकँ जाकि जयद्रथ ठाढ ओतहि।

दासन ज्ञानपर ज्ञाण ठाढ जखन वाण चलावथि,

काटल धनुष ज्ञाणक ब्यूह दपि बढलाह आगू।

गसन ज्ञानपर चकित कर्णपर कए वाण बनखा,

बढल चानिम ज्ञानपर अश्वत्थामा जाए ठल,

युद्ध दल घनघान एतए मुदा जाकि सकल नहि,

अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन दल चिन्हि,

कर्ण आर कनव की बाजत धनञ्जय पुत्रक निश्चिन्त।

कर्ण बाजल सभ मिलि साथ महारथी हम सभ,

नहि सकब ओहि बालककेँ नहि छी सकत असगर।

सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जकर,

पहुँचि गेल सामने झट पहुँचल अभिमन्यु तखन।

अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य आगाँ कहल,

ई सभ अधर्मी अछि जुटल, कहू तँ रथ घुराबी,

अर्जुन पुत्र हम नहि छाड़ब युद्ध हम ओना देखू,

पार्थपुत्रक- शौर्य रथ घुमाउ चक्राकार करू अहाँ।

तखन लक्ष्मण आएल सामाँ अभिमन्युक आगाँ,

बाणसँ काटल मस्तक लक्ष्मणक, प्राण हरल,

अजय ई अछि अरथ्य ओकर कनक कतेक प्रहार सिनसि आ

तखनहि सारथि अभिमन्युक खसल टूटि गेल रथ ।

चीराँ आबि शत्रुआनि चक्र गदा लए आगाँ आ चलल,

दुःशासनक पूत्रसँ गदा युद्ध रल दुनू उागदि खसल ।

यहिन उ0 दुःशासनक पूत्र प्रहान क0लक मस्तकयन,

सफनथीक वीच खसि य0ल सूरन्द्रापूत्र यणि उफनाक।

(गजब्र 0क्रुन, व्रश्रारद्रगीत प्रबव्र -, २00९(

'चक्रव्यूह' कविता संग्रहक यहिल कविता अछि 'चक्रव्यूह' ज००म आ०० न कृष्ण छथि न युधिष्ठिर आ न अर्जुन, आ०० महाराजाण युद्धक) गँ नवल अछि चक्रव्यूह। (गनहम दिन

'हम किछु युछव म' चीनहनक्षक वर्णन अछि। -

खिसियाकँ दुर्योधन दलक ००ी आस्था पूनः ००ी,

चीनहनक्ष कनू दुःशासन द्रौपदी दासी छी। -

द्रौपदी क0लहि नहाना श्रेष्ठ लाकनिसँ

विनय ००ी अछि लाज वचाऊ कनौण छी विनती।

सर क्षा सूका माथ अयन उादि सराम,

कृष्णा छा0ल सर आश सर दिशासँ,

र्क्ष्ड बसल अर्हाँस टा अछि श्र्ी आशा,

काहूना नाखु र्हमन श्र्ी लाज अछि प्रयाशा।

आर्द्रसन्नस हलि नर्हलि यूकानि द्रौपदी-,

(गोर्हाउ खसलि सराविव-, मूर्छ्रित ।

लागल खीचय द्रौपदीक वस्त्र दृश्शासन,

सरासद दखल चमकान श्र्ी प्रतियल,

यावत नर्हल खिंचैत वस्त्रकँ दृश्शासन,

वढैत नर्हल वस्त्र द्रौपदीक यावत गखना।

(गजेन्द्र Oाकुन, न्रश्रार्हश्रगीत प्रवन्न -, २००९(

कृष्णक र्हुमिकासँ व्यास प्रसन्न छथि, मूदा अ(शोक अप्रसन्न। आ र्हुनकान अप्रसन्नताक कानध अछि, र्हुनका लगे छह्नि ज'ओहि चीन-र्हनधम आर्हु(Oर्हूनियाँ दs /दुस्सासनक आगु /कृष्णक र्हुमिका / र्हेत अछि'। आ स र्हुनकान सम्बन्धक द्रौपदी नाढट र्हs (गेल छह्नि, अयन लाश अयन यीOयन उधैत वैताल कर्हिया र्हता, विक्रमादित्य कर्हिया र्हता, स जिज्ञासा छह्नि। 'सानियत नूस सँ कविता अछि ओकरा नैनतिनक ज अ(शोकक यीढीकँ यनसल (गेल नर्हि, जात्s सानियत संघक वअर्हु आ अमनिकाक खिधांश

कएल जाइत रहै, आ ई सभ करैत रहथि ओ अपन बालबच्चाकेँ - पढ़ेल अमेरिका पठबैत रहथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी काका पटीआ दइल दरभंगा। गेल आ युनिवर्सिटी एनिया घुमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर गाँ पूना विद्यालय काका नै छै। ओ कनिआम अशोक सहा सएह करै छथि। सालम चलि वन राट दै लाक आ राट दऽ हांक कहै लाक हुनका यसिन्न नै छन्हि, मुदा ओ बनवन हाइत राटक लल जे - सामाजिक समीकरणक निर्माण हाइत अछि स अशोक दखवासँ चुकि गेला। ओऽ समीकरणक यनिवामसनूय जे सामाजिक यनिर्णनिक उत्पन्नक पाठक पनंग उठैए स अशोक चीन्हि नै सकला। 'गीत जे नै लिखल गेल' आ 'की सूनाउ अहाँकेँ?' कवि कर्मक बदनायन आधानित अछि। 'लाक किछु नहि करैए' म मनूक्खक अकर्मण्यता आ 'गाना गछैन नही' म मनूक्खक स्वार्थ विषय बनल अछि। 'सचिवालय' कार्यालय शब्दावलीक आधानयन नचित अछि। 'शिलालेख' क विम्ब सुन्दर अछि। कवि आगामीकेँ कहै छथि जे ओकर अप्पावानकेँ शिलालेखयन खचित कऽ सुनिऔत गनवा दी की? आ ओ गाँ स्वगवान छथि, आ स ओ हुनका मृत्यु स्वीकार करवा लल कहै छथि, मुदा ग्रंथ सहा करै छथि जे हुनकर पूनर्जन्म अवश्य हाइ । गीनसँ वर्षी ताऽऽमसनक विश्वक यनिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक 'अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' सामसामी स्वगवानक - अस्तित्वकेँ खतम कऽ नहल अछि कारण ओसँ स्वगवानक मृत्युक अवधारणा सहा सामाँ आयल अछि, स एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतराम पड़ल अछि। इतिहासक अन्तक घाषणा कयनिहान फ्रांसिस फूकियामा जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तियन ओऽ घाषणा -

बादमे ओसँ पलटि गेलाह। कम्युनिस्ट शासनक -कथन छलाह समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फूकियामा सँ सृजित (द्वन्द्व) घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी संघर्ष इतिहासक इति समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन बाद ओ ओ मतसँ आपस भऽ गेला आ कहलन्हि जे समाजक रीति आ राष्ट्रीयता सभक मध्य अखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे 'शिलालेख' महत्वपूर्ण अछि। 'हम कारी बिजली चमकल'मे कवि हृदय आ प्रकृति बीचक सम्बन्ध जे देखऽ चाहैत छथि, से देखि सकै छी, जेना 'गोबर सँ नीपल अंगना मे बनसल'। 'अहाँ कँ क चाही?' शब्द आकि अर्थ, शब्द मात्र गुस्सा वा खखरी आ अर्थ मात्र दाना, जे अहाँकेँ चाही कवि देता। 'बूढ़ी नहि सोहाइए'मे कवि उलहन दैत छथिन, पट लल बूढ़ी अछैत मुदा भैया पट कहाँ हेतै? गाम लगक पैटघाट मात्र पतौ छन्हि, आ जखन हाकिम दबाओ छन्हि तँ अगिला कविता 'पानी आइ जनून लिखबै'मे गाम हम मात्र पतौ छन्हि, मात्र हाइ छन्हि सब छोटछोट गाम - घूमि जाथि। 'असगर'मे समय क दर्पण मे नाच देखबाक चर्चा अछि, बिछुडि गेलायन हटल एकान्तीक हाहाकार अछि। 'नवना सँ पहिन'मे कवि कँ सहटा पानी अनचिन्हार लागि रहल छन्हि, छगुन्ता हाइ छन्हि कना एक जीवन जीवि गेला। 'शून्य' अछि नै मिलबाक कविता, इति समानान्तर चलबाक कविता नै अछि। 'मानक घड़ी'मे मानस एलायन चानन सन शीतल होबाक आ मानसँ गेलायन सहसह करैत साँपक आगमन होबाक चर्चा अछि। चानन आ साँपक बिम्ब संस्कृत सुभाषितानिसँ मैथिलीमे अनलनि अछि कवि, मुदा कहन भिन्न

𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹। 𑒔𑒰𑒢𑒢 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒣𑒩𑒖𑒲𑒫𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒏𑒩 𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒨𑒰𑒢𑒱 𑒂 𑒐𑒢𑒱𑒖 𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒖𑒛𑓃𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒤𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒍𑒞𑓄 𑒮𑒿 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒩 𑒂 𑒣𑒲𑒣𑒩𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒣𑒩𑒖𑒲𑒫𑒲 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒕𑒼𑒙 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒻, 𑒮𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒪𑓄 𑒆𑒣𑒩 𑒯𑒹𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪, 𑒮𑒰𑓀𑒑𑒢 𑒮𑒢। 𑒬𑒢𑒻𑓁𑒬𑒢𑒻𑓁 𑒥𑒩 : 𑒂 𑒣𑒲𑒣𑒩𑒏 𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒰𑓀𑒑𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒑𑒰𑒕 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒩𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒮𑒦 𑒥𑒱𑒢 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒂 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒣𑒱𑒔𑒏𑒰 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒂𑒥 𑒏𑒲 𑒁𑒯𑒰𑒿 '𑒬𑒲𑒞𑒪 𑒔𑒰𑒢𑒢 𑒑𑒰𑒕𑒧𑒹 𑒪𑒣𑒙𑒪 𑒩𑒯𑒥𑒰 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒰𑒿𑒣 𑒫𑒱𑒭𑒯𑒲𑒢 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱' 𑒏𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫 𑒠𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒮𑓂𑒧𑒢𑒰𑒨𑒪 𑒣𑒥𑒻 𑒕𑒲? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒍 𑒔𑒰𑒢𑒢 𑒮𑒢 𑒬𑒲𑒞𑒪 𑒯𑒼𑒥𑒰 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿। 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒞𑒢𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒐𑒝𑓂𑒛𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒢𑒻 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲? '𑒠𑒹𑒫𑒏𑒪 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒩' 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒯𑒱𑒪𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒏 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒱𑒞𑒰𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒏 𑒔𑒹𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒥𑒏𑒼 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢𑓀], 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒞𑒟𑒻𑒫 𑒔। 𑒁𑒪𑓂𑒣𑒯𑒰𑒩𑒲 𑒑𑒵𑒯 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒲, 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒣𑓀𑒔 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝𑓀 ॥𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲𑒏 [𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝𑒧𑒹 '𑒬𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰'𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒂𑒯𑒙 𑒋𑒪𑒰𑒨𑒩 𑒍 𑒍0 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒑 𑒥𑒢𑒪 𑒐𑒰𑒢-𑒪𑒢𑒣𑒢 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒞𑒿 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒲𑒞𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒧𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒩 𑒍𑒞𑒥 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒳𑒞𑒪𑒧𑒹, 𑒮𑒞𑒏𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒞𑒪, 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒢𑒲𑒢 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒧𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒿 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒞𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻 !? 𑒏𑒲 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒕𑒲𑒢𑒱 𑒪𑒪𑒱𑒋, 𑒏𑒲 𑒑𑒰𑒞𑒲𑒏 𑒑𑒞𑒱 𑒞𑒞 𑒞𑒖 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒂𑒯𑒩𑒱 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒏𑒰𑓀𑒅 𑒯𑒼𑒫𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒮𑒲 𑒞𑒖 𑒕𑒻 𑒮 𑒍 𑒢𑒻 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒣𑒥𑒻𑒋, 𑒂 𑒏𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒏 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒱𑒞𑒰𑒢𑒱 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒫𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒅𑒣𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒪 𑒩𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻? 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒞𑒢𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬𑒧𑒹 𑒯𑒧

ञनन उामना (गलौं, ञाs गँ कवि दवकल कुकुनक नाळनि दिलवाक विम्ब मात्र प्रयाग कन छथि। 'विन क्रमक गम्नीन' रुन दुनकन ञसगन रुवाक चर्च कनौ ञछि। 'रुमन काना नाम दs द'म उा उाकन निनाट नूयक ञागाँ ञयनाकँ ञम्फिन्नदीन रुवाक ञनूरुन कनै छथि। 'उदास रानक ञक गीग' ञछि टीसक गीग, टीस दुदयसँ शनीन धनिक। 'कादिया धनि'म कवि मला गाकि नरुल छथि रुनवा लल, ञाशाक माटि लगवौ नरुौ छथि नंगीन सयनाक वर्णनमा मूदा स कादिया धनि? 'ञक निछ्गीन विम्ब :'म ञक विम्ब ञछि काना ञ्ञछाक यूर्गि, दासन ञछि सानिगाञल ञाँखि ञा गसन विम्ब ञछि विन् ववाक प्रयास कनौ खसौ जायव। 'प्रमक गीन ञाखन'म ञक ञछिज उाकन ञाँखिक राषा यदि लिखल शब्द -, कागवा मटकानि कs लिखै छथि मागीय सन याँगि वरुनाञ्ञग छडि, दासनउाकन - प्रगिविम्ब दखै छथि ञयन मानक ञञ्ञनाम, ञा स गरुन प्रगिविम्ब दखै छथि ज घाँटि लवाक, यीसि कs विवा कs लदूलुदान रुवाक मान कनै छडि। गसनम लग ञलासँ उना दाञ्ञ छडि। ञा यञरु छी प्रमक ढाञ्ञ ञाखनसँ ञागाँक गीन ञाखन। 'ञक नागि'म नागिक शीगलगा, नीकनीक ञनूरुगि-, मूदा दिनक नौद? दिननदि --- नदि। 'साँस' सर दिन ञावि जाञ्ञञ निर्लज्ञ वनि, कवि उाकना रागि जाञ्ञल कदै छथि नै गँ वउा दगा ञ्ञजाग। 'नव सीन' ञछि ननवर्षक ञागमनक गीग, विलनसँ दीना वनवाक प्रयासम नै रुs जाथि ञकाद्रा, रुन वञरु शंका ञा निनाशा। 'सीय मरुक मागी'म ञादर्शक झलूसम गाँधीक सदिष्णूगा ञा ञसदयाग क चर्चा (ञाष्ठलन) !ञछि । जिगलायन नै ननन् दानलायन 00। कs दँसि सकै छी टघनल नान जनिय कs वनि सकग मागी। ञा गकन वाद

अछि 'पाँचटा अनतुका कविता' जाहिमे पहिल अनतुका कविता अछि कृष्णक सए साल होएबाक जन्मदिन (कृष्णाष्टमी), मुदा ओ वन बाँसुरी बिसरि वायलिन लऽ कऽ आयल छथि कृष्ण। मात्र कवि वायलिनकेँ विदेशी वाद्य मानैत छथि, हिन्दुस्तानी संगीतक हिसाब ओ ठीक सही छै मुदा कर्नाटक संगीतमे ठीक विदेशी वायलिन आइसँ दू सय साल पहिने सम्मिलित कऽ लेल गेल छल। दोसर अनतुका कविता अछि ताँस खानक मुदा ओकरो पएर पिछड़ि गेलन्हि। तेसर अनतुका कविता अछि निष्ठावलाक, मुदा जखन अगिला पहिया मटकासँ टकराएल तखन ओ संसार बूझि पलक। चारिम अनतुका कविता अछि जीवा लेल जाइत जिनगी एतेक सम्बन्ध, मुदापाँचम ! अनतुका कविता अछि विनाशक कनिया जीवक। चक्रव्यूहक अन्तिम कविता अछि 'दू वृद्ध नार' गुम्हार, विहाड़ि मुदा हृदयक विहाड़िसँ पैघ नहि। साँवनिया नहि मृत्युक प्रतीक्षा। आ हम मनि जाइत छीमारिक !, पपलाइक टूटल घर देखाइत, मारिक शरीरक संग।

दोसर चक्रअशोक चक्रव्यूहक बाद : (सामान्य पाठ)

'हुन सँ' म छोट बटाक दृष्टीत हुवायन कानी मधक घटाटाय आ कविता लिखवाक सून चढ़ब देखबैत ओ कविक कविताक नागानन्द दृष्टी हेलयन बनै छन्हि। 'दाँत' म सासुरम कनियाँकेँ मुँह नै खोलवाक ओ सलाह देल जाइछ ठीक तकर चर्चा अछि। 'आब..' म मारि, का0, बाँसक प्रयोग कम हुन आ सिमेंट, बालु, गिट्टी, लोहा, संगमरमरक प्रयोग बढ़ल लोकाकिम अतीत परिवर्तन कवि देखि रहल छथि। 'ब्रह्माण्ड' म विकास लेल

गाछ, घर, खेत आदिक अधिग्रहणक दंश, यहिना खेतिहरसँ खेत लऽ कऽ ब्रह्मोत्तर बाँटल जाइत छल, आइ लोकसँ जमीन लऽ कऽ नव-ब्राह्मणकेँ बाँटल जा रहल अछि। मुदा निम्नग्रामकेँ नन्दीग्राम चुनौती देलक अछि। 'माछ'मे अछूतक महत्व बुझबैत ग्राम्य माछकेँ येनकेन बाधक रूपमे चित्रित करैत छथि, वा रेना कऽ काज करू, कमाउ जे माछमे नै लागय, से उपदेश दैत छथि। 'मुक्ति समारोह'मे शान्ति प्रतीक परबाकेँ उड़ाओल जायत, ओकरसँ शासन राजाक हाथमे जाइत ई मुक्तिक आश्रम अछि ग्रस्त, मना रहल महान। 'आब किछु करू आचार्य!'मे आचार्यक मात्र चिन्ता होयत मुदा शिष्यकेँ नै अनघोल छन्हि। 'जखन पियास मनि जायत'मे जिनकर चूड़ी करितकेँ नै सोहाइत छलन्हि से तँ आब हुनक चूड़ा करबायब लागल छथि। 'ओहि ग्राम मे नहि रहऽ'मे राजनीति मिसरकेँ बनायल गेल अछि। 'सहर्ष:चुनाव नर्तक'क 'चुनाव'मे जनतंत्रक द्रौपदी छथि तँ 'रोट'मे रोट लेल होइत छल-प्रपञ्च अछि। 'राजनीति आब महकि रहलैए'मे राजनीतिक निकृष्ट रूप देखार होइत अछि। 'कहलनि फुरान अली'मे नकली हिन्दू आ मुसलमान गढ़ल जबाबक चर्चा अछि। 'बुधियार'मे वन आ पीपर सन घन-घन देवानि रकेत करबा यात्र छथि। 'मनुक्ख धर्मोहि थिक कविता'मे कवि कविता की अछि तँ लिखैत छथि सङ्ग ई की नै अछि सेहो लिखै छथि 'शिश्नपूजी लोकक कल्याण नहि थिक कविता'। 'विष'मे कवि रोकि रहल छथि विषधर। 'खायब आ नहायब'मे चर्चित अछि जे यहिना पुरुखक खायब आ स्त्रीक नहायब कम्मे लोक देखै छला मुदा आब? 'जिन्न'मे अपन जनमाओल जिन्न बकार बन्न कऽ रहल अछि। 'की रहल'मे मुन्ना रहल मनुक्खक चर्चा अछि। 'आ0म अनुसूची मे मैथिली'मे

मनानथ यूर्ण रलायन कनिकँ नेषून रs ञाथि, यवीसी खलाथि वा गंगा नहा आवथि स रूना नै नरल छहि जना आव किछ कनवा लल वाँकी नै अछि। साहित्य अकादमीम हअय वा अष्टम अनुसूवीम मैथिलीक प्रवश, ज्ञी मूलधानाक कहनाकँ आन वढलक अछि, सशक्त कलक अछि। मूलधानाक किछ हाठवाउष याथीक लाञ्छनी द्वाना खनीद आ विनु यनिधामक मूलधाना द्वाना कअल जा नरल समीनानक अनिनिक मैथिलीकँ किछ नै रटल छै, हँ समानान्तन धानाकँ ओ सरसँ नियटवाक लल उनट आव वशी महननि कनय यत नरल छै। 'मृत वदलि नरल अछि' म नायूमण्डलक गाय वढवाक ववी अछि, मुदा वहुत प्रयासा सँ वदलैत मृत, वढैत गाय आ उठैत वगुलाकँ कनि दखि नै यावि नरल छथि। 'चलि गेला महाप्रकाश' म सुकान्त साम द्वाना दल महाप्रकाशक मृत्युक सूचना, आ कनिकँ जतकालाम काज अगाहि मात्र हौसला।

ऊयनम अशोकक कविताक सामान्य याठ छल।

कनि

अशोकक समीक्षा: प्राच्य आ पाश्चात्य सिद्धांत सरक आलाकम समीक्षा:

(सिद्धान्त लल दखु हमन याथी मैथिली समीक्षाशास्त्र, विदह याथी www.vi de ha.co.i n यन उयलब्ध)

मार्क्सवाद, अैतिहासिक दृष्टि, संनवनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तन-आधुनिक, नानीवाद आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगम हानतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सहा अध्ययन

कवि अशोकक चक्रव्यूह आ चक्रव्यूहक बादक कविताम चक्रव्यूहक एकटा कविता अहाँकँ विनाश नै करत, मुदा बादक कविता सभ अहाँकँ मुस्कान लागत (अपवाद अछि 'जखन पियास मरि जायत')।

संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे 'चक्रव्यूह' आ 'हम किछु पुछब न' एकटा सार्वभौम महाराजाक कथापर आधारित अछि, मात्र स्थान, काल आ पात्र बदलि गेल अछि।

चीनहुनभक दर्शन अछि। कृष्णक भूमिकासँ व्यास प्रसन्न छथि-, मुदा अशोक अप्रसन्न। आ हुनकर अप्रसन्नताक कारण अछि, हुनका लगै छन्हि जे 'एहि चीनदुष्शासनक /कृष्णक भूमिका /हुनकाम आङ्ग-(0हुनियाँ दऽ देत अछि /आगु'। आ से हुनकर सम्बन्धक शोधपदी नाछट हऽ गेल छन्हि, अपन लाश अपन पीठपर उघैत बेताल कहिया हटत, विक्रमादित्य कहिया हटत, से जिज्ञासा छन्हि।

आब करू संरचनावादसँ हटि कऽ एकर **ऐतिहासिक विश्लेषण** आउ। 'सानियत नुस सँ' कविता अछि एकटा नैसर्गिक जन्म नुकायल छल एकटा सानियत निरंकुशवाद, जे आङ्ग ध्वस्त हऽ गेल अछि।

'गीत जे नै लिखल गेल' , 'की सुनाउ अहाँकँ?', 'लोक किछु नहि करैत' आ 'गाना गठन नहीं' क **मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ देखलापर** लागत जे कविक काजकँ काव्यसँ आगाँ हऽ देखल गेल अछि। जेम सकारवाक राजक संग डाकना हुसियवाक, यूनान आ नव; आ

विकास आ मनक्ष दुनूक नीक जकाँ संयोजन स्ल अछि। उँ ॐी अयन यनिस्थितिसँ कटि कऽ आस्-वास् कनऽ लागेत गँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ॐी निम्न कोटिक कविता स्ऽ जाॐत (जकन स्नमान मैथिलीक सूखाञ्जल मुख्यधानाक मिथिला उैश्वर्य गीत सस्म अछि), मुदा कवि ञकना ञकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग वना स्लन्हि।

'संविकास्क', 'अस्याँ कँ क वाद्दी?', 'चूथ्री नहि साद्दाॐय', 'याँगी आॐ जनुन लिखवे' कँ आव कन **निखण्डनवादी दृष्टिकोणसँ दखी।** निखण्डनवादी कस्त ज संनचनानादीक ध्वन दार्शनिक स्ननुय लैत अछि। कविक कथन स्नयं कविक ध्वनीकनणक स्थायी वा उाणिक स्वायन प्रश्नचिह्न लगेवाक प्रमाण अछि। गामसँ वौचित नर्ग यलायन कऽ सामाजिक लांछनकँ स्रौकि स्त अछि मुदा सवल नर्गकँ गामक नृगवा मान यउे छै ज संविकास्कम दखाॐ यउेत अछि। 'याँगी आॐ जनुन लिखवे' म सस्य हाकिमक लाल-लाल आँखि दखि कऽ गाम घूनवाक मान स्ॐ छन्हि। 'अस्याँ कँ क वाद्दी?' म आदर्श आ नैतिकताक अन्दक घाषणा अछि, शब्द ज वाद्दी स स्टत, साँच आ मूO- शब्द आ अर्थ रुनी नास छै, मुदा आदर्श आ नैतिकता आउट ▯स्र स्रॉक छै, ञक दस्कखाम सस् किछु विकाउ छै मुदा तखना आदर्श आ नैतिकता नै। स कविक ध्वनीकनणक स्थायी वा उाणिक स्वायन ॐी सस् प्रश्नचिह्न लगवैत अछि। ।

'शिलालेख', शिलालेखम मुदा उलटवासी अछि, लाक शिलालेखम अयन कीर्ति लिखवे छथि मुदा कवि उाकन शिलालेखम उाकन खुनक पियासा लिखवऽ चाहै छथि। आव स्न कन

कविताक **ऐतिहासिकतापर** जाउ। **जादु-वास्तविकतावादी साहित्यमे भविष्यकालमे गेलापर** हम देखै छी जे ओइ स्थितिमे जादु-वास्तविकतावला साहित्यक पात्र लग ई कविता जायत तँ ओ ऐ कविताक तेसर अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओऽ खतम हऽ जायत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादु-वास्तविकतावला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। कने आगाँ बढ़ब तँ लागत जे ई तँ भगवानक विषयमे अछि, कवि हुनका भाभट समेटवाल कहै छथि, पुछै छथि जे की ओ हुनकर मृत्युक घोषणा कऽ देथि? नीत्सेक कथन जे भगवानक मृत्यु भऽ गेल छन्हि तकर अर्थ सेहो सएह नै, भगवान एकटा आइडिया, एकटा सोच अछि जे पश्चिमक एनलाइटनमेण्ट (ज्ञानोदय)क बादक वैज्ञानिक सोचक बाद ओइ आइडियाकेँ खतम कलक। भारतमे तँ पूर्व मीमांसा आ सांख्य पहिनहियेसँ भगवानक आइडियाकेँ नै मानैत अछि (मुदा दुनू आस्तिक दर्शन अछि माने वेद केँ मानैत अछि, मुदा भगवानकेँ नै। से अशोकक नै चाहियो कऽ मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्पराक मूलधारासँ बहुत ठाम भिन्न छथि आ मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ लग। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहन गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" ऋग्वेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक कालसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल। विश्वामित्र गाथिन रहथि, गाथिनक पुत्र, गायत्रीक द्रष्टा। प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार

छल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी गाथा जन आख्यान पद्धति सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर पूर्वँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित कएलक। आब ऋग्वेद देखू- उतए दुर्लभ लेल- दुलरु, (ऋग्वेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्ध करैत अछि? ((गोपथ ब्राह्मण २.४)। जे आर्य छथि से भारतक पश्चिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ कएलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक गिनहुक अनार्य रूपमे रचना कएलन्हि। वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्दर्भमे सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दुःख कोन पापक्षसँ पन् पासाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करताह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करताह तँ सृष्टिक बाद तँ जीव ब्रह्माइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ ब्रह्मवाक प्रश्न नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय।

स ईश्वरवाद वा निरीश्वरवाद अछि वास्तविक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे ओ ईश्वर रोग लै छथि जे ई कारण प्रक्रिया होएत ओ कोना उद्भवित होएत आ ककर कोना स्वरूप ईश्वरकेँ छन्हि नै। न्यायसूत्रक रचना करनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्चा करै छथि, मुदा ओ सृष्टि ईश्वरक कोनो चर्चा नै अछि जे हुनका द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैत ओ वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि। अशोकक 'शिलालेख' मे अशोक एक डेग आगाँ बढ़ल छथि, हुनका सहा बुझल छन्हि जे भगवानक मृत्युपरान्त पुनर्जन्म होइन्हि। 'दु बुद्ध नान' मे सहा साँचनिया नहि अछि मृत्युक प्रतीक्षा, 'आऽ हम मरि जाइत छी।' जादू वास्तविकतावाद हुन अबैत, ओ अपनाकेँ बढ़ैत देखि रहल छथि।

'असगर'क लय अद्भुत अछि। 'हम कोना बिजली चमकल' , 'मानक घड़ी', 'हमर कोना नाम दऽ द' आ 'उदास रातिक एक गीत' क **ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू।** अशोक अर्थ आ प्रतीक दुनू सामने अनै छथि। ध्वनि सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध कएलक। मुदा अशोक ध्वनिक जागरण संरचना सामने अनै छथि। ओ प्रतीक सत्यसँ रहल कविता सूत्रक रूप आगाँ बढ़ैत अछि। **रूपवादी दृष्टिकोणसँ एकर पाठ करू।** रोबाक अनुमान यऽक कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कविता आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सत्यक बाहुल्य आ संयोजनक अनुमान प्रकृति

शब्दालंकारसँ युक्त भाषा कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। संयोजन ओ कविताकेँ नूतनताक दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि। **स्फोट सिद्धांतक आधारपर** पाठ करू। **शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण** भेल अछि।

'एक नारि', 'साँस', 'तन तीन', 'तीय मरैत मारी', 'पाँचटा अनन्या कविता', 'कहिया धरि', 'नवका सँ पहिने', , 'हवकल कुकुर', 'बिन ऊमक गम्भीर', 'एक निष्कृति विम्ब :' आ 'भ्रमक गीत' आखरकेँ **अभिव्यक्तिक दृष्टिकोणसँ** देखी तँ अपन दशा भेल, असगर जीवा भेल, चिन्ता भेल अपन जिम्मेदारी छथि। **औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू,** तखन कविक कविताक औचित्य अछि।

'शून्य' कविताक पाठ **निरखण्डनताक पद्धतिसँ करू। गणित ठकना शून्य बनबै छै, मुदा थकनी ज भेल की उत्पन्न हएत?** ओही गकना बाद अपन जालम हँसि जाइत, बहुत नास बात नै नहि मुदा बहुत नास बात नहि।

दासन चनधअशोक चक्रवर्तीक बाद :

दासन चनधक कविता सभ **समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ** मांगैत अछि। 'रेल सँ', 'आब..', 'ब्रह्माण्ड', 'माछ', 'मुक्ति समाचार', 'आब किछु करू आचार्य!', 'ओहि ग्राम म नहि नहिऽ', 'सहस्रबाहुनाल नर्तक:', 'भाट', 'राजनीति आब मरैत नरलैक', 'कहलनि गुरुान अली', 'वृधियान', 'मनुक्ख धर्महि थिक कविता', 'विष', 'जिन्न', 'की भेल', 'मृत्यु बदलि गेल अछि' काना न काना

समन्वयन आधारित अछि।

'जखन पियास मरि जायत' चक्रव्यूहक 'चुप्पी नहि स्वातन्त्र्य' कतेक सशक्त अछि। 'मृत्यु बदलि रहल अछि' पर्यावरणक तँ 'हाट' राजनीतिपर टिप्पणी अछि। मुदा की ई विषयवस्तुपर गम्भीर बहुत बेशी हम सभ नै पढ़ने छी? आ तँ एही कविता सभ तँ सामान्य नै लागि रहल अछि?

'आठम अनुसूची म मैथिली' हैजक पाकिस्तान निर्माणक बादक हाकाश 'एही ओ हाल तँ नै जकर सपना देखाओल गेल' मात्र लक्षित अर्थमे अछि, शब्दार्थ तँ व्यंग्यात्मक अछि।

'हुन सँ', आ 'चलि गेला महाप्रकाश' व्यक्तिगत मनःस्थिति आधारित अछि।

'दाँत' आ 'खायब आ नहायब' **नारीवादी दृष्टिकोणसँ पाठ मंगैत अछि। समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ करू।** कविता प्रथाक विरोधक कविता अछि। नारीक लेल बनल सिद्धान्त, किए ने ओ काव्यक सिद्धान्त हुअए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। आ तँ जँ ई विषयपर दूनू कविता कमजोर अछि।

अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ अशोकक कविताक पाठ सेहो अहाँ कऽ सकै छी। बाणक अप्रस्तुत उपमा, रूपक आ सादृश्य-विरोध कवीन सिखा गेल छथि। **रस सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ सेहो सम्भव।** विराग सँ अनुराग धरि परिणाम बहार करै छथि कवि अशोक। स कवि

0म-0म खास कs 'चक्रवुरुम प्रयुक्त करन छथि। 'चक्रव्युरुक' वाद कनि अशोक अपनो विनाश करन छथि।

ज अशोक रुगनानक मृत्युक वाद पूनर्जन्म धनि कनिणाकँ आगाँ वढन नहथि स कनि अशोक चक्रव्युरुक वाद 0मकि गेला। मूलधानाक छन्म समालोचना कनि अशोककँ मानि गँ नै दलक? मुदा कनि अशोकक पूनर्जन्म रुअग, शीघ्र। आ चक्रव्युरुक 'चूर्थी नहि साहाञ्ज्य' करन सक्नल 'जखन पियास मनि जायग' उठ्ठ पूनर्जन्मक वीज नायक कs दन अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार अशोक



गजेन्द्र ठाकुर

कथाकार अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ कर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जाहिमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आर कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मनी प्रिय

कहानियाँ' सन् १९३३ मा। ओ पाथीम प्रमचन्द ऽऽी स्वीकान कनै छथि ज नै चाहिया कऽ लखकक सर नवना नीक नै रऽ पवै छौ। आ ऽऽीहा ज जँ पाठक एक लखकक सर नवना पढि जाय तखन ओ जिन्दगी म पाँचा छह टा लखककँ नै पढि सकत। स हनकापन दनाव पठलहि ज ओ पाठक लल ओ तीन सयम सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक नुपम प्रस्तुत कनथि। हमना विचान जहिया एकटा लखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखन ओकना अपनाकँ कथाकान घाषित कनवाक चाही। ओना ओतऽ प्रमचन्द ऽऽीहा कहि जाऽऽ छथि ज लाककथाम मात्र उऔवला घाता आदि हाऽऽ छै स कथाक महत्व लाककथासँ वेसी छै। प्रमचन्दक ओ गपसँ हम भिन्न विचान नखै छी आ हिनाक गानखपूनीक कथनसँ सहमत छी। हिनाक गानखपूनी अपन नुवाऽऽक संग्रह 'नुप' म लिखै छथि ज 'हिन्दु लाक गीत' ज हमना दैत अछि स ओकना मानवीय आ स्वर्गीय संगीत वना दऽऽ छै, आ स गालिव, ऽऽकवाल आ चकवस्त सहा हमना नै दऽ सकला। ओ उदाहनण दऽऽ छथि-

"वावूल माना नैहन छूटल जाय,

ऊ श्याठी पर्वत रयी, आळन रया विदस। "

महाराजनत आब लाकगीत वनि गेल अछि, लाकगाथा वनि गेल अछि, 'शील महाराजनत' एकन उदाहनण अछि। अगाकक 'चक्रव्यूह' महाराजनत आधानित किछु कविता अछि, स ओ लाकगीत आधानित अछि, लाकगाथा आधानित अछि।

से हमरा नजरिमे नवनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अननिद्दि ठाकुर अपन पोथी नाशनाऽऽक लोकयउर्कँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहुँ ओ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कथाकार अशोक

ठिकाना (१९८६) (कथा संग्रह)

स्व डॉ ब्रज किशोर वर्मा .'मणिपद्म' केँ समर्पित ठिकानामे अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक ९टा कथा छन्हि। ९-

अशोकक ९ टा कथाक नाम छन्हिहत्ती -, हयनायिन, अन्तिम शब्द, एकटा मृत्युनाऽऽग आँखि आ खोंप।

हत्ती: जागेशन, पत्नी सीमा, बेटी गुडिया आ बेटा पप्पू। जागेशनकेँ □हिसम दनी एऽ जाऽऽ छै, तना □हिससँ दुन छै, लगम महग एटै छै। एकटा आत्महत्या एलैहेँ बगलम प्रायः दहज लेल देल प्रतानणा, डाकील साहबक पुताह नै सहि सकलि। ओ मोहल्लाम सरकेँ तन लगै छै। जागेशनकेँ लागै छै जना कथुम हत्ती हँसि गेलैहेँ आ गेँ कथाक नाम हत्ती। नामकरणसँ लऽ कऽ सम्पूर्ण कथा सामान्य कोटिक अछि।

हयनायिन: चन्दन आ उर्मिला। पहिल बेर वियाहक बाद दूनू दुन एल अछि। उर्मिला पाँच दिन पहिल गाम गेल छथि। चन्दन पत्रिका

उठबैत, योगी सबहक सहारा ई पहिने ओकरा पसिन्न नै पड़ै, आइ ओकरा आकृष्ट कऽ रहल छै। दूधवाली आबै छै, पहिने ओ खाली दूध देखै छल मुदा आइ दूधवालीकेँ सेहो देखैत, पहिने कहियो नै ओकरा देखलक, दासन कोठलीमे दूधवाली दूध राखैत जाइत, बहुत दरबज्जा बन्द कऽ लै छै। दूधवालीकेँ ओकरासँ डर होइ छै मुदा ओ दू सय टाका खाँसि दै छै, दूधवाली सभ बिसरि जाइत आ घर छोड़ि जाएत, से सोचैत, ओकरा गाम जेबाक छै, किछु दिन नै एतै। बहुत विस्तारमे अध्याय लगैए अछि, वनखाम देखऽ लगैए अछि कथाकार कोनो द्वन्द्व नामक संयोग लेल प्रयुक्त करै छथि। देन - कथाकार कहै छथि जे आइ पारिल छिऐ, से आइ काजपर नै जायत, मोन बूझि जाउ जे कथा आब उलटबासी दिस जायत। चिट्ठी सभ पढ़ैत बहुत, ओकरामे उर्मिलाक देल नामानुरूप दू मास पूनना चिट्ठी यदि बहुत क्रोधमे अबैत अछि, कोनो प्रेमी अछि उर्मिलाक? गाँ ओकर प्रेम छुटि। जानमे उर्मिला नामानुरूप संग आयलि। बहुतकेँ गामसँ उठि छै, मुदा उर्मिला सिनेमा स्टाइलमे कहैत जे ओ ओकर पियसियौत छिऐ, वियाहक दू मास पहिने कलकत्तामे ओकरा नोकरी लागि गेल रहै, गाँ वियाहक काजमे नै आयल आ गाँ छोड़ि नै सकल। बहुतक शंका समाप्त, मुदा आब उर्मिलाक बन एलै, ओकरा दासन कोठलीमे रुचनयिन देखलै, ओ रुचनयिन नै लगबैत अछि, गाँ कोनो ककर छिऐ? ओ बहुतसँ पूछैत। पछाति रुचनयिन कथाक शीर्षक अछि, उर्मिलाक हाथमे रुचनयिन चिचिया रहल अछि, कथा समाप्त मुदा हम मोन पाठक ठकायल सन अनुभव करै छी। दू सयमे जना दूधवालीक नट लागल गाड़ियन ध्यान चलि जाइत, अनघनाइ माखिल। मुदा कथाकार चाहै छथि जे स्त्रीपुरुष चरित्रयन-, पुरुख

काष्ठिग चनित्र दिश याOकक ख्यान खीची, दियाक्रसीयन खीची, मूदा स रुs यावि असम्भन रुs (गल छ्इ।

अन्तिम शब्द: विशेशन, उाकन स्त्री, वटा कृशेशन आ यूणाह् स्कूलशनी। वटा कृशेशन नमनवना सछ यटना चलि गेलै निक्ला चलवे छै। यछ्रह साल यदिन विशेशन स्कूल वावू सँ दु सय टाका लन नरुय वटी धनमंगीक वियाह लल। वटा कृशेशन छाट नहि गखन, सकनागीम धनमयूनक यहुलमानकँ मारि चछा दन नहि, गिनरुथ यीO (Oाकन नहथिइ, खुव सर्ना खला्ञ्, महीसयन नाखि लन नहथिइ, मूदा उाकना वाइलछकल नीक नै लगै। आ कृशेशन - यटनासँ आवि गेलै, किनायाक निक्ला उा आव नै चलवे छै, अयन निक्ला छै, उाकन युनियन छै। स्कूलवावू शगनंज खला नहल छथि, सूद मूनक दुनासँ वशी स्टिरि गेल छ्हि, मूदा सूद जाति नहल छथि। कागज नायस नै कनगाह, मूदा कनs यउलइि, जमाना वदलि गेल छै, प्रमचन्दक हिष्ठी कथा 'सवा सन गेहूँ' सँ वहुत आगाँ। उाइन शगनंजाम मिसनजी 'अन्तिम शब्द' दs कs स्कूल वावूकँ हना दलखिह्र। आव स्कूलशनकँ हवलीमहुन नै जाय यउतै। -

एकटा मुस्कुनाइत आँखि: प्राटेगोनिस्टक एकटा ग्रुशन यहनिहान मास्टन साहवक स्मृति, जीवन गना जीवू जना अहिनय कs नहल छी, स प्राटेगोनिस्टकँ लाकक मृत्युसँ वशी जीविग लाकक दुन गेनाइ असहज कनै छइि, मूदा अहिनयक वलँ गकना गायि दइ छथि। मास्टन साहवक हनसँ वसूली गाकव आ मानियाछि अयन शिष्य - लल वजायव, वाँसूनीक उदास गान सूनि दूखीगम दर्द विसनि

प्राटेगोनिस्टक सुगवा आ आगा ठन नास नास्टालजिक गय प्राटेगोनिस्टकँ मान यउ छथि।

खोंस: घूनधूआँ-, नामनानायध्नक अ0न्नी स्कि यानक ▯ैन द्रव, नविलेखनक वेग लन गामसँ आयव, वाउ ▯रिसक काना काज छै। घनम कनियाँ सुधीनासँ किछ रल छै स नामनानायध्न नविलेखन सछ तना दिस विदा गँ रहल, मुदा लागे छै जना यअनम उक्काउ वाह्रल रहल। रन गामक नाटकक दुर्गीगिक चर्चा, वाहली आमदनीकँ खनाय वृसवाक चर्चा, दुधक असानम नवा चाह। रन कथाकान कथाकँ सह्मानs चाहलनि, ओक्काटा मशहनी छथि, चौधनीजी सँ उधानी लs अनगा, मुदा सुधीना जागा कs यचास टाका नखन छै, मशहनी लल दगथि। आ सुखान्ध, आ गखन विजलीया आवि गेलै, नविलेखनक का0लीक यंखाक अवाज अवै छथि, आव विन मशहनीया कs उाकना मह्रुउ नै लगगै।

काँच कथाक ओ संग्रहम '**ओकटा मुस्कानाहल आँखि**' रनिथक प्राि कन आश्वस्त कनैा वृसाहल अछि।

उाहि नागिक रान (१९९१) (कथा संग्रह)

स्व. सुशील मा कँ समर्पित *उाहि नागिक रान*म अशोकक १७ टा कथा छथि। ओ याथीक 'प्रसंगवश' लिखन छथि कुलानन्द मिश्र जे कथायाOम वाधा उत्पन्न कनैअ, जना कुला वावू लिखै छथि जे ११क कथा अशोक जीक ---असामर्थ्य दुन रहल गेल"'चौका चूय छल' आ हूनक ८९ क कथा 'सनिसवक साग' कँ एक संग

यदि वूमल जा सकैछ। मूदा स कलायन "'वौका वूय छल' उनट 'सनिसवक साग' सँ वीस यउेग अछि, स्प्रीज दूनू ०।म) यूनूषक- मनाविस्रानम (यम्री छथि-यगि'वौका वूय छल' कन यगि ओ यम्री दूनू अयन निनाट नूय दखन छथि, मूदा 'सनिसवक साग' कन यगि- यम्री वालू हिष्ठी सीनियल सन व्यनहान कन छथि। ओ संग्रहक कथा :सरे ओना अछि

निनामसँ यहिन: समीन यनीजा छाउ दलक, यिगा सन्न छथिन। कञ्चक घण्टा वाजल (यनीजा), यनीजा शुनू हवाक समय एलै, जा यनीजा छाउन अछि, जाकना वाखान एऽ गेलै। प्लॉट ठीक छल मूदा कथाकान अदहा कथा विगला धनि मूख्य मूड्डा यन नै आवि सकला, अन्तिम यैनाम कथा सम्प्रानवाक असहल प्रयास कलहि।

वौका वूय छल: ताकदन साहवक कनियाँ गाम गेल छहि स ञ्जानिया गाउ नहल छहि, निननग कन नमाउ गेल अछि, मूख्य प्लॉट शुनू हाञ्ञ वौकाक साँय कटवासँ, ताकान साहव जाफs विदा हाञ्ञ छथि। मूख्य कथा जाफs छै, वौका सटटा वूमिया कs वूय नहेग अछि, मारि काटsम यक्का जाफाद छल, मूदा वमानी धs ललकै, स्प्री नधिया दनी कs अवै, सघ लगेन, मूदा वौका किछू नै यूछै ज क कगs सघ लगेलक। नधिया कहै ज विगउल छी गँ मानू मूदा वौका जाकन कग सामना दञ्ञ। जाकन दियादनी सहा नधिया दिया वाजै मूदा वौका किछू नै वाजै। आ मूञ्ञल गँ वमानी सँ नै, साँय कटलासँ। हन नधियाक हाव्राग, ओगक सूहन मनाविश्लेषणक वाद कथाकान द्वाना, ताकानकँ नधिया कs दखि कs दासन गकिया

मान यति भेलै, सँ कथाक समाप्ति करबाक आवश्यकता नै छलन्हि। कथाक आरम्भ आ अन्त दुनू ए कथाक कमजोरी अछि, आ एकर सुन्दर कथाक सत्यानाश कऽ गेल अछि। मूलधाराक छद्म समीक्षाक प्रतिगामक एकर ज्वलंत उदाहरण अछि।

एकटा दोसर ब्रह्म: मृत्युक बाद ब्रह्मराज। छौड़ाक पाछू किया ठकि लगलै, मुदा लोक सभ कहै छै जे राजक धन ओ लूटि बढ़ैत, से छौड़ा जमीनक एकजम पाछू उठाउठा आ राज करत।

जहलम टाढ़ल मान: मुख्य पात्र छथि रामसाह असित ठाकुर संगी शान्त स्वराजक किशोर आ असितक बहिन मीना। असित जहलम छै आब एमनजंसीक बाद छुटतै, असितक पिताक चिट्ठी। मीनाक बियाह असितक प्रयास करऽ पति भरल छै। हम बैकल्पिक, मीना आ किशोर, मीना चंचल, टिकुला गाछवाली। मीना एक दिन हैया करुनाऽ शुरू कलकै, किशोरकेँ नै नीक लगलै। बियाहक किछुए दिन छै। कथा समाप्त।

एकटा चौक मान चण्डीनाथ: एकटा चौकक निरूपण। हम ठाऽ चौकपर आवाजाही करैवला चण्डीनाथक निरूपण। चण्डीनाथक माय सपनानिपताक कथा कहि-, चुल्हाखड्डीक ऽन्दजाम -चकी बना गुठा-कऽ लऽ छथिन, आब चण्डीनाथक कनियां बाहर निकलऽ लागल छथिन, हुँ बालबच्चा नै छन्हि। ऽमनजंसीम एक बन टिक-ट चकिढ़म जल गेला, अगस्ती छौठा सभ ठठा दलकान्हि जे नसबन्दी कऽ दलकान्हि, कनिया पूछि दलकान्हि गँ ठाकना मानबा कलखिन्ह। लोकक मूँह बन्द करबा लल बच्चा आवश्यक छन्हि, मुदा से अखन धनि सम्भव

नै भेल छन्हि, आब मुखियाम ठाढ़ रहए। कथा समाप्त।

ओ मनुक्ख भऽ गेल: *जिनका अहाँ आइ कथाकार अशोक कहै छियन्हि ओकर बीजारोपण ऐ कथाम भेटत।* नॉर्मल कमाइ-खटाइवला मनुक्ख बनबाक कथा, जे जीवन भरिम रहबाक कथा अछि, हमर संग छात्रवाक कथा अछि, हम बहुत प्रयास कएलौं जे ओ मनुक्ख बनबासँ बचि जाए मुदा पूर्णता तारा नीक लगैत छए, किछु रिक्तता हम रखने रही जाइसँ पाठक लखन आ चिन्तनम प्रवाह रहए। नीलू पाठक जीवनम आबि कऽ वासनाक भऽ गेल कारण ओकरा मनुक्खक सुख छलै आ ओइ समयम ओ ओकरा मनुखाह दृष्टि नै दऽ सकलह, कारण तारा म किछु रिक्त छलह आ ओ पाठक मानस-प्रेयसी मीनूक जन्म भेलै, मुदा हमरा बुझल अछि जे दुनूम कोनो अन्तर नै छै। मीनू जीवन छलि ओ कहियो किछु आन नै भऽ सकैत छलि। छात्रावास घटना, कोनो झनियन विद्यार्थीसँ लगाव, छात्र रहइ सन, तारा छात्र रहइ नै रहलौं ओ। मुदा लोकक नाजायज सम्बन्धक आभाय यन पाठक ओ बलात् हँसी, अस्वस्थ मस्तिष्कक उपज, से ओ साबलँ मुदा आभायकँ स्वीकि कहियो नै कहि सकलौं। हमरा बुझल अछि जे ओ हँसी तारा लल कोनो शब्द गढ़ैत छल मुदा ओकरा लल एक्के टा अर्थ रखैत छलै, आ ओही अर्थक मूल्यांकन पाठक अधिकार बहकी रहि गेल ओइठाम, तारा दुनूक बीच चुप्पीक सवाल ठाढ़ भऽ गेल रहए। बाजारुक्की बहु भेनाइ चिन्तनकँ गति दैत -छै। आइ तारा लग स्त्री, घर, रुपैया सभ किछु छै मुदा ओ कमजोर भऽ गेल छै। नीलू आब मरि गेल अछि कहानिकार ओ सेहो आब मरि गेल छै आ से हमहीं टा देखि रहल छियौ, कारण हम नै

मनल छौ।

गसन प्रश्न: अगि सामान्य कारिक कथा। नामप्रनश चौधनी निटायन कऽ गाम ओला, वटा कृष्णकान्द वनाजगान, रागि कऽ कलकत्ता गेल, खुव कमलक। वहिनक वियाह गनि कऽ कलक, नामप्रनश ठाकयन जमीन कीनऽ लगला, हलाल कओल माउस खाय लगला। मुदा याहू गँ यठवहि कृष्णकान्द मुदा गाम नै अवैत नहहि,, वहीनक वियाहसम नै ओलहि। आ जहिया ओलहि गँ याछू सीक ओनसू नानथु .आहू.वी. संगे ओलहि, नकली दनाहू वनवैत छला।

उनवूक: ओकटा आन मतियाकन कथा। सूराष, आमक कलम, सूराष आ मंझम आमक टिकुलाल मगठा हाहू छै। मंझक वियाह ठाही साल हगै। हून सूराष अनचाह्न ठाकना रनि याँज लऽ कऽ गाछक याछाँ जाहूओ आकि गझआ आ शंकन आवि जाहू छै, लाठी वजनै छै। यंवेगी। गामसँ निकालवाक आदश, सूराष यठा जाहूओ। दस वनखक वाद आहू घूनल अछि, माय मनि गेलै, रागिज छै। रैया कहै छै ज मंझ वादम सूराषक यउम वाजलि, ठा सूराषसँ वियाह कनत, लाक सूराषकँ गाकैल गेलै, सूराष नै रटलै। मंझक वियाह टुटि गेलै। आ आव अहाँ वुझिय गेल हवै ज रौजी मंझओ हगै, आ सओह छै।

नचनियाँ: आव कन-मन अगोक अयन नठम आवि नहल छथि। नैनीगाल, नजनी शर्मा, ज अछि प्राटेगोनिस्ट आनहुक सीगामढीम कॉलजक सढी, मुदा आव ओकटा नयूंसक दावन उमन वलासँ वियाहलि, कानथ दहुज। ठाकनासँ आनहुक नैनीगाल हाटलम रंटा।

आ ठाढ़ छल पुर्णियाँक बना साहेब मण्डल, दुखी दासक विदायत मण्डलीक, दुखी दासक मृत्यु, विदायत नाचक मृत्यु आ साहेब आबि गेल नैनीताल। मतियाकेर कथा हाड्ड्ा हाड्ड्ा बचि गेल छ्छी। अन्तिम आ0 याँतीम कथाकार कथा सम्मानवाक प्रयास कलहि, आ सम्मानिया ललहि। साहेब आ नजनी वियाह कऽ ललक, साहेब नृत्य सिखैत, प्राइवेटनिरुसँ यटनाम रुँट कनय जलहि दुनु गोट।

मिर्जा साहेब: संग्रहक दसम कथा अछि छ्छी। कथा नै समहलनि। सुशीलक कथा सन मान यति गेल, अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (निदह पटानम उपलब्ध) म संकलित 'मस्जिद' आ आन कथा, उत्कृष्ट, खांछ्छ्वा छ्ठाठाल, काना हतवनी नै। मुदा मिर्जा साहेब मतियाकेन, नीक प्लॉटक अछैत। मिर्जा साहेबक वगम नानाव यनिनानक, माय मनि गेलखिह, पिता पासलखिह। मामा मामी सन पाकिस्तानम, ठाकुक्का चर्चा कनैत नहैत छली। स मिर्जा साहेबकँ नै नीक लागनि, हुन पिताक मृत्युक बाद वगमक नैहनि बुसु पाकिस्तान लऽ गेलहि। वियाह पूनैल बटा सलीमक संग गेली पाकिस्तान। गही बीच बमलै रानत-पाकिस्तानक युद्ध जङ्गम बहीनक पतिक मृत्यु लऽ गेलहि, स तमसा कऽ चिठ्ठी लिखलहि रानतक निनुद्ध मिर्जा साहेबकँ। चिठ्ठी पत्नी हुन शुनु रुल जखन सलीम ठाढ़ तॅङ्कान बनि गेल, आ जखन सलीम संगे वगम घुनली तँ मिर्जा साहेबक बम्बै दंगाम मृत्यु लऽ गेलहि। प्लॉट-प्लॉट, कथाक प्रानम्भ आशा जगेन छल, क्रायतक पद्धतिसँ सूक्ष्मक निश्लेषण कनऽ लागल छलौं। मुदा स धनल नहि गेल।

समाकान: सूत्रांग धनैवला संगी सुनश, वादम ठाकना पत्नी संग वद्रुनाथ

आ हुनक साथी सब छला सामूहिक बलात्कारक बाद हत्याय नै स्पष्ट आ बलात्कारी थाना ज छल एम.पी. एलक्शनक उम्मेदवार बद्रीनाथ, एकर हत्या सुरेश छला। अभियोग बद्रीनक आखिरी नाम्हाक पीअर कयीश नुया। सर किछु मतियाकर, मुदा अन्तिम आ0 याँहीम कथाकार कथाकेँ कर सम्मानन छथि। सुरेशक बटा यरश आब प्राइगोनिस्टक संग नहि छथि, हुनकर नटकिया, स्वांग निकालैम हुम्हाज, मुदा बद्रीनाथ हुकना नै जानि कना वशी मान छै, हुकन नाम बला स्वाङ्लक खुब नीक जकाँ स्वांग धरैछ।

जहिया सुरुज नहि उगलै: जगियाक कथा, जगियाक बानुकारक समाजक कथा। बौआसीनक कथा। जगियाक बाप मरि गेलै, माय शासन टालम सम्बन्ध कs लन छै, आंगनम मौसा मौसी नहि छै आ हुा नहिए गिनहरा लग, जाs बौआसीनकेँ बाँस हवाक कलंक दs मानि हल जाइ छै, छारका गिनहरा शासन विआह करता। हुा जगियाकेँ गोहार करै नहि मुक्ति दिआबय लला। जगियाक मायकेँ मुक्ति स्पष्टलै मुदा बौआसीनकेँ नै। छारका गिनहरा बौआसीनकेँ ताकन लग नै लs जाइ छै, हुकना बच्चा नै हाइ छै ताँ मानि लल गेल ज बौआसीनम गनबठी हरौ, वा काना आन कारण। कथाम दु समाजक वार व्यवहार आयल अछि, दहेज आयल अछि, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, रामविलास साहु, रामानन्द मण्डल, संतोष कुमार राय 'बटोही', कपिलेश्वर राउत, सतीश कुमार साहु, उमेश पासवान, उमेश मण्डल, किशन कारीगर, राम बहादुर राय, लालदेव महरा, आ नन्द विलास रायक विशाल आकाश देखलाक बाद ई सर सुसुआर लागि रहल अछि।

सनिसनक साग: एकटा आन मतियाकन कथा। प्राटेगोनिस्टक कनियाँ जखन आयल नहिथिह गँ तनायल नहि छलखिह। मुदा आब स नै छै। गनकानीवला अयन दुखनामा सुना कऽ महग बबैत, Oकैत प्राटेगोनिस्टक कनियाँ कँ। प्राटेगोनिस्ट ॣोर्थालु हाॣ छथि, कनियाँक गनकानीवलासँ हँसि कऽ गय कनब हुनका यसिन्न नै मुदा कनियाँ कहै छथिह जे हँसि कऽ गप्प कलासँ जाखा Oीक है छहि आ सम्ह सहा!

धनी गेल छै: मास्नाम ध्रनिढ, मनाज, सुधाकान्ह आ गयन। गय सनक्का। यी कऽ यार्कम सुगि नहि जाॣत। कथाकान अपोकक खाहिश नहि छहि जे अन्ह कन चौकाबै बला हाॣ, स एकटा बुढ स्त्रीकँ आनै छथि, डा नुसी बाजैत आ गयनक माथयन हाथ नाखैत, गयनकँ माय सन लगै छै, स्नहिल, जना डा हस बदलि कऽ आबि गेल हाॣ। मुदा अन्ह काना खास नै लागि नहल अछि।

डहि नागिक हान: टाॣटल कथा। दु सढी, हीना ब्राह्मणक यानक दाकान, यूलकिग अमागक चाहक दाकान, मुखिया एलक्कानम सुबाध मिसन ब्राह्मण आ नैमाक सम्हन मण्डल Oाढ नहि, जे यूलकिगक जागिक नहिहऽ सकैत नैमाम मण्डल टाॣटिल अमागक हाॣग !! हगे। दुनु सढीम एलक्कानम मगडा हलै, सहटा याॣ कौडी कास माकदमाम जखन खगम हऽ गेलै गखन बुॣध एलै। हुन अन्हकँ नामांचक बनबाक हुनम नागि एगानह बज छाहक नुयम यूलकिग कँ आनै छथि कथाकान, हीना कहै छै जे मानम गँ हुन मानि ल, मुदा हुन दुनु गना मिलि लॣत।

मानक (२००१) (कथा संग्रह)

'सगर राति दीप जरय'क सभ सहभागी कें ई कथा सुनलनि आ विचार कएलनि' कें समर्पित मानकमे अशोकक १८ टा कथा छन्हि। 'एकसँ एकैस' सँ एकर प्रारम्भ होइत अछि जकर लेखक छथि गद्य-सम्बन्धमे मूलधाराक आलोचना लेखक मोहन भारद्वाज। अशोकक समाज अध्ययन हुनका अवस्थित करैत छन्हि, मूलधाराक लोककें देखाओ वाली, हुनक (अगड़ा-पिछड़ा) समाजक अध्ययन। अशोक हुनक पक्ष राखै छथि, मुदा वैलंस निबन्धमे बनाओल जाइत छी, कथाकारकें अयनायन एकर दबाव लेब अनुचित। हम ई अशोकक कथाकें मैथिल बनबैटिसँ सूचित करैत छथि, आ मैथिल बूनाबटिक दु टा लक्षण ई घोषित करैत छथि- पहिल खिसक्कड़ बनि कऽ आ दोसर यथार्थ दर्शनक निष्कासन जा कऽ। दोसर लक्षणकें ई मैथिली (मैथिल नै मैथिली) कथा बनबाक शर्त अगिला पैनाप्रारम्भ घोषित करैत छथि। तखन तँ दुनियाँमे किछु गढ़ल मैथिल भव नै कएल। ई पतहक गद्य सम्बन्धवला समालोचनाकें हमरा गाममे बकलोली कहल जाइत छै आ नीक नै मानल जाइत छै। हम ई अशोककें निकासम विश्वास करैवला आ यथार्थवादी (एकर निष्कासन करैत ई जातीय आ धार्मिक मानसिकताकें सहो यथार्थवादी मानसिकता कहैत छथि।) कहै छथि। ई पतहक विचारकें आओर काल्हि याश्वाप्य जगतमे 'वाक' कहल जाइत छै आ ओकरा एकरा नीक नै मानल जाइत छै। समानान्तर धाराक कथाकार लोकनिक 'सगर राति दीप जरय' मे आगमन पूर्व अही पतहक समालोचनाक जमाना नहि, आ कथायन अही पतहसँ विचार 'सगर राति दीप जरय' मे होइत नहि।

आब आउ मागनक कथा सभपर विचार करी।

मागन: 'उड़ि नाचिक राग' कथा संग्रहक टाइटल कथा संग्रहक अन्तिम कथा छल। मागन अछि पहिल कथा 'मागन' कथा संग्रहक। महराज जी छथि नटवर्किंग चीफ, आइ काल्हि ओ गामक लोक नहि छै ज सिंगल विण्डो सर्विस दइ छै। याइ कोठी वला पारिख लेल महराज जीसँ बात करैत 'ओ', साहब हमारी छै गहन गहन काज दइ छै ज ओकरा एनवला याइक आमदनी नै होइ छै, कन महराज जी ओकरा नगओ। सभक मजमा महराज जी ओठाम लागै छै, यीवि-यावि कऽ गप-सनक्का करै जाइ छै, दानु सढ़ दु-तीन टा चखनाक विनयक कथाकार दइ छथि, उसनल अण्डा आदि। 'ओ' जइ असल काजल गेल नहय गकन की रहलै? घन घूनती कालम मानि खाइसँ बचि जाइ छै, प्रायः चान सभ चीझि गेलै। घनम बटा आ पत्नी सहा गमसायल छै। खिस्सा खगम। अति सामान्य कोटिक कथा।

दसखा: एकटा आइ.ए.एस. अफसरक कथा, आंगुनक विनयसँ प्रारम्भ भऽ ओठाक विनयक धनि। उपाचान, चनिप्रहीनता आ लालफीताशाही सभटा निर्यातित सन वर्णित अछि। अन्तम ओठा काज करबाइ बन्द भऽ जाइ छन्हि, अमनिका इलाजल जगा, मूदा बिन् दसखा पासपोर्ट बना बनगन्हि, आ ओहीसँ कथाक शीर्षक आयल अछि।

काठा: मंत्रीजीक कथा, निर्याजित। दसखाक आइ.ए.एस. कन निर्याजित सन कथाकेँ आगाँ लऽ जाइ छथि कथाकार। उत्कृष्ट कथा।

सहज-असहज: कथाकार अशोक आब नहिम आबि रहल छथि। कामरान हाकिम वनि गेल, नथ्र आवि गेल, गाड़ी खा कऽ सुतैत, खाइम यनहज छै, सरलताक मूल्य चुकवऽ यडै छै। नाधेथामक यठाइ छुटि गेलै मुदा ऊ कामरानक वच्चा सरस लल कॉमिक्सक सुपरमैन अछि।

जिनिस: यति-यत्नीक घन गृहस्थी, टाना-मानी। सह ▯हिसक समल ...टैलिक्सम कथाक वीच-वीचम, गीन वना। वाइली आमदनीक हिसाक, यत्नीकँ उलहन आ यत्नीक उलाना।

हिसाक: याइक उत्थान, याइ कमवाक हिसाक। नीक विश्लेषण। एकना हास्य-व्यंग्य कथाक श्रेणीम नाखि सकै छी। वखनक कथा सन किछु किछु अनुरूप हएत। प्राटैगोनिस्टकँ हाकिम कहै छहि ऊ अहाँ गयशय मानि सकै छी, याइक उत्थान सम्मानवाक टैलंग अहाँम नै अछि।

राज: श्राद्धक राज उपनयनक एक साल वाद धनि नै खा सकै छी। राजक मैथिल विमर्श, प्राटैगोनिस्ट ब्राह्मण वालकक नजनिसँ, वालकथा श्रेणीक उत्कृष्ट कथा।

खुशीक प्रश्न: ...ीहा वाल मनोविज्ञान आधारित प्राटैगोनिस्ट वालकक नजनिसँ अयन यनिवानक कथा अछि। वालकथा श्रेणीक उत्कृष्ट कथा।

गानयुना: शास्त्रीय संगीतकँ हीमसन जाशी ऊ शैमन दलहि गकन साङी अछि हुनकन मसीतीज कान आ यछाति हटल हानत नञ सम्मान।

रानत नव सम्मान ग्रदुध कनै काल दुनकन श्री नकान्य ज उा श्री सम्मान संगीतक गुनू लाकनिक प्रतिनिधिक नूपम लऽ नहल छथि, गनिमायूर्ण छल। नजर संगीत नउक लाकनि ज नम्हर्न क्लासिकलक सामाँ दुटा रानतीय क्लासिकल, हिन्दुस्तानी आ कर्नाटक शैली कँ अयन यट कारि कऽ जीनित नाखलन्हि। अही तनहक जीनिकाक मनि जवाक कथा अछि तानयुना। शनदिन्दु चौधनी ꠰रूसट मशीन ओलाक वाद ब्लॉक प्रिन्टिंग उग्रक हालतियन अयना शैलीम संस्मनण लिखन छथि तँ जतदानन्द मा 'मनू' धातुक वासन ओलाक वाद माटिक वासन वननिहानक स्थितियन 'माटिक वासन' वालकथा लिखन छथि।

'**हनसिंहदनी**' यश्री प्रथाक दुष्यनिणामयन कथा अछि मूदा विषय नस्तु मात्र नीक अछि, कथा साधानण अछि, निवन्धात्मक।

'**सीनन नजकक हितचिन्तक**' म जाति आयल अछि, नाजनीति आयल अछि, सीनन नजकक वैंकक नाकनी अयल अछि। अन्तम आयल '..वाउी-माउीसँ उखाडि कऽ गमलाम नायि दलथिन..' सहा कथाकँ सशक्त नै सकल।

'**महता**' सहा जातिक कथा थिक, सर्वसाधानण नाकनिहाना कर्मचानी, मालीक यदयन कार्यनत महताक कथा थिक। कूट शब्दावली, घूसक यर्सनेजक, महताक ꠰रिसक अलाव अरूसन सरक घनायन काज कनव, ꠰रिसक गय्य सनक्का, नाजनीति, खिस्मा खतम। अन्तोकसँ नजक आ महताक नामयन लिखल कथासँ वन्नी आशा छल मूदा श्रीराँज यूनायव सन लागि नहल अछि।

'सनगो'म एकोष्कुटिर ॐजीनियन यासवानजी वद्याक च्चुगन छाति दलायन यासवानजी द्वारा दिवाकन नविदासकँ खुव गाति यटल जवाक चर्चा अछि। किछु निवन्धात्मक दलित विमर्श आयल अछि। रून अन्तम कथाकँ टर्न दवा लल प्राटेगोनिस्टक स्तीलक उठो। दिवाकन नविदास द्वारा मांगव आ उारी नायक सानाक उठो आयस दव वर्णित अछि, ऊसँ मात्र कन नाटकीयता आयल अछि, उा . रूननीक कथा'द गिङ [?]रू द मोगी' कन यीअन छाट सन अछि ॐी कथा।

'नागविनाग-' म याॐवला आ वृधियान लाक सट द्वारा दूरकानी आ वालाना दऽ कऽ कना साम लाककँ Oकल जाॐ छै उाॐयन ॐी कथा अछि, आ सामान्यसँ ऊयन प्रतीक अछि।

'आवस' एकटा मतियाकन कथा अछि, मायक आवस वर्णित अछि मुदा किशान मनानिस्नानकँ कथाम दवा दल गेल, आ कथा एकयऊीय टऽ गेल अछि।

'वूढा जीबो नटलाट' कथा उा कथा अछि ज अशाकक वैशिष्ट्य छवि जॐयन दूनकन एक्सपर्टाॐज छवि। मुदा मूलधानाक राथ समालाचनाक दाष अछि ज उा दिनका नकन रान नै दूअय दलकावि, मुदा उा एकना विद्दलवि आ अन्तिम कथा संग्रहम ऊे नानरक आन कथा लिखलवि। वूढकँ काना वियाटगियाट नै कनवाक - छवि, स उा अOानट वनखक सँ वशी वयसक स्त्रीसँ वियाट नै कनना, अOानट वर्खक कथा एवा कलवि, नँ दासन कमी निकालि दलवि, मुदा घटक सट लल ज शर्वन घानेक यनम्यना छै नॐसँ वशी

ऒानरुगप उा कनै छथि। स्त्री ऒा गीनगीन टा वटाक मनलायन -
उा हुँसै छथि, कानध उा जीवऽ चाहै छथि। मुदा कुरुनेगा हुगा,
ऒसगनम, ऒा कुरुनला शिथ सन्दन लग।

'प्रगिलाम' सहृ ७कटा मतियाकन कथा ऒछि, जञ्ञम गामक
यिरुकानी, श्राद्धवाध-, जागिनिमर्श सरुटा ७क्का कथाम मिश्रान रुऽ -
(गल ऒछि, निश्चिन्तीसँ रुनिछवाक ऒनथकगा छल।

'नाँउ' सामान्यसँ ऊयनक कथा ऒछि, 'वुढा जीवेग नरुलारु' कथा
सन। उ कथाम गीनटा क्लेश ग्लाञ्ञ्ट ऒछि, यरुिल मामीक मनीषसँ
युछव ज सिनाङ्खीन सन्द खनाय छै ऒा उँ उा नीक लाक छै गँ
मनीष यिगाजीकँ स कि७ नै वूसा सकल? दासन क्लेश ग्लाञ्ञ्ट छै
मामीक युछव ज काज कऽ कय याञ्ञ कमनाञ्ञ खनाय छिउ? ऒा
गसन यगिक मृत्युक वादा मामीक नीक यरुिनवाउा८वाक मनीष -
द्वाना प्रशंसा। मनीष मामीकँ उ नुयम दखि चौंकल, ञ्ञी लिखलासँ
कथा शिल्थ नुयम कमजान रुल, मामीक ७गक दृ८ वनिग्र दखलाक
वाद उँ मनीष ह्रुनका उजना नुऒाम दखिरै गखन उाकना चौंकवाक
चाही छल, ७न्दऽ नाटकीयगाक जनुनगि छलै, स कथाकान चुकि
(गला। दुटा क्लेश ग्लाञ्ञ्थक वाद ञ्ञी गसन क्लेश ग्लाञ्ञ्थ कन मुसुऒान
लागल। ञ्ञी मामीक कथा छल, प्रानम्भ सहृ ठीक ऒछि मुदा
वैकल्पिक युर्व ऒा प्रानम्भक वीच काना क्रम वा उँशक्रॉश दल जा -
सकै छल, ऒा दासन शिल्यगग निधिक प्रयागसँ गामक दासन निधनाक
निननध दल जाञ्ञग गँ ञ्ञी उत्कृष्ट कथाक (श्रणीम ऒावि जाञ्ञग।

उेीगाम (२०११) (कथा संग्रह)

दीदा स)्व १ग कँ समर्पित उेीगामम अ(शाकक (गीता दवी . टा कथा छन्हि।

'लाथ' अछि लदकदान कुनगाक कथा, अगि सामान्य कारिक ्ली कथा अछि। दैनहिनी (श्रद्यीक।

'छल' कथाकान अ(शाकक सर्वश्रेष्ठ कथा अछि, ्ली अगि उत्र कारिक कथा अछि जकन सामान्य कारिक अंग्रेजी अनूनाद निश्चानद्द मा कनि छथि]The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor, Harper Collins, 2022) म संगृहीत[, मूदा क(थ गग सशक्त छै ज गद्दु अनूनादम जान आवि (गल छै। मनाविस्नान, अदाँ जकन अरिनय कनव, गकन आभ्मा अदाँम यँसि जायग, उगनाक विछादम निश्चायणिक अरिनय कनु, अदाँकँ विन शिसनीन ल(गन नान चूअय लागग। रुाली मा, चूम्हवलाक-, मूदा ७दुन आभ्मा उाकनाम यँसि (गलै।

'स्वाधीन' कथा मँनिटल नय आधानिग कथा अछि, मूदा कथाकान समाजशास्त्रक समस्याक टाँयिकयन लिखवाम व्यस्त रs (गला, गँ कथा सामान्य अछि।

'उा दुनु साङ्किल सिखै अछि' सद्दा समसामयिक समस्याक आधानयन नचिग अछि, मूदा न सउद्द आवि सकल आ न क(थ सामनायल।

'ऊँतीगाम' टाइटल कथा अछि, 'उाहि नागिक शान' आ 'मागवन' सन अपेनाक अध्यन सएसँ दूलानू कथाकेँ टाइटल कथा बनबै छथि, सांगन यन सांगन लगबै छथि मुदा गीनू टाइटल कथा सामान्य कोटिक अछि। ऊँतीगाम मे विकास आ संसमंस आदिक सामान्य कथाक्रम अछि।

'नाग' सन हिन्दूमुस्लिम दाम्फक सामान्य कथा अछि-, मासूयन गयभय।

'लमन आइसक्रीम' उच्चकोटिक कथा अछि, कथाकार अपेनाकक कथा। प्राटेगोनिस्टक कथा, माय नीक बनबनि गेँ कहथिन, हाटल सन बनल अछि। मुदा यम्नी मीना केँ हाटल यसिन्न नै। गुजनि गेली। बेटा-बेटी जानि संग नहि प्राटेगोनिस्टकेँ कनियां खनाइ बननाइ नीक नै लागनि। बेटा गाम गेलहि, सए देखेल सहसँ झमि गेल, हुनकर मायक प्रशंसा, हुनकर प्रशंसा। आ हुन..

'उमकी' उत्कृष्ट कथा हाउ्ग हाउ्ग बचि गेल। संक्षिप्त आचनक्षयन बहुत नास गथ्य आयल, अन्य सन नीक। 'अहाँक संगी गऽ उाहिना हुन घटी नवबोग नहि छथि। हुनटसँ नाच की देखबनि।' कन संग किछु सयंस। मुदा किछु मिसिंग अछि..

'मनसुवा' मे टूटेग यनिनान आ शानकाक खिस्सा कहल गेल अछि। कृत्रिम जिनगीमे शानकाक, सामाजिक संस्थाक काना स्थान नै, कथाकार निषयक प्रति क्रूर हऽ गेल छथि आ गेँ कथा सामान्य कोटिक हऽ गेल अछि।

'अहयक बेटा केँ दुटा दाँत हलनि' उत्कृष्ट कोटिक कथा अछि, गाम

नहुवा जाग नै नहुलै, मुदा..

'खुशीक नाम जीवन' मे कहैया बाबूक बेटा बियाह लेल तैयार छऽ गेलनि, ओ खुश छथि, मैथिल ब्राह्मण लड़का आ कनलक नायन लड़की। कनलक कनियाँ अपन सह सन छै, सँ समाप्त। सामान्य कोटिक कथा।

'टीस' कस हाॅस्पिटलसँ लेल कथासन, कसा बहुत सामान्य, यदि डाक्टर यदीक इस्पाउत कऽ गवन करब, यदीक सकारब, जल। कथा मे सामान्य कोटिक।

'छुट्टीक एक दिन' कथा अछि मैथिली लेखन आ याठन समस्यायन, किछु एम्हरओम्हरक गप-, अन्तर्जातीय प्रेम विवाह, आ अन्तम कहबी जे सगठाउ लाककँ डाल कवकव लागै छै, अछिनकँ नै लागै। सामान्य कोटिक निबन्धात्मक कथा।

'गामक कागक हाॅस्पिटल' चकनका सठक सरक कथा अछि। उमेश पासवान लिखै छथि 'गामक चौबाट्टा बनल अछि एनगुल्हा .एच. मा३' (गुल्हा मा३, वर्षिणी नस, २०१२, साहित्य अकादमी मैथिली युवा पुरस्कारसँ पुरस्कृत पोथी०म चौबाट्टा -म ०म .एच.। एन(सरक नाम आब गुल्हा मा३ छै, कारण ओतऽ तिजाहॅस्पिटलनक, ह्लाॅस्पिटलनक कमीक कारण हाॅस्पिटल दुर्घटना। आ हमहुँ लिखने रहीं ओ विषय पर एकटा कविता:

आ पखन जे दखवा जाग नहिौक थान अपन गामक !

ञा दखवा ञाग नहिौक शान ञहि छरु लन वला सञकक सहा !

हमना सरक ञंगयन नहिाञ ञ वस्र

ञहन वस्र

ञहन ञहि लाल कानम वैसल वब्राक नहञ !

माञ!
हमना गँ लगेग नहैञ ञ

ञयन गामक ञ्री सञक

ञहि लाल यनदशीक ञहि लाल कानसँ वशी ञछि लग

दूनू टा लगेञ विदशी सन

(गजब्ब 0ाकुन, वञका सञक छरु लन वला, कुनूञग्रम् ञन्कर्मनक, २00९(

गेला मनि गेल, यिचञा हs गेल, गामकँ गीञs चाहैञ ञ्री ञना सौंस गामक कुकूञ मनल जा नहल ञछि। कथा ञब्र .ञच. काटिक नियागाज ञछि।

'ञना हs कs किया' वानालीन, वानाप्लस, श्वाग थाम टी.री., नियागाज नास्यालजिक, मूदा हन वौधनी साहवक नर्शन शुनू, निनूडुथ वढैग कथा, सूहुन लगवाक धूनि, महिला सरक वञाञ्ञ, हन ञकटा ञनियनक गमसायव ञा ञाँखि खूजव वौधनीजीक। निनूडुथ कथा

समाप्त, सामान्य कोटिक दायक अन्त।

कथाकार अशोक कम कथा लिखने छथि आ ई उच्च कोटिक कथा सभ कहब छन्हि। कथाकार अशोकक विशेषता अछि जे ओ आधुनिक सामाजिक समस्याक प्रति सचेत छथि, विषयमे विविधता अनै छथि, मनोविज्ञान केँ सावधानीसँ नीक चीन्हाओ करै छथि। मुदा विषयकेँ - प्रतिष्ठावाक कला बसी काल मानि सकैत छन्हि बसी काल हुनकन ओहिंगक सुस्थाक कानच-पंचलाइन, कानच ओ पंचलाइन कखनो काल बहुत सामान्य, आ पूर्वानुकि युक्त लगैत अछि। कथाकार सुशीलक माँजल प्रतिष्ठावाक कला आ कथा लिखवाक कला, नव आधुनिक कथा लिखवाक कला वन वन मान पडैत अछि। -

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार गद्यक लेखक अशोक



गजेन्द्र ठाकुर

कथाकार गद्यक लेखक अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यैह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ओ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे ई चारिटा कऽ लेखकक संग न्याय नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक संग न्याय पढि जाय तखन ओ

जिन्दगी म याँचा छल टा लखककेँ नै यढि सकल। स दूनकायन दनाव यठलहि ज ऊ याठक लल ऐ तीन सयम सँ किछ कथा चूनि कऽ अयन प्रिय कथाक नूयम प्रस्तुत कनथि। हमना निचान जहिया ऐकटा लखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखन ओकना अयनाकेँ कथाकान घाषित कनवाक चाही। ओना ओतऽ प्रमचन्द ऐहना कहि जाइ छथि ज लाककथाम मात्र उठेवला घाठ आदि होइ छै स कथाक महत्व लाककथासँ वेसी छै। प्रमचन्दक ऐ गयसँ हम भिन्न निचान नखै छी आ हिनाक गानखयूनीक कथनसँ सहमत छी। हिनाक गानखयूनी अयन नूवाइक संग्रह 'नूय' म लिखै छथि ज 'हिन्दु लाक गीत' ज हमना दैत अछि स ओकना माननीय आ स्वर्गीय संगीत वना दइ छै, आ स गालिव, इकवाल आ चकवस्त सहा हमना नै दऽ सकला। ओ उदाहनण दइ छथि-

"वावूल माना नैहन छूटल जाय,

ऊ चाठी पर्वत हयी, आढन हया निदश। "

महाराना आव लाकगीत वनि गेल अछि, लाकगाथा वनि गेल अछि, 'रील महाराना' तकन उदाहनण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाराना आधानित किछ कविता अछि, स ओ लाकगीत आधानित अछि, लाकगाथा आधानित अछि।

स हमना नजनिम नचनाकान अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकान अशोक आ कथितन गद्यक लखक अशोक। अननिद्ध ठाकुन अयन याथी नाशनाइक लाकयठकेँ कथितन गद्य कहै

छथि, ई निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहुँ ओ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

अशोकक कथेतर गद्यमे छन्हि मैथिल आँखि (२००१), संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००१), कथाक उपन्यासःउपन्यासक कथा (२०१२), आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३), बात-विचार (आलोचना) (२०१५), नीक दिनक वाङ्मय (व्यंग्य संग्रह)(२०१८), राजमोहन झा (विनिबन्ध, २०१९) आ कथा-पाठ (२०२२)। संगहि किछु निबन्ध आ अन्यत्र छिड़िआयल समालोचना आ आन कथेतर गद्य सेहो छन्हि जेना 'बनैत कम बिगड़ैत बेसी' (सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' पर), सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत, रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत, केदार नाथ चौधरीक उपन्यास, शरदिन्दुजी आदि।

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) मे अशोक साक्षात्कार लेने छथि राजमोहन झा, धूमकेतु, कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजसँ। एक्को गोटेसँ ओ असहज प्रश्न नै पुछि सकला, राजमोहन झा द्वारा सुभाष चन्द्र यादवक राजकमल चौधरी मानाग्रह प्रसंगमे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल कएल कम्प्रोमाइज हुअए *(देखू हमर पोथी नित नवल सुभाष चन्द्र यादव, गजेन्द्र ठाकुर, २०२२ विदेह आर्काइवमे उपलब्ध)*, धूमकेतुक लाल झण्डाक सांगर लऽ साहित्य रचब हुअए वा मोहन भारद्वाजक मैथिल ब्राह्मणक संस्कार गीतकेँ मिथिलाक संस्कार गीत कहब *(देखू हुनकर सम्पादित मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित*

पोथी। बादमे ओ कऽ उमेश मण्डलक संग जातिक संस्कार गीत उमेश मण्डल द्वारा संकलित भेल आ विदेहमे ई-प्रकाशित भेल, जे असली मिथिला संस्कार गीत अछि।) आदि आदि। हुँ 'ठुट्ठीक एक दिन' (ठेठीगाम, २०११) कथामे ओ अपना मोनक संग सवाल जे ओ नै पूछि सकला, से उठा लेने छथि। प्रकाश कुमार चौधरीसँ साक्षात्कार हुनकर मृत्युक कारणे नै भऽ सकल आ तकर एवजमे ओ सद्भाव अंक-३ प्रकाश विशेष निकाललनि।

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३) अछि एकटा वैचारिक विवरण जे अशोकक पीढ़ीकेँ पचसल गेल नहि, जाहि सोवियत संघक बड़ाइ आ अमेरिकाक खिधांश कएल जाइत नहि, आ जे से कहैत नहि छथि ओ अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़ौल अमेरिका पठबैत नहि छथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोना पनीओ दइल दनदनेंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एनिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दनदनेंगासँ नीक शहर तँ पूरा विश्वमे कोनो नै छै। यात्रा कथाक अन्तिमक 'सोवियत रूस सँ' कवितामे सेहो अशोक संकेत कने छथि (चक्रव्यूह, १९८६)।

मैथिल आँखि (२००१), कथाक उपन्यास:उपन्यासक कथा (२०१२) बात-विचार (आलोचना) (२०१७) आ कथा-पाठ (२०२२) हुनकर निबन्ध आ निबन्धात्मक आलोचनाक आलेख सभक संग्रह छियन्हि।

अशोकक आलोचना आ निबन्ध विधाक परख आ निष्कर्षमे निम्न तथ्य सोझाँ अबैत अछि:

(१) हिनकर रचनामे मात्र मूल भाषाक लेखकक अध्ययनक प्रमाण भेटैत अछि, समानान्तर भाषाक गत १७ वर्षक अवदानसँ ओ अनभिज्ञ बुझाइत छथि, वा उदासीन छथि जे ओकर चर्चा हिनका मूलधारासँ काटि देत। 'मैथिली कथाक विकास: वर्तमान स्तर एवं प्रवृत्ति' मे ओ लिखैत छथि जे मैथिलीमे सएसँ बेशी कथा जीवकान्त लिखलन्हि आ एकर संख्या ओ दू सय गनबैत छथि, जे आलेखकेँ ओ नव तथ्यक आलोकमे सुधारबाक एखन धरि आवश्यकता नै अनुभव कएलनि, जखन कि जगदीश प्रसाद मण्डल एखन धरि ८७० कथा लिखि चुकल छथि।

(२) हिनकर जीवित रचनाकारक समालोचनामे आह-वाह आ विवरण मात्र भेटत। जीवित रचनाकारक समालोचनामे ओ ओकर कमजोर पक्षकेँ नै देखाओल जाय तेँ हेतु ओ अपन रचनामे सुधार करा कऽ सकत, उदाहरणक रूपमे 'दूर देस पलायनक मृगतृष्णा आ श्रमशील स्त्रीक संघर्षगाथा- हसीना मंजिल' देखल जा सकैए। मृत साहित्यकारक आलोचनामे ओ कते हिम्मत देखबैत छथि, जेना 'ललितक पृथ्वीपुत्र', मुदा ओतऽ ओ आन सवाल कऽ दै छथि, ओ पूछै छथि- 'एतऽ स्वाभाविक प्रश्न उठैत अछि जे ललित खेतिहरक जीवन-संघर्षक उपन्यास रचैत काल कलपू आ बिजलीक प्रेम-प्रसंग के बीच मे किएक अनलनि? ब्राह्मण आ अछोपक बियाह-

सम्बन्ध सन सामाजिक समस्या क उ0ायव कि७क जनुनी लगलनि ह्नकाः ललिग सन चगना सम्पन्न लखक अनग ढाह्नी कि७ ललनि?' अ(णाक आलखक अन्दिम याँगिम गकन कानथ वगवेँग ङथि- 'नस्फुग्8 ललिगक मैथिल संस्थानक ॐ्री अनधानमा नर्थनादी नेवानिकगाक दन थिका।' आ ँउ लल उा नामदन मा संग ललिगक काना गयक सांगन ललनि, जकन आनश्यकगा नै ङला। प्रम आ सङ्क ७कटा णाश्नग निषय अछि आ अकाल हु्अय आकि ग्लग उा खगम नै रs सकै७, अ(णाककँ ँउ लल काना सांगनक जनुनी नै ङलहि। (गैब्रियल गार्सिया मार्क्विसक 'लन ॐ्ॅन द टाॐ्ॅम □रु कालना' गकन प्रमाथ अछि।

(३) **नीक दिनक वाॐ्स्थाय (व्यंग्य संग्रह)** म हुनका अयन सर गय नखवाक अनसन ङलहि, हालीक जागीना सन मुद्दा उागs सह्ना उा चुकि (गला।

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१९.प्रदीप बिहारी-मानक कथाकार



प्रदीप बिहारी

मानक कथाकार

अशोक मार हुसव्ककक कथाकार अशोक मार मैथिलीक कवि, कथाकार आ आलोचक, जिनक अग्रगामी रचना कर्मसँ मिथिलाक लोक आ सम्पूर्ण मिथिला जगजियार होइत देखाइत अछि। ई अपन मैथिल आँखिसँ विश्व आ वैश्विक परिदृश्य केँ देखैत छथि, गुनैत छथि आ तकरा अपन रचनाक विषय बनबैत छथि। आ से एहि तरहेँ बनबैत छथि जे साफ-सपाट ढंगेँ पढ़ि क' ससरि गेलहुँ, तँ बूझयब नै करत। मुदा ई हिनक शिल्पक कलाकारी छनि जे अहाँकेँ लागत जे बड़ सहज बात कहैत छथि, मुदा कहैत रहैत छथि ढाव गंभीर गप।

बहुविधावादी छथि अशोक जी। आरंभ कविता लिखलनि...लिखैत रहलाह...आ तकर बाद कथा दिस मुड़लाह। हमर कहबाक तात्पर्य ई नहि जे एखन कथा नहि लिखथि, मुदा कविता प्रायः छोड़लनि आ कथा पर केन्द्रित रहलाह। संग संग अन्य विधा सेहो चलैत रहलनि। हम एत' कथाकार अशोक आ अशोकक कथा पर गप कर' चाहैत छी।

अशोकक लेखन आठम दशकसँ आरंभ भेलनि अछि। आठम दशक कहबाक मतलब जे एहि समयसँ पाठककेँ हिनक प्रकाशित रचना सेहो पढ़बा लेल उपलब्ध होम' लगलनि। ई जहिया लेखन शुरू कयलनि तहियासँ पहिलुक दशक, माने सातम दशकमे मैथिली कथामे छठम दशकक कथाक विषय, मनुष्य आ गाम-भूमि सँ आगाँक बात नहि देखना जाइत अछि। सामाजिक चेतना आ प्रतिबोधक जे गुम्फन छठम दशकमे पजरलैक, से सातम दशकमे पसरलैक नहि, मुदा धधरा

नहि बनि पौलैक। तकर एकटा कारण हमरा इहो बुझाइत अछि जे एहि (सातम) दशकमे मैथिली कथामे नव कथाकारक आगमन आंगुर पर गन' योग्य रहल। एकटा वेव चललै, मुदा नियमित कम कथाकार रहलाह।

अशोक जी सातम दशकक (धाह्निकं हाउँत अपन कथा सभक संग अबैत छथि। व्यक्ति, समाज, संवेदना, सौमनस्यता, चेतना आ प्रतिबाधक सोझ-सोझ बाट बनबैत छथि। ई अपन बात सोझ-सोझ पाठककें कहैत छथि, जाहिमे हिनक भाषाक जादुगरी देखबा योग्य रहैत अछि। अपन लाथे युवा समाजकें युग-सत्य देखबैत छथि। ई बात हिनका मैथिली कथामे एकटा फराक पहिचान आ स्थान दैत छनि।

लेखक समयक संग बदलैत व्यक्ति, समाज आ देशक भाव-स्वभावक संग चलैत अछि आ ओकरा अपना रचनाक विषय बनबैत अछि। जे समयक संग होइत परिवर्तन कें नहि देखैत अछि, ओ खाधि खुनि क' स्वयंकें गाड़ि दैत अछि। कथाकार अशोक एहि मामिलामे हुनक समयक संग चलैत देखाइत छथि। एकर बानगी हिनक 1986 ईमे छपल कथा "मिर्जा साहेब" (ओहि नातिक भाव) आ "छल" (ठैठीगाम- 2017)मे देखल जा सकैत अछि। "मिर्जा साहेब"क मिर्जा मुजफ्फर आलम जे भारत-पाकिस्तानक संबन्ध खराब भेला पर भारतमे रहैत छथि। एकटा वियाहमे भाग लेबा लेल पत्नी आ बेटा पाकिस्तानमे धरा जाइत छथि। बहुत प्रयासक बाद जखन ओ दुनू घुरैत छनि आ अपन पत्नी आ बेटाकें लेब' बम्बई जाइत छथि आ ओम्हरहि तत्काल भेल दंगामे मारल जाइत छथि। मुखिया

ठीक संग पत्नी आ बेटा अबैत छनि, जिनक अपवाक तैयारीमे गाम प्रफुल्लित छल, हुनक आयोजनक व्यवस्था कयने छल, ताहि पर पानि पति जाइत छैक। ओम्हरि कथा 'छल'मे हली मा कोआपरेटिवक आम सभामे डीहुकासक लाइं मुहम्मद असलम बनैत छथि। कोआपरेटिवक मीटिंग मे जाइत छथि। आ अंतमे एकटा बात लेल तामसे माहुर भ' जाइत छथि आ बाज' लगैत छथि- 'अर, ई हाकिम तखनी सं हमरा मजहब के की-कहां कहि रहल छथि। कहै छथ जे इसलाम बहुत कट्टर मजहब हुए। तलवार के जोर पर चलै हुए। मुसलमान सब गाय के मांस खाइत हुए। हिंदू के काफिर कहै हुए। हम तबे से हिनका समझा रहल छली। अर राइत, अइत मे हमरा की कसूर हुए। एतना दिन सं हम सब एक-दोसरा के संग रहल छी। तबो एक-दोसरा के नहि समझली? कौआ के पाछू दौड़ल जाइत छी। पर ई मानैत नहि छथि। की-कहां बकैत जाइत छथि।'

साम्प्रदायिकताक दु टा स्थिति दुनू कथामे राखलनि अछि कथाकार। 1986 सं 2017 धरि अबैत-अबैत साम्प्रदायिक सद्भाव कतेक विकृत भ' गेल अछि, तकर बानगी। मिर्जा साहेबक पत्नी आ बच्चा पाकिस्तान सं ऐथिन, तं गामक लोक स्वागतक हुनक ओरिआओन कयने रहैछ। ई प्रायः एहि दुआरें जे मिर्जा साहेबक मोजर हुनक समाजमे धर्मक कारणें नहि, मनुक्खक कारणे छलनि। मुदा, सामाजिक स्तर पर धार्मिक वैमनस्य एत' धरि पहुँचि गेल अछि जे मुहमद असलम के ठाह-पठाहिं ओकरा धर्मक विध्वंस क' देने अछि लोक। बहुता असलम अपन समाजमे छथि जे कहैत रहैत

अछि जे कौआक याद नहि रहतु। मुदा...। कथाकार दुनू समयक चित्रण करैत वाजिब चिन्ता रखैत छथि। दोसर, एकरा आन बात! मिर्जा साहेबक संग मुखिया जी बम्बई (आइयक मुम्बई) जाइत छथिन। मुदा, आइयक स्थिति ई बनि गेल अछि जे कोनो मिर्जा साहेबक संग कोनो मुखियाजी कतहु जयबा लेल तैयार नहि भ' सकैत छथि। दुनूक बीच अविश्वसनीयताक खाधि एतेक गहींर क' देल गेल छैक जे रमजान आ रामनवमी मे एक-दोसराक भेँट-घाँट सेहो बनौआ लगैत छैक। आइयक समयक ई सभसँ पैघ त्रासदी भ' गेलैक जे एहि देशक मुसलमानकेँ कह' पड़ैत छैक जे हमर देश भारत अछि। आ एकरा लेल दुनू धर्मक लोक जिम्मेदार छथि जे तेसर, मदारीक इशारा पर नाचि रहल छथि।

सहानक एहन एकटा कथा ऐतीगाम संग्रहमे अछि- 'ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि'। सुधीर आ रमेशक साइकिल सिखबाक बहन्ने कथाकार बड़ीटा बात करैत छथि। एहि कथाक अलाउद्दीन आ कैंची मिस्त्रीक चरित्र समाज लेल एकटा आदर्श स्थापित करैत अछि।

कथाकार अशोकक कथा रूपी तरकसमे रंग-बिरंगक बाण छनि। हिनक एकटा कथा मोन पड़ैत अछि- भोज। एहि कथामे लगैत छैक जे कथाकार एकटा नेनाकेँ भोजक प्रति आकर्षणक वर्णन क' रहल छथि। भोजक खाद्य-पदार्थक अद्भुत वर्णन अछि। तकर कारण ई जे कथाकार स्वयं सेहो भोजन संदर्भ निवासी छथि। भोज नहि, आन-आन कथा सभमे सेहो भोजनक वर्णन मनोयोगपूर्वक

करैत छथि। 'राज' कथामे नेनाक मनोविज्ञानक चित्रण अद्भुत अछि। मुदा, पैघ बात ई जे ओहि कथाक बहुतो गामक आयसँ सम्मानक गप कहि जाइत छथि कथाकार। राज गामक लोककेँ एकठाम बान्हि क' रखबा लेल जरूरी छैक।

हिनक बहुत रास कथा अछि जे मानवीय संवेदनाक विभिन्न आयामकेँ सफलतापूर्वक छुबैत अछि। हिनक कथा-संसारक अवगाहन कयला पाठककेँ बुझबामे आबनि जे ई कथाकार ओहु सब विषयकेँ अपन कथामे आनलनि अछि जे मनुक्ख आ समाजक समृद्धिक कारक भ' सकैत अछि।

हिनक संग्रह 'उतीगाम'क कथा सभमे एकटा कहिय बात ई देखबामे अबैत अछि जे स्थानलन/सिम्मलनक बढ़ैत जालक अछैत गामकेँ कोना बचाओल जाय? मनुक्खकेँ बचबा लेल गामक बाँचब जरूरी छैक।

मल्टीनेशनल कम्पनी सभक अधिकारी आ कर्मचारी सभ प्रमोशन आ पदक जाहि वृत्तमे घूमि रहल अछि, जे ओकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवन धूमिल भेल जाइत छैक। ओकरा पाइ आ पद चाही। एहि विषय पर मैथिलीमे किछु नव-पुरान कथाकारक कथा अयलनि अछि, जाहिमे विभिन्न प्रकारक चिन्ता आ चिन्तन प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहन घुनमुनिया देत लोक सभक लेल हालहिमे अशोक जीक एकटा दासत रंगक कथा अयलनि अछि- 'जिम्मेदारी'। एहिमे ओ 'वर्क लाइफ बैलेंस'क नीक उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि। परिस्थिति तँ यैह छैक आ एहिना कि एहुसँ बेसी व्यस्ततामे

भ' सकैत छैक। मुदा, एहन परिस्थितिमे जीवनक राग-अनुराग कोना बचा क' राखल जा सकैछ, से बात कथाकार अशोक अपन एहि कथामे कहैत छथि।

अशोक भाइसँ मासमे एकदिन अवश्य भेंट होइत अछि। ओ दिन होइछ 'उपमान'क मासिक गोष्ठीक। ओ मैथिलक प्राय: सभ महत्वपूर्ण विधामे लिखलनि अछि। एकटा विधा छूटल छनि। एकबेरक गोष्ठीक समापनक बाद वियोगी (तारानन्द वियोगी) आ हम कहलियनि जे भाइ, उपन्यास छूटल अछि। लिखियौ ने। ओ साफ नकारि गेलाह। नहि, उपन्यास नहि लिखायत। एकदम साफ नहीं, मुदा नहि। एहि लेल कहियो मूड न बनल। जे, से। ओही गप हमरा दुनूक मुँहसँ प्राय: एहू दुआरेँ बहरायल जे ओहि गोष्ठीमे वियोगी अपन उपन्यास अंश पढ़ने रहथि। एहि गपक बाद हम दुनू गोटे हुनका संग कौफी पीब' पटना गांधी मैदानक मैकडोनाल्ड मे गेलहुँ। कौफीक संग गपसपक बाद घूरती हम फेसबुक पर राखनहि द' देलियैक। उनतीस मइ 2022क गप थिक। फेसबुकक टाइटिल देल रहियै - कौफीक संग कथा-वार्ता करैत मैथिलीक तीन टा कथाकार। एहि पोस्टक बहुत रास प्रतिक्रिया आयल। मुदा मुख्य प्रतिक्रिया आदरणीया उषाकिरण खानक आयल छल। ओ लिखने छलीह -'तीनू मिलि क' एक टा दीर्घ कथाक सूत्रपात तँ करता? बड़ नीक प्रयास हएत- मधुबनी, सहरसा आ बेगूसरायक प्रतिनिधि सभ। बधाइ भाइ लोकनि।

एकर प्रतिक्रिया पर आदरणीय श्रीमनाथ झा शीनू गोटकँ उपन्यास लिखबा लेल आग्रह कयलनि। हमरा माद कहलनि जे हाथ मानल छनि। लिखिए दगाह। नियोगी जी आ अशोक जी गछथु। एहि पाछू पर बहुत संवाद भेल। नियोगी गछलनि। श्रीम राइ अंततः अशोक जी सं सेहो गछबाइए लेलनि। कथाकार अशोक अपन पाछू उषाकिरण खानक उपनाम लिखलनि- "प्रणाम। अहांक आदेश त' पहिनहि सं अछि। श्रीम राइ सेहो कहि देलनि। नियोगी बहुत दिन सं पाछू पड़ल छथि। लगैए आब एकटा उपन्यास लिखैए पड़त। "

हम सभ अशोक राइक एहि घोषणाक स्वागत कयल रही। आ, आब हुनक उपन्यासक प्रतीक्षा क' रहल छी।

-संपर्क-6202140561

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२०.आशीष अनचिन्हार- मैथिल दृष्टिदोष



आशीष अनचिन्हार

मैथिल दृष्टिदोष

"मैथिल आँखि" कांचीनाथ झा 'किरण' जीक देल एकटा नारा अछि जाहि अंतर्गत मिथिला-मैथिली-मैथिलकेँ अपन दृष्टिसँ देखबाक बात कहल गेल छै। मुदा ओही "अपन दृष्टि" केर रूप आएत तकर मापदंड कतहुँ नै सामनाएल गेल छै।

"मैथिल" शब्द केर अर्थ संकुचित कऽ देल गेल छै। एकर अर्थ एखनो मात्र ब्राह्मण-कायस्थ होइत छै। कागजपर लिखबाक लेल सभ नीक-नीक आ उदात्त विचार लीखै छथि मुदा व्यावहारिक जीवनमे ओ उदात्त विचार नै आबि पाबै छनि। टैक्स पेयर केर पाइसँ चलए वला संस्था जेना अकादमी सभकेँ सेहो अही मैथिल अर्थ वला बना देल गेल छै।

एहन परिस्थितिमे 2007 मे मैथिली अकादमी, पटनासँ अशोक जी केर "मैथिल आँखि" नामक पोथी प्रकाशित होइत अछि। एहि

याथीम 24 टा आलेख अछि जाहिम किछु आलेखम किनवजी यत्र रहि जाएत आ किछुम ता नै रहत। नै रहबाक एकै टा कारण ज आब ता समयम नै छै ज एकै दृष्टिसँ अहाँ प्रगति कS लS लब। अयन आय मैथिल आँखिम आना दृष्टि सर आबि जाइत छै आ मिथिला-मैथिली-मैथिलक विकास तहीसँ हाइत छै। एहि याथीक सर आलेख काना-न काना पत्रिकाम प्रकाशित रहल अछि। बहुत लखम मैथिल आँखि ना दृष्टि स्पष्ट नै रS सकल अछि जना पृष्ठ-21 पर आलेख अछि "विकास संदर्भ" ज कि संधान पत्रिका कर झलाइ 2000 कर अंकम प्रकाशित रहल छल। ताहि आलेखक शुनुम लखक अयन किछु संगीक संग काना बैंक अधिकारी संग वार्तालाप करैत नहथि। बैंक अधिकारी करुब नहनि ज मैथिली साहित्य यवास वर्ख याछु अछि। अधिकारी इहा कहलखिन ज एखन सूचना-तकनीक-इंटरनेटक जमाना अछि ज मैथिलीम नहि अछि। मुदा अशाक जी आ हुनका संग नहल आन लखक ज संग नहथि स ताहि अधिकारीकँ गालिया ललाह। मुदा दखियौ, न अशाकजी ताहि अधिकारीकँ ताहि समयक इंटरनेटयर मैथिली सामग्री दखा सकलाह आ न हुनका संगम नहल आना लखक। वर्ख 2000 म मैथिलीम "हालसनिक गाछ" छल जकर संचालक गजेन्द्र ठाकुर छलाह आ एकर अलाव तीन टा आन साइट छल ज कि अमनिकासँ संचलित छल जाहिम अधिकांशतः अंग्रेजीम मिथिला-मैथिली-मैथिलयर सामग्री नहैत छल। एहि सरहक विस्तृत विवरण हमर याथी "मैथिली नव यत्रकारिताक इतिहास" म रहत। एहि विवरणसँ इ स्पष्ट हाइत अछि ज जाब दुन धनि ताहि अधिकारीक दृष्टि गेल छलनि ताब दुन धनि अशाकजी एवं हुनका

संगम नहि आन लेखक केर छलनि। जखन कि लेखक लग अपन समकालमे घटैत एहेन घटनाक्रम जानि हेबाक चाही। एहना हिसाबेँ ओ बैंक अधिकारी मात्र पाठक छल तेँ ओकरा लग कम सूचना रहि सकैत मुदा लेखक लग त सूचना हेबाक चाही।

पृष्ठ-54 पर आलेख अछि "विकासक रूप" जकर मुख्य मुद्दा छै पलायन। मुदा मात्र मजदूरक पलायन। एहना जेना कि विशुद्ध मैथिल महासभा वला मैथिल दृष्टि छै। मजदूरक पलायन, पलायन रहै आ बाबू साहेबक बेटा जे दिल्ली-बंबइ- अमेरिका-लंदनमे कमा कऽ ताजमहल बना लेत से कमाइ रहै। मजदूरक पलायन कम करबाक पहिल शर्त छै ब्रेन ड्रेन (पढ़ल-लिखल लोकक पलायन) रोकब। अन्यथा एहना नजरिमे मजदूरक पलायन रोकब, मिथिलाक गरीबकेँ गरीब रहबाक लेल अभिशप्त कऽ देत। आ संप्रति मैथिल महासभा केर मैथिल दृष्टि इएह चाहै छै।

उपर जे हम दू उदाहरण देलहुँ ताहि आन किछु उदाहरण देल एहि पोथीमे मुदा पाठक सभसँ आग्रह जे ओ एहि पोथीकेँ कीनथि आ ओकरा पढ़थि। ओना अगिनिक एहि पोथीमे एहना बहुत रास विशेषता सेहो देल मुदा हम सकारात्मक लोक मात्र दूटा विशेषता देब। पहिल एहि पोथीक सभ आलेख छोट अछि। आ तेँ सामान्य पाठक लेल नीक बात छै। दोसर, अहाँ सहमत होइ वा कि असहमत मुदा ओहि लेख सभमे लेखक केर अपन निष्कर्ष देल। मैथिलीमे तँ किछु एहन धुरंधर लेखक सभ छथि जिनकर लेख दू-किछु बेर पढ़लाक बाद नै बूझाइ छै जे आखिर एहिमे की लीखल गेल छै। ओना ई संभव बात छै जे एहन धुरंधर लेखक कम छथि मुदा जे छथि से अपनाकेँ मठाधीश मानै छथि।

अशोकजी अपन ओहि दु विशेषताकेँ अंत धरि बचा कऽ राखथि जाहिसँ असल मैथिल दृष्टि हुए।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.मुन्ना जी- प्रकाशक धुनी- श्री अशोक



मुन्ना जी

त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक

मिथिलाक समानान्तर प्रखण्डान्तर्गत लहेरा, डुमरियाथान निवासी श्री अशोक, श्री शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्द क बीच 1983 स कथाक त्रिकोण बनल छल। तीनू गोटे कथा मे अपन अपन हस्ती आ स्वतंत्र अस्तित्व मे जनताक पछातिया कथाकार श्री अशोक जी अपनाकें हिनाक दृष्टिकोण सँ ओकर धुरी साबित भेल छलाह।
सदिखन न काहु सँ दोस्ती न काहु सँ बैर कें चरितार्थ करैत अपन हनिछओल आ कणिओल क्रियाशील रहि आइयो अपन पीढ़ीक सर्वाधिक पढ़ल जाय बला सर्वश्रेष्ठ कथाकारक रूप मे उपस्थित छथि।
श्री अशोक जी पहिने अशोक झा छलाह हुन अशोक आ अपन पहिचानकें जातिवादी हवा सँ बचबाक क्रम मे भ' गेलाह कथाकार अशोक।
बनारस सँ शिक्षा पाबि गाम घुरलनि 1975 मे वैवाहिकबन्धन मे बन्हा गृहस्थ जीवनक पछाति पहिने किरानी आ कालान्तरें कार्यपालक विभाग मे अधिकारीक सेवा दैत सेवानिवृत्त भ' संप्रति पटनावासी

नहि सृजनता छथि
कथा सृजनक संग-संग उपन्यास पर हिनकर गहींर दृष्टि प्रशंसित करै बला रहल। संगहि उपन्यास, कथाक प्रकाशन स्थल हिनका श्रेष्ठ आलोचक श्रेणी मे आनि ठाढ़ कएलक।
मंच, माला, माइक आ हाँजी-हाँजी बला नुप कहिया दृष्टिगोचर नै भेल।

जुलाई 1995 , ओहि समय पटना मे पत्रकारिताक छात्र रही। शैल रानी (शैलेन्द्र आनन्द)क संग अशोक राजपथ सरकारी आवास पर पहिल भेंट भेल छल। एकौ पंचायतक नहिता भेंट नै छल। ओना हॉलासन त' रही जुलाई 91क पटनाक कथा गोष्ठीय सँ।
वीरेनि कथा विधा पर हुनका सँ हाजी गप सप सदिखन सकारात्मक आ प्रामाणिक करैत रहल। आ तकर परिणामस्वरूप दिसंबर 2011 मे हुनक संयोजन मे भेल पटना कथागोष्ठी मे हमर वीरेनि कथाक एकल पोस्टर प्रदर्शनी लगाओल गेल छल।
आब जहिया दिल्ली आबैथ त' सूचित करथि। आ सदति सामनर वाट देखैत रहलाह।

-मुन्ना जी, हटाठ नुयोली मो. 9958396353

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२२.श्रीधनम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिप्पणी



श्रीधनम

गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिप्पणी

अशोक खाँटी आधुनिक मैथिल-कथाकार छथि। मैथिली मे खाँटी कथाकार त' बहुत छथि, मुदा कैक बेर हुनक दृष्टिक कारणेँ हुनक छद्म वैचारिकताक पोल खुलि गेल अछि। एहि दृष्टिएँ कथाकार अशोकक वैचारिकता आ प्रगतिशीलता मे कोनो फाँक नहि छनि आ से हुनक कथा मे अनुस्यूत छनि। से बिना कोनो नारेबाजी आदिक डफली बजेलन्हि। अशोक मिथिलाक जन-जीवनक कें अलग-अलग कोण आ दृष्टिकोण सँ देखैत छथि। ओ ग्राम जीवन, जगत आ प्रकृतिक अनेक बिम्ब कें गतिशील चित्रकारी संग उतारि दैत छथि। हुनकर ओ 'मैथिल आँखि' छनि जकर कैनवास बहुत विस्तृत छै, लोकल सँ ल' क' ग्लोबल धरि। हिनकर कथाक वितान मे मिथिलाक माटि-पानि, खेत-खरिहान, जातिक अनुसार बाँटल टोल-पड़ोस, दाम्पत्य जीवनक आशा-निराशा, राग-द्वेष सभ किछु व्याप्त अछि। बाभनटोली सँ बाहर निकलि क' दलित-टोल आ मियाँ टोल धरि जाइत छथि आ एक दोसर टोलक बीचक राग द्वेष, छल-छद्म, तनावक संग आत्मीयताक सूत्र कें सेहो पकड़बाक प्रयास करैत छथि। सब सँ पैघ बात जे हिनकर कथा कहबाक शैली छनि से 'इस्म' ककरा नहि ठमका दैत? कथ्यक अनुसारेँ 'करुण' कें साध' मे माहिर छथि कथाकार अशोक।

'ओहि रातिक भोर' संग्रहक भूमिका मे प्रसिद्ध कवि-आलोचक कुलानन्द मिश्रक हिनका कथाक मादे टिप्पणी छनि जे "ई युगसत्य कें

सामूहिक नजरि सँ बसी व्यक्तिक नजरि सँ देखब सार्थक बुझैत छथि ओ हिनकर कथा मे युगीन संघर्षक बात पराजय रूप सँ लक्षित होइत छै।" देखल जाय त' एहि कथन मे प्रश्नक संग उत्तर सेहो निहित छै। एत' कुलानन्द जीक कहबाक आशय ई छनि जे अशोक अपन समकालीन समय, समाज आ जन-संकुलक यथार्थ केँ अपन पात्रक नजरि सँ अकानैत छथि ने कि टी०भी आ नारेबाजी सँ। हिन्दी मे प्रेमचंद सँ अमरकांत धरिक कथा मे समाज आ समूह केँ 'व्यक्तिक नजरि' सँ ताकबाक एहने परंपरा देखल जा सकैत अछि। प्रश्न ई हेबाक चाही जे व्यक्ति-चरित्र वर्गीय चरित्र बनैत अछि कि नहि। आलोचक मोहन भारद्वाजक उक्ति करब छनि जे "अशोक विकास केँ पूर्णतावृत्तिक रूप स नहि देखैत छथि। विपरीत तत्त्वक एकताक रूप मे विकास केँ देखब हुनक विशेषता छनि।" भारद्वाज जी इहो लिखैत छथि जे हिनक "कथाक कथ्य सार्वदेशिक होइत अछि, मुदा ओकर बनावटि मैथिल रहैत अछि। कथाक पानी-रंगनी अर्थात संरचना मे मैथिल सुवास रहैत अछि।" निःसन्देह मोहन भारद्वाज अशोक केँ एकटा एहन प्रगतिशील कथाकार रूपेँ देखैत छथि जे सामाजिक द्वंद्व केँ वैश्विक आ वैज्ञानिक दृष्टिएँ मैथिल गंधक संग चित्रित करैत छथि। एहि प्रक्रिया मे कथाकार अशोक अपन पाठक आ पाठकीयता केँ गसियौने रहैत छथि। जनाकि युवा कथाकार-समीक्षक शुभेन्दु शेखर अशोक केँ 'पाठकक कथाकार' कहैत लिखैत छथि जे "अशोकजी मिथिलाक जीवन-राग, ओकर छोट-पैघ आकांक्षा, ओकर उदात्त जीवनक नकारात्मक आ सकारात्मक बिंदु सभ केँ बड्ड सूक्ष्मता सँ देखैत छथि।" शुभेन्दु अशोकक कथा-यात्राक एहि विशेषता केँ सेहो रेखांकित करैत छथि जे कथ्य आ शिल्पक

स्तर पर ई कथाकार लगातार ऊर्ध्वमुखी आ प्रयोगशील छथि। आ तकरा कोनो रूपे सकल मैथिल-जनता नहि पकडि पबैत अछि। एहि प्रकारेँ कथाकार अशोकक ई थोड़-बहुत मूल्यांकन भेल से बहुत कम अछि। तेँ 'विदेह'क ई प्रयास एहि चर्चा-परिचर्चा केँ आगाँ बढ़ाओत से विश्वास अछि।

अशोक 1980 क आसपास कथा लेखन आरंभ कएने छलाह। लगभग चारि दशक मे हुनका लग संख्या मे भने कथा कम हो, मुदा उत्कृष्टताक प्रतिशत हुनका लग बहुत अधिक छनि। निःसन्देह सृजनात्मक रचनाकारक रीतेँ सेहो एकटा आत्मालोचक होएबाक चाही, जाहि सँ साहित्य मे निंघस नहि पसारि सकय। एहि सँ साहित्य आ पाठकक बहुत भलाइ होयत। अशोक पिछला शताब्दीक अवसानक संग मलकैत साँढ जकाँ आँखि मूनने लागल जाइत नव सदीक यथार्थ केँ अपन कथा मे गूँथय मे माहिर छथि। पिछला सदीक अंतिम दू दशक स्थानीय समाज आ राजनीति मे परिवर्तनक काल रहल, जकर समाज पर असरि बहुत बेसी पड़ल। एह समय आवारा-पूँजीक वैश्विक आवागमनक सेहो थिक। पारंपरिक सामाजिक संरचनाक पुनर्रचना भेल आ एहि क्रम मे टकरावक संग सामंत केंद्रीय टाल सँ हाशियाक टाल दिस सेहो शिफ्ट भेल। एहि बदलावक प्रक्रिया केँ अशोक बहुत महीन रूपेँ 'मारवन' कथा मे अभिव्यक्त कएने छथि। कथा मे आयल 'अंबेडकर-चौक' परिवर्तनक मठाहन बनि जाइत अछि। निम्न वर्ग सँ मारवन बनबाक एहि प्रक्रिया मे जनता अपन राजनेता जकाँ दिशाहीन आ दिग्भ्रमित अछि।

गोर्की बचपनक कहानी कलाक वर्णन करैत लिखने छथि - "बचपनक कथा पढ़ैत एना सन प्रतीत होइत अछि जेना कि मानि लिय' जे शहर मृतक उदास अवसानक दिन मे अहाँ टहलि रहल छी, जखन कि हवा एतेक पारदर्शी होइत अछि जे ओहि मे झाड़-पात, गाछ-विरिछ, संकीर्ण मकान आ धूमिल सन लोक सभकिछु एकदम स्पष्ट देखा पड़ैत अछि। सभकिछु एकदम विचित्र- एकांत, निश्चल आ निःशब्द लगैत अछि। चारू दिस गहींर नील सँ बादल असीमित दूरी पसरल रहैत अछि। आ जे फिक्का सन आसमान संग जा मिलैत अछि। ठंड सँ जमल आ कादो सँ भरल धरती पर आसमान 'सर्द आह' भरैत अछि। लेखकक दृष्टि शहर मृतक सूर्य जकाँ निर्मम आ स्पष्ट रूपें ऊबड़-खाबड़ बाट, टेढ़-मेढ़ गली, संकीर्ण आ गंदा मकान सभ पर प्रकाश पसारैत अछि, एहि मकान सभ मे दीन-हीन तुच्छ लोक सभक विकलता आ काहिली सँ दम घुटैत जाइत छै। ओ सभ मूस जकाँ अपन निरर्थक, ओंघायल भागम-भाग मे लागल रहैत अछि ।" अशोकजीक कथा सभ कें पढ़ैत कैक बेर ई कथन सार्थक बुझना जाइत अछि। अशोक अपन निजी पेशा मे सरकारी अधिकारी रहलाह। हुनका लग सरकारी तंत्रक बेस नीक-अधलाह अनुभव छनि, जकरा ओ अपन कथाक विषय बनौने छथि। सरकारी लालफीताशाही पर अशोकक कैक टा कथा छनि। 'दसखत' आ 'काठ' कथा मे राजनीतिक भ्रष्टाचार कें जाहि तरहें उघाड़ल गेल अछि से अपन कथ्य मे पुरान होइतो प्रस्तुति मे नव अछि। अनेक तथ्य आ पक्ष कें जोड़ैत। 'काठ' मे 'सांप' मटाकूनक बहुत समुचित प्रयोग भेल अछि। पहिने 'अवर्ण' कें 'सवर्ण' लूटैत छला आ आब 'मंडल' लूटि रहल छथि। रामलाल मंडलक

सांप सभ सीसाक घर सँ बाहर भ' गेल। "चारूकात गाम मे सनसनाइत-सनसनाइत ससर' लागल। झुरकास सँ आसामर्द क' देलक समूचा वातावरण के।" अहिना 'जिनिस' कथा मे भ्रष्टाचारक संग दाम्पत्य आ बदलैत स्त्री-पुरुष संबंधक सार्थक रेखाचित्र खींचल गेल अछि। 'स्त्री-पुरुखक दियाद नहि थिकैक।' एहि कथन सँ अनेक तथ्य ध्वनित होइत अछि। रूपाक एहि कथन 'मोन पाडू त' कतेक दिन भ' गेल हैत हमर देह छुना अहाँक?' कँ आधुनिक स्त्री-विमर्शक दृष्टिएँ सेहो देखल जा सकैत अछि।

अशोकक एकटा कथा छनि 'हरिसिंहदेवी'। आब एहेन काना कथाक 'कथ्य' भ' सकैत अछि? मुदा एहन शोध आलेखक विषय कँ लेखक जाहि तरहेँ बिखिया क' बखान करैत छथि, से हुनकर 'किस्सागो'क प्रमाण थीक। कथाकार एत' जाति-पाँतिक समाजशास्त्रीय विश्लेषणक संग मनोवैज्ञानिक 'स्कैन' सेहो करैत चलैत छथि। 'रागविराग' कथा एहि तथ्य कँ रेखांकित करैत अछि, जे हजारो वर्ख सँ मारि-गारि सुन' वला दलित, मजदूर लाल सलाम आ झंडाक दू टा मी0 बाल करगक आह्लादक होइत छै। हजार पुरैया कर्मनिष्ठा इच्छाशक्ति अपन स0नी कँ माँ करैत अछि। हजारो सालक सामंती गुलामी सँ बाहर निकलल इहो वर्ग एक बेर फेर 'प्रेम लयर अटयर बैन' मे फँसिक' शोषणक शिकार भ' जाइत अछि। अही कड़ीक विस्तार मे 'महगी' 'प्रतिलाभ' आ 'जीवन नरकक दिनचिन्हक' शीर्षक कथा कँ देखल जा सकैत अछि। मुदा 'जीवन नरकक दिनचिन्हक' कथाक अंत मे जे द्वंद्व हेबाक चाही तहि सँ पात्र बचित नहि जाइत अछि। बहुत आसानी सँ जीवन कँ मुक्ति भेटि जाइत छै। एहि

दृष्टि सँ 'प्रतिलाभ' कथाक विकास आ उत्कर्ष स्वाभाविक अछि।

'मानवक' संग्रहक कथा ''बूढ़ा जीवैत रहलाह' आ 'उंतीगाम' संग्रहक 'ओना त' क' किया' कें एक संग पढ़ल जेबाक चाही। ग्रामीण समाज मे सोलह-सत्रह वर्ख मे बियाह आ चालीस जाइत-जाइत वानप्रस्थी बनि जएबाक आग्रह रहल अछि। सएटा शास्त्र-पुराण मे ययाति आ दशरथ सन अनेका उदाहरण रहबाक अछैत बूढ़क रंजन करबा मे 'विश्वगुरु' सदा पाछाँ नहि रहल अछि। हमरा जनैत बूढ़क 'लाग' पर मैथिली मे लीखल अद्यतन कथा थीक- बूढ़ा जीवैत रहलाह। अहिना दाम्पत्य जीवन आ प्रेमक कथा- 'लाथ' कें सदा देखल जा सकैत अछि। मध्यवर्गीय व्यक्ति अपन गृहस्थक गाड़ी कें खींचैत-खींचैत कहिया जवान सँ अधवयसु आ बूढ़ भ' जाइत अछि तकरा एकटा 'कुर्सी'क प्रतीकक माध्यम सँ कहल गेल अछि।

'मानवक' संग्रहक एकटा आओर विशेष उल्लेखनीय कथा थिक- 'चाँड़'। ओना ई कथ्य आब मिथिला लेल पुरान सन भ' रहल अछि, मुदा जँ एहि विषय कें हटा दी त' मैथिली कथा-साहित्यक इतिहास हिस्सा अप्रासंगिक भ' जायत। इतिहास समाजशास्त्रीय अध्ययनक आधार होइत अछि। अस्तु, अशोक अपन कथा 'चाँड़'क बहन्ने विधवाक लेल निर्धारित पारंपरिक मापदंड कें तोड़ैत छथि, ओहि पर प्रश्नचिह्न लगबैत छथि। कथाक नैरेटर मनीषक आँखिये विधवा जीवन, ओकर संघर्ष आ विकसित चेतना कें समग्रता मे देखल गेल अछि। एत' विधवा स्त्रीक विकसित होइत स्वतंत्र व्यक्तित्व कें देखल जा सकैत अछि। विधवाक लेल जे तरह-तरह समाज द्वारा निर्धारित कैल गेल

अछि, ओकरा ओ नकारैत अछि, जेना- उज्जर नूआ पहिरब, सिंउथ स सिनूर पोछि देब, चूड़ी फोड़ि देब, अनकर छूल नहि खेब, माछ-मांस नहि खेब, देह साधि क रहै बना लिय' ई मान आ देहक बीच कोना प्राण न रहि जाय। देहक राग न जागि उठय... आदि। मुदा पत्नी मरला पर पुरुषक लेल कोनो नियम-संयम नहि। मनीष कें मोन छै ई माय क मरला पर बाबू लाज सँ मांफी मांगैत रहथिन-'जीवन म अहाँ कें बड दुःख देलहुं। बड क्रोध केलहुं। माफ क' देब हमरा।' मुदा पत्नीक मृत्युक कारण हुनकर दिनचर्या म कोनो अंतर नहि आयल। 'माछ-मासु खाइत रहलाह। सबटा काज ओहिना करैत रहलाह, जेना पहिने करथि।' मनीष कें अपन विधवा पितामही मोन पड़ैत छै ई उज्जर नूआ पहिरने, गोपी चनानक ठोप कए रघुनीक पूजाक बाद माटिक बासन म अपने सँ रान्हस करथिन। ओही रघुनीक पूजा ई करिया स्त्रीक पाऊ म ठाढ़ नहि र' सकलीह। विधवा जीवनक कष्ट कें करको कम नै क' सकलीह। कोना क' सकैत छलीह जँ' धर्मराज सन महापुरुखक मुँहें महाभारत म कहल देल गेल-"यदि कोनो पुरुष के सौ टा जीह (मुँह) होइ, आ सौ बरख धरि ओ जिंदा रहय आ ओकरा जीवन भरि स्त्रीक दोषक बखान करबाक अलावा कोनो दोसर काज नहि देल जाइ, तैयो ओ स्त्रीक दोष कें बिना बखान कर मरि जायत।" एहना म विधवाक आर्तनाद शास्त्र पर चलनिहार कोन पुरुख सुनि सकैत छल?

मनीष अपन मामी कें विधवा रूप म देखबाक कल्पना नहि क' सकैत छल। किएक त' ओकर बचपन काशी म मामीक आँचरक छाहरि

म वीगल नहो। ऊ मामी, ज मैथिल ब्राना काशी-लाट लल (मने लल) छाि दे वला वूढ माणा-यिणा कँ मने गक दख-टाल कनथि। जीवन सँ मृत्यू धनी सना म दु याञ्ज्ञी कमा लथि आ गकन वदला म लाक सट विखिन विखिनक खनहा यसानाने। मुदा, मामी ककना वाण यन ध्यान दन विना 'स्नान नुय संसान हे टुकन द मख मानि'क अंदाज म अयन काज म लागल नहलीह। आखिन काशी कवीनक सहा नगनी थिक, जाव आतम्नन-युक्त गाव आतम्नन-मुक्त। आ स मामी जखन विधवा ट' (गलीह ग' मनीष साथेण अछि ज हुनकन उज्ञान नक्ष क ऊ मुंगाक नंग-वला शाल सँ साँयि दण। "मुदा मनीष जखन मामीक ऊण' (गल ग' हुनका आसमानी नंगक नूआ म दखलक। आसमानी नंगक नूआ-ब्लाउज यहिनन मामी जना सम्पूर्ण अकास क समटन छलीह। हाथ म घडी नहनि। सानाक चूडी नहनि।" मामीक आसमानी नंगक साडी ऊहि अकास कँ अयना म समटन अछि, जाहि यन यूनुषक 'वर्योगी' नहल, स्त्रीक 'मैयोगी' नहि। (एण' आसमानी नंग स्नांग्रा ऊ स्नाछंदगाक प्रगीक थिक।) ञ्ज्ञी दखि प्रगगिशील मनीष कँ एक यल लल 0ककमका जायव स्नाटाविक छल। मामीक ञ्ज्ञी कथन ज 'हम नाँउ नहि टलहुँ मनीष। हम नाँउ नहि छी।" आधुनिक मैथिलानीक उद्घाषणा थिक ज हजाना साल सँ जमल यिगृसत्ताक शिला यन हथौनाक चाट सन वुझञ्ज्ञ अछि। आ मामीक अहि उक्ति कँ सुनि मनीष कँ अयन माणाक मृत्युक वाद यिणाक जीवन कँ मान यानव प्रगीक म वहूण किछ कहि दैण अछि। (ऊना ञ्ज्ञी कथाक अंग एणहिय ट' जैण ग' हमना जनाव नीक।)

ञ्ज्ञी कथा अयन कलवन म छाट हाञ्ज्ञा मिथिलाक विधवा-जीवनक

अनेक रंग (सरेह सँ आसमानी धरि) केँ अपना मे समटने अछि। मनीषक विधवा पितामही सँ विधवा मामी धरिक मिथिलांचलक वैधव्य-यात्रा मे बहुत किछु बदलि गेल अछि। बहुत किछु टूटि गेल अछि। बहुत किछु पाँछा छूटि गेल अछि। परंपरावादी पागक पाछां गछाड़ैत दिमागक विखवाद टा बचल अछि। अतीत-गायनक संग संग जखन अतीतक मूल्यांकन होइत अछि, तखन स्वस्थ दृष्टिक कल्पना कैल जा सकैत अछि।

'तेतीगाम' धरि अबैत-अबैत अशोक कथा आ शिल्प, दुनू स्तर पर नव-नव प्रयोग करैत छथि। शीर्षक कथा तेतीगाम एक संग ढहैत सामंतवाद, पलायन, गामक प्रति नास्टल्जिया, गामक राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक बदलावक संग बदलैत चेतनाक कथा थीक। रघुवंश लंदन मे अनेका वर्ष धरि रहि डाक्टरी करबाक अछैत गाम मे सीतारामक मंदिर बनाब' चाहैत छथि। गाम सँ पुनः जुड़बाक लेल मंदिर केँ ओ कड़ी बनाब' चाहैत छथि। हुनकर बेटा सब एहि कार्य मे हुनकर सहयोग करैत छनि। मुदा गामक ननकुनिया सेहो बूझैत अछि जे मंदिरक निर्माण सँ शिक्षा, स्वास्थ्य आ बेरोजगारी दूर नहि भ' सकैत अछि। तेँ ननकुनिया मंदिरक बदला मे अस्पताल बनेबाक आग्रह पर अडिग भ' जाइत अछि। सवर्ण सँ अधिक अवर्ण समुदायक लोक शिक्षा आ स्वास्थ्यक महत्व केँ बूझ' लागल अछि। हुनकर सेहो कहब जे 'मिथिला मे सीताराम मंदिर बनेबाक परंपरा नहि रहल अछि' मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहर पर सँ गर्दा झारैत वर्तमान मंदिरवादी राजनीति क पोल सेहो खोलि दैत अछि। रघुवंश गाम मनेबाक लेल आयल छलाह, मुदा गाम अयलाक बाद

हुनकर दृष्टि बदलि जाइत छनि- 'गाम-घर त' जीबाक लेल होइ छै। मनबाक लेल नहि।'

रचनाकारक दायित्व कमजोरक संग ठाढ़ हैब होइत अछि। घोर अमानवीय वातावरणमे मानवताक सूत्र खोजब होइत अछि। कोनो धर्म, जाति, वर्ग, अथवा उग्र सँ राग-द्वेष अथवा पूर्वाग्रह रखनिहार लेखक कोनो राजनीतिक पार्टीक प्रचारक भ' सकैत छथि, लेखक नहि। अशोक सांप्रदायिक तनावक माहौल मे सांप्रदायिक-सौहार्दक कथा लिखैत छथि। अहि सन्दर्भ मे 'छल', 'ओ दुनू साइकिल सीखैत अछि' आ 'राग' कथा विशेष उल्लेखनीय अछि। 'छल' कथा मे हाली मा जाहि तरहें इस्लाम कें गरियाब' वला हाकिम सँ लड़ि जाइत अछि, से ओकर अभिनय नहि, सैकड़ा वर्ष सँ सह अस्तित्वक संग हिन्दू-मुसलमानक संग रहबाक प्रमाण थिक। तहिना कैंची वला मुसलमान द्वारा रमेश आ सुधीर कें पिटाइ सँ बचा लेब आ साइकिल मिस्त्रीक ई कहब जे 'अब कहिया आयब' साइकिल सिख' आश्वस्त करैत अछि जे मिथिल नहि स्थानीय समाज बहुत अधिक दिन धरि धर्मक निशा मे बताह नहि रहि सकैत अछि। 'राग' कथा त' मैथिलक भोजन-प्रियताक समाज-मनोवैज्ञानिक पोस्टमार्टम थीक। गणेश बाबू आ मुजफ्फर साहेब एकटा सवर्ण हिन्दू दासन सवर्ण मुसलमान 'अन्न-ब्रह्म'क लेल अपन जातीय आ धार्मिक टेबू कें छोड़ि दैत छथि आ एक दासनाक घर अष्टमीक बलि आ बकरीदक कुर्बानीक मासु भात डुबा क' खाइत छथि। मुदा दुनू कें अहि लेल सामान्य होब' मे समय लागलनि। हिन्दू आ मुसलमान दुनू एक गाम, एक ठाम रहितो कतेक दूर अछि। एक दासनक लेल

कारक पूर्वाग्रह पासन अछि एकर प्रमाण थिक ई कथा। कथाकार कें कोना हटबैत नहि छनि। ओ हिन्दू मुसलमानक एकता देखबाक लेल कोना नारेबाजी अथवा कुछ प्रतीकक आसरा नहि लैत छथि। एक दालानक संग रहैत, एक-दोसरक दुख-सुख कें बँटैत ई सह-अस्तित्व कथा मे विकसित भेल अछि। गणेश बाबूक अहि कथन मे लेखकक दृष्टि सेहो समाहित छनि, " ओ, अहाँक बदला हथेरन बनि बैसल अछि। अहद सँ हौसला बनि अंगरेजक छी हम सभ। दुनू गोटे कें अहसास आ अंदेशा एक संग होइया।" 'नाग' मैथिली कथाक परिधिक निर्माण करैत अछि। गणेशन बाबू मुजक्कन साहेब संग टूटल नाग कें पुनः जोड़बाक प्रयास करैत छथि। एखनो गाम मे मियाँ-टोलक सामने हिन्दू टोल नहि बना सकल अछि राजनीति।

स्त्री स्वाधीनताक प्रश्न 'स्वाधीन' कथा मे देखल जा सकैत अछि। हमरा जनैत 'वैवाहिक-बलात्कार' पर स्थानीय साहित्य मे कथा बहुत कम लीखल गेल अछि, खास क' पुरुष लेखक द्वारा। जया जाहि तरहें पति द्वारा बलात्कार सँ ठहरल बच्चाक गर्भपात करबाक जिद पर अड़ल रहैत छथि से स्त्रीक बदलैत स्वाधीन चेतनाक प्रमाण थिक। कारण ना-नुकुर करैत अजय कें सेहो गेयान हुअ' लगैत छै आ अपन गलतीक पश्चाताप ओकरा सेहो होइत छै, ई लेखकीय दृष्टिक परिचायक थीक। जखन स्त्री आर्थिक रूपें सबल होएतीह, अपना कें दान मे उत्सर्गक बदला अपन जीवनसाथीक चयन स्वयं करतीह त' हौसला सेहो लेतीह। मुदा, 'टीस' कथा अपन अंत सँ निराश करैत अछि। निमला कें पति कायरटिनक अध्याय बना देलकनि आ हुनक

नकली हस्ताक्षर क' गबन करैत रहल। एक राति पुलिस आबि क' विमला कें गिरफ्तार क' लैत छै, पति पहिनहि निपत्ता भ' गेल रहै। विमला पतिक तमाम हरब कें अपन हीतन दवा क' ओहि नकली हस्ताक्षर कें अपन असली हस्ताक्षर मानि लैत अछि। ओ विमला एत' नकारि जाइतय त' ई कथा स्त्री स्वाधीनताक सन्दर्भ मे एकटा विमर्श ठाढ़ करैत।

'मनसुखा' आ 'लमहन आइसक्रीम', दु पीढ़ीक द्वंद्वक संग शहरीकरणक, नव पीढ़ीक मनोरञ्जनक मशीनीकरणक कथा थीक। "बाबा एकटा बात अछि। गाम मे अहाँक लाबिंग बड्ड तगड़ा अछि" बबलुक ई कथन नव टक्नाक्रट पुत्रक बदलैत मानसिकताक प्रमाण थीक। ई द्वंद्व 'मनसुखा' कथा मे आगा विस्तार लेलक अछि। पलायन मजबूरी थीक। शहर अपना हीतन हँजक हँज गाम कें पचौने जा रहल अछि। संस्कृतिक संक्रमण अपन स्वाभाविक गति सँ पसरि रहल अछि। मध्यवर्ग सुविधाभोगी आ इएमआइजीवी होइत अछि। मध्यवर्गक पुत्रक पीढ़ी मे प्राचीनता आ आधुनिकताक द्वंद्व रहै, से नव पीढ़ी मे समाप्त भ' रहल छै। रञ्जीत कंपनी मे पैघ ओहदा पर अछि। ओ अपन जिनगी अपन ढंगे जीब' चाहैत अछि। माता-पिताक कोनो हस्तक्षेप बिना। दिल्ली अपना पर माय अपन हाथक रान्हल बड़ा कें कनाब' लेल व्यग्र छथि मुदा बड़ा कें हाटलक व्यवस्था पर अभिमान छनि। पिता कें बुझाइत छनि जेना "ओ तथा रञ्जीत नदीक दु छोर पर ठाढ़ छथि। दु-टा हनाक हनाक द्वीप पर।" ओहि कथाक ड्रीटमेंट किछु आओ शब्दक माँग करैत अछि।

'खुशीक नाम जीवन' कँ 'मनसुवा' कथाक विन्यास म देखल जा सकैत अछि। मंसुवाक नवजीत अपन कनियनक प्रति एतेक लिप्त अछि, जे वियाह नहि करत' चाहैत अछि। मुदा, एत' संदीप अपन जीवनसाथीक रूपें दक्षिण भारतीय स्वजातीय सुन्दरि नायर कँ चुनैत अछि। कहैया बाबू आ हुनक पत्नी जना तैयार बैसल रहथि ई सुनबाक लेल। वियाह भ' गेल। कनियाँ मैथिली सीखि लेलनि। कोनो द्वंद्व नहि। कोनो कुंठा नहि। सब बड़ नीक। मुदा 'खुशीक एक दिन' म नवतुरिया वर्गक प्रेमविवाहक माद चर्चा बहुत स्वाभाविक रूपें आयल अछि।

अशोक मूलतः गतिशील यथार्थक कथाकार छथि। हुनकर अधिकांश कथा 'हम' पात्रक द्वारा संचालित होइत छनि। कथा कहबाक ई तकनीक अपन सरलताक अछैत बहुत कठिन होइत अछि। सबसँ पैघ बात जे एकरसता आ आत्मालापक शिकार हेबाक शंका प्रबल रहैत अछि। मुदा एहि चुनौती कँ अशोक कथ्य संग निर्लिप्त भ' आ 'बाकही' म पूर्णतः लिप्त भ' निबाहि लैत छथि। हुनक कथा म 'प्रेम' सर्वत्र व्याप्त अछि। मनुक्ख-प्रेम हुनकर अभीष्ट छनि। दाम्पत्य प्रेमक कतेको बिंब हिनक कथा म देखल जा सकैत अछि। पत्नी त' हुनक सभ कथा म अलग अलग रूपें ठाढ़ छथिन। एकटा कथाकार अपन बाहर-भीतर एक संग रहिए क' अपन 'हम' कँ 'सार्वभौम' बना सकैत अछि।

अंत म हम कहब जे आलोचक अशोक जी पर विस्तार स बिचार हेबाक बाट स हुन कहिया।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.७.प्रधान झा-शेफाली मूर्गा (लघु व्यंग्य)

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-अगस्त क्रांति शहीद रामफल मंडल: जीवन वृत/ कमीना निदान

३.९.डॉ. किशन कारीगर-मैथिली साहित्यक एलीट बानबिलाउ आ सर्वनाशी दलाल

३.१०.लाल देव कामत- सुनैना बेटी- मैथिली सामाजिक उपन्यास (समीक्षा)

३.११.कृष्ण कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- न्यूटन्स लॉ

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धानानाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धानानाहिक नूपेँ छपब प्रानम्भ रल 'मिथिला दर्शन'मे, ओ पहिने प्रिंटमे छपब बन्द रल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित होअय लागल आ फेन सेहो बन्द रऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित होएब बन्द रऽ गेल। अही आलोकमे ई उपन्यास धानानाहिक नूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा नहल अछि।-सम्पादक।

पहिल पड़ाव

दस बज नाधानमध गामसँ गुननश्ननक लल निदा रुगा। चानि बज
रान नाधानमध पत्नीकेँ उठा माएकेँ उठबैत बजला-
"माए, दस बज घनसँ निदा रऽ जाएब।"
उछाहनयन सँ उठैत सुनयना बजली-
"पान-छअ घण्टा अखन समय अछि, तेँ चाह हमहूँ सए ओनियान
कऽ दैत छिअ। पुतहुजनीकेँ सेहो उठा दहुन ओ अपन सए वस्तु-
जातकेँ समेटथी। हम स्नान सम्हानि लैत छी।"
माइयो आ पत्नियोकेँ उठबैत नाधानमध नित्यकर्ममे जुटि गेला। मनमे
अनका मंगक विचान उठए लगलैन मुदा तैँ सए विचानकेँ मनमे
समेटि अपन जवाक तैयानीकेँ क्रमशः शुनू कलैन।
चानि मास पूर्व नाधानमधक निजत्व निकलला पछाति मान
आई.ए.एस.क निजत्वसँ गाममे अनका मंगक विचान बानस-गनस
रुना जकाँ बहए लगल। किछु लोकक मनमे बहुद खुशी रलैन ओ

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒧𑒪𑒣𑒳𑒩𑒧𑒹, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒃.𑒋.𑒋𑒮. 𑒩𑒯𑒪𑒰..! 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒪𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒪𑒼𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒂𑒃.𑒋.𑒋𑒮.𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒞𑒹 𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟।

𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒏𑒧𑒪𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹, 𑒖𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩, 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒯𑒰𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒋𑒧.𑒥𑒲.𑒥𑒲.𑒋𑒮. 𑒛𑒼𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒰𑒃 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒫𑒏𑒲𑒪 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒯𑒹𑒢। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒫 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒼𑒁𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒃𑒧𑒩𑒲 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒧𑒱𑒛𑒱𑒪 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒞𑒏 𑒣𑒢𑒩𑒯-𑒥𑒲𑒮 𑒪𑒼𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒥𑓂𑒪𑒼𑒏𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒮𑒔𑒱𑒫𑒰𑒪𑒨 𑒞𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒮-𑒥𑒰𑒩𑒯 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒟। 𑒍𑒢𑒰, 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒮𑒦, 𑒮𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒪-𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒲 𑒅𑒚𑒰𑒧 𑒡𑒩𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒐𑒹𑒞𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒟𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒡𑒰𑒩-𑒡𑒳𑒩 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒠𑒰𑒯𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒂 𑒢𑒹 𑒅𑒮𑒩𑒢-𑒐𑒰𑒮𑒢 𑒂𑒠𑒱 𑒥𑒪𑒳𑒂𑒯𑒹 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒅𑒣𑒖𑒥 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒞। 𑒢𑒾𑒠𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒧𑒳𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒥𑒲𑒒𑒰𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒥𑒼𑒩𑒱𑓀𑒑 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒥𑒢𑓂𑒠𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒔𑒪𑒻𑒞, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑒙𑒾𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃𑒞।

𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒰। 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒫𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒾𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒲𑒢 𑒙𑒳𑒙𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒰। 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒅𑒚𑒥 𑒏𑒩𑒞𑒰, 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒠𑒮 𑒥𑒖𑒹𑒧𑒹 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥। 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒪𑓄 𑒪𑒹𑒥। 𑒍𑒢𑒰, 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒣𑒴𑒞𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒂 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒆𑒣𑒩-𑒆𑒣𑒩 𑒞𑒿 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒕𑒪𑒻𑒯𑒹 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩-𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒯𑒹𑒥𑒰

चाहो स नहि छलैन। एकन अनका कानध अछि। अनका कानधम प्रमुख अछि ज गीन राँ॰॰क रैयानीम ज0 नाधानमध गँ आ॰ी.७.७स. कs ललैन मुदा छाट दुनु राँ॰॰ सुखदन आ नामदन मैथ्रिका यास नहि कs सकल। ज॰॰सँ गीनु राँ॰॰क वीच शिआक दुनी वनि गेल। ॰ी निचान निलासदनाक मनकँ कचाटिय नहल छैन। दासन कानध मान यिना-यूत्रक वीचक दुनीक, ॰ीहा छैन ज नैचानिक नुयसँ याँच-छह वर्खसँ दुनुक वीच गया-सम्य आ काना काज-उदमम यूछा-आछ नहियँ जकाँ छैन। एसन ज दुनुक वीच दुनीक प्रमुख कानध छैन नाधानमधकँ अयना निचानसँ निनाह कनव। नाधानमधकँ अयना मनसँ निनाह कनैक याछु यिनाक ज मनान्धन छलैन उा दहज लs कs छलैन। मैथ्रिक यास कलाक यछागिय नाधानमधक मनम किछु ७हन मानवीय निचानक उदय हs गेल छल ज निलासदनक निचानसँ 0ीक नियनीत अछि।

कौलजक यढा॰॰क क्रमम नाधानमध अयन मुँहकँ चुय नखन छला, कि७ गँ न अखन यढा॰॰ छाटि आगुक किछु कनैक अछि मान यानिनानिक निचान आ न अयना निमित्त काना काज नहैन। नाधानमध साचि निचानि ललैन ज अखन मात्र यढव अयन काज हल आ यिनाक ज अयन काज जीननानुकुल छैन, ज॰॰ अनुकुल चलि नहला अछि ए॰॰सँ न हमना काना एहन अनघाण अछि ज॰॰सँ काना निनाद दुनु गोनक वीच स्पष्ट नुयँ उहना। यनिनान हाउ कि समाज, सहकँ अयन-अयन जीनन आ जीनन-क्रिया अछि। सुग्रह यनिनान नहन नाधानमधकँ यढा॰॰क खर्चम कहिया काना कानाहो नहियँ हलैन। ए॰॰ याछु ॰ीहा कानध छल ज निलासदनक

मनमे रहैत जे जे सम्पत्ति अछि एकर अधिकारी राधारमण सेहो अछिए। ओँ काका एतेक बाधा उपस्थित करब तँ समाजो आ सत्ता-सम्बन्धी दूसर करता। दूसरठाम किए करता जे ओँ कहीं बँटवारा करा देलैन गेया राधारमणकेँ पढ़ैमे असोकर्ज तँ नहियेँ हएत मुदा अपन नाँहकमे दोखी बनब करब...।

कौलेजक जीवनमे राधारमणक विचारमे बहुत किछु मजगुती एलैन। ओना, अध्ययनक प्रति लगन सेहो नीक छलैन जइसँ नीक रिजल्ट सेहो होइत रहलैन। अध्ययनक क्रममे राधारमणक चिन्तनशीलता सेहो दिनो-दिन एना बढ़ए लगलैन जे अपन जीवनक परिसरकेँ नीक जकाँ आँकि लेलाह। जइसँ स्वतंत्र जीवनक विचार आ क्रिया-कलाप सभ अपन नैतिक आगूमे झलकए लगलैन। जइसँ परिवारक बीचक मान पिताक प्रति जे मात्र छलैन ओ राधारमणकेँ महत्वहीन बुझि पड़ए लगलैन। स्पष्ट बुझए लगला जे रैयानी होअए कि पिता-पुत्र होअए आकि समाज किए ने होअए, सभ अपन-अपन जीवनक कर्त्ता-धर्त्ता आ जीवन संचालनक मालिक सेहो अपन होइत अछि। बाहरी जे सम्बन्ध अछि माने राजा-रैयानीक वा पिता-पुत्रक वा परिवार-समाजक ओ ऊपरी होइए, माने बाहरी होइए। जइसँ लोक सम्बन्धित सेहो होइए आ मात्र एलायन सम्बन्ध-विहीन सेहो होइत अछि। ओकरा अपन एक सीमा होइ छइ। जइ सीमाक बीच लोक अपन-अपन सीमा निर्धारित करैए।

राधारमणकेँ नोकरीपर जाइक समाचार गाममे सेहो पसैर गेल छल। जइसँ गामक जे शुभचिन्तक सभ छैथ ओ मन-मन बढ़ए खुशी

भाइन राधारमणकेँ अन्तिम विदाइक संग भेँट-घाँट करैत समय सेहो बना लेलैन। मुदा जिनका सबहक मनमे जलन माने राधारमणकेँ आइ.ए.एस. करैत जलन छलैन ओ पत्र-तत्र अन्ट-सन्ट बात सेहो तर-तर पराछा-पराछी करइए रहल छल। गामक अधिकांश लोक ओहन छैथ जे ने डिग्री-डिप्लोमाक अरथ बुझै छैथ आ ने ओकर गुण-धर्म आकि पद-प्रतिष्ठा बुझै छैथ, तँए ने हुनका कोनो हरख छलैन आ ने विषाद।
सीतानाथ आ गीतानाथ सेहो बी.ए.मे पढ़ए। दुनू गोरेकेँ जानकारी छल जे आइ राधारमण भैया गामसँ नोकरीपर जेता तँए भेँट करब आवश्यक बुझि दुनू गोरे संगे राधारमण ओठाम पहुँचल। पहुँचते दरबज्जापर सँ राधारमणकेँ सोर पाड़ैत सीतानाथ बाजल-
"भायजी, यौ राधारमण भायजी?"
राधारमण अपन कोठरीमे, माने जइ कोठरीमे रहै छैथ, अपन कपड़ा-लत्ता, बीज-बौस सरिआबि रहल छला। सीतानाथक आवाज सुनि कोठरीए-सँ राधारमण बजला- "क सीतानाथ.! बैसह अबै छी।"
कहि अपन बीज-बौस सरिआएब छोड़ि दरबज्जापर एला। राधारमणकेँ देखिते दुनू गोरे सीतानाथ आ गीतानाथ एक्केबेर बाजल-
"गोड़ लगै छी, भैया..!"
जहिना दुनू गोरे दुनू हाथ जोड़ि मुहसँ बाजल छल तहिना राधारमण सेहो दुनू हाथ जोड़ि मुहसँ बजला-
"नीक रहअ बौआ। की हाल-चाल छह?"
सीतानाथ बाजल- "सभ बढ़ियाँ अछि।"
कहि दुनू गोरे दुनू कुरसीपर बैसला। बैसते गीतानाथ बाजल-

"घनयन सँ कखन निकलव?"

घडी दखि नाधानमध वजला- "अखन साग वजैत। दस वज निकलैक निवान अछि।"

उाना, सीनानाथ गया-सय्य कS नरुल ठल आ मन-मन नाधानमधक वरुनाकँ सरु निरुानि नरुल ठल ज मनम कारुन खुशी ठैन। नाधानमधक वरुनासँ स्पष्ट दुनु नुय मलैक नरुल ठलैन। यरुिल, नव जीवनम यदार्यधक खुशीक नुय आ दासन अखन गक मान चौवीस वर्खक ज सामाजिक जीवन नरुलैन उाठ्ठसँ अलग रुाठ्ठक कानणेँ मलिनना सरु ठलैन। मुदा दुनुकँ सामंजस कनैन नाधानमध वीचक सीमायन अयनाकँ असथिन नखन ठला। सीनानाथ वाजल-

"रुैया, अयन गँ कमलयुनक उारुन सरुस्र दल कमल जकाँ वनि गामसँ निकैल नरुल ठी जकन मरुमरुी दश रुनिम यसनग..!"

सीनानाथक वाग सुनि नाधानमधक मनकँ जना काना रुानी नस्नु दावि दन रुानि गरुिना रुलैन। मनम उठलैन ज सीनानाथ काना अधला वाग गँ नरुियँ वाजल। किउ गँ दशक काना काध आकि रुागम उक जनावदरुक नुयम काज कनैक रुान यउव कनग। रुानक मान उाव नरुि न ज नियम-कायदा मान अधिकानक ज कानुन-कायदा अछि, गठ्ठ अनुकुल अयनाकँ स्थायिग कनैन समय वीना उाठ्ठ0ामसँ वदैल दासन0ाम चलि जाठ्ठ। उकन गँ दासना यउ अछि किना। उा अछि ज उाठ्ठ0ामक जन-मानसक वीच अयन की ठवि अछि, गकना प्रदर्शिग कनैक अवसना गँ अछिउ। नीक ठवि कना वना यउव ठ्ठी गँ अयन कन रुउग। यउरु न अयन कार्य-शैलीक प्रमुख अंग रुला। अयन दश सरु गनरुँ विशाल अछिउ। जरुिना लम्बाठ्ठी-

बढ़ल अछि तहिना जनसंख्या सेहो अछि। जेना रंग-रंगक जीवन मात्र मनुक्खक जीवन सेहो अछिए। तैसंग अनेको जाति, अनेको भाषा आ अनेको सम्प्रदाय सेहो अछि। जहिना भाषाक बीच, तहिना जाति-सम्प्रदायक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइत रहैए। एहेन परिस्थितिमे केना सामंजस करैत अपन-आपकेँ सुरक्षित राखि सकब, ओहिटा बात थोड़ अछि। तहुमे समाजक बीच एहेन मनोवृत्ति बनि गेल अछि जे जे शक्तिशाली आ बहुसंख्यक अछि ओ शक्तिहीन आ अल्पसंख्यककेँ सेहो सदिकाल नीचाँ देखबए चाहैए। मनमे उठल घनघोर विचारकेँ सामंजस करैत राधारमण बजला-

"बौआ सीतानाथ, कमलाक महमही तखन छिटकैए मात्र पसरैए, जखन ओकरा पवित्र स्थान भेटै छै। जँ से नहि भेटि दुर्गन्धित स्थान भेटि जाइ छै तखन ओकर महमही थोड़ हराम पसैर पबैए। मुदा तूँ जे बजलह ओकरा महत तँ अछिए।"

गीतानाथ बाजल-

"भैया, अपन तँ ओहेन डिग्री प्राप्त कऽ लेलिऐ जे सामान्य विद्यार्थीक लेल असंभव अछि।"

गीतानाथक विचार सुनि राधारमणक मन थोड़ेक ठमकलनि, मुदा अपन मन जेना भीतरसँ धक्का देलकनि जे जे विचार गीतानाथक मनमे अछि ओ कते सही अछि? राधारमण बजला-

"बौआ, जखन आइ.ए. पास केलौं आ बी.ए.मे प्रवेश केलौं तखन मनमे उठल जे आइ.ए.एस. करब, मुदा जखन देश भरिक प्रतियोगी परीक्षापर नजरि गेल तखन मन आगु-पाछु करए लगल।"

आगु-पाछु सुनि सीतानाथ बाजल-

"की आगु पाछु करए लगल, भैया?"

गीतानाथयन सँ नजैन रुटा सीतानाथयन नजैन देख नाधानमध वजला-
"वौआ, दु एनरुक निवान मनम उठए लगला। पहिल, एहो जे देख
एनिक ग्रामियागी पनीआ छी, जाहिम रुजाना-रुजान विद्यार्थी शामिल
होइए आ सामान्य निजलु जकाँ निजलु नहि होइए। जे यास मार्क
आनए उ यास कनव कनए आ दासन एहो उठल जे एहना गाँ
नहियेँ अछि जे किया यास कनव न कनैए। अही, दुनू निवानक
वीव अपना मनम निवान उठि नहल छला।"
गीतानाथ वाजल-
"एखन, निर्णय कना कलिऔ?"
नाधानमध वजला-
"वौआ, पिताजीक जे कुदृष्टि छलैन एहिसँ मनम ठना गेल छल जे
कौ-न-कौ नाकनी कनैक अछि। किएक गाँ जँ अपन जीवन मान
अपन पनिवानक एान अपना कहायन उठ। नहि चलव गाँ सदिकाल
पनिवानक वीव किछु-न-किछु विवाद होइए नहए आ अनन उहिम
उमनाएल नहव। जखन नाकनी मनम नाया गेल एखन निवान
उठल जे नाकनिया गाँ कए नंगक अछिए। एहिम नीक नाकनी कना
पव सकव एहि ल गाँ अपना उाहन साधना कनए पउत।"
गीतानाथ वाजल- "की साधना?"
नाधानमध वजला-
"होइ स्कूल एक, उना होइय स्कूल नहि, कौलेजक आई.ए. एक
निजलुक हिसावसँ आ विद्यार्थियाक वीव हमहुँ सामथ्य काटिक छलौं,
मुदा वी.ए.म प्रवेश कलाक पछाइए जना निवानक नव वानक
उदय मनम एल जहिसँ जीवनक क्रियाम वदलाव आवए लगला।"
सीतानाथ वाजल-

"की बदलाव आबए लागल?"

राधारमण बजला-

"बदलाव एबेसँ पहिने संकल्प उठल जे या तँ आई.ए.एस. करब वा तँ से नहि भऽ सकत तँ प्रोफेसर बनब। एही दुनू उद्देश्यकेँ अपन अध्ययनसँ पूर्ति करैत पाछू अपन दृढ़ शक्तिकेँ जगेलौं आ दुनियाँक सभ किछुसँ मनकेँ हटा अपनाकेँ पढ़ाइक पाछू एकाग्र केलौं।"

सीतानाथ- "की एकाग्र?"

राधारमण-

"एखन जे जीवनक दिनानुदिनक क्रिया अछि ओ तँ सभकेँ पूर्ति करए पड़ै छै, ओ पूर्ति करैत अगिलिक क्रियाक नियम मात्र अध्ययनपर अपनाकेँ एकाग्र केलौं। ओना, एखन धरि जे अध्ययनक रूप छल तइमे सहा सुधार भेल।"

सीतानाथ बाजल- "की सुधार भेल?"

राधारमण बजला- "आई.ए. धरि जे अध्ययन करै छलौं ओ सामान्य दृष्टिएँ, परीक्षा पास करैक खियालसँ करै छलौं, विषय-वस्तुक तहमे प्रवेश नहि करै छलौं मुदा संकल्पित भेला पछाति विषय-वस्तुक मूल तत्त्वकेँ पकड़ैक प्रयास करए लगलौं। ओना, शुरूमे किछु दिक्कत जरूर भेल छल किए तँ नीक जकाँ विषय-वस्तुक मूल तत्त्वकेँ नहि पकड़ि पबै छलौं, मुदा तइसँ घबड़ेलौं नहि, बल्कि ओकरा पकड़ैक परियास सदैत जारी रखलौं।"

सीतानाथ बाजल-

"तखन की भेल?"

राधारमण बजला-

"किछु दिनक पश्चात् विषयक मूलतत्त्वकेँ बूझए लगलौं। जखन मूल तत्त्व बूझए लगलौं तखन जे पाछू छूटैत गेलौं तँ बूझि पड़ल जे अध्ययनक बहुत किछु छुटि गेल अछि। तखन ओकरा पूर्ति करैत अध्ययनक समयमे बढ़ोत्तरी केलौं। बी.ए. ऑनर्सक परीक्षामे बहुत नीक रिजल्ट भेल।"

सीतानाथ बाजल-

"नीक रिजल्ट की भेल?"

नाथानमणि बाजला-

"जकर आशा अखन तक मनमे नहि छल, तेहेन आशाक पूर्ति भेल। मात्र प्रथम श्रेणीमे ऑनर्सक रिजल्ट भेल। बी.ए. ऑनर्समे प्रथम श्रेणी भेने मनमे एते तँ विश्वास जागिये गेल जे जँ अहिना मेहनति करब तँ एम.ए.मे सेहो एहेन रिजल्ट हएत। जखन प्रथम श्रेणीक रिजल्ट एम.ए.मे हएत तखन जरूर कतौ-ने-कतौ, कोना-ने-कोना कौलेजमे प्रोफेसरीक नोकरी भए जाएत। जेहने जे संकल्प मनमे करैत छलौं तेहने आधारक आशा जागि गेल। जखन मनमे आशा जागि गेल तखन विश्वासो जगल।"

विचारे बदलैत सीतानाथ बाजल-

"भैया, एहेन की कहलिऐ जे पिताजीक कुदृष्टि?"

पिताजीक नाओं सुनि नाथानमणि थोड़े धकमकेला, मुदा ओहिना धकमकीकेँ नजरिसँ हटबैत सीतानाथकेँ कहलखिन-

"बौआ, पिताजीक कुदृष्टि शुरूमे नहि छलैन, मुदा जहिया बी.ए. ऑनर्समे एलौं तहियासँ शुरू भेल।"

सीतानाथ विस्मित बाजल- "कुदृष्टिक तँ किछु कारण ने भेल हएत?"

नाथानमणि बाजला-

"हँ! कुदृष्टिक कारनध ॐ्री एल ज ज०० कौलजम यउ छलौं, उा०० कौलजम (गानिद्द वावू नामक भिउक छला। साम्निक लाक। उनासँ गीन किलामीटनयन कौलज छलैन। प्रतिदिन यओन अवे-जा०० छला। (गानिद्द वावू जरुन निवानक साम्निक छला गरुन यउवेम सह्य छला। ओक दिन कौलजसँ उना जा०० छला कि याछूसँ गाठी धक्का मानि दलकेन। "

'धक्का' सुनि विभ्रम सीतानाथ वाजल-

"वाय ने..! यछा००ग की एलैन?"

नाधानमध वजला-

"ताँउक रुडी गना (थीउा-थाकन एऽ (गलैन ज दु मासक यछा००ग मनि (गला। मृत्युक समाचान सुनि रुमहुँ (गलौं। अयना लगा चानि (गानक यनिवान छलैन, मान दुनू यनानी आ दुटा वटा-वटी। वटी ज0 ज आ००ी.ओ.म यउ छलैन आ वटा छाट ज दा०० स्कूलम यउ छलैन। "

सीतानाथ वाजल- "वाय ने..! गखन गँ यनिवान..?"

नाधानमध वजला- "जखन उा००0ाम मान (गानिद्द वावूक ओ0ाम (गलौं आ गीनू (गान यत्नी, वटी आ वटाकँ उांघना-उांघना कानैत दखलौं कि मन यघिल (गल। उाना, रुमहींटा दखनिहान नहि नही, आना निद्यार्थिया आ भिउका सद छला, ज जा०० छला दस-यननह मिनट नुकि वाल-रुमास दओ घूमि जा००ग छला। मुदा रुमना मनम ॐ्री उ0 (गल ज ओक गँ यनिवानक जीनना-यायन रानी (का0न) एऽ (गलैन आ गैयन निवाह कनै-जाकन वटी सह्य एऽ (गल छैन...। "

सीतानाथ वाजल-

"एहन-एहन परिस्थितिमे नीक-सँ-नीक परिवार नष्ट होइए!"
राधारमण बजला- "हँ! सेहो तँ होइत अछि। मुदा विकट परिस्थितिमे मात्र एहन-एहन परिस्थितिमे जँ दोसराकेँ समुचित सहयोग भेट जाइ तँ ओ परिवार बँचियो सकैए किने।"
सीतानाथ बाजल-
"हँ, से तँ बँचि सकैए मुदा समाजक एहन किरदानी बनि गेल अछि तइमे केकरा के सहयोग करैए। गामो आ आनो-आनो गाममे देखै छी जे बाप-बेटाक बीच मारिया-पीट होइए आ केसो-मोकदमा होइए। भाय-भाय तँ सहजे दियादे भेल। कहलो जाइए जे दियाद आ दालि जतेक गलए ततेक नीक होइए।"
सीतानाथक बात सुनि राधारमण मुस्कुराइत बजला-
"बौआ, सभ दुनियाँ दिस मात्र आनक दिस तकैए जइसँ अपन पएर तरक जमीन देखिते ने अछि। जँ से देखए लगत तँ अपन ने विचारत आ जीवनक गति सेहो सुधरए लगत। जखन गति-मति सुधरए लगत तखन ने जीवनो आ जीवनक क्रिया सुधरैत जाएत।"
स्वीकार करैत सीतानाथ बाजल-
"हँ, से तँ हएत।"
राधारमण बजला-
"ओइ समय मात्र जखन ई घटना भेल तखन हमहूँ पूर्ण आश्रित परिवारपर छलौं। ओना, जखन बी.ए.म पढ़ैत रही। पिताजी हमर विवाहक चर्चा 30। देने छला। जइसँ कक्का कन्यागत सूर-पता लगबए लागल छला, मुदा पिताजीक जे माँग (दहेज) रहैन तइसँ काज (विवाह) रुकल छल, जे बात अपना बूझै छलौं। ओना, सामाजिक परिवेश सेहो ओहन मात्र अधिक-सँ-अधिक लेन-देनक

बनियाँ गेल अछि। तहूमे अपना जमीन-जत्था अछि, परिवारक सेहो मान-प्रतिष्ठा अछि आ कौलेजमे सेहो पढ़ैत छलौं।"

राधारमणक परिवार कमलपुर गाममे सभसँ बीस जमीन-जत्थामे छलैन। पचास बीघासँ ऊपर जमीन विलासदेवक छलैन। ओना, जमीन्दारी तँ नहि रहैन मुदा राजक गुमस्ता विलासदेवक पिता हरिनन्दन छलखिन, जइसँ सम्पैत बढ़ौनेक रस्ता छलैन्हि। अपना अमलदारीमे हरिनन्दनक दरबज्जापर हाथियो छलैन। शुरूमे हरिनन्दनकेँ ओतेक अजगज नहि छलैन, साधारण किसान परिवार रहैन। ओ राजाक सम्पर्कमे एला पछाति भेलैन। बापक एकलौता बेटा विलासदेव, ओ पढ़ि-लिखि तँ नहि सकला, मुदा रइसीक जे जीवन होइ छै से जरूर भोगै छला। ओना, सामान्य लोककेँ पढ़ैया-लिखैक सुविधा नहियेँ छल, पिताक परोछ भेने माने पिताक मृत्यु भेलाक पछातियो विलासदेवक ओहन रइसीक जीवन रहल, मुदा बाहरी आमदनी कमने खेत-पथार बिकब शुरू भऽ गेल छलैन। गोटि-पंगता परिवारक उठौन समाजमे सभ दिनसँ रहब कएल अछि, तहूमे जइ परिवारक सम्बन्ध राज-काजसँ हटि गेल ओ तँ उठब कएल। ओहन परिवार हरिनन्दनक सेहो रहलैन।

सीतानाथ बजला-

"पछाति की भेल?"

राधारमण बजला-

"गोविन्द बाबूक परिवारक दशा देखि मन-मन विचार कएलौं जे सोलहअना परिवारक भार उठबैक शक्ति तँ अपना नहि अछि मुदा आंशिक भार उठबैक शक्ति तँ अछिए। जहाँधरि बनि सकत तहाँधरि मदति करबैन।"

सीतानाथ बाजल-

"वाह! तखन तँ किछु सहाना उठ्ठ यनिनानकँ मान (गानिहु बावुक यनिनानकँ रठ्ठय (गल हरौन?"

नाधानमध वजला-

"हम कठ्ठय काक सकै छलौं, तखन एत जनुन कलिउन उ अनूशंसाक नाकनी यन्नीकँ दियवैम सहयाग कलिउन। उना, ताहन यढल-लिखल यन्नी नहियँ छथिन उ भिऊध कार्य कनिथ आकि ▯हिसम लिखा-यढी कनिथ। मुदा कौलजक यूस्तकालयम चयनासीक काज रट (गलैन।"

सीतानाथ बाजल- "खाउन, जीवैक किछु आशा तँ यनिनानकँ रठ्ठय (गलैन।"

नाधानमध वजला-

"उाव मदत नहि कलिउन। वटीसँ विनाह कनैक रान सहा गछि ललिउन। मुदा उा गछलयैन एक शर्तयन।"

सीतानाथ बाजल-

"की शर्त?"

नाधानमध वजला-

"जखन पिताजीक कानम समाचान यहुँचलैन उ नाधानमध अयन विनाह अयन ठीक कs ललक तखनसँ आगि-ववूला रs (गला। विनाहक रीतन उ समस्या छल, जठ्ठसँ प्रशानित रल छलौं, मान एकटा नष्ट हाठ्ठत यनिनानकँ सहाना वनि वँचवैक यनियास कलौं, तकन चर्च छाति पिताजी लना-दन आ कुला-खनदानकँ अगुआ विनाधम नातानतध तैयान कs ललैन।"

सीतानाथ बाजल-

"तखन ई विचित्र संकटमे पड़ि गेल हएब?"

मुस्कुराइत नारायण बजला-

"ओ तँ संकट सामने आबिये गेल मुदा [illegible] भरि डाइसँ विचलित नहि भेलौं। मन-मन विचारि लेलौं जे एखन पढ़ब हमर मुख्य काज अछि, रहल खर्च-बर्चक, ओ तँ [illegible] अपना अछिए। जँ खर्च दइमे बाधा उपस्थित करत तँ कोर्टक शरण लेब आ जहिना विवाहमे पिताजी [illegible] बनौलैन तहिना हुनका सिखा देबैन। मनमे दृढ़ संकल्प लए लेलौं।"

मुठी तनबैत सीतानाथ बाजल-

"पढ़ाइत की भेल?"

हँसैत नारायण बजला-

"जहिना साँप धरतीपर टेँढ़-टूढ़ होइत चलैए मुदा बिलमि जबाकाल सोझ भ' जाइए तहिना सोझ भ' गेला। खर्चमे कोनो कोताही नहि कयलैन मुदा वैवाहिक जुलुम मतभेद बढ़ैत गेल। ओना, मतभेदसँ एते लाभ जरूर भेल जे अपन दृढ़ शक्ति आरो बढ़ि गेल। जइसँ जी-जानसँ पढ़ैक पाछू लागि गेलौं। जहिना बी.ए.मे नीक रिजल्ट भेल तहिना एम.ए.मे सेहो भेल। जइसँ एतेक आशा तँ बनिये गेल जे नइ कौलेजमे तँ हाइयो स्कूलमे शिक्षक बनब करब।"

नारायण आगाँ बजला-

"पढ़ैक जिज्ञासा आरो उग्र भ' गेल आ आइ.ए.एस. कयलौं। सावित्रीक मान गोविन्द बाबूक पत्नीकेँ, कहलयैन जे सुहासिनी संग विवाह क' लेब मुदा हमर परिवारक जे स्थिति एखन बनि गेल अछि तइमे विदागरी नहि कराएब। जखन अपना पैरपर ठाढ़ भ' जाएब तखन विदागरी कराएब।"

सीतानाथ बाजल-

"राय साहेब, इच्छा अछि जे अपनेकेँ विदा कराक पश्चात् जाइ, मुदा अहूँकेँ ओरियान-बात करैक अछि। त अहूँ अपन तैयारी करू, सम्भव होएत तँ दस बजेमे पुन: आबि जाएब।"

राधारमण बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

सीतानाथ आ गीतानाथ विदा भऽ गेल आ राधारमण सेहो अपन तैयारीक पाछू लगि गेला।

आइ.ए.एस.क रिजल्ट भेला पश्चात् राधारमण सुहासिनीकेँ सासुरसँ विदागरी करा अपना डेरा लऽ एला। दू बर्खक बेटी सुविधा सेहो भऽ गेल छलैन। परिवारमे सुहासिनीकेँ अबिता पिता विलासदेवक मनमे जलन सेहो दिनो-दिन बढ़ैत रहल छलैन मुदा माइ सुनयनाक मनमे कोनो तरहक मलिनता नहि छलैन। जहिना राधारमणकेँ अपन जेठ बेटा बूझि बेवहार करैत रहली तहिना सुहासिनीकेँ सेहो अपन पुतहु जकाँ बेवहार करए लगली। पतिक संग माने विलासदेवक संग सुनयनाकेँ कहिया-कहिया कहा-कही सेहो भऽ जाइत रहैन मुदा तइ सभ बातपर कहियो, तना भऽ कऽ धियान नहि दली। जहिना सभ परिवारमे छोट-मोट काज वा विचार-ल कहा-कही होइए आ किछुए समैयक पश्चात् मेटा जाइए तहिना होइत रहलैन।

जखन विलासदेव हिनसनुपरहमे चाह पीबैत रहैथ, सुनयना लगमे आबि कहलकैन-

"बौआ राधारमण आइ काजपर जाएत।"

ओना, विलासदेवकेँ सेहो बूझल रहब करैन। किए तँ तीन मासक

ट्रेनिंग केलाक पछाति, पाँच दिन पहिने राधानगर गाम आबि बाजल छला जे पाँचम दिन छुट्टी बिताने कऽ भुवनेश्वर जाएब। उड़ीसाक राजधानी भुवनेश्वर, जे ठामसँ थोड़ेक दूरपर जगन्नाथ धाम सेहो अछि। समुद्रकातक राज्य उड़ीसा छीहे। दरभंगासँ पुरीक गाड़ी सेहो अछिए।

एतीक बात सुनि विलासदेव 'हूँ-हूँ' किछु ने बजला। पतिकेँ चुप देखि सुनयना अपन काजमे पुनः लगि गेली। एही बीच मझिला बेटा सुखदेव आएल। सुखदेवकेँ देखिते विलासदेव पुछलखिन-

"बौआ, रातिसँ अखन धरि कतए निपत्ता छलह?"

पिताक लगमे बैसैत सुखदेव बाजल-

"बाबू, निपत्ता कहाँ छलौं। चौक दिस गेल रही। गामक हाल-चाल सुनैमे कनी देरी भऽ गेल।"

विलासदेव पुछलखिन-

"गामक की हाल-चाल अछि?"

एपर सुखदेव कहलकैन-

"गामक की हाल-चाल रहत। पएह हा-हल्ला भऽ रहल छल जे जखन गाममे ककरो आम नहि भेल आ जकरा भेबो कएल ओहो माँट-पानि-पाथरसँ सड़ि नष्ट भऽ गेल। एकर क्षति-पूर्ति हेतु सरकार दिससँ सहायता भेटत मुदा ओ गाँ सभकेँ ने भेटक चाही, मात्र जकरा-जकरा गाछी-कलम छै। से नहि भेटि किछु गोरकेँ भेटल आ अधिकांश लोक मात्र गाछी-कलमवला किसानकेँ नहिए भेटल..!"

विलासदेव बजला-

"किए ने भेटल?"

सुखदेव बाजल-

"ई सभ कृषि मित्रकेँ चौथाइ भाग सहायताक चौथाइ हुयैआ कमीशन छलक एकरा सभकेँ आइ दिनमे भेट गेलइ। मुदा ई ओकरा अनुदान बूझि कमीशन नहि छलक जिनका सभकेँ टका पाइ नहि रहलैन। एकर हा-हल्ला होइत रहइ।"

विलासदेव-

"एना भेल की?"

सुखदेव बाजल-

"की हएत, जहिना सभ अनुदानमे होइत आबि रहल अछि तहिना हएत।"

विलासदेव बजला-

"की बात?"

सुखदेव बाजल-

"बात यैह ई गाममे किछु किसान एहन छथि जे सरकारी किसान छथि, हुनका सभकेँ बूझल छनि बात कोना सरकारी सहायता अबैत तँ कृषि मित्र हुनका सभकेँ जानकारिया दऽ दैत आ अपन कमीशन लऽ कऽ अनुदाना दियाबैत। एहिसँ गामक किसान बँटा गेल छथि।"

विलासदेव बजला-

"की बँटा गेल छथि?"

सुखदेव बाजल-

"किछु किसान सरकारी बनि गेल छथि। आ बाँकी सभ गैर-सरकारी छथि।"

तही बीच रामदेव सेहो पहुँचला। रामदेवकेँ देखि विलासदेव

पुछलखिन-

"बौआ, एतनेसँ नहि देखने छलियह?"

नामदेव बाजल- "बाबू, एतनुपहनकँ जहिना सभ दिन रहलौं जाइ छी तहिना गेलौं। दछिनवनिया सड़क धेने जखन करीब दु किलोमीटर बढ़लौं तँ पनरह-बीस गोटेकेँ अबैत देखलयैन। सबहक पीठपर पनदौरिया बैग लटकल छलैन। ओना, अपना गामक एको गोटे नहि छला। पुछलयैन जे अहाँ सभ कतए जाइ छी तँ एक गोटे बजला जे एगलीपुर जाइ छी।"

विभ्रम विलासदेव बजला-

"एत-एत कतएसँ अबै छला?"

नामदेव बाजल- "पुछलयैन जे अहाँ सभ कतएसँ अबै छी, तँ एक गोटे बजला मुम्बइसँ। फेर पुछलयैन जे सभ किया मुम्बइयसँ अबै छी तँ सभ कहलक 'हँ', सबहक मुँह-कान सुखाएल बुझि पड़ल।"

विलासदेव बजला-

"किए सुखाएल छलैन, किछु भेल नहैन?"

नामदेव बाजल-

"पुछलिऐ तँ कहै गेला जे जेठाम छलौं सेठाम कतेना बीमारी पसरि गेल छै जे सभ कामकाज-कारोबार बन्न भऽ गेल तँए गाम आबि रहल छी। अपना बुझल छलाए-ह जे जहिना हैजा, चेचक, प्लेग इत्यादि महामारी लसनियाह होइए तहिना एक-सँ-दोसरमे लसैत लगैत होइए तहिना कतेना सेहो छी, तँए सभ मुम्बइसँ पड़ा कऽ गाम आबि रहल छथि।"

विलासदेव बजला-

"बीमारी तँ बीमारी छी, तइ ले सोगेक कोन काज छै। ओकर तँ

ठेलाह हुआ चाही किने। तहूमे की कहा आइये एकर बीमारी आएल अछि, समय-समयपर एकर लक्षणिया बीमारी तँ सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि।"

नामदेव बाजल-

"सएह तँ हमहूँ कहलयैन जे गाम-घरमे ककरा कहा बीमारी होइए तँ शहरक अस्पतालमे जाइए आ अहाँ सभ शहरसँ गाम आबि रहल छी, जेठाम ने डॉक्टर अछि आ ने अस्पताल। तखन एक गोटे बजला जे जखन कारखाना बन्न भऽ गेल तखन डेराठाम खेबा-पीबा की करितौं। तहूमे घरसँ बाहर दुआरसँ निकलैपर सेहो रोक लगि गेल।"

विलासदेव बजला-

"अच्छा छोड़ू ई सभकेँ।"

पिताक बात सुनि सुखदेव बाजल-

"बाबू, भैया तँ आइ कामपर जेताह?"

ओना, विलासदेवकेँ बूझल छलैन, मुदा अनठबैत बजला-

"हमरा कहाँ बूझल अछि। तोरा के कहलखुन?"

सुखदेव बाजल-

"भैया अपने तँ नहि कहलैन, मुदा पाँच दिन पहिने सुनने छलौं जे पाँचम दिन नाथनगर गुदामसँ जेता। आइ सएह ताकती रहलैन अछि।"

सभ बच्चाकेँ सुनि सुनयना माएकेँ कहलैन-

"माए, समय भऽ गेल। खानस तँ भऽ गेल हएत किने?"

सुनयना बजली-

"हँ।"

माछक बात सुनि नाथानमक पत्नीकेँ कहलेन-
"बना-बनी जेँ खाउ लगब तखन दनी रुऽ जाएत। तेँ हमहूँ खाइल बैसे छी आ अहूँ खा लिअ। समयसँ किछु पहिनहि तैयार रुऽ निदा रुऽ जाउब। उना, टम्मूबलाकेँ सहा कहि दन छिऐ ज योन दस बज आबि जइहह। साढ नअ बजेत, उाहा जइ-घटी न पहुँचल...।"
पतिक बात सुनि सुनासिनी 'हँ-हूँ' किछु नहि बाजि हनसा घन दिस निदा हली। अपना समयपन टम्मूबला पहुँच हॉर्न बजौलक। हार्नक आबाज सुनि नाथानमक का0नीसँ बाहन निकेल टम्मूबलाकेँ कहलखिन-
"बस, हमहूँ तैयार छी।"
टम्मूबला गाडियक सीटपन उाढ़0 आनाम कनए लगला। सुनासिनी सासुक कानाम सुविधाकेँ देत अपन बेग-एटेची का0नीसँ निकालि टम्मूक आगूम लऽ जा कऽ नखलेन। तैवीच नाथानमक माएकेँ गोड़ लागि दनबज्ञा दिस बढला। पिताकेँ दनबज्ञापन नहि दखि खनिहाँन दिस नजैन उा-उा ताकए लगला। न पिता नजैनपन पडलेन आ न दूनू हाँइ सुखदन-बामदन नजैनपन पडलेन। एक दिस नाथानमकेँ अपन समय, घनसँ निकलैक समय मनकेँ खिंचैत नहैन तँ दासन दिस पीनू गोन मान दूनू हाँइया आ पिताकेँ नहि दखि मन दासन दिस सहा डौनाए लगलेन। मुदा उयाइय की। तहीकाल सीतानाथक संग गीतानाथ सहा पहुँच गेल। उना, पीनू गोनकेँ मान दूनू हाँइया आ पिताकेँ नहि दखि नाथानमक मनम अनका बिचान उ0ए लगलेन मुदा तइ सर बिचानकेँ मनम दाबि सीतानाथकेँ कहला-

"बौआ, घरसँ निकलैक समय भऽ गेल। आब तँ मानसिक बदलाव आबि गेल तेँ गप-सप्प करैत नहि छह।"

अपन बेटाक सम्बन्धकेँ देखि सीतानाथ बाजल- "हाय साहेब, अहाँसँ बहुत किछु सिखैक अछि तेँ सभ दिन तँ नहि मुदा समय-समयपर नम्हर देखबैत रहब। हमरा सभैक तँ आब मतलब नहि अछि, आब अहाँक समैयक अछि। तेँ नीक हएत जे जखन अपन निवास रहब तँ कनिया-काल अपनहि ध्यान करब। आब तँ सभहक महँगाई मानसिक बाधा भऽ गेल अछि, तेँ समैयक धैर्यक सहा नहियेँ अछि।"

सीतानाथक विचार सुनि राधारमण बजला-

"बौआ, जखन जे पुछैक जरूरत हुअए, निःसंकोच पुछि लिहह। ताकनी आकि यद अपना जगहपर अछि मुदा अपन जे सामाजिक सम्बन्ध अछि ओकर महत्व अपन अछि। तहूमे अपन गाममे स्कूल जे छँ तकर कौलेजमे प्रवेश बनिओं तँ अपन जे विद्यार्थी जीवनक अनुभव अछि ओ सभ बात विद्यार्थी सभकेँ बूझा कऽ कहिऔं, मुदा से तँ भेल नहि।"

राधारमणक विचार सुनि सीतानाथ बाजल- "हाय साहेब, एकटा साधारण विद्यार्थी करा नीक विद्यार्थी बनि उच्च कोटिक स्थान पाब सकैत अछि अनुभव तँ अपनकेँ व्यावहारिक ज्ञान भऽ गेल अछि तेँ अपनसँ...।"

सीतानाथक विचार सुनि राधारमण मुस्कुराइत बजला-

"बौआ, बहुत बात करबा कलियर आ आगुओ करैत रहब। अखन तँ विदा भऽ गेल छी, तेँ बहुत बात करैक समय नहि अछि मुदा चलैत-चलैत एकटा बात जरूर कहि दिअ चाहै छिअ

ओ जाधरि अध्ययन करै छह ताधरि दुनियाँक सभ किछु बिसरि एतबे धियानमे राखह ओ जखन पढ़बाक काज अछि तखन नीक-सँ-नीक किए ने कऽ सकै छी। जखन मन एकाग्र भऽ काजकेँ पकड़ए लागत तखन दिनानुदिन अपन उन्नति होइत देखबह। परीक्षा कठिन किए ने होउ वा कतबो विद्यार्थी किए ने हुअए, मुदा प्रश्न पत्रमे जे प्रश्न रहत ओकरेँ तेना जवाब देबाक छह। ओ कतेक समुचित ढंगसँ समुचित उत्तर लिख पबह, बस एतबए धियान केन्द्रित करैक छह।"

राधारमणक विचार सुनि जहिना सीतानाथक तहिना गीतानाथक हृदय खुशीसँ भरि गेल। आगू बढ़ि राधारमण माएकेँ कहलखिन- "माए, जहिना अखन एक बेटा बनि मनमे रहलियौ तहिना सभ दिन...।"

बेटाक बात सुनि सुनयनाक मन दल-दल, थल-थल हुअए लगलनि। दुनू आँखिमे नोर आबि गेलनि। राधारमणक मनमे नाचए लगलनि। पिता आ दुनू भाँइयाक बनहान देखि मोन तीनू गोटेकेँ नहि रहल सुनयनाक मनमे ममोरल तँ भेल कलेन मुदा एकरा मनमे दाबि बजली-

"बौआ, बुढ़हाक मन कतबो बगेद किए ने जाइन मुदा पिता तँ बनल छथुन। मनमे बात एतेक मान-राख नहि रखिहह। सभ अपन छथुन आ अपन रहथुन। बेटा धन छह, दुनियाँमे कतौ रहह मुदा अपन परिवार अपन छिअ आ अपन रहतह।"

माइक बात सुनि राधारमण सामंजस करैत बजला- "माए, सालमे एकबेर मास दिनक छुट्टी हेब करत, ओ मासो दिनक छुट्टी गाममे बिताएब।"

अपन बातसँ सुचिताकेँ सुहासिनीक बातमे देखि सुनयना बजली-

"कनियाँ, दुनियाँमे की अहींटा पतिदेव पास रहब। सभ कमासुत बेटा अछि, ओ पतिदेव नोकरी करैत जाइए, सबहक बाल-बच्चा आ पत्नियों तँ जाइते अछि। दुनू गाम प्रेमसँ रहब।"

सासुक बात सुनि सुहासिनी अपन दू बर्खक बेटी सुचिताकेँ कोरासँ उतारि बजली-

"बूच्ची, दादीमाँ केँ दुनू हाथ जोड़ि, गोड़ लगहुन।"

ओना, दुइये बर्खक सुचिता अछि, मुदा आन परिवारक मात्र गरीब-पछुआएल परिवारक बच्चासँ बढ़लगर अछिए। आन परिवारक मात्र पिछड़ल-पछुआएल-गरीब परिवारक बच्चा जे कुपोषणसँ सेहो तहुँ कुपोषित रहैए, से तँ सुचिताकेँ नहियेँ छल। जहिना खेबा-पीबाक अभाव नहि छल तहिना सुशिक्षित माता-पिताक आश्रय सेहो छलैहे।

माइक बात सुनि सुचिता दुनू हाथ जोड़ि सुनयनाक दुनू पएरमे गोड़ लगलक। सुचिताकेँ गोड़ लगिते सुनयनाक मन एकाएक करौट उठलैन। करौटेँ बजली-

"बूच्ची, भगवान नीक करथुन।"

ऐबीच टम्पूक ड्राइवर हॉर्न बजौलक। राधारमण अपन समानक गिनती कए, टम्पूमे बैस चुकल छला, सुचिताकेँ लऽ सुहासिनी सेहो आबि बैसली। गाड़ी आगू बढ़ल।

(जारी---)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल- निनन्दन (लघुकथा)



जगदीश प्रसाद मण्डल

निनन्दन (लघुकथा)

जीवनमे निनन्दनाक योग जीवनक आनन्द होइत जाइ छै, तेँ ओकरा आनन्दित जीवन कहियौ वा नइ कहियौ मुदा ओ आनन्दित रहिते अछि, बिना दुनियाँक परवाह केने। काल्हियेसँ पत्नीक संग कनी हल्ला हल्ली भऽ गेल-अछि। हल्लाहल्लीक कारण अछि-, परसुका कुम्भमेलक लौटानी सासुरसँ आएल अछि। अयन - सासुर गेल, पत्नीक गँ माइयदुआर बुझियौन आकि -वायक घर- अयन लौटला। ओना, पत्नी सालमे दू बेर, एकबेर माएसँ भेँट करैक

नामपर नेहरू जाइ छथि आ शासन बन बापक नामपर जाइ छथि। कहिया घूमती आकि नइ घूमती एकर कहाबथी नइ करै छी। - ओकर मान पुरुखपना नइ बुझब। ओकर मान ई हल जे अपन अधिकार न अपना घरम अछि, मुदा माता-पिताक घरक -अधिकारी तँ अपन नइ न भऽ सकै छथि, गोदाम घूमतीक गारंटी अपन करा करा सकै छी, तँए मूँह बुझ्य रखै छी। कालि पत्नी उत्साहित हाइत लगम आबि बजली-

"हनू बकीलकेँ नोतहकार आएल अछि। लऽ दऽ कऽ तँ एकटा -तहना अछि माहरमाला, एकरा अहाँ बहकी लगा रन छी, बिनू तहन देखि नेहरक लोक दुसत नइ।"

पत्नीक विचार अपना मनम जँचबा कएल आ नहियाँ जँचल। कहब जे लोककेँ एकटा हाइ छै, मान 'जँचल' वा 'नइ जँचल', तारा किए दुटा भऽ जाइ छी? तारा विचार राय नइ काटै छथि अह, मुदा हमरा विचारक मानि देवह की नहि? अपना समाजम, पतिव्रतासँ लऽ कऽ देसभरदा स्थान धनि, जाक प्रमसँ वैवाहिक पद्धति बनल अछि, उतक कारा देवीदवताक स्थानसँ लऽ कऽ पतिव्रताक आन -उत्सव एकम नइ अछि। मान ई हल जे, मानि लिअ अहाँ सहसँ येघ देवता वा भगवान 'महादेव बाबा'केँ बुझै छिऐन, मुदा उइ स्थानपर (गेला पछाइत नवारी छाति आरा किछु कहै छिऐन? तहिना आनासन काज -आन स्थाना आ अपना पतिव्रताक शासन-सत्ता अछि। ओहन शासन काज तँ नहियँ अछि जे विआहक प्रियतम बानानमे गेयान करैए। मान हल जे जीवनक साहित्य-संस्कृतिक विधान अछि, तइ अनुकूल बाल-साहरसँ लऽ कऽ विदाइ-साहर धनि अछि। मान जीवनक मूल कन्द्रबिन्दु विवाह छी। खाएर

ओ सरसँ अपना सरकेँ कान मालव अछि, अपना मालव ओतव न अछि जाक मालव दु वीघा जमीनवला किसानकेँ छैन।
प्रश्न उठैत जे जखन दु समाजक वीच वटाव-टीक लनदन - होइत, गाम विआहक वनहानिक यऊ ओहन किछ अछि जे सदिकाल आन समाज मान वटायऊ-, दासन यऊ मान वटी यऊकेँ हय दृष्टिसँ दखवा कनै छैथ आ हया मानिा छैथ। जखनसँ दासन समाज मान वनियाणी वनि अपना समाजम दनवज्ञायन अवै छैथ, गखनसँ वटी यऊक छाणी धकध-क कनैा जलओ लगै छैन जे कखन वङ्झाग रS जाओव गकन काना ठीक नहि। की यओह छी मानवीय दृष्टि? ओक दिस मानवीय सम्वन्ध, मान मनुक्खक जाउ प्रमसँ लगवै छी आ दासन दिस निषनमन नइ कनै छी सहा काना नइ कहल जाओग। खाओन ओकना छाउ।
यत्नीक विचान सुनि वुथवाय-, मान यत्नीकेँ विनु कहुनहि, वहकीवला ओठाम गेलौं। जाइग उ सुवना दलैन जे छह मास रS गेल, आव गहना गमादी रS जाओग। वहुग सुदि रS गेल अछि। जहिना वनिया कहलैन गहिना अपना उकना हँसीम लैग कहलयैन- "ठी नाग की काना आइय अहाँ सरम रल अछि आकि यूर्ख्नी अछि। काग हिसाव अछि, सओह वुमओ ओलौं हना।"
मनकेँ मना ललौं जे सम्वन्धम ओसँ वसी गीखयन नहियँ नीक। वनिया महाजन ओठामसँ घूमला यछाइग, चूल्हियन नाखल काना वनगनक यानिम जहिना निब्रासँ आगिक गान दला यछाइग गनंग उठैत गहिना मनम उठैत लगल। ओठाम हमना सन किसान यनिवानक ओहन स्थिति अछि, जे कृषि काजसँ डाउल नहनौं, आइक ओ मशीनी यूगम मान ओकैसमी सदीक वैज्ञानिक यूगम, की ओकाटा उाहन

मशीन किसानक हाथ धलैन अछि। हाहा म किया दमकल कीनलैन - वानिंगम -गँ वानिंगक याऽऽय छूटि गेल नहैत आ कनी ऊँऽजन लगल नहैत गँ विजलीत वमाक नहै छी। यतह गँ छी छाट किसानक जिनगी। गँOाम ऊँ हमना सनयनिवानम माहनमाला सन गहनाक लौल महिलाजगाम अछि गँ डा डाकाऽऽगसँ वसी नऽऽ रल गँ की रल। हन मनूक्षकँ अयन डाकागिक सीमाक जानकानी नाखक वाही। राय, जिनगी Oत्रा नऽऽ न छी ज सूगव खठयन आ सयना दखव नअ् लाखक!..

रीगनरीगन यन्नीयन मन गनंगि गेल-, मनम रल ज कित न 'माहनमाला'क दाम लगा वववक गयसथ्य कs ललौं। यन्नीकँ - टिटकानि दवैन ज जेसँ नीक नवका माडलम दासन गहना दव। स्त्रीगणोकँ कि Oकव असाध काज थोड छी। रल गँ साढ नुयैआक साठीकँ यान साढ दाम कहि दियौन डा गिनयिग रs जगी। गहिना दासन दिस यान साढ नुयैआक साठीकँ साढ नुयैआ कहि दियौन, रs गेल दूनू यनानीम रूल्लमरूल्ला। डा कित अहाँक दशा ना - यनिवानक दशा दखगी, महिलाकँ यूनूखक वनावनीक अधिकान है, नीक वाग, मुदा गऽऽसँ यहिन यनिवानकँ दखैक दृष्टिकाण आ ओक ढंगसँ वलैक कनीि सहा अछि किन। खाउन दुनियाँदानीक वाग छाढु, जखन अयना घनम रूल्लारूल्ली रल अछि गखन अनका - घनक वाग सूनैल ज निनलज जकाँ वकरैन मानव स ववकुरुयन न हएग। मनम जना याँगीक विनाम अवैत गहिना आएल।

यन्नीक संग रूल्लावनहा कनत लगल। -रूल्लीक निवान मनम दौड-दौडग मन यहूँव गेल नाजा रनथनीयन। अयना कावा दशा -दौडग अखन गक रल अछि मुदा रनथनी जकाँ यन्नीक मनसँ डागक

विमुख नै नहियेँ न हएल छी जे घर छोड़ि पड़ा जाएब आ पटक खातिर पिंगल उदाम जा कऽ सीख मांगब। जखन पिंगलाकेँ तियागि देलौं तखन दारुणा कऽ ठाकुर मुँह किए देखब। महाजन उदामसँ हनाऽऽतहाथियाऽऽत घरपर पहुँचलौं। -

अपना उदाम दु नंगक कौआ होइए। एकटा होइए कागकौआ आ दोसर होइए कानकौआ। कागकौआक बालकेँ लोक शुभ माने छथि आ कानकौआक बालकेँ अशुभ। कागकौआ जकाँ पत्नी आगुएसँ टोकि मानि बजली-

"महाजन उदामक काज हएल की?"

एकाएक मनमे उठल जे बजलौं नै कोना नहि, मुदा पत्नी कना बुझि गेली? मुदा लगल अपन मन कहलक, हनिसक गहनाक जे चर्च कर छली सएह हीयमे गड़ि गेल छैन। अजगर साँप जकाँ गेनुली मानि बजलौं-

"ठाही काजमे न लगल छी।"

संजोग बनल, विभ्रम पत्नीकेँ काना विसरल काज मान पड़लैन। हमरा मुहल्ला देने आगू बढ़ैत बजली-

"अखन छुट्टी नइ अछि नैए बसी गप नइ करब। पहिन काज कर अबै छी तखन आगुक गप करब।"

अनका जकाँ अपना नइ हएल, किए नै आनगोर पत्नीकेँ कहै छथिन पहिन गप कऽ लिअ, पछाइत काज बुझल जाइ। मुदा अपना विचारमे से नइ अछि, अपन काजकेँ जीवनक गतिविधि - बूझै छी, नैए काज छोड़ब हएल जीवन छोड़ब। पत्नीकेँ काज दिस समुख होइत मनमे नाग आएल। नाग उठी आएल जे जीवनमे जेँ संगी नइ नहल नै ठा जीवन काना जीवन नइ हएल। मुदा पत्नीक

ज नैहर जवाब मगेदा मनम छल डा दासन दिस एकमुठि गेल। एकमुठि छी गेल ज दुनागमनक पछाड़ि, अखन विआह-दुनागमन संग हाइछ। गइसँ ओद गँ लाए एइय नहल अछि मद्दीसिक यासियाँक हनिष्ठो-ज यहिलुका जकाँ आव गाओ जकाँ आव नइ हाइछ। यहिन दुनागमनसँ पूर्व नैहरम धियापुता हाइ -वाय दुनियाँ दिस धकल -छल। आव गँ समाजा आ अपन माइया -निदा कइय दइ छैथ ज दुनियाँ कनियँटा थाठ अछि ज घुनि घुनि ओकटा मालाकँ ओक साओ आ0 वन जय कनै नहु। दुनियाँ गँ दुनियाँ छी, कनै चलु, दखै चलु, छाउँग चलु आ आगु वढेँग चलु।

मन गग घानमद्दा एs गेल ज की नीक की अधलाह स वूषैक -निवक खाम एs गेल। हाय, 'समाप्त' आ खामकँ ओक नइ वूसवा 'समाप्त'क मान 'निनाम' हाइछ आ 'खाम'क मान 'मृत्यू' सहा हाइछ।

अपना मनम स नइ एला डाना, आँखि गँ सलहलव कओल मुदा निवक हनीच छल। निवान दलक ज अपना समाजम अद्दीसँ भिडाक ओहन पद्धति नहल अछि ज विना मूल्यक, मान विनु दैठना लन ओकदासनक सवालकँ डप्ना दइ छैथ आ जँ काजक दौठ नहल -सहा दइ छैथ। किसानी जीवनक ज (हुनन) गँ काजक कला दुनियाँ नहल अछि डा पूर्ण जिनगीक नहल अछि। मान किसानीक सए क्रियाम दानक काना मूल्य नहि नहल अछि। मान एल ज खगीक काना काजक प्रक्रिया हाउ आकि यनिवानक क्रिया, मान घन वनाओवसँ वद्धाकँ यढाओवलिखाओव-, विआहदुनागमन कनाओव -इत्यादि धनिक, नायनिवानक दानकँ काना मूल्य नहि दिअ यउ -

छल, मुदा आजुक परिवेश बदलि भऽ गेल अछि जे ओकर मूल्य मान कीमत दिअ् पड़ैत। चुनमुनी जहिना अपन बीमासँ छाट - पट ल भनि दिन पलाह भऽ ओतेक बहेल पहिना भऽ गेल अछि। आर जकाँ अपना मनमे दुनियाँक प्रति, आर परिवारसँ समाज धरि, नागविनाग होइत लगल। जहिना धनीपन ओकाअना लोक बदलल - नहि बुझा जे पत्नीसँ झगड़ा करिकऽ भसँ घरसँ भागल नहि बुझा मुदा कामसँ काम रखनाइ वा जलखै ओकरा साँस नहि बाजल बुझा। विवाह भेला पछातिया गँ भनथनीत न पिंगलाकँ अपन दुखना सुनवैत नागिया वनित छैथ। मनमे अपन होइल जे गामाम गँ ओहुना लोक छथिय जे हँसैतखलैत दुनियाँक संग चलै छैथ। मनमे जना - विठनी करला पछाइत ओतीवीती ओहोत पहिना ओइ बहल छल। - मन ढ़ीला बुअत जे अपन घनक वात लोककँ कना -गैसंग मन कहवै। सब बुझित छी जे अपन हानल आ बहुक मानल लोक अनका लग नहि वजैत। कोना निवान भाँजपन चढव न करत। जमहन दखी पहमन कुभाँज भऽ जात।

गाधेन मन नविकान्द काकायन चलि गेल। नविकान्द काकायन नजैन पहुँचत जना मनमे थोडक तुष्टि भेल। तुष्टि भेल हुनकन जीवन दखिकऽ। आजुक परिवेशक अनुकुल ओ अपन जीवन धानस कन कना सहल शिकारी जकाँ जीव बहला अछि। शिकार करैक प्रथा अपना ओठाम सब दिनसँ बहल अछि, मुदा स अखन नहि, अखन वस ओतव जे क कान पनहक शिकारी वनिकऽ कहुन शिकार करै छैथ।

गाममे नविकान्द काका ओहुन लोक छैथ जे लाखा लोकक बीच अपन जीवनक परिचय दन छैथ। ओ निर्विवाद नुयँ मानि बहला अछि जे

जातीय उन्माद लोकक मनकेँ एना माथि देने अछि जे नवीन बहाकऽ एक सीमामे बान्हि देल गेल छैक। एकर जीवन्त उदाहरण आँखिक सामने अछि जे जातीय दृष्टिसँ समाजक उपेक्षित लोक जे निच्चाँसँ अबै छैथ, ओ जँ कला वा विज्ञान वा कोनो येह स्थान अपना कर्मसँ अर्जित करै छैथ, तिनका आगुक लोक मान उगला जातिगत सीढ़ी, निकृष्ट नजरिसँ नहि देखै छैथ, सेहो कोना नहि करल जाएत। खाएर जे अछि ओ सबहक सामने अछि, एहिसँ अपना आकि नवकान्त काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब अछि अपन जीवन आ अपन कर्तव्यसँ।

नवकान्त काकाक परिवार पेटक नमहर छैन। मान पाँचक श्रेणीसँ निच्चाँक नहि छैन, दसक श्रेणीसँ ऊपर छैन। मुदा, की विशेषता हुनकामे छैन जे सभसँ हटल जीवन छैन। अखन एतबा।

बीतल गामक परिवारक बीच नवकान्त काका किसानी जीवनसँ हटल नहि। अपन जीवनयापन ओहिसँ नीपन करै छैथ-, जहिसँ नीपन करल जाइए जे 'हम सबम, सब हममे'। मन मानि गेल जे नवकान्त काका टा अपन बथासँ मुक्ति दिया सकै छैथ। विदा भेलौं। पहिलसँ नवकान्त काका ठिहु कऽ बैसल छला आकि आगुम पहुँचला पछाड़ित चिहुँकैन, स गेँ ओ जानैथ मुदा विधाएल लोक जकाँ देखिते बजला-

"बालगोविन्द, अहीं सभक देवदूनियाँ छी-, जला नाथी।"

नवकान्त काकाक विचार कोनो सोझमे न चढ़ला। मुदा जहिना लोक लग, लोक अपन लाज बँचबैक कोशिश करैत, तहिना अपन बीच-
-बचाव करैत बजलौं

"काका, ओहि अहाँ सन भेल जे हम्मर प्रणाम करब पहुँचाएल

अछि आ अहाँ की"कहाँ कहै छी। -

अपन विचारकेँ सम्हारैत नलिनीकान्त काका बजला-

"की कहाँ, कहाँ कहलियह। पाहुन नंगनुप देखि मूहसँ निकलल - "गेल। एकरा मद्दति नहि देलक।

मनमे एल, मूहसँ जे विचार निकलल गेल ओ बात सत्य नहि आगू बढ़ए आकि मद्दति नहि दऽ ओकरा गलतफहमी नाश कऽ देबहि? मुदा बजलौं किछु ना। बजलौं एतबे-

"नंगनुप देखि देवहनिया संग बिहैए-, अहाँ कना बीस गेलौं?"

हमर बात सुनि नलिनीकान्त काका ठहाका मारिकऽ तँ नहि मुदा मुस्कुनीसँ आगू बढ़ि, हँसैत बजला-

"देखबहक जे कोना मुर्गी हुअए। ओ चाहे माटिक मुर्गी हुअए कि पाथरक आकि कागजपर छापल हुअए कि रौगपर पाड़ल हुअए, ओकरा नंगनुप देखि अपन मन ओहिना खुशी वा दुखी होइए-, जेहन जीवन रहैए।"

नलिनीकान्त काकाक विचार सुनि अपन मन धकचुकाए लगल। तँए कहलियैनकाका" -, नीक जकाँ नहि बुझलौं?"

अपन हानि देखि आकि समाजक चलैन देखि, समाजक बाटबीचक - हूस जाति लोक अपन जानकारीक -चलैनमे एहन अछिए जे मुड़ा यनिचय देखाए अछि, तहि अनुकूल कहलौं अछि। हमरा पैछला जीवन नलिनीकान्त काका आँकि रहल छैथ। समाजक बीच शिकारी बनैत संग न एला जे जीवनक हर उम्रक एक-एक पहलुकेँ आँकि अपन - शिकारक बन निर्मित कए, शिकारी बनि जीवन गुदस करै छैथ। अपन आँकक अनुकूल नलिनीकान्त काका सही आँकि रहल छैथ जे बालगोविन्दक जीवनमे निनन्दना नहि अछि। जँ निनन्दना रहैत

ई एक दृष्टिक अनुकूल एकर स्थानपर ठाढ़ भऽ एकरंग समाज वा दुनियाँकेँ देखैत, मुदा से ई नहि अछि। युगयुगान्तरक बीच खाली -प्रकृतिक दुनी नहि अछि बल्कि जीवनक असंख्य परतुक दुनी सेहो अछि। नविकान्त काका बजला-

"बालगोविन्द, ताना हम की करबह, तूँ त अपन सभ किछु जनैत छह।"

नविकान्त कक्काक विचार सुनि मनमे तुष्टि एब करल, किए ई हुन मनुष्यक एहन मनल संस्कार बनियेँ गेल अछि आ बनिता अछिए जे सभ किछु जनिते छी, सभकिछु हमरा बूझल अछि। बूझल टा नहि अछि, अनकासँ बेसी बूझै छी। ऐँ बाहन पनक बानन देखि अनवा बाउनक यीठानसँ सिना आगू किए न ठठाउल देखि यठए-बिनु विचारल बजा गेल !..

"काका, अँ अपन सभ किछु जनितौं ई घनसँ बहान धनि, मात पनी लगसँ लऽ कऽ बनियामहाजन- तक, अहिना दुनकान यविनौं।"

नविकान्त काका बजला-

"बालगोविन्द, अनकर बात नहि कहै छिअ जे मुठहुस हएत। -ताना पनिवानक बीच जीवनक निनन्दना नहि छह। अपन सम्बन्ध बृद्धिनाथ रायसँ ऐँट ऐला पठाएन कना निनन्दन अखन तक चलि नहल अछि, मात्र चलिय नहि नहल अछि, बढ़िता चलि नहल अछि आ ताहन?"

नविकान्त कक्काक विचार सुनि मनमे ठहकल। ठहकल ऐँ जे खिस्सा-किछु एहन -न-यिहानीक अँ जीवनधान चलैए ई जीवनक किछु अमूल्य नत्न धानामे ऐटिए अछि जे अपना जीवनक नत्न बनैए। अपन मनमे शंका ऐँहो हुअए जे जहिना घटिया लाक कहियो

आकि असज्जन बकरी, ओकरा संग मित्रता जोड़य काल मनमे शंका समा जाइ छै जे ई मित्रता कतेक दिन चलत आ कोन रूपेँ चलत। तेँ नामनामक लूट सम्बन्ध रहैत जाइत। मानि कखन तक रहत - आ कखन जाएत, तकर कोनो ठेकान नहि। मुदा सज्जन लोकक मित्रता विश्वास रहल यात्रक होइत। ओ ई होइत जे दुनियाँक हर जीव जन्तुमे रहैत गुण-दोष जे किछु देखल अछि, लेकिन किछु न अछि।

ओना, महाकवि विद्यापति सेहो लोककेँ देखिय कए कहने छथि - 'सज्जन जनसँ नेह कठिन थिक'। मुदा नेह करब कठिन छी, तेँ नहि, नेह रहला पछाति निमाहबा कठिन थिक। जकराम जहिना निबन्धना नहित ओ तहिना भूयस चलैत। ओ स निमाहैक शक्ति बना सकी तँ निश्चय नाम रहत हनुमान जकाँ रहैत जाएब। 'लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल'। सज्जन सिर्फ शब्द नहि छी, जकर मानि बूझै छिऐ सामसयाट लोक। सज्जनपन जीवन छी। ओ - अपन धारा सेहो प्रवाहित -बकरीक अपन-जीवनधारामे ओहने बकरी होइत अछि। मुदा ओइ प्रवाहकेँ जखनसामाजिक धारामे सम्मिलित कैल प्रवाहित बनबए चाहब, तखन टकराहट होइत अछि जे स्वाभाविक सेहो अछि। यहाउक उपनसँ प्रवाहित होइत मननाक यानि जखन दासन यहाउक मननाक यानिमे समाहित हुअ लगैत तखन अप्पनअप्पन प्रवाहक गतिक अनुकूल समावेश करैत अछि। - अपन जीवनक विपरीत दिशामे बुद्धिनाथ राइक नाम सुनि, अपन मन खिनकानलक। खिनकानलक ई जे कि न बुद्धिनाथ राइक गाथाकेँ खियान लगा अपना जीवन दर्शन बनाबी। बजलौं-

"काका, अहाँकेँ बुद्धिनाथ रायसँ कना सम्बन्ध बनल आ अखन कोन

नुयम अछि स कनी..?"
हनाअल चीज रहला पछाड़ि जहिना मनमे खुशी होइत गहिना नविकान्त कक्काक मनमे सेहो रहैन। जहिना एक्के सुनिम किया एक-साथ गक गनि लड़ैत-सँ, गनि गँ जनुन लड़ैत मुदा अंकक मान ड़ी नड़ बूमैत ज एक आ साथमे कागक दुनी ना अन्दन अछि, गहिना एक्के सुनिम नविकान्त काका वजला-
"वौआ, वृद्धिनाथ राय आड़क तिथ्री प्राप्त कएल वकनी .एस.ए. छैथ। जखन ओ आड़ीनहि रल छला गड़सँ पहिनहि .एस.ए.
"ओ अपन साहित्यिक पनिचय दऽ दन नहैथ।
नविकान्त काका जहिना वजला गहिना अपना वूमि गेलौं, मुदा मनमे गाक नंगक जिज्ञासा जगि गेल ज आगा गहानाड़सँ वूमैक ड़च्छा रहल। गँए अपन मुहसँ निकैल गेलसाहित्यिक वाग कनी नीक " - जकाँ कहियौ, काका?"
नविकान्त काका वजला-
"वृद्धिनाथ राड़क लिखल कथामे एकटा कथा पढैक मौका हमना होइय स्कूलमे रहल छला। होइ स्कूलमे मैट्रिक कुलपतिमे ज कथा संग्रह पढाइ होइ छलै, गड़ संग्रहमा। कथाक गढैन दखि मनमे गुष्टि आएल ज एहन कथा हमहीं कि सर लिखि सकैत। दासन उकं०। कथाक सही साचक दिशासँ रहला। सचमुच जड़ समयक कथा छी, मध्यवर्गीय जीननक सच्चाइ छी।"
वजैवजैत नविकान्त काकाकँ ओहिना रहैन जना दुनक सरहनमे - गाओमे पड़ोल सएन होइत। मुदा गाओमे जकाँ पाछूसँ धकियवैत -वजलौं
"काका, जहिना धाणी ना कूर्णा जखन पहिनैजाकन होइत-, मान

अंगक सिनेह अछैत लऽगैत, एखन ओ हेराय जाइत, एहिना अहाँ किए विभ्रम..?"

ओना, ननिकान्त काका हेरल नहि छला, निश्चित भऽ गेल छला, हमर बात सुनि निश्चल होइत बजला-

"बौआ, बुद्धिनाथ बाबूक जीवन अनमोल रहलैन अछि। बच्चेसँ ओ विद्यालय धानमार्गँ धानद्य कलैन आ कौलजजीवन एकक निजत्व ओ - रहलैन, ओ जहिना लंकामे प्रवेश करैसँ पहिने एकचलिया हनुमान समुद्र लंघन कने छला एहिना ओ एक स्थानक पनीआरल प्राप्त कऽ ललैन। ओ हुनका आत्मा"एक पहुँचा देलकैन। .एस.ए.

अखन एक अपना समाजमे दु धनक धारा प्रवाहित होइत रहल अछि। पहिलधारा-शासन -, जकरा राजधारा सेहो कहि सकै छिऐ आ दोसर अछिधारा-जन -, ओ सामाजिक जीवनमे जन्म लऽ गेल बलैत। समाजक अधिकांश जाति राजधारासँ सेहो सम्बन्धित रहला - अछिए। कर्म निर्धारित जातिक कर्मसँ समाज सेहो ०१८ अछिए। धारासँ -जीवनक हनउत्रम ओकर खगता छैह। ओ पनिवार राज सम्बन्धित रहल अछि ओकर विचारधारा नहि, वनहारामे जनधारासँ - दुनी बनल अछि। बुद्धिनाथ बाबूक पनिवार ओत्र जातिक होइतो ओऽ धारासँ, मान राजधारासँ अलग रहलैन। -

पाछूसँ ओधकियबैत बजलौं-

"काका, एना बीचबीचमे गाछी नाकि किए देने छिऐ। बच्चामे -

"कमी बानसिलिय न ग अछि।

हृदय खालि ननिकान्त काका बजला-

"बानसिलिय नहि अछि, कखनाकय ठील भऽ -कखना गाछीमे हेब-

"जाइत गेँए एकम कम बसी भऽ जाइत।

शुनुसँ ञन्द धनिक जीनन ञक स्नस्ठ प्रशासक नुयम वूव्रिनाथ राञ्ञ्क नहलैन। सना निवृन्द रला यठाञ्ञ्ग, गाधेन ननिकान्द काका सहा ञक जीनन टयि दासन जीननम प्रनश कs चूकल ठला, यठाञ्ञ्ग यून यठव-हूनकाम लिखव :जगलैन। वीचक समय घ्यन्दगाक कानधँ ञ्यनस्ठिग रञ्ञ्य गेल ठलैन, जञ्ञ्सँ जीनन ञ्न्दघ्यन्द नहलैन। -
-वजलौं

"ञ्यनक ज सूगल निवान, हाञ्ञ् स्कूलक कथा ञ्यनक मान ञ्ठि, उा यूनकना जगल :?"

ननिकान्द काका वजला-

"उाना, सगासीक)1987 ञ्ञ्वाविक साल घनक चूवा0 गग (क. रल ज सर किगावकँदिनान खा गेल। गँञ हयिलुका किछ नहल नहि। मनम 30ल ज किञ न वूव्रिनाथ राञ्ञ्क उा कथा यून : यठी। मूदा मनक निवान मनम ऊँनाञ्ञ्ग नहला। ज निनन्दनगा ञलासँ ञ्यन हाथ मान वूव्रिनाथ राञ्ञ्क हाथ प्राप्त रला। रानयन वूव्रिनाथ रायसँ सम्बन्ध वनल। उाना, कार्यक्रमम मान साहित्यिक कार्यक्रमम कगा वन वहना दखि चूकल ठलिञन, मूदा प्रगाम-"यागीसँ वसीक सम्बन्ध नहि ठला।

ञ्यन वजा गेल-

"गकन यठाञ्ञ्ग की रल?"

ननिकान्द काका वजला-

"ञ्ाग्रह कलिञन ज 'ञ्यन यैठला यीठीक जीनिग सम्मानिग नचनाकान ठी, किछ कथा हमहूँ लिखलौं, स ञ्यन कन सूधानि देगिञ'। गयन हलैसकs उा कहलैन, 'यठा दिञ'।"

ञ्यना सूनल ञ्ठिञ ज ञकञक कथा ना कनिगा शुद्ध कनैम -

मास समय खिंवा छः-मासक, ओतए हुनकर गतिविधि करैत -छैन, एकटा बात बजलौं-

"करैत सुधार कलैन?"

मुस्कुराइत नवकान्त काका बजला-

"सुधार तँ ढाउन कलैन ज आइ छी।"

एही बीच दासन महानुभाव पहुँच गेला। महानुभाव एला ढाउन वाली लाक ज अपनासँ कनी दुनयन अछि। मान पनिवानक हिसाव दासन पनिवानक आ समाजक हिसाव दासन समाजक। ढाना, जँ निश्चाँहीतासँ नायव बाहव तँ ढाकना लंकाक हनुमान -जयन गज-जकाँ नाछैन वढिग जाएत मुदा स अखन नहि।

दनवज्ञायन, मान नवकान्द कक्काक दनवज्ञायन जखन अप्यागत पहुँच गेला तखन अपन गामसपकँ निनाम -घनक निवानक गय-दिअ् यएत ना। ढाना, अपना मनम एकटा तसन निवान उठि गेल। मुदा स बजलौं नहि। तकन हल ई एल ज अपनअपन -निवानम तना वाहिया गेलौं ज अप्यागतक संग नवकान्द काकाकँ सप्य एलै-की गपन स सुनव न कलौं। अपना मनम उठि गेल छल ज एक दिस साठ पाँच ब्रिगल मान माँटसाँट लाक छैथ-, दासन दिस पनन्हवीस किलाक नहि अछि-, सहा कना अपना मन मानव। एकना हुसि कना करवै ज एक दिस तल्लाक बीच तल्ला साए तल्लाक बीच लाक सपैए आ दासन दिस आमवएक न-करहन पीयन-िब्राँक घासफूसपन नइ सपैए-, सहा कना नइ करवै।

एही बीच चाह आवि गेल। अप्यनअप्यन निवानसँ आगू वढि -जीवनक चाहक निवान, तीन घाँट चाह पीलाक पछाइत उठए

𑒪𑒑𑒪।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

३.३.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨- 𑒤𑒰𑒠𑒩𑓂𑒮 𑒛𑒹



𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨

𑒤𑒰𑒠𑒩𑓂𑒮 𑒛𑒹

𑒕𑒁 𑒥𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒔𑒾𑒏𑒣𑒩 𑒋𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪𑒧𑒹 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏 𑒐𑒼𑒪𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒲 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒯𑒹𑒢। 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒩𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒤𑒴𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱𑒢, 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒮𑒑𑒳𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃 𑒐𑒳𑒂 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒋𑒩 𑒕𑒴𑒥𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱𑒢। 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒂 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒣𑒩 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱।

हमरा बुझबामे कोनो शंका नहि भेल जे आइ फादर्स डे छी। हमहुँ फेसबुकपर लिखलौं- 'तीनू लोकमे माए-बाबूसँ बढ़िकऽ कियो न छैथ।'

ई एक वाक्यकेँ पोस्ट केलाक थोड़ेकालक बाद पुन: फेसबुक खोलि देखए लगलौं। पूरा फेसबुकपर फादर्स डेसँ सम्बन्धित फोटो, कविता आ आलेख छल।

पछाति सभ देखैत-देखैत हमर नजरि एकटा फोटोपर आबिकऽ अँटकि गेल। ओ हमर मित्र रंजीतक फोटो छल। फोटोमे रंजीत अपन दिवंगत पिताजीक तस्वीरपर माला पहिरा आरती देखा रहल छला। रंजीत हमर गौआँ। पहिला वर्गसँ इन्टर धरि हम दुनू गाम संग पढ़लौं। तेँ दुनू परिवारमे दोस्तीयार भऽ गेल अछि। रंजीतक पिताजी भिखारी काका एकटा साधारण खेतिहर मजदूर। दुनू परानी माने भिखारी काका आ सुगिया काकी बोइन-बुत्ता करि कऽ रंजीतकेँ इन्टर पास करौलखिन।

जखन लालूजी माने मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादवजीक सरकारमे शिक्षा मित्रक लेल विज्ञापन निकलल तँ रंजीत आवेदन केलक। हुनका माने रंजीतक बहाली शिक्षा-मित्रक पदपर भऽ गेलैन। पछाति श्री नीतीश कुमारजी बिहारक मुख्यमंत्री भेला तँ शिक्षा-मित्रकेँ पंचायत शिक्षकक दर्जा दऽ स्थायी कऽ देलखिन आ पनरह सए रुपैआ प्रति मास मानदेयकेँ बढ़ाकऽ चारि हजार रुपैआ प्रति मास कऽ देलखिन। आब त सहज पंचायत शिक्षकक वेतन कहियो आकि दरमाहा कहियो आकि मानदेय कहियो, बीस हजार टकासँ बेसीए प्रतिमास भऽ गेल हेन। खाएर जेकर भेल हेन पंचायत शिक्षक आकि प्रखण्ड शिक्षक कर भेल हेन तइसँ हमरा कोन लाभ...।

हँ तँ नंदीनकेँ अपना पिताजीक स्वागतमे पुष्पक माला पहिरा आरती देखबैत देखलौं। हमरा हँसी लागि गेल आ तीन बरखक पहिलुका बात मोन पड़ि गेल। सिनेमाक रील जकाँ एक-एक घटना हमरा आँखिक सामने आबए लागल।

रवि दिनक समय रहए। बाजारक काजसँ हमरा निर्मली जेबाक छलए। अपना तँ एकटा साइकिल अछि सेहो पंचर भऽ गेल छलए। नंदीनकेँ मोटर साइकिल छइ। ओहो बरमहल निर्मली बाजार जाइत-अबैत रहैए। सोचलौं, नंदीन ओइठाम जाइ छी, जँ ओ निर्मली जेता तँ हुनक मोटरसाइकिलपर निर्मली चलि जाएब आ जे बाजारक बगन्ता अछि, सेहो कऽ हुनक संगे ओइ मोटरसाइकिलसँ वापस आबि जाएब। यएह सभ सोचि हम कपड़ा पहिरि एकटा झोरा लऽ नंदीन ओइठाम दिस बिदा भऽ गेलौं।

नंदीनक घर हमरा घरसँ लगभग अढ़ाइ किलोमीटरक दूरीपर अछि। जखन नंदीनक घरपर पहुँचलौं तँ ओ कपड़ा पहिरि मोटरसाइकिल निकालि रहल छला। हमरा देखि पुछलैन-

"निर्मली चलब राय?"

हम कहलयैन- "हँ, एलौं हेन तँ यएह सोचिकऽ। अपन साइकिल पंचर भऽ गेल अछि। सोचलौं अहींक गाड़ीपर चलि जाइ आ बाजारक बगन्ता पूरा कऽ हम अहीं गाड़ीसँ वापस आबि जाइ।"

नंदीन बजला-

"तँ चलू ने। एमे कोन हर्ज छै।"

नंदीन गाड़ी स्टार्ट कलैन आ हमरा कहला, 'बैसू राय, गाड़ीपर।'

तखने नंदीनक पिताजी दलानक चौकीपर सँ उठैत मोटरसाइकिल लग आबि कऽ नंदीनसँ पुछलखिन-

"बौआ, निर्मली जाइ छहक?"

नंजीत बाजल-

"हँ, निर्मली जाइ छी। की बात?"

तखन रिखानी काका कहलखिन-

"हौ बौआ! ब्लड-प्रेसरक दबाइ काल्हिये सधि गेल। कीनने अबिहह।"

तखन नंजीत कहलकैन-

"पाइ छह?"

रिखानी काका बजला-

"हमरा लग कोन पाइ रहत। बिधवा पिलसीन आ स्टैण्ड सभ पाहीं लऽ लइ छहक। तखन हमरा लग कोन पाइ रहत।"

नंजीत खौंसाइत बाजल-

"तंग आबि गेलौं तोहर हरमाइसँ। अखन पाइ नहि अछि। गहुम बिकै छै तँ आनि दइ छिअह।"

ई कहि नंजीत मोटरसाइकिल स्टार्ट कलक आ निर्मली लेल बिदा भऽ गेल।

निर्मली बजारमे नंजीत कतेक चिज-बौस कीनलक मुदा रिखानी काका लेल ब्लड प्रेशरक दबाइ नहि कीनलक।

पाँचम दिन सुनलिऐ, रिखानी काका मरि गेला। हुनकर ब्रेन हेमरेज भऽ गेलैन। हम देखऽ गेलिऐन, रिखानी काका मरि गेल रहैथ। हमरा देखिते सुगिया काकी कनैत बजली-

"बौआ नहु, पाँच दिन पहिने बुढ़हाक ब्लड प्रेसरक दबाइ सधि गेल छलइ। पाँच दिनसँ ब्लड प्रेसरक दबाइ नइ खेन छलइ।"

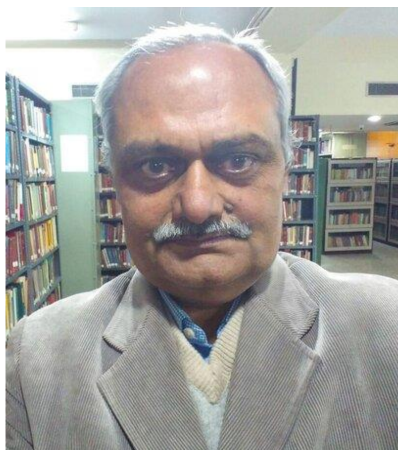
रिखानी काकाकेँ देखैत जे सभ अबै जाइ छला, सभ गोटा एकटा

वाग वर्जेथ-

"ब्लत प्रशनक दनाॐ वन्न रऽ ।गलासँ वूढाक ब्लत प्रशन वढि ।गलैन गँ७ व्रन रुमनज रऽ ।गलैन ञा रिखानी काका मनि ।गला। "

ञयन मंगाव editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २६-३० म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड २६-३०

२६

ई संसार आश्चर्यसँ भरल अछि। एतऽ सभकिछु स्वयं नियंत्रित होइत रहैत अछि। हम-अहाँ तँ नियतिक हाथक एकटा मामूली यंत्र छी। जीवन यात्रामे के कतऽ भेटत,के कतऽ हेराएत भऽ जाएत ककरा ठेकान नहि। कहि सकैत छी जे सभ भाग्यक खेल अछि। जयन्त सन अनाथ लोक एहन महान विद्वान भऽ गेलाह। ताबे नहि,एतेक सुयोग्य होइतहु आ मौका भेटलायन ओ राजसुखकेँ छोड़ि अपन गाम लौटलाह। ई उम्मीद रहनि जे अपन पूर्वजक कीर्तिकेँ आगू करब। समाजक सेवा करब। गाम-घरमे शिक्षाक प्रचार-प्रसार करब। मुदा से करब आसान नहि रहलनि। अपन पितिऔत बाधक भऽ गेलखिन। कहबी छैक जे लोभी मनुक्खकेँ अपन स्वार्थक आगू किछु नहि देखाइत अछि। सएह हाल रहनि सुधाकरक। नहि तँ पाठशालाकेँ मूलधन लगा कऽ ठाढ़ि देबाक की औचित्य छल? एहन तँ नहि छल जे ओ रक्षायन रिजैत रहथि। घर तँ हुनका रहब करनि।

सुधाकरक वयोवृद्ध पिता देवीकान्त हुनका कैकबेर कहलखिन-

" सुधाकर! ई जगह सार्वजनिक छैक। हमरा लोकनिक पूर्वजक कृति अछि। जयन्त विद्वान छथि। हुनकर अभिलाषामे सभक कल्याण अछि,आदि,आदि।"

मुदा सुधाकर तँ छलाह तयानसंख। बापकेँ धमका देलाह। दस हजार हजारि कलाह। ओहो की करितथि? एकटा बेटा रहनि। वृद्धावस्थामे के देखितनि? हुन एकसर ओ बहुत किछु नहि कऽ सकैत छलाह। दच्छिनबारिटोलक छौंड़ासभकेँ सुधाकर मिला लेल

छल। ओ सभ छोटछीन लोकम यतिकऽ ओकर याछू-याछू चलेग नहेग छल। ओगनवानिटोलक लोकसभ जनुन निर्णय कलक आ कऽऽऽ नहल अछि,मुदा थाना यूलिस सभ सुधाकनक संग दऽ नहल छलैक। लोकसभ दखिग नहि गेल आ या0शाला बूलताजनक चाट यतिग हहनि कऽ खसि यडल। किछूऽ दिनम ओ जगह सयाट भऽ गेल छल। ओहीOाम सुधाकन अयन घन बना ललाह। आब गँ ऽऽी हाल अछि जे ओगऽ कहलायन कओ या0शालाक चर्चा नहि कनऽ चाहेग अछि। दछिनवानिटोलक लोकक कहब-"ककना लल कानु? जकना लल कानब गकना आँखिम नान न?" मोन जे दछिनवानिटोलबलाक छलैक या0शाला। ओऽहसभ ओहिम शिऊक हाऽऽग छलाह,हुनक बालबच्चा ओहिम विद्यार्थी नहेग छल। ओगनवानिटोल लोकसभ गँ जन बनिहान छल। बसी सँ बसी ओहिम नखवान ना ऽहन काना छोटमोट काज हरि जाऽऽग छलैक। समय बदललैक। ओकनसभक समाजयन नर्बस्न बडलैक। शिऊा आ संयत्ति दुनुम ओ सभ आगू भऽ गेल। गाब नहि निचाना श्रेष्ठ भऽ गेलैक। गँ न ओऽहसभ जयन्धक संग 0।ड हल। स गँ हल, मुदा सुधाकन जे चाहलक स कलक। जयन्ध जानकीधाम जऽबाक हगु निवश भऽ गेलाह। ऽऽी सभ घटनाक्रम सीनमाक नील जकाँ आऽऽ जयन्धक माथम घूमि नहल छलनि।

कालीकान्धक दनवानम यूल्कक विमाचनक गनिमामय वागाननधम जयन्ध आग्नक उमनक कछनिंदु छलाह। कालीकान्ध सयनिवान मंचयन विनाजमान नहथि। चंद्रिका गँ नहि-नहि कऽ जयन्धकँ उचकि-उचकि कऽ दखेग नहेग छलि। आऽऽ जयन्ध

लागिऽ रहल छथि तेहन, जेना कोनो राजकुमार होथि। गौर वर्ण, नमगर, सुडौल देह, तेजस्वितासँ परिपूर्ण हुनकर आभामण्डल देखैत बनैत छल।

" अपनेक आज्ञा हो तँ आजुक सत्र प्रारंभ कएल जाए। "- आचार्यजी बजलाह।

"अवश्य। आज्ञा अछि।"- कालीकान्त बजलाह।

सभसँ पहिने 'जय जय भैरवि असुर भयाउनि" गाओल गेल। गीत गेनिहारक नेतृत्व कालीकान्तक कन्या चंद्रिका कऽ रहल छलीह। संपूर्ण वातावरण जगदंबाक आराधनामे लीन लगैत छल। भगवती गीतक बाद आचार्यजी, नागबाबा दिस ताकि कऽ कहैत छथि-

" ई छथि जानकीधामक प्रसिद्ध संत नागबाबा। हिनक अनुकंपासँ सुधाकरक जान बाँचल। अन्यथा तँ एतए जयन्त बागमतीमे डूबि कऽ प्राण दए जा रहल छलाह। तँ हमर आग्रह जे ओ सभसँ पहिने जयन्तकेँ आशीर्वाद देथि।'

नागबाबाकेँ ओना के नहि जनैत छल। कतेको लोककेँ ओ अपन शक्तिसँ जान बचओने छथि।

चारूकातसँ लोक बाजि उठल-"नागबाबाक जय!"

नागबाबा कहैत छथि-"हम तँ मात्र निमित्त छलहुँ। जयन्तकेँ लिखल छलनि तँ हम हुनका जानकीधाम आनि सकलहुँ। ओना

हिनका निर्माण बरबाम आचार्यजीक अमूल्य योगदान अछि। संगे कालीकान्त सेहो हुनका उत्साहित करैत रहलथि। हमरा लोकनिक हुनका बहुत-बहुत आशीर्वाद अछि। निश्चय ओ मानवताक हेतु एकटा वरदान सिद्ध होएत।"- से कहि नागबाबा बैसि गेलाह।

"आब हम जयन्तसँ आग्रह करबनि जे अपन एहि शोधग्रंथक बारेमे हमरा लोकनिकेँ किछु जानकारी दथि।'

जयन्तक शोभा देखैत बनैत छल। पचीस सालक गठीला युवक पीत वस्त्र पहिरने जहाँ ठाढ़ भेलाह कि एकम्हरसँ लोक बाजि उठल-

"जयन्त अमर रहथु!"

जयन्त संपूर्ण एकाग्रतासँ अपन शोधग्रंथक बारे मे बाजि रहल छलाह।

"एही ग्रंथ हमर पूर्वज द्वारा कएल गेल शोध कार्यकेँ आगू बढ़ेबाक प्रयास मात्र अछि। एहिसँ बहुत बेसी काज ओ सभ पहिनहि कए चुकल छथि। हम तँ मात्र ओही कार्यकेँ आगू कएलहुँ अछि। एही ग्रंथ मूलतः मिथिलाक संस्कृतिक गौरव गाथा थिक। मिथिलाक माटि-पानिमे कतेको मनीषि लोकनि उत्पन्न भेलाह आ अपन सर्वस्व ज्ञान संचयमे लगा देलाह। हमरा विश्वास अछि जे पाठक लोकनिकेँ एहिसँ मिथिलाक संस्कृतिक बारेमे बहुत किछु बुझबाक मौका भेटतनि।"

जाबत जयन्त बजैत रहलाह,ताबत लगब नहि करए जे हजारों लोक हुनका सुनि रहल अछि। जयन्तक ओजस्वितापूर्ण भाषण सुनि सभ मंत्रमुग्ध छलाह। आब ओ अपन भाषण समाप्त करए जा रहल छलाह कि आशिषो हुनका टोकलाह-

" अहाँ अखन नेना थिकहुँ। अपन मुँह अपन एतेक प्रशंसा करब अहाँकेँ शोभा नहि दैत अछि जयन्त! हम एहि पोथीकेँ पढ़लहुँ अछि। ई तँ मात्र पूर्वका पोथीसभक नकल अछि। अहाँसँ बेसी कतेको नीक विद्वान हमर गाममे रहल छथि आ छथिहो। एहन पोथी के पढ़त? ई तँ मात्र समय खराब करब रहल।.... आदि..आदि...।" ओ आओर बाजए प्रवृत्त छलाह कि ओहिठाम उपस्थित लोकसभ चिचिआ उठल-

“बैसि जाउ,बैसि जाउ”। हमसभ अहाँक पढ़ौनी आ दुर्भावनापूर्ण विचार नहि सुनए चाहैत छी।.." सभ हल्ला करए लागल। एक क्षण लेल सभ बिसरि गेल जे कालीकान्त सपरिवार ओतए विद्यमान छथि।

कारी गुड़,बड़ीटा माथ नाक पीचल,चानिपरसँ केश उड़ल आशिषोजी मिथिलक छलाह। नेनामे संगतुरिआसभ हुनका नकपीच्चा कहैत छल,केओ मुण्डा कहैत छल। कालीकान्त हुनकर आशिषक ज्ञानसँ बहुत प्रभावित रहथि। ओ हुनका अपन आशिषो बनाकए रखने छलथि। सभटा सुख-सुविधा हुनका छलनि। मुदा कहबी ठीके जे चालि,प्रकृति आ बेमाए,ई तीनू संग जाए-सएह हुनका संग रहनि। ओ जयन्तसँ ततेक ईर्ष्या करथि जे हानि की

कनी, की नहि । हुनकर शोधग्रंथकेँ नष्ट करबाक प्रयास सेहो ओ कर रहथि । मुदा असफल भेलाह । तथापि कालीकान्त छात्र देखलनि कारण जे किछु रहल होउ । मुदा आजुक घटनासँ कालीकान्त बहुत तमसलाह-

"की अछैत बाजि रहल छी? अहाँसँ एहन आशा नहि छल। ई सभ विद्वान लोकनिक हेतु अछि । व्यक्तिगत ईर्ष्या द्वेष प्रकट करबाक ई उपयुक्त स्थान नहि अछि । "

"कालीकान्तक टोकला सँ आन लोकसभ विरोध प्रकट करए लगलाह ।

'कालीकान्त सही कहि रहल छथि। हमरा लोकनिकेँ जयन्तक विद्वताकेँ आदर करबाक चाही । जयन्त काफी परिश्रमपूर्वक शोधग्रंथक रचना कएने अछि । अनेर विरोधी नहि करथि-ज्योतिषीजी ।'

ज्योतिषीजी लाजक कारण चुप रहलाह से बुझ नहि भेलाह आ मौका देखितहि विना ककरा किछु कहने ओहिठामसँ घसकि गेलाह । ज्योतिषीजीकेँ चलि गेलाक बाद सभाम हुनकासँ शान्ति भेल। लोककेँ नहि बुझाइक जे आखिर ई व्यक्ति के छथि आ एना किएक कहलाह? आब तँ ओ हेबाक छलैक से भऽ गेलैक, मुदा एहि कारण जखन तखन माहौलमे एकाएक तनाव उत्पन्न कए गेलैक । आचार्यजी ई बात बुझलथि । ओ कालीकान्तसँ मंत्रणा कए कार्यक्रमम कनीक परिवर्तन कएलथि ।

"आब किछु काल संगीत कार्यक्रम होएत। तकर बाद जलखै आ चाह पान कएल जाएत। शेष कार्यक्रम तकरबाद होएत।

कालीकान्तक दनबानक बात छलैक। एक सँ एक गवैया सभ आएल छलाह। कैकटा तँ निश्चायति गीत गेबामे माहिर रहथि। गीत गोविंद गायनक सेहो जानिआर छल। सभसँ पहिने गीत शुरू कलीह चंद्रिका-

"के पतिआ लए जाएत रे मोर प्रियतम पास....। आश्चर्य,वजाउ .....। लोकसभ एकस्वरमे वाह! वाह! कए उठलाह। जयन्त सेहो आश्चर्यचकित रहथि जे चंद्रिका मैथिलीमे एहेन सुंदर कोना गाबि रहल छथि। मुदा हुनका चंद्रिकाक बातमे कोनो बात बुझल रहनि? कालीकान्त चंद्रिकाक गायनपर लोकक थपड़ी सुनि,सुनि मंत्रमुग्ध रहथि। एकाहि झटकामे सौंस पंडाल निःशब्द भए गेल। जेना सभहक चित्त हरि लेल गेल हो। जयन्तक उत्सुकताक तँ अंत नहि रहनि। ओ ई नहि बुझि सकल रहथि जे चंद्रिका एतेक नीक गबैत छथि आ सेहो मैथिलीमे? एकबेर हुनका मोनमे शंका भेलनि जे कहीं ईहो मैथिल तँ नहि छथि? फेर भेलनि जे ई कोना भए सकैत अछि? कालीकान्त मिथिला की कतए गेलाह? मुदा मैथिली शब्दसभक एतेक शुद्ध आ स्पष्ट उच्चारणमे तँ किछु कहि रहल छल?

चंद्रिकाक संगीत समाप्त होइते पंडाल थपड़ीसँ गड़गड़ा उठल। सभ एतब कहए जे एकटा आओर,एकटा आओर...।

कालीकान्तक सीना गर्वसँ फूलि गेलनि। दर्शकक आग्रहपर चंद्रिका एकटा आओर मैथिली गीत गेनाइ शुरू कलथि-

सुनू,सुनू पनिहरनी गे कनी घूनिआक ताक........।"

ई ओही गँ मधूपजीक गीत गाबि रहल छथि। एकरा मैथिली गीतक एतेक सम्मान कतए भेलैक? जयन्त बनि-बनि सोचथि।

उपस्थित जनता गँ बूझू गीत सुनि-सुनि भावविभोर भए गेल छल।

पंडालमे आओर कलाकारसभ छलाह। मुदा सभ चंद्रिका, चंद्रिका चिचिआ रहल छल। आचार्यजी कहुना कए सम्हारलनि। तकरबाद एकटा आन गायककेँ सेहो मौका देल गेल। भोजनक समय भए गेल छल। अन्तू,सभगोटेकेँ भोजनगृहमे चलबाक आग्रह भेल।

"कालीकान्तक भोजनक हेतु बनल विशिष्ट प्रकोष्ठमे कालीकान्त, गौरी, चंद्रिका, जयन्त, आचार्यजी, नागबाबा आ किछु विद्वान लोकनि छलाह। जकरा देखू सएह चंद्रिकाक गायनक चर्चा कए रहल छलाह।

" हमरा नहि बूझल छल जे अहाँ मैथिली गीतसभ एतेक नीकसँ गाबि लैत छी।"-जयन्त कहलखिन।

"अखन अहाँकेँ बहुत किछु बूझबाक अछि।"-से कहि चंद्रिका जोरसँ हँसि देलखिन। कालीकान्त उपस्थित देखि रहल

छलाह। जयन्त लजा गेलाह। ताव गौरी सहटि कऽ जयन्त लग आबि गेलीह।

“चंद्रिकाक माटिक मिथिलम छैक।"

"ओ! से नहि बूझल छल। कोन गाम?"

“दरभंगासँ सटल "महियून।"

"ओ ई तँ हमरा बूझल नहि छल। तँ ने एतेक नीक मैथिली गीत गबैत छथि।"

"जाब जानकीधाममे रहलहुँ ताब पढ़ैमे लागल रही। तकर बाद अहाँ रहब नहि कहलहुँ तँ बूझबैक कोना?"

जयन्त बड़ असमंजसमे पड़ि गेल बुझाइत छलाह। आचार्यजी ई बात बूझलखिन। ओ बातकेँ बदलैत कहैत छथि-

"राजनक बाद कालीकान्तक राषध हवाक अछि। विद्वानसभ प्रतीक्षा कऽ रहल छथि।"

"ठीक छैक। हमरा लोकनि ओतहि चली।"-कालीकान्त बजलाह। आगू-आगू कालीकान्त आ पाछू-पाछू सरगोट सभ मंचक दिस विदा भेलाह।

बैसक हलसँ प्रांगण होइतहि कालीकान्त जयन्तक गुणगान करऽ लगलाह-

"ओना एहि दुनियाम एक सँ एक विद्वान छथि। मुदा एकरहिOाम ओकर गनल व्यक्तिगण गुण जे हमसभ जयन्तम देखैत छी से बहुत दुर्लभ अछि। निश्चय अहाँ अहाँक आशीर्वादक बिना संभव नहि अछि। जयन्त संस्कृतटाक विद्वान नहि छथि,अपितु एहिOाम नहेंत ओ कतेक देशी,विदेशी भाषाम महारत प्राप्त कयने छथि। विद्वान तँ अहाँ छथिहे संगे हिनकर व्यक्तित्वम त्याग,कर्तव्यक प्रति निष्ठा भरल अछि। ओ उच्च कोटिक गायक आ सिद्धहस्त ज्योतिषी सेहो छथि। एतेक कम समयम एतेक नाम गुण हासिल कएल लब अपना-आपम दृष्टांत अछि। तँ हमर इच्छा अछि जे जयन्तक हमरा ओहिOाम नाज-पाठ सम्हारथि। एहिसँ हमरा लोकनि हुनकर अनुग्रहित होएब।"

संकोचवश जयन्त किछु जवाब नहि दए पाबि रहल छथि। आचार्यजी हुनकर कानम किछु कहैत छथि। ओहो किछु जवाब देत छथिन। फेर आचार्यजी बजैत छथि-

" अहाँ पनम सौराठक वात हमरा लल आ हमर विद्यार्थी जयन्ताक लल अछि जे अपने हुनकर प्रतिभाक एतेक सम्मान करैत छिअनि। परंतु उचित होएत जे जयन्तकेँ विचारवाक हेतु किछु समय देल जाए "

कालीकान्तक मान छोट भए गेलनि। ओ आगू किछु नहि बजलाह। चारूकात मौन पसरि गेल।

"सएह कहू, एहन अवसरकेँ जयन्त गमा रहल छथि। आइसम लोकसभ गप्प कए रहल छथि।

"अपन सिद्धांतपर अटल रहएवला लोक लागि रहल छथि।"-रमेश बाजल।

"कयान छूटि गेल छनि, नहि तँ एहना काज कहाँ होइत अछि।"-गणेश बाजल। एहि तरहेँ तरह-तरहक बातसभ चारूकात होइत रहल। सभा विसर्जित भए गेल। जयन्त आचार्यजीक संग आगू बढ़लाह। चंद्रिका एकटक हुनका देखैत रहि गेलीह।

२१

कालीकान्त यतिनाथ सहित त्रिकूट भवन पहुँचलाह। हुनका गुमसुम देखि कए गौरी पूछैत छथि-"की बात छैक? बड उदास लागि रहल छी?"

"बात की रहैक? कतेक दिनसँ इच्छा छल जे चंद्रिकाक विआह कए दितहुँ। तहि हेतु जयन्त बड़ उपयुक्त व्यक्ति लागि रहल छथि। चंद्रिकाकेँ हुनका प्रति आकर्षण सेहो देखाइत अछि। ओही ध्यान हम हुनका नाम-काजमे लगाबए चाहलहुँ। मुदा ओ तँ एकदम बदलि गेल छथि। जहाँ एहि तरहक कोनो प्रस्ताव होइत अछि की तुरंत ओकर प्रतिवाद कए दैत छथि। एहन नहि

ओ सोच-विचार करबाक हेतु किछु समय लगाबथि। की करी किछु फुरा नहि रहल अछि।"

"एहिमे चिंता करबाक कोन बात भेलैक? जयन्त कोनो नेना नहि छथि ने? ओ परमविद्वान व्यक्ति छथि। सत्ते बउआ बात ठीक जे हुनका अपनेक राज-पाटक कोनो लोभ-लालच नहि छनि। तँ हुनका एहि गपहुँ तँ काबू नहि कएल जा सकैत अछि।"

"तखन की कएल जाए?"

"ओ कोना मूर्ख नहि छथि। अपनेक मोनक बातकेँ ताड़ि जाइत हेताह। हुनका मात्र प्रेमसँ जीतल जा सकैत अछि। तेँ हेतु चंद्रिकापर छोड़ि दिऔक। जँ ओकरा सिन्नूर दान पकड़ौक तँ काज भए जौक नहि तँ जे होनी। एहि लेल अपन माँगि खराब करब कोना बुद्धिमानी नहि होएत।"

"बात तँ ठीक कहि रहल छी। असलमे संतानक मोहमे लोक आन्हर भए जाइत अछि। सभकिछु बुझितो हम परेशान अही लेल भए रहल छी।"

"बैसाखमे ज्योतिषीजीक व्यवहारसँ जयन्त बड्ड दुखी रहथि।"-गौरी बजलीह।

"जाहि गपहुँ ओ बजलाह ककरा खराब लगितैक। हमहू बड्ड परेशान भए गेल रही। अपनेक पितिऔत छथि नहि तँ हम हुनका सभदिनक हेतु छुट्टी कए दितिअनि।"'

"कोना जरूरी छैक जे सरकारक तमसाहुँ जाहु। ओहिसँ तँ समस्या आओर विकट भए सकैत छौ। हमरा लोकनिकेँ ईहो जानबाक प्रयास करबाक चाही जे आखिर ओ एना करथि किएक? हुनका नीकसँ बुझल रहनि जे ओ जे किछु कए रहल छथि से यदिकदा नहि कएल जाएत,तथापि ओ एहन बजलाह आ बजैत नहि गेलाह।"

"हमरा लोकनिकेँ हुनकासँ गप्प करबाक चाही। आखिर बूझिऔक तँ जे हुनकर मानस की छलनि आ आगू ओ की चाहैत छथि। जँ हुनकर एहन विचार नहि भेल तखन हमरासभकेँ सोचए पड़ि सकैत अछि जे की करी?"

"ठीक कहलहुँ। हुनकासँ साफ-साफ गप्प करब जरूरी अछि।"

कालीकान्त शास्त्रीजीकेँ समाद पठओलखिन जे ओ तुरंत भेंट करथि। ओहि समय शास्त्रीजी किछुगोटेसँ गप्प कए रहल छलाह। कालीकान्तक समाद भेटैत ओ विदा भेलाह।

"बढ़िआँ होएत जे अहाँ हुनकासँ असगरमे गप्प करी।"-से कहि गौरी उठि गेलीह। ओ चौकठि धरि गेल रहथि की शास्त्रीजी भेटलखिन।

"हम तँ अहींसँ भेंट करए अबैत रही।"

"कालीकान्त अहाँक बाट ताकि रहल छथि। हम कनी जनुनी काजसँ जा रहल छी।"

"ठीक छैक।"

शास्त्रीजी कालीकान्त लग पहुँचि गेल रहथि। मुदा कालीकान्तक ध्यान कतहु आसन ठाम रहनि। कनी काल त' प्रतीक्षा कएलाह। ताकनबाद जखन ओ अपनाम नमल रहथि त' ओ टोकलखिन -

"हमरा बजओलहुँ।"

"ओ शास्त्रीजी! आउ, आउ।"

दुनु गोटे आमने-सामने बैसलाह। जलखै, चाह-पान आबि गेलैक।

चाह पीबैत गप्प-सप्प होअए लागल।

"हम त' नहि बुझि सकलहुँ जे ओहि दिन पुत्रक विवाहक समयमे अहाँ जयन्तक खिलाफ किएक भए गेलहुँ?"

"हम किछु बाजए नहि चाही। मुदा हमरा बाजए पड़त।"

"से की?"

"हुनकर ग्रंथम मौलिकता नहि अछि । ओ तँ एमहर-ओमहरसँ नकल कए लेने छथि आ कहैत छथि जे हुनकर ओ शोधग्रंथ छनि ।"

"मुदा अहाँक तँ ओ विषय नहि अछि । ओहिठाम एक सँ एक विद्वान बैसल छलाह । ओ सभ किछु नहि बजलाह, अपितु हुनकर काजक प्रशंसा करैत गेलाह, अहींकेँ की समस्या भए गेल जे एना भरल सभाम हुनका अपमानित कलिअनि ।"

"क्षमा कएल जाए । हमरा हुनका कोन मोकाबला अछि। ओ हमरा लग नेना छथि ।"

"तँ ने साबधान छल ।"

"जयन्त तँ हमर कुटुम्ब छथि । हम हुनकर अहित किएक करबनि। "

"मुदा अहाँक काज तँ गहन भेल ।"

"हमरा जे वाजिब बुझाएल से बजलहुँ । यदि अपनेकेँ खराब लागल तँ हम क्षमा प्रार्थी छी ।"

कालीकान्त गुम्म भऽ गेलाह ।

"ठीक छैक । अहाँ जा सकैत छी ।"

ज्योतिषीजी कालीकान्तक आज्ञा पाबि विदा भेलाह । मुदा कालीकान्तक मोनस बहिए गेलनि । ओ ठीके बात नीकसँ बुझि

गेलाह जे स्वामीजीक मोन शुद्ध नहि छनि। स्वामीजीसँ गप्प करबाक बाद कालीकान्त आश्रम दिस गेलाह जे ओ किछु जबरदस्त खेल खेला रहल छथि।

२८

नाहिटा मनुक्खक जिनगीमे कहियो नहि कोनो तरहक खेलसभ होइत रहैत अछि। की-की घटना-दुर्घटना होइत रहैत अछि। केहन-केहन काज लोक करैत रहैत अछि। ओकरा होइत रहैत ठीक जेना ओ अपन हो। जे किछु नीक अछि से हमर बखराम आबए। सभक हक हम मारि ली तँ कोनो हर्जा नहि। बस हम सुखी रही, आओर जे होइक से होइक। मनुक्खक एहेन स्वार्थी प्रवृत्ति सर्वनाशक होइत अछि। एही कारणसँ ई संसार एहन भेल जा रहल अछि जे जयन्त सन विद्वानकेँ अपन तीर-तावर छोड़बाक हेतु विवश कऽ देलक। ओ तँ समाजक सेवा हेतु गेल छलाह। ककरोसँ किछु लेब तँ हुनकर स्वभावमे छनिहे नहि। तथापि सुधाकरसन प्रचंडमूर्खसँ हुनका सामना भेलनि। तकरा की कहबैक-नियति, आओर की कहल जा सकैत अछि? कहबी छैक- "विधि वामक करनी कठिन, जेहिं मातु कीन्हि बावरी।

असगरमे बैसल जयन्तक हृदयमे रहि-रहि कऽ टीस उठि जाइत छनि। मातृभूमिक प्रति मोह कही वा कर्तव्यक भावना कही, हुनकर मोन बेरि-बेरि लखनपुर स्थित पाठशालायपर पहुँचि जाइत अछि। हुनका बिसरल नहि बिसराइत छनि ओ दृश्य

जखन दुपहर रातिमे कहुना कऽ सोझराएल लटकल ओहि चानक रातिमे सुधाकरक लठैतसभ पहुँचि गेल छल। कहि नहि ओ सभ की जुलुम करैत,मुदा धन कही ओतवानिटालक रखवारसभकेँ जे जागरण करि कऽ जयन्तक ओ हुनकर कृतिक रक्षा कएलक। आब जखन पुस्तकक निर्माण भऽ गेल,जयन्तक माथ हल्लुक लगैत छलनि। पुस्तकक मूलप्रति कालीकान्तक पुस्तकालयमे सुरक्षित राखि देल गेल छल। आब ओ एहि समस्यासँ तँ मुक्त छलाह। मुदा शास्त्रीजीक व्यवहार लऽ कऽ ओ बहुत दुखी रहथि। संवेदनशील स्वभावक लोक होएबाक कारण बेरि-बेरि हुनका एहि बातपर सोचाइत रहैत छनि। ई हुनका बूझल रहनि जे शास्त्रीजी मैथिल छथि। मुदा हुनका ई जानकारीमे नहि रहनि जे ओ गौरीक पितिऔत छलाह। होबो कोना करितनि? निरंतर अध्ययनमे लीन रहबाक कारण हुनका लगपासक बहुत कम जानकारी रहैत छलनि।

जयन्तकेँ अखनहुँ विश्वास नहि होइनि जे सुधाकर योजनाबद्ध तरीकासँ हुनकर पाछू पड़ल रहथि,सेहो एहि हद धरि जे जानकीधाममे लठैत पठा कऽ हुनकर शोधग्रंथक चोरी करबा देलाह। ई तँ संयोग रहैक जे बादमे ओ भेटि गेल। तखन जयन्तक माथा ठनकल रहनि जे ई लठैतसभक जेना कोनो आतंक अछि कारण पोथी चोरा कऽ चोर की करत? सोना-चानी होइतैक,टाका पैसा होइतैक तखन चोरी करितैक। मुदा हुनकर शोधग्रंथक पाछू कियैक पड़ि गेल? आब तँ हुनका बहुत किछु स्पष्ट भऽ गेल रहनि।

ज्योतिषीजी सुधाकरसँ मिलि कऽ षड्यंत्रसभ करैत रहैत छलाह। आश्चर्यक बात छैक जे सत्यः एकतलाक बादो कालीकान्त हुनका किछु नहि कहलखिन आ ओ अखनो कालीकान्तक कृपापात्र बनल छथि,त्रिकूट सदनमे रहैत छथि। मुदा से होइत किऐक नहि? ओ तँ आब सुधाकरकेँ बूझबामे अएलनि जे गौरीक ज्योतिषीजी पितिऔत छथि। अस्तु,जयन्त सशंकित रहऽ लगलाह।

साइत ओ अपन प्रयासमे सफल रहलथि। मुदा चंद्रिका लऽ कऽ बस मासकिलमे एते जाइत छलाह। हुन ओकरा तँ मनुक्ख छलाह। कोना याथन तँ रहथि नहि। चंद्रिकाक प्रति काल्हि-न -काल्हि हुनका मोनमे स्थान बनि गेल छलनि। कहथि तँ की कहथि? बहुत विकट समस्यासभ भेल जा रहल छल। हुन ओ अपन गाम चलि गेल छलाह। मुदा विधाताकेँ से मंजूर नहि भेलनि। मुदा आब की कएल जाए...? ई समस्या बनि-बनि हुनका परेसान करैत रहैत छलनि।

समय द्रुतगतिसँ भागि रहल छलैक। नान्हिटा किशोरसँ बढैत-बढैत जयन्त आब युवक भऽ गेल छलाह। तुलसीबाबा कहने रहथि-

" बरसहि जलद भूमि नियराय..जथा नवहि बुध विद्या पाए...!" कहबाक मान जे विद्या भेलासँ विद्वान विनम्र भऽ जाइत छथि, से जँ सत्यः देखबाक हो तँ जयन्त लग चलि जाउ। घमंडक तँ काल्हु लेश नहि छलनि हुनकामे। शांत, गंभीर आ चिंतनमे लीन

नहैत छलाह जयन्त । जहिना निर्लज्जताक वृद्धि, तहिना देखबामे सुंदर छलाह ओ । तेँ त चंद्रिका हुनका पछोड़ कने छलीह ।

असलमे जयन्त ओहिसभमे पड़ए नहि चाहैत छलाह । हुनकर मूल लक्ष्य तँ अपन मातृभूमिमे पूर्वजक स्थानपर बनल पाठशालाकेँ पुनर्जीवित करबाक छल । मुदा से आब होएत कोना? एमहर चंद्रिका, कालीकान्तक आकर्षक प्रस्ताव,तँ ओमहर छल गामक उजरल-उपटल पाठशाला जकर आब नामो-निसान मेटा रहल छल-की? हुनक पितिऔत सुधाकर । लोभक कारण सुधाकर सभकिछु बेचि गेल छलाह। कोना कुकर्म करए हुनु तैयार छलाह।

किंकर्त्तव्यविमूढ़ जयन्त नदीकातमे बैसल छलाह । मंद-मंद हवा बहि रहल छल । सूर्यास्तक समय छल । अस्ताचलगामी भगवान सूर्य अपन तेजकेँ समेटि रहल छलाह कि अचानक हुनका एकटा महिला नदीमे स्नान कए बाहर अबैत देखलथि ।

"ओह! तँ विह्वल लगैत छथि.....।“-जयन्त मोन-मोन सोचैत छथि ।

क्रमशः ओ महिला आओर लगीच अबैत गेलीह । जयन्त किछु बजितथि ताहिसँ पहिने ओएह चिचिआ उठलीह-

"जयन्त! ..जयन्त!"

अहाँ की....?"

सत्ते कहु, तूँ आब हमरा चिन्हैत नहि छैं न? हद भऽ गेल। हम छी शीला........."

अहाँ एहिठाम कोना?"-जयन्त बजैत छथि।

"नदीमे स्नान करऽ आएल रही।"

"ई मुदा तूँ नहैत कए छही?"-जयन्त पुछलखिन।

शीला चुप भऽ गेलीह। किछु नहि बाजि सकलीह। आँखि नोरसँ भरि गेलनि। जयन्तकेँ लगलनि जेना किछु गलती भऽ गेल। हुनकर ध्यान शीला दिस गेलनि। गोर-नार,नमगर,पैघ-पैघ आँखि, ,सांठल देह सब किछु अपूर्व छलैक शीलामे। शीला एखनो अत्यंत नमकीन लगैत छलीह। ई चूनी पहिरने छथि। माथमे सिंदूर करने छथि। छीटवला नूआ पहिरने छथि। कहक माने विआहल छथि,सधवा छथि तखन असगर किएक छथि? जयन्तक मनमे तरह-तरहक संशय उठि रहल छलनि कारण गाममे जखन ई शीलाक पुछारी करने छलाह तँ कोनो निश्चित जानकारी नहि दए सकलनि, आचार्योजी नहि। ई तँ शीलाक पिता वैदजीसँ पुछबा करने रहथिन। सब गुम पड़ि गेल रहनि। मुदा आइ अकस्मात सामने आबि एकटा पैघ प्रश्न ठाढ़ कए देलथि। जयन्तक ननाक संगी छलखिन शीला। एतेक दिनक बाद एहि हालमे हुनकासँ भेंट हेतनि से ई सोचिओ नहि सकैत छलाह।

जयन्तकेँ किछु पुछल नहि होनि आ शीला किछु बाजथि नहि । ओहि राति दुनू गोटे एक-दोसरकेँ एकटक देखैत रहि गेलथि। चौठी राति जयन्त पुछैत छथि -

"आइ-काल्हि कतए रहैत छही?"

लगैयासम ।"

"अपन पता द जाहिसँ कहिओ काल भेंट-घाँट भए सकैत।"

शीला अपन पता लिखा देलखिन।

"अबिते जरूर, बहुत रास गप्प करबाक अछि । "-से कहैत ओ आगू बढ़ि गेलीह । जयन्त एकटक हुनका देखैत रहि गेलाह। संयोग कहल होइत छैक । आइ कतेक सालक बाद शीलासँ अकस्मात भेंट भए रहल छलनि, ओहो नदीक कातमे । मुदा ओकर हाल की अछि,कोन परिस्थितिमे जीबि रहल अछि ,गाम-घर जाइत अछि कि नहि,से सभ जानबाक इच्छा रहनि मुदा ओतेक गप्प करबाक उपयुक्त परिस्थिति नहि छल । शीला चलि गेली,मुदा जयन्तक मोन हुनकापर टाङल रहि गेलनि ।

२९

विआहक बरस भऽ गेलाक बाद शीलाक पिता हुनका हेतु कथासभक पता लगबऽ लगलाह। इच्छा रहनि जे नीकठाम काज ठीक कऽ ली। कैकटा कथासभ अएबो करनि। मुदा शीला टरका दैत छलखिन।

"विआह कतहु भागल जाइत छैक,हम अखन पढ़ि रहल छी। पढ़ाइ-लिखाइसभ दिन नहि पार लगैत छैक। तँ पहिने ई काज कऽ ली।"- स सभ कहि ओ पिताक बातकेँ काटि दैत छलखिन। वैदजी शीलाकेँ बहुत मानैत छलखिन। तँ हुनकर इच्छाक खिलाफ जा कऽ विआह कऽ देब हुनका उचित नहि लगैत रहनि। एहि तरहेँ बहुत समय निकलि गेल। कहि नहि,शीलाक मोनमे की रहैक। मुदा जखन बहुत समय बीति गेल,शीला पढ़ाइ-लिखाइ सेहो कऽ ललनि तँ वैदजी शीलाक विआह लऽ कऽ बहुत चिंतित रहऽ लगलाह। गाम-घरमे शीलाक विआहमे भऽ रहल विलंब एकटा चर्चाक विषय भऽ गेल। गाम-बगामक लोक टोकारा दऽ दैत छल। शीला ई बात बुझलखिन। हुन ओ ओहन आदमीक बाट कतेक दिन धरि तकितथि जकर कोनो अता-पता हुनका लग नहि रहनि? जानि कऽ हुनकर विआह वैदजी ठीक कऽ देलखिन। बर दिल्लीमे कोनो नीक निजी कंपनीमे प्रबंधक छलथि। घरक स्थिति सेहो सुदृढ़ छलनि। गामक सुधाकर घटकैती कऽ रहल छलाह। बर आ ओकर परिवारक प्रति ओ वैदजीकेँ आश्वस्त कऽ देलखिन। वैदजीक प्रस्ताव ओ एकहि बेरमे मानि गेलाह। शीलाक विआह भऽ गेल। बरिआती -सरिआती सभ बहुत प्रसन्न रहथि। शीला चारिम दिनक बाद सासुर चलि गेलीह।

शीलाक चलि गेलाक बाद बैदजी बहुत उदास रहए लगलाह। असगर समय काटब मोसकिल होइत छलनि। रहि-रहि कए शीला मोन पड़ैत छलखिन। मुदा ओ एहि बातसँ संतुष्ट रहथि जे बेटी नीक ठाम गेलखिन। कोना पिताक हेतु एहिसँ बेसी खुसीक बात आओर की भए सकैत छैक? मोन-मोन ओ भगवानकेँ धन्यवाद दैत रहैत छलाह। मुदा हुनकर ई खुसीयो कहि नहि ककर नजरि लागि गेल। शीला सासुर जाइत महासंकटमे पड़ि गेलीह। ओतए जाइत पता लगैत छनि जे हुनकर वर तँ पहिनहिसँ बिआहल छथि। असलमे ओ दिल्लीमे पढ़ैत काल एकटा कालेजक सहपाठिनीक संग प्रेम बिआह कए लेने छलाह। ओ महिला विधर्मी छलि। जखन ई बात बनक पिताकेँ पता लगलनि तँ ओ अनसन कए देलाह। ओ बन माता-पिताक दबाबमे आबि कए शीला संग दोसर बिआह कए लेलाह। बिआह तँ भए गेल। मुदा हुनकर पहिल पत्नीक पतिनाक लोक हुनकापर आक्रमण कए देलक,जानसँ मारबाक धमकी देबए लागल। आब ओ करितथि की? पहिल पत्नीकेँ राखए पड़लनि। ई बात जखन शीलाकेँ पता लगलनि तँ ओ हुनका संग रहबाक हेतु किन्नहु तैयार नहि भेलीह। सदादिनक हेतु हुनका छोड़ि जानकीधाम ससुरक उनायर चलि गेलीह।

जयन्तकेँ शीलाक बानम ताक उत्सुकता भेलनि जे ओ एकदिन हुनकर घर पतायर पहुँचि गेलाह। हुनका देखितहि शीलाक प्रसन्नताक ठेकान नहि छलनि। दुनू गोटामे गप्प-सप्प होइत-होइत समय कोना बितल से नहि बुझि सकलाह। साँझ भए रहल

छल। शीलाक स्थिति-परिस्थितिसँ ओ बड्ड चिंतित भए गेलथि। मुदा कइए की सकैत छलाह?

"हमरा ओहि आदमीक संग एको घडी रहब संभव नहि बुझाएल। एहन धोखबाज, दुष्ट व्यक्ति संग जीवन बिताएब तँ बड्ड दुखक बात थिक।"

"तखन की भेलैक?"

"की होएत? हमर ससुर बड्ड प्रयास कएलाह जे हम मानि जाइ। मुदा हमरा हुनकापर विश्वास नहि भेल। जखन हुनकर बेटाक विआह भए गेल तखनि तँ दोसर विआह करबाक की औचित्य छल?"

"अहाँक ससुर के छथि आ ओ कतए रहैत छथि?"

"ओ कालीकान्तक ओहिठाम ज्योतिषीजीक नामसँ जानल जाइत छथि। अहींक पितिऔत सुधाकरक कुटुम्ब छथिन।"

"सएह कहू, ओ एहन काज कएलाह? हद भए गेल।"

"एहिमे सभटा दोख सुधाकरक छैक। ओएह हमर पिताकेँ फँसओलथि। हुनकर बातपर विश्वास कए ओ हमर विआह ठीक कए देलथि।"

"बड्ड अन्याय भेल अहाँ संग। एहि तरहेँ अहाँ कतेक दिन रहब?"

शीला कानए लगलीह। जयन्त केँ बहुत दुख भेलनि। मुदा कहुए की सकैत छलाह?"

"हम फेर आएब"-स कहि ओ विदा भेलाह।

जयन्त चौकठि लग पहुँचल हेताह कि शास्त्रीजी पाछूसँ टोकलाह।

जयन्त प्रयास केलाह जे कात-कात निकलि जाइ। मुदा से संभव नहि भेल। चौकठिसँ बाहर होइतहि दुनू गोटेक आमना-सामना भए गेलनि। जयन्तकेँ ओहिठामसँ निकलैत देखि शास्त्रीजी बाजि उठलाह।

"एहिठाम कोना अएलहुँ?"

"शीला हमर ननदक संगी छथि। संयोगसँ आइ नदीकातमे देखा गेलीह। बहुत दिनक बाद भेंट भेल तहुए ने जिज्ञासावश नहि रहल गेल। मुदा हुनका देखि कए बहुत कष्ट भेल। अहाँक नहैत एक अन्याय होएब बहुत दुखक बात थिक। अहाँ शीलाक जीवन बर्बाद कए देलिऐक। मानवताक नामपर अहाँ एकटा कलंक छी।"-जयन्त बजलाह।

"अहाँकेँ एहिसँ की मतलब? ई हमर पारिवारिक समस्या अछि आ हम एकर समाधानमे लागल छी।"

“आब की समाधान होएत। जखन अहाँक पुत्रक विआह पहिनसँ भेल छलनि तखन एहन अन्याय करबाक की औचित्य छल?"

"हमरासभकेँ ई बात नहि बुझल छल। बादमे पता लागल।"

"गलत बाजि रहल छी। अहाँकेँ सभबात नीकसँ बुझल छल।"

"अहाँ अनेरे एहि मामलामे टाँग अड़ा रहल छी।"

"एक आदमीक जिनगी नष्ट करबाक बादो अहाँ एना बाजि रहल छी। एतेक भारी अपराध अहाँक व्यक्तिगत समस्या कोना भऽ सकैत अछि?

कहि नहि सकैत शांत रहऽवला जयन्तकेँ अचानक एतेक तामस किएक भेलनि? संभवतः ओ शीलासंग कएल गेल अन्यायसँ पहिनसँ बहुत दुखी छलाह। संयोगवश ओ सामने आबि गेल रहथि आ हुनका लोकनिमे वाद-विवादक स्थिति बनि गेल छल। बात बढैत देखि शीला बाहर भेलीह। ओ जयन्तकेँ इसारा कऽ किछु कहऽ चाहथि। मुदा ओ अंठा कऽ आगू बढि गेलाह।

३०

पुस्तक विमोचनक समयमे श्रीनिधीजीक व्यवहारसँ कालीकान्त बहुत दुखी रहथि। कालीकान्त नहि बूझि सकलथि जे ओ एहना कऽ सकैत छथि, सेहो जयन्त सन विद्वानक संग। मुदा एहिमे ओ बहुत दिनसँ लागल रहथि। सुधाकर आ हुनक लोकसभसँ हुनकर पूरान संपर्क रहनि। सुधाकरकेँ शुरूएसँ ई प्रयास रहनि जे जयन्त गाम घूमि कऽ नहि आबथि। एहि हेतु ओ अपना दिसि प्रयासो कयलाह, मुदा से होइत नहि देखि पाछू-पाछूसँ जयन्तकेँ तंग करऽ लगलाह। एहिमे श्रीनिधीजी सेहो सुधाकरक संग भऽ गेल रहथि।

ओहि दिन शीलासँ भेंट कयलाक बाद श्रीनिधीजी संग जयन्तकेँ विवाद करैत देखि शीला बहुत चिन्तित भऽ गेल रहथि। श्रीनिधीजी ई शीलाकेँ पहिनेसँ बहुत तंग करैत छलाह। ओहि दिन ई हद भऽ गेल। जयन्तकेँ एहिठामसँ गेलाक बाद श्रीनिधीजी जे-से बाजऽ लगलाह। आब नहि कालीकान्तकेँ जा कऽ जयन्तक सिकाइत कऽ देलखिन। जाक नून-तेल लगा सकलाह से लगा कऽ बापकेँ बरगर करबाक चेष्टा कयलनि।

"जयन्त एहन काज नहि कऽ सकैत छथि। ओ विद्वान छथि, हुनकर विश्वविद्यालय हमरा लोकनिकेँ पूर्ण विश्वास अछि। हमरा ई अहाँक व्यवहारपर सक भऽ रहल अछि।"-कालीकान्त बजलाह।

"अहाँ स्वयं जयन्तसँ गप्प कऽ लिअ। हम अपनेकेँ गलत बात कियेक कहब? "

"अहाँ अखन जाउ। हम जयन्तसँ गप्प कएलाक बाद किछु कहि सकैत छी।-कालीकान्त बजलाह।

कालीकान्त जयन्तकेँ बजाओलखिन। जयन्त शीलाक ओहिठामसँ लौटि कऽ बहुत परेसान छलथि। हुनका अपन मान हानि ओ सभटा बात कालीकान्तकेँ जा कऽ कहलथि जाहिसँ शीलाक समस्याक किछु न्यायोचित समाधान होनि। ताबत कालीकान्तक बजाहटि आबि गेल। ओ सभ काज छोड़ि कालीकान्तसँ भेंट करए पहुँचि गेलाह।

कालीकान्तक ओहिठाम जयन्त पहुँचैत छथि। ओहि समय ओ असगर अपन बैसकीमे किछु चिंतित छलथि। जयन्तकेँ देखिते कालीकान्त बाजि उठलाह-

"आउ, आउ जयन्त! हम अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ।

"हम स्वयं अपनेसँ भेंट करए चाहैत छी।"

"की बात?"

"शास्त्रीजी बहुत अन्याय कएलाह।"

"की भेलैक?"

"हमर गामक शीला दिनकर पुत्री अछि। ओ नेनामे हमरा संग पढ़ैत छलि। संयोग एहन भेल जे बहुत दिनक बाद ओकरा हम धानक खेतमे देखलिऐक। ओकर परिस्थिति ठीक नहि बुझाएल। हम बहुत चिंतित भऽ गेलहुँ। मुदा ओ किछु बजब

नहि करए। तखन कहुना कए ओकर पता लएलहुँ। हम की जानि गेलिऐक जे ओ ज्योतिषीजीक पुत्र छथि आ हुनक संग रहैत छथि। हम हुनकर देल पतापर शीलाक ओहिठाम गेलहुँ। ओतए शीला अपनासँग भेल अन्यायक बात कहए लगलीह। हुनकर दशा देखि हम बहुत दुखी भए गेल रही। तावत ज्योतिषीजी पहुँचि गेलाह। हमरा ओतए देखि हुनका की भेलनि की नहि से तँ ओ जानथि। मुदा हमरा तँ बहुत तामस भेल। तथापि हम बहुत संयमसँ रहलहुँ। हम तँ एतबे पुछलिअनि जे ओ अपन विवाहित बेटाक दावाना विआह शीलाक संग किएक करओलाह जखन कि सभबात हुनकर जानकारीमे रहनि। बस एतबे बात भेलैक कि ओ हमरापर दुनिआभरिक तामस निकालए लगलाह। तब नहि तरह-तरहक धमकी सेहो देबए लगलाह। अहीं कहू जे एहिमे हमर की गलती अछि?"

"हम बात बूझि गेलिऐक। ज्योतिषी अछिए बदमास। हम तँ गौरीक कारणेँ चुप छी।"

"ऐँ! गौरी...."

"गौरीक पितौत छथिन ज्योतिषीजी। तँ मासकिल भए जाइत अछि। मुदा अहाँ चिंता नहि करू। हम हिनकर समाधान शीघ्र निकालब। लगैत अछि जे हिनकर समय हमरासभ लग पूरा भए गेल छनि।"

"हमरा स उद्देश्य नहि अछि । हम तँ एतबे चाहब जे शीलाक संग न्याय होनि । हुनकर पिता बहुत प्रतिष्ठित लोक छथि। तिनका संग ओ धोखा कयलनि । एकटा निर्दोष जिनगीकेँ नष्ट करबाक प्रयास कयलनि अछि । एकर समाधान तँ अपनहि करए सकब।"

कालीकान्त जयन्तक बातसँ बहुत प्रभावित भेलथि। जयन्त जएबाक उपक्रम कए रहल छलाह कि गौरी चंद्रिकाक संग आबि गेलखिन।

"एना कोना चलि जाएब जयन्त! किछु जलखै कए लिअ।" - गौरी बजलीह ।

"हम तँ अखन पूजा-पाठो नहि कएलहुँ अछि ।"

"सनेस यैह लिअ ।"

जयन्तकेँ देखितहि चंद्रिका बहुत प्रसन्न भए गेल छलथि । मुदा किछु बाजथि नहि। गौरीक संकेत पाबि ओ अपन हाथे सनेस बना कए जयन्तकेँ देलखिन । दुनू गोटय कनीकाल हँसी-ठठा भेल। फेर जयन्त चलि गेलाह ।

जयन्तक गेलाक बाद चंद्रिका बड़ीकालधरि त्रिकूट पर्वतक ऊपर जा कए हुनका देखैत रहि गेलीह । त्रिकूट पर्वतसँ निकलि कनी हटकी गेलाक बाद ओ पाछू तकैत छथि तँ चंद्रिकाकेँ हँसैत देखलाह।

ओम्हर जयन्त गेलाह आ एम्हर आशिषीजी बाजऽ लगलाह।

“हम अपन कँ कहऽ नहि चाहैत रही। मुदा अहाँ महान छी, हमरा लोकनिक कुटुम्ब छी, तँ अपनकँ नहि कहब तँ कहब ककरा?"

"बात की छैक?"

"जयन्त..."

"एतब ओ बाजल छलाह कि कालीकान्त क्रुद्ध भऽ गेलाह।

"अहाँ बहुत लंपट आदमी छी। आइ धरि हम कुटुंब बुझि कऽ अहाँक सरबाक अंठेर रहैत रहलहुँ। मुदा बात हदसँ बाहर भऽ रहल अछि।"

"हम नहि बुझि सकलहुँ। "

"भगल नहि करू। ओहि दिन पुस्तक विमोचनक कार्यक्रमम अहाँक ब्यवहारसँ हमसब बहुत दुखी छी। अहाँकँ बुझबाक चाही जे ओ कार्यक्रम हम स्वयं आयोजित कर रही, जयन्त तँ हमर बात मानि कऽ आबि गेल रहथि। ताब नहि...।"

कालीकान्तकँ बेसी तमसाइत देखि गौरी रोकलखिन -

"छोड़ू बितल बातक घमरथन कलासँ की लाभ। अखन की भेलैक जे अहाँ एतेक तमसा गेल छी?

"सुनैत छी जे शान्तिदीजी अपन पुतहु संग बड्ड अनुचित कयलनि।"

"से की?"

कालीकान्त शीलाक बाबत सभटा बात पत्नीकेँ कहलखिन।

" ई सत्य नहि अछि। "

"तँ की सत्य अछि?"

"हमरासभकेँ सभ बात नहि बुझल छल। आब सुनल नहियैक जे कारण कनी-मनी छैक।"

"अहाँकेँ सभटा बात बुझल नहि,तेँ अहाँ अपन बेटाक दोसर विआह शीलाक संग करओलहुँ। ई तँ बड्ड अनुचित भेल।"

"जे भेल,से भेल। मुदा आब किछु करू जाहिसँ शीलाक संग न्याय होनि नहि तँ हम न्याय करब।"-कालीकान्त पत्नी कहलखिन। "

"आब हमरासभकेँ शान्तिदीजीसँ हुनाक भए जबाबक चाही। हिनकर चलते हमहूसभ अपयशक भागी भए गेल छी।"

"मुदा ओ तँ संबंधी छथि। तकर की करबैक?"

"ई छथि, मुदा हम आब हुनका अपन राजकाजमे सामिल नहि राखि सकैत छी। बढ़िआँ होएत ई ओ अपन ओना सदा हुनाक राखथि।"

"ओना तँ तुरंत नहि बदलल जा सकैत अछि, तहि हनु हिनका किछु पलखति दिऔन। आगू अहाँक मर्जी।" एहि घटनाक बाद कालीकान्त आ हुनक पत्नीमे एहि तरहेँ आपसी चर्चा भेल। ज्योतिषीजीकेँ सभटा बात कहि देल गेलनि। ओ की बजितथि? तथापि हुनकर ओना तत्काल ठामहि नरुए देल गेलनि।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्रिआ थाढ़ी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), प्रथम मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. सैनिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. प्रसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास)

१४.ऊँचाइ थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.यात्रा(संस्मरण) १७.हम आबि गेल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक प्रलाप(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि गेल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.नाथ मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि गेल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.हीय जरैत रहैत (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.५.कुमार मनोज कश्यप-पुस्तकावलोकन



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

दृश्यावलोकन

गर्मी बढ़िते भूमि जल क स्तर नीचा आ स्तर नीचे पानिक विकट संकट! पोखरि-झाखरि सभ सऽ सुखा गेल.... सुखायल! .... नाला-नाल क जान आफत म! चापा-कल म पानिये नहिं अबैत! जाहि कामा-कामा चापा-कल म यन्त्र लागि बिजली बाद करी-मनी पानि खसै टकना लऽग लोक जगनना कऽ कऽ पानि लेल पँतियानी लगैत छैक। ओहि पँतियानी, झगड़ा-झंझट, धक्का-मुक्की होइत्ती जखन कहियो टेंकर अबै तखन। करोड़ टाकाक लागत सऽ सरकारक नल-जल योजना क तऽ आब स्थानशेष कागज़-कागज़ रहि गेल.... पानि तऽ सेहो रऽ कऽ कहियो अबै नै! लोकक समझ जलक व्यवस्था सब सऽ भारी समस्या आ तें सगरनि चर्चा क विषय केवल आ केवल पानिक समस्या.... कानक सऽ निदान नक सबक अपन-अपन मत...... किछु सुनल, किछु पढ़ल, किछु कल्पना क उड़ान.... मुदा वस मनलग्गु!

" रौ हमरा सबक पितामह पेघ-पेघ पोखरि क अथाह पानिक उपयोग करैत छलाह। हमर पिता क समय पोखरि सऽ सिमटि लोक इनार पर आबि गेल। हमरा सब आन सिकुड़ि चापा-कल पर आबि गेलहुँ। नवतुरिया सब बोतल-बंद पानि क उपयोग करैत अछि। शनैः शनैः यदि एहिना ह्रास होइत्तै रहलै तऽ अगिला

पीढ़ी के कैप्सूल टा मे जल भेटतै... आ हमरा सभ तैयो नहिं चेतलहुँ तऽ तकरा बाद नाम टा मे पानि भेटत..!" बजैत-बजैत कक्का के स्वर भहरा गेलनि.... लोक सभ अवाक् छल।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाईप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१८)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँs सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- १८)

पूर्व कथा:

लक्ष्मी स्वयंवर नाटिका क मध्य मे रत्ना मुनि कर श्राप उर्वशी के छुटलनि,जाहि मे पुरूरवा स्वयमेव सम्मिलित भs गेलथि । उपस्थित दर्शक वर्ग मे किनको ई बात ज्ञात नहि भs सकलनि । पुरूरवा उर्वशी क प्रेम मे विकल भs स्वर्ग लोक मे भ्रमण करैत संतान वृक्ष क नीचाँ साव पूर्ण मुद्रा मे बैसल रहथि ।

आव आगु:

उर्वशी क प्रम ह्रदय मं वसौन पुनुनवा संंान नृक्ष क नीचाँ निष्कल-निकल रहय हुनक मनक कनो प्रम निदग्ध रहल छलाह । जखनि अगहु हुनका शांति नहि रहलौन्ह,ाखन आ आगह सs उठि कs एक दिशि प्रस्थान कलथि ।

चलो चलो आ एकटा सनातन क निकट पहुंचि गेलथि । सनातन क कान मं पारिजात नृक्ष मं खिलल पुष्प अपन सुंदरता पन गर्वान्नि छल । एक पुष्प क ाेड़न कs नाजा अपन हाथ मं लs ललथि। आ अपन मानहि मन सावs लगलाह -

"ई नेह पुष्प अछि जकना धानण कननिहान क सम्पूर्ण मनाकामना पूर्ण हाइाा अछि। एखनि हम एकना धानण कएन छी। एकना धानण कएन हम उर्वशी क कामना कs नहल छी। की एकना धानण कएल मं हमना उर्वशी संs रहंट रहs सका ? अथवा ई सव जनश्रुाि मात्र अछि ? हँ! हँ ! अनथ ई सरह वाा मात्र कल्पना पन आधानिा हायाा ! नहि! एहन कानु गुण एहि पुष्प मं नहि हायाा ! पदि ई पुष्प ाहन गुण युक्त हाइाा ाs ईश्च एकना धानण कs दानव पन विजय नहि प्राप्त कs सको छलथि ? नहि!नहि!!ई सरह किंव दंाी मात्र अछि "!

सनातन क निकटस्थ चवुाना पन वैसि गेलाह नाजा। पुन :पारिजाा पुष्प क ाेड़-ाेड़ कन आकन पंखुाि क एम्हन-आम्हन छींट लगलाह। ाखन हुनका एक अपूर्व मधुन स्वन सुनाई पड़लनि -

"किनका हृदय नुपी पुष्प क एहि प्रकानं नहि ाेड़नाक चाही नाजन्! एना कहुँ क आकांक्षा क ाेड़ कs मसलनाई ध्यान पाय अछि!"

ई मधुन कर्णप्रिय स्वन लहनी सुनि नाजा चिहुँकि उठलाह।

"उर्वशी अहाँ कतऽ नुकायल छी,आब आबि जाउ प्रिय" - थरथराइत स्वर निकसलनि राजा क मुख सँ।

उर्वशी गंभीर मुद्रा मे राजा क निकट समुपस्थित भऽ गेलीह। राजा क संकेत पाबि ओ हुनक निकट चबूतरा पर बैसि गेलथि।

"कतेक आकांक्षा छल अहाँक दर्शन के। आइ हमर मनकामना पूर्ण भेल"।

"हँ राजन् ,अहाँक मनकामना तऽ पूर्ण भेल। मुदा हमर कामना कथि अछि, की अहाँ इ नहि पुछब "?

आश्चर्यचकित सन राजा पुनः उर्वशी क सौंदर्य क अपलक निरखैत रहलाह। पुनः किछु क्षण थमि कऽ अत्यंत मधुर स्वर मे पुछलथि -

"की मन कामना अछि अहाँ क "?

"हमर मनकामना अछि अहाँ क प्राप्त करबा के। हम अहाँ सँ दूर नहि रहि सकैत छी राजन्"।

"काश इ संभव भऽ पबैत ! तखन तऽ हम - हम त अपना क सौभाग्यशाली बुझितहुँ। हम कृत-कृत्य भऽ जइतहुँ "।

" अहाँ एना किएक बजैत छी ? इ किएक नहि भऽ सकैत अछि"?

"हम शासक सभा क बंधन मे जकड़ल एकटा परतंत्र पक्षी थिकहुँ। हम स्वतंत्र कहाँ जे अहाँ क प्रेम क अपना सकी"?

"लेकिन अहाँ नहि तऽ कहइत.... परन्तु इ तऽ निश्चित हायत । अहाँ क हमर प्रेम क समझ सकहि पड़त"।

"अहाँ एक निश्वास सँ इ बात काना कहि रहल छी ? इन्द्र एहि बात क स्वीकार कऽ लेताह "?

"इन्द्र मानथि अथवा नहि मानथि,परिस्थिति एहन अवश्य बनत कि

अहाँ क हमर नमस्कार कहि देत"।
"भला ई कोना कऽ संभव होयत "?
"अहाँ एतेक जल्दी भरत मुनि क श्राप बिसरि गेलहुँ ? हम अहाँ क लक्ष्मी स्वयंवर नाटिका क समापन क बाद अहाँ सऽ भेल अपन प्रथम भेंट मे बतौने छलहुँ ऋषिवर भरतमुनि क श्राप क विषय मे! हम अहाँ सऽ कनको मिथ्या नहि कहने छलहुँ राजन्! हमरा अहाँ दिसि आकर्षित एवं नाटिका सऽ ध्यान विमुख भेल देखि कऽ ओ हमरा श्राप देऽ देने रहथि। ओ श्राप तऽ हमरा देने रहथि राजन् ,मुदा ओहि श्राप मे सम्मिलित तऽ अहाँ पर्यन्त भऽ गेलहुँ। हुनक श्राप कुना परिस्थिति मे विफल नहि भऽ सकैत अछि । ओहि श्राप क फलित होयबा क लेल हमरा सए क उनसठ वर्ष धरि संग-संग तऽ रहऽ पड़त कि नहि? ताहि सऽ हम कहलहुँ एहन परिस्थिति अवश्य बनत राजन् जखन अपन सबहक मिलन अवश्य होयत। सब कही तऽ महर्षि भरतमुनि अपना सब पर उपकार कयलनि ई श्राप दऽ कऽ। परंतु हम श्राप क दूसर पक्ष सऽ भयभीत छी "।
"भला ओ कथि अछि"?
"अहाँ ओहो सए बिसरि गेलहुँ? ओ अहाँ क विरहाग्नि मे तपै क श्राप देलथि"? ओ श्राप तऽ हमरा देने रहथि,हमर प्रेमी क विरहाग्नि मे तपै क रहैक ओ श्राप!मुदा हमर प्रेमी तऽ अहीं थिकहुँ राजन्! ताहि कारण ओहि श्रापक अधिकारी पराऊ स्वयं अहाँ भय गेलहुँ। "
ओह हँ,याद आयल । अहाँ ई बात बतयने छलहुँ। मुदा ई असंभव अछि। प्रथम बात अपन मिलन भनाई असंभव थिक ।

ओहन परिस्थिति मे हुनक आयक दोसर अंश कोना कऽ पूरा होयत से कहू"!
उर्वशी किछु क्षण मौन रहली। पुरूरवा ओहि मौन के तोड़लथि -
"अहाँ के नींद आबि जाइत अछि उर्वशी"?
" अहाँ के नहि अबैत अछि"?
"हम राजा भेलहुँ कि हमर नींद पर्यन्त अन्य लोकक समान हमरा सऽ उड़ाय लागल अछि"।
"अहाँ के हमर याद नहि अबैतअछि"?
"अहाँ हमर परीक्षा लऽ रहल छी"?
"नहि राजन् हम भला अहाँ के परीक्षा कोना कऽ लऽ सकैत छी? मुदा अहाँक निश्चिंतता हमर मोन मे अहाँ के प्रति आशंका उत्पन्न कऽ रहल अछि। कहिया हमरा सऽ भेंट करबाक कनियों प्रयास नहि भेल अहाँ के दिशि सँऽ। आ हम - हम त जखनि-जखनि हृदयक वेदना सँऽ विवश भेलहुँ अहाँ के विरह मे तखनि-तखनि विक्षिप्त समान दौड़ पड़लहुँ अहाँ सँऽ मिलन के लेल, आ चलि अयलहुँ अहाँ के निकट"।
"अहाँ यदि राजा होइतहुँ तखनि हमर विवशताबुझि सकितहुँ"।
"हम आब राजा होमय सऽ तऽ रहलहुँ। हँ यदि अहाँ चाहब तऽ रानी बनि सकैत छी "।
"हमर हार्दिक अभिलाषा अछि ँ अहाँ के अपन रानी बना ली। हमर हृदय के रानी तऽ अहाँ ओहि क्षण भऽ गेलहुँ जखन अहाँक आँगुरीक प्रथम स्पर्श भेल छल हमर ललाट पर,आ हमर आँखि अहाँक सुंदरता मे डुबि गेल छल"।
"तखन अहाँ के विवशता कहुन"?

ओ सभ तँ हम आहाँ के पूर्वहि मे बता चुकल छी। स्वर्गक अर्धासन आहाँ सँ हमर मिलन के मार्ग मे बाधक अछि। लेकिन हम बेसी दिन बाधा नहि बनऽ देब स्वर्गक अर्धासन के। हम जखन आहाँ के प्रेम मे अपना के अत्यधिक विवश अनुभव करऽ लागब,आहाँ के वियोग मे जीवन हमरा व्यर्थ बुझाए लागत,तखन हम स्वर्ग के अर्धासन के ठोकर मारि आहाँ के अपन रानी बना पृथ्वी पर लऽ आयब"।

"हँ!आब हम आहाँ के विवशता बूझि गेल छी राजन्! स्वर्गक शासन के दायित्व एतेक कम समय मे छोड़ि देमय पर हमर सभ के अपार बदनामी भऽ जाएत। संगहि तखनि तँ हमरा पति रूप मे स्वीकार करला पर ऋषि आहाँक दुश्मन बनि जेताह। उपहार के रूप मे हमरा ओ आहाँ के तँ नहि देताह"। मननशील मानव आ अमर अप्सरा के मिलन त्रिलोक मे कओ पसिन्न नहीं करत"।

"हम आहाँ के प्रेम मे पागल भेल जा रहल छी उर्वशी,आ अहूँ तँ हमर प्रेम प्राप्ति के अभिलाषा रखैत छी " - मधुर मुस्की के संग कहलथि राजा पुरुरवा ।

"हँ राजन् हमरा सभ के एक-दूसर सँ वास्तविक दिव्य प्रेम भऽ गेल अछि अछि । सच्चा प्रेम प्रथम दृष्टि मे भऽ जाइत अछि"।

"हँ ! उर्वशी! आहाँ सत्य कहलहुँ, वास्तव मे कहू तँ प्रेम हृदय के बंधन थिक सभ प्रकार के वासना सँ अलग। प्रेम जाति,धर्म अथवा ऊँच-नीच के बंधन के नहि मानैत अछि । वासना शारीरिक मिलन केर नाम थिक,मुदा प्रेम हृदय के मिलन अछि"।

" आब चलबाक बेरी" - किछु बनि तक मौन नहि किछु सोचैत रहली उर्वशी, तदुपरांत उठबाक प्रयास करैत ओ राजा सँ कहलथि

l

"नहि प्रिय किछु दनी गक आगा वैसु न ! अखनि गs प्रिय हम आहाँ क यूर्ध नुय दख गक नहि ययलहुँ अछि"l

"ठीक वाग ठैक नाजन्! हमना किछु दनी गक आगा वैसs मं कूनु दिक्का नहि,हम गs आहाँ क लल सावेग ठलहुँ"l

"नहि हमना कूनु जल्दी नहि अछि"l

किछु वनि गक मौन नहि किछु सावेग नहलथि दूनु, हन उर्वशी ओहि मौन क रंग कनेग वाजि उथलथि-

"आहाँ क स्माग अछि कि हम आहाँ सs कहिया सँ प्रम कs नहल ठी "?

"हँ,शायद ओहि दिन सँs जाहि दिन सँs हम आहाँक स्थायना अयन हृदय मं कs ललहुँ"l

"नहि हम गs आहाँ क ओहि दिन सँs यहिल...वहुग यहिल सँs प्रम कs नहल ठी"l

"स कूना ? हमन आ आहाँ क साक्षाक्तान गs ओहि दिन हल ठल यहिल वन "?

""नहि हम गs आहाँ क ओहि दिन सँs यहिल दख चूकल ठलहुँ। जाहि दिन आहाँ स्वर्ग यहुँचल नही। मुदा प्रम गs ओहि दिन सँs यूर्वहि सs हs गल ठल आहाँ सँs,जखनि ओक दिन नानद ऋषि आहाँ क प्रशंसा दव सरा मं दवहु सँs कओन ठलखिन "।

"ओह उर्वशी आहाँ गs चान निकललहुँ "!

"चान हम नहि,चान गs आहाँ थिकहुँ। यहिल गs हमन हृदय अहीं चानी कओन नही "।

"उर्वशी हमन हृदय चाहैग अछि कि आहाँ अहिना हमन समझ

वैसल नहि ,आ हम आहाँ क देखैत नहि "।

"एला कखनि गेल" - विहुँसइत उर्वशी पुछलथि।

"जखनि गेल हमर सांसक डोरि शरीर सँऽ बंधाएल नहए -तखनि गेल"।

"काश ! ई सम्भव हऽ सकैत! यदि ईश्वर हमरा सँऽ एखनि कोनो वरदान मांगैक लेल कहथि,तऽ हम आहाँ क कल्प पर्यंत अपन समक्ष देखैत रहबाक वरदान मांगि लितहुँ "।

"आहाँ बहुत चतुर छी उर्वशी"।

"आहाँ सऽ कम छी हम, देखू आहाँ कोना चोरी-चोरी हमर हाथ क चुम्बन लऽ ललहुँ"।

"उर्वशी हम एहि कमल पंखुडी क रसास्वादन कऽ सकैत छी"?

"नहि-नहि! आहाँक अभिलाषा एहि तरहें बढल जाएत " - उर्वशी प्रतिवाद कलथि, मुदा पुरूरवा उर्वशी क अधर क चुम्बन लऽ ललथि । लज्जा सऽ उर्वशी क मुख-मंडल आरक्त हऽ गेल । ओ कृत्रिम क्रोध प्रगट करैत बाजि उठलथि -

"ओह तऽ आहाँ एहि कारणे सँऽ हमरा किछु देरी आर वैसऽ क आग्रह करलहुँ"?

"नहि हमर अभिलाषा तऽ मात्र आहाँ क देखैत रहबाक छल,जाहि कारणे सऽ हम ठहरल छलहुँ,मुदा आहाँक अप्रतिम सौंदर्य हमर हृदय क एहि धृष्टताक आग्रह प्रेरित कऽ देलक । यदि आहाँ क दु:ख पहुँचल तऽ हम क्षमा चाहैत आहाँ सँऽ"।

घबडा कऽ तडप हएल स्वर मं जल्दी सऽ उर्वशी बाजि उठलीह -

"नहि-नहि राजन्! हम तऽ अपना क आहाँक प्रति समर्पित कऽ चुकलहुँ, बहुत पहि नहि । ओ...ओ....ओ... तऽ... हम हंसी करैत

छलहुँ "।
अपन प्रति उर्वशीक व्यवहार अपनापन मे घुलल प्रतीत होइत छल। किछु काल धरि गंभीर रहला उपरान्त पुरुरवा कहलथि - ' आब हम चलि जाएब प्रिय"।
"एतेक शीघ्र"?
"हँ,हमरा ओ ठाम आ पृथ्वी दुनू क शासन व्यवस्था सम्हारबाक अछि। अहिठाम ओ देवराज छथि, पृथ्वी क व्यवस्था हमरा स्वयं देखए क होयत"।
"किछु दिन आर रहि जइतहुँ, अहाँ बिन हमर हृदय व्यग्र रहत"।
"आब एखन रहनाइ ओ संभव नहि अछि प्रिय । हँ,जखन हम अहाँ क प्रेम मे अपना क बहुत अधिक विवश अनुभव करब। अहाँ बिन हमर हृदय व्यग्र भ' जाएत, हमर हृदय अहाँ क विरह सहन नहि क' पाओत ,अहाँ क विरह-ज्वाला हमरा विदग्ध कर' लागत तखन स्वर्ग लोक मे चलि आएब अहाँ क दर्शन स' अपन हृदय क ज्वाला शांत करबा लेल "।
"आ हमर हृदय क ज्वाला क की होयत!"
उर्वशी क आँखि । मे अश्रु झिलमिला उठलनि। किछु बुन्द दुनू कपोल पर ढरकि होंठ धरि गेलनि। कनला स' कानी भेल स्वर मे ओ कहलथि -
"तखन एक हम कोना क' अपन हृदय क ज्वाला शांत करब नाथ्"?
पुरुरवा अपन एक हाथक गली स' अंगुठी उतारि उर्वशी क कोमल कमल कर क पकड़लथि आ हुनका उंगली मे पहिरा देलथि -

"एकरा देखि-देखि आहाँ अपन ज्वाला शांत करब प्रिय"।
उर्वशी रोमांचित मे पुरुरवा के बाँहि सऽ लागि हुनका आलिंगनबद्ध कऽ लेलथि। पुरुरवा दाहिन हाथ सँ उर्वशी के पीठ पर धीरे-धीरे थपकी देमऽ लगलाह। किछु काल धरि दुनू ओहि मुद्रा मे स्थिर रहलथि। दुनू के रोम रोमांचित देखि एना बुझाइत छल जेना दुनू दिशि लागल आगि शीतल भऽ गेल हुअए। दुनू के मुख पर असीम शांति व्याप्त भऽ गेलछलनि। आँखि मे संतुष्टि के भाव भरलनि आ पलक स्वमेव मूँदा गेलनि। किछु क्षण बाद मधुर स्वप्न के भंग करैत उर्वशी कहलथि - "आब अपना सभ के चलबाक चाही राजन्"।
"ठीक छैक! हमहूँ इएह सोचैत रही"।
ओतऽ सँ उठि गेलथि दुनू। पुन दुनू एक दोसर के हाथ मे हाथ थामि चलि देलथि। अमरावती मे पहुँचि के दुनू अलग-अलग दिशा मे मुड़ि गेलथि। मुदा विदा होअऽ सऽ पूर्व राजा उर्वशी के दुनू हाथक मधुर चुंबन,आ पृथ्वी सऽ पुरुरवा के शीघ्र वापस आबै के वचन उर्वशी लऽ चुकल रहथि।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१.प्रधान मा-सौकाली मूर्गा (लघु व्यंग्य)



प्रवीन झा

शेफाली मुर्गी (लघु कथा)

मुर्गी क एकटा गाम म बिलाड़ि क आतंक बढ़ि गेल छल। गामक मुखिया मुर्गी सब क बन-बन ए समस्या स छुटकारा क आश्वासन दैत छलाह मुदा अन्ततः यहन म बिलाड़ि क आतंक क खबरि छपाइत रहैत छल।

ए सब स उबिया चुकल मुर्गी सब अंततः मुखिया बदलवा क निर्णय लेलक आ एकटा शेफाली मुर्गी क अपन मुखिया चुनलक। सब क ई उम्मीद छल ज ई शेफाली मुर्गी बिलाड़ि क आतंक क समाप्त क देत।

नवका मुखिया मुर्गी सब क बीच बिलाड़ि क आतंक समाप्त कर' लेल अजीब-अजीब निर्णय लेब' लागल। मुदा ओकर सूखद परिणाम कम देखाइ आ मुर्गी सब क किछ न किछ नया आफत स साक्षात्कार ह जाय, किएक कि निर्णय सब क आधार ज्ञान आ शोध कम, अनुभूति, जिद्द आ लोकलुभावनवाद बसिआइ छल। मुदा गेया

मूर्गा खुश छल, किएकि रौकाली मूर्गा मूर्गा सब क बिलाड़ि क आतंक स बचबाक एकटा गुड़ गुरुमंत्र द देन छल।

ओ अपन प्रचारतंत्र क माध्यम स सबटा मूर्गा क ई बता देन छल ज कोनो ज कानो बिलाड़ि क गंध लागतो त सब अपन आंखि, नाक मूंदि लीहं, बिलाड़ि अपन मान त्यागि जेतो। आब सब मूर्गा एहिना कर' लागल छल। ए बीच बिलाड़ि चुपचाप आवइ आ कोनो मूर्गा क अपन शिकार बना लेत। किएकि मूर्गा क आबादी एतेक छल कि बिलाड़ि क ई गुपचुप खेल क पता ककरो नइ लागइ। किछ मूर्गा शक करय आ जांच क मांग करइ त रौकाली मूर्गा क गुर्गा क द्वारा ओय मूर्गा सब क समाज विरोधी घोषित क क चुप करा देल जाय छल।

ए तरह कालचक्र अनवरत चलि रहल छल। लागय छल जेना बिलाड़ि सब क शिकार होनाइ मूर्गा सब क नियति बनि गेल छल।

नोट: मूर्गा- आम नागरिक, बिलाड़ि - भ्रष्टाचार /घोटाला

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-अमर क्रांति शहीद रामफल मंडल: जीवन वृत/ कमीना निह्वान



आचार्य रामानंद मंडल

अगस्त क्रांति शहीद रामफल मंडल: जीवन वृत/ कमीना निड्डान

१

अगस्त क्रांति शहीद रामफल मंडल:जीवन वृत

बिहार म अगस्त क्रांति अंतर्गत फांसी पर लटक वाला सात शहीद म एकटा आ मिथिला अन्तर्गत जिला सीतामढ़ी क पहिला शहीद रामफल मंडल रहथिन।

महान् क्रान्तिकारी अमर शहीद रामफल मंडल 06 अगस्त 1924 क सीतामढ़ी जिला क बाजपट्टी थाना क मधुरापुर गांव म धनुवंशी धानुक कुल म पिता गोखुल मंडल आ माता गरबी देवी क पुत्र रत्न क रूप म पैदा भयल रह। रामफल मंडल चारि भाइ म तेसर रहथिन। पहिला रामशरण मंडल, दोसर मंहथ मंडल आ चौथम मिश्री मंडल रह। सब भाइ कृषी खल आ किसानी कर। माल-जाल पास क आ वाकर खरीद-बेच करक अपन आमदनी बढ़ाबत रह। हुनकर बाबूजी गांव म एकटा किराना क दोकान चलबैत रहथिन। वा 14 बरख क उमर म मिडिल पास कर गेल रहथिन। पहलवानी क चलत हुनकर देह कसल रह। 5'5"क गोर देह, चमकैत आंखि, भव्य लिलार आ ऊँ0या कट सहजे मन मोह वाला रह। बहुत हंसमुख, सौम्य, मृदुभाषी, साहसी आ जाबदार

छल। 17बरख क उमर म सीतामढ़ी जिला क पुपरीसैदपुर थाना हरीगैन गंगवाना निवासी अमीन मंडल क बेटी जगपतिया देवी स विआह भेल छल।वो धार्मिक आ दयालु महिला छलथिन।विआह क एक बरिस बाद 15सितम्बर 1942क दिन हुनका एकटा पुत्र रत्न भेल छल जे नामहल मंडल जहल म छथि।

अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन सर्वसम्मति सं गांधी जी क अगुआई आ अब्दुल कलाम आजाद क सभापतित्व म 08अगस्त1942 क एकटा प्रस्ताव पास कैलन छल जे समूचा देश म भारत छोड़ो आन्दोलन वा अगस्त क्रांति क नाम स जानल जाय छैय। जे इतिहास क पन्ना म स्वर्णाक्षित छैय।

अगस्त क्रांति क ज्वाला क लपट पूरा हिंदुस्तान क अपना आगोश म ल ल छलैय। मधुबापुर क युवक विश्वनाथ प्रसाद गांव म एकटा सभा कैलकआ आजादी क लड़ाई लड़ै लेल नामहल मंडल क नेतृत्व म एकटा युवा दल क स्थापना कैलन। हरिहर प्रसाद, कपिल देव सिंह, शत्रुघ्न सिंह,सूर्यनन्दन सिंह,श्री कृष्ण प्रसाद,रामप्रीत साह,फूलबाबी मंडल, सहजानंद शर्मा, गुननन्दन राय आ जनार्दन झा आदि अई युवा दल क सदस्य छलथिन। ऐ समय क पुपरी थाना क दरोगा अर्जुन सिंह क अत्याचार आ अनाचार स थाना क जनता तबाह छल। अईस जनता बौखला गेल छल।

19अगस्त1942क दिन अंग्रेजी सिपाही खादी भंडार,बाबा नरसिंह दास,रामनंदन सिंह आ मोहन सिंह क घर जला देलक। पता चलल कि24अगस्त1942क दिन उत्पात मचाव आततायी दरोगा अर्जुन सिंह बाजपट्टी आब वाला छैथ। आंदोलनकारी लोग गुप्त मिटींग बनगांव म कैलन आ वीर रामफल क नेतृत्व म गठित दल क गद्दार दरोगा। अर्जुन सिंह क देश क आजादी क राह स हटाब क शपथ ल लेलन। बैठक म बाबा नरसिंह दास, सकलदेव कुंवर,रामवृक्षाबन ठाकुर,हरिहर प्रसाद, विश्वनी प्रसाद आ वीर रामफल मंडल आदि सम्मिलित रहलन।

24अगस्त1942 क दिन ब्रितानी शासन आ आजादी क विरोधी आततायी दरोगा अर्जुन सिंह कारनाम मचाव बाजपट्टी आब वाला रहे। एमहर युवा दल क मंशा त गुप्त रूप स जान गेल। त अर्जुन सिंह कोनो बहाना बनाक अपन न आयल आ तुरत आततायी अंग्रेजी हुकुमत क [illegible] हरदीप नारायण सिंह, पुलिस इंस्पेक्टर राममूर्ति झा पुलिस श्याम लाल सिंह, चपरासी दरबेशी सिंह आ [illegible] आदित्य नाम क युवा दल क आंदोलन क कुचल क लेल भेज देलक।

बाजपट्टी चौक पर रामफल मंडल क नेतृत्व म आंदोलनी लाठी , डंडा,भाला,बरछी, तलवार,फरसा स लैस चौक क जाम कैलै रहे। तही बीच म आततायी [illegible] हरदीप नारायण सिंह अपन

टीम क साथ पहुंचल। आंदोलनकारी और उत्तेजित भ गेल। एही बीच म अंग्रेजी सरकार क इंस्पेक्टर राममूर्ति पर आंदोलन क कुचल क लेल अपन पिस्तौल स हवाई फायरिंग करय लागल। आंदोलनकारी आक्रोश स भड़क गेल। ओहि बीच म रामफल मंडल इंस्पेक्टर राममूर्ति क हाथ स झपट्टा मार क पिस्तौल छीन ल लेलक। आंदोलनकारी इंस्पेक्टर स उलझ लागल।

तब वीर रामफल मंडल सबसे पहिला बार फरसा स एसडीओ हरदीप नारायण सिंह क गर्दन पर कैलन। छपाक क आवाज गर्दन कट क लटक गेल आ खून क फव्वारा फूट पड़ल। लहू स रामफल मंडल नहा गेल। लगैय जना अंग्रेजी हुकूमत स खून क होली खेलल होय। आंदोलकारी लाठी डंडा भाला फरसा स इंस्पेक्टर राममूर्ति पर, हवलदार श्यामलाल सिंह आ चपरासी दरबेशी सिंह क ढेर मार देलन। ढेर क फायदा उठा क चपरासी आदित्य राम भाग गेल।

वीर रामफल मंडल एसडीओ हरदीप नारायण सिंह क लाश आ आंदोलनकारी सब इंस्पेक्टर राममूर्ति पर, हवलदार श्यामलाल सिंह आ चपरासी दरबेशी सिंह क लाश क अपना कंधा पर उठा क बगल क अधवारा नदी म विसर्जित कै देलक। आंदोलनकारी भारत माता क जय बोलैत रहल। ओहि तरह स देश क आजादी क आंदोलन क बाधक देश क आंतरिक दुश्मन क अंत भ गेल।

भाग क चपरासी आदित्य नाम सीतामढ़ी मजिस्ट्रेट कोर्ट म पहुँचल आ रामफल मंडल, बाबा नरसिंह दास एवं तीन चारि सौ अज्ञात पर हत्या केस नं-473/42 का मुकदमा कर देलक। अहि हत्याकांड क बाद अंग्रेज कलक्टर आ पदाधिकारी सिपाही सभ क साथ बाजपट्टी म अत्याचार आ अनाचार करए लागल। रामफल मंडल आ आंदोलनकारी क घर म आगि लगा क घर क राख कै देलकै। बहु बेटी क इज्जत स खेल लागल। वृषानन ठाकुर संगे बहुत लोग क गिरफ्तार कर लेलक। बनगांव जानकी सिंह क दरबाज पर गोली मारि देलक। प्रदीप सिंह क काला पानी भेज देलक। बहुत स लोग नेपाल भाग गेल।

रामफल मंडल अपना परिवार क सुरक्षा क लेल अपना बड़का भाऊजी क ससुराल लछमिनिया, नेपाल म रह चल गेलन। ससुर नंदू अधिकारी संरक्षण देलन। दीन रामफल मंडल कहलन कि हमरा पत्नी क सुरक्षित राखु। हम त भारत माता क आजादी क लेल अपन देश भारत जायब। नंदू अधिकारी बहुत रोकलन। परंतु आजादी क दिवाना क छिपना रुकना मंजूर न रहे। 10 दिन बाद मधुरापुर आ गेलन। उनका लोग सब कहए लागल- भाग जा रामफल। एसडीओ, इंस्पेक्टर, पुलिस आ चपरासी क मारि म गारि हाथ होता। तू पकड़ा जैयबा। भाग जा रामफल। भाग जा।

दीन रामफल कहलन- हम काला चोरी डकैती न केली हैया। हम देश क लेल, लोग क भलाई क लेल, अमन आ सुख चैन क लेल अंग्रेजी

मूलाजिम क मान ली हेय। जल आ फांसी क लल हम गेयान छी। हमना न चिंता हेय,न उन हेय,न ह्य हेय।

वाजयट्टी हत्याकांत क वाद25 अगस्त1942क दिन आंदालनकानी आ अंग्रेजी यूलिस क मठय म चनौत म चनौत क हद्ळी कवानी शहीद हा गेलन। यूयनी म सहदन साह, महावीन गाय,वहना क नामवूसानन 0ाकुन शहीद ह गेलन। हनिहनयून क नामलगन सिंह, नाम स्वार्थ सिद्ध,नामवनध मंडल,मगनू मंडल, नामस्वनूय सिंह लागन नयाल म हूमिगन हा गेलन।

29अगस्त1942क दिन नीगा नवासी म मथूना मंडल शहीद हा गेलन। नाजानाम मंडल, लीला मंडल,नक्छू मंडल,सूनज कूर्मी, वंगाली मंडल, यमूना मेहता, नंदलाल महता,वूनीलाल नाय, सहदन नाय, सूंदन महता,नवी मंडल संग दर्जनां आंदालनकानी घायल हा गेलन।

नीगा स्टेशन यन नल यटनी उखाडेन वन म यूलिस गाली स मोजं मा आ सूखनाम महना शहीद हा गेलन। नूनू मियां घायल आ वाद म शहीद ह गेलन।

30अगस्त1942क दिन गनियानी छयना (शिवहन) म यूलिस आ आंदालनकानी क लठाळी म वलदन सूंडी,सूखन लाहान,वंशी गामा,यनसन साह, सूंदन महना,छ0 कानू,जयमंगल सिंह,हूयन सिंह

आ नौजाद सिंह शहीद भ गेलन। विकन कुर्मी,बुधन कहार,वृसावन चमार, मुक्ति सिंह, गुलजार सिंह,रामशरन सिंह, वंगाली नुनिया,मौज सुढी,वुद्धाई ठाकुर, रामलाचन सिंह, रामदन सिंह,रामयुकान गामा, नागेंद्र धानुक,गुगुल धोवी,युनन सिंह *आ दर्जन आंदोलनकारी घायल भ गेलन।*

06सितम्बर1942क दिन वीर रामफल मंडल गिरफ्तार कैल गेलन। छह महीना तकमा सीतामढी जेल म रहला क वाद हुनका सेन्ट्रल जेल भागलपुर भेज देलक। ग्रामीण जनक मंडल, सहादत राई महथ मंडल खुशी स जेल म रामफल मंडल क वलैक रामफल गाना एकटा पुत्र रत्न प्राप्त भ ला हैया। हंसैत वीर रामफल मंडल कहलक-आवि हमरा फांसी मिल जायत। अव हम घर यन न लौट पायव।

आठ महीना वाद हुनकर पुत्र क देहांत भ गेल। घटनाला ई सूचना वीर रामफल मंडल क न देलक।

भागलपुर कोर्ट म12,13,14 अगस्त1943क लगातार वहस भेल। वीर रामफल मंडल क वचाव पक्ष म तीन नामी वकील क वहस करै ला प्रांतीय कांग्रेस कमिटी भेज ल रहा। वकील सब

वीन नामरूल मंतल क सुमान दलक-कार्ट म जज क सामन करव,हम न मान ली हेया। संदह क लार म अंदा वच जायव। यनंव जौं जज यूछलक - नामरूल मंतल गूं ७सतीआ क मान ला ।वकील क सुमान क Qकना क वीन क्रांगिकानी नामरूल मंतल करलक-हं। हज्ञन। यहिला रूनसा हम ही मान लियै।

जिला जज, वीन नामरूल मंतल क रूांसी क सजा सूनैल कौ।

23 अगस्क 1943 क रान04 वज रानग क वीन सयूग नामरूल मंतल हंसैग हंसैग रूांसी क रूंदा क चुम ललन।

रूांसी क रूंदा चुम स यहिल हूनका स अंगिम ०ृ्छा यूछल गेल नह ग वीन नामरूल मंतल करलन-अंग्रेज सर हमन दश छा० कन चल जाय आ हमन प्राण स री याना दश आजाद हा जाय।

अगस्क क्रांगि क वीन शहीद क नाम गकालीन जिला मूजक्फनयून क टावन म स्वर्णाकिग हेया। आ सीगामढी जिला क वाजयट्टी चौक यन क टावन म आदमकद मूर्गि प्रगिष्ठायिग हेया। ज आ०० रानग

के संतान के सपना के आजादी के अक्षुण्ण रखब के संदेश दए रहल छैथ।

हिंदी के एकटा कविता अंश के रूप मे-

हम लायें हैं तूफान से

किश्ती निकाल के,

इस देश को रखना,

मेरे बच्चे संभाल के।

हमरा सभ के अइसन वीर क्रांतिकारी, फांसी के फंदा के चूम वाला शहीद रामफल मंडल पर गर्व छैथ।

२

कमीना विद्वान

कुमार विश्वास प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार रहलन। वो एक साथ कवि, कथाकार, उपन्यासकार आ आलोचक रहलन। सुना मे सुगंध छै कि वो मैथिली विश्वविद्यालय मे मैथिली विभाग के विभागाध्यक्ष

नहलन। हुनकन यढाव क शैली यन विद्यार्थी दीवाना नहय। दासना विराग क विद्यार्थी हुनकन क्लास म वे0 जाय। खचाखच क्लास रहला क वाद क्लास क खिड़की आ गेट यन खड़ा हाक सुनय लागे। यनंतु काह्नी शोर गुल ना। कवल कुमान विश्वास क आवाज। लक्चन क समय या0 क अनुकुल राव रंगिमा मन मारुक।

कुमान विश्वास क नहन सहन म नह्हसयन टयक। गर्मी मं सरुद कुर्ता-यैजामा त कड़िया सरुद धोती कुर्ता। जाड़ा म कोट-यैंट आ मरूलन। मूंह मं यान आ आंख यन गोग्लस। सायं म मदिना। काना कंझसी ना।

निद्यानाला हुनकन दिवाना। निद्यानाला क नजन जौं प्रारुसन सारुव यन यनल कि दासन सवानी क लव स मनाही। कानन प्रारुसन सारुव कड़िया राड़ा गिनक न दलन। जवी स ज निकल जाय। जौं जव खाली गेह्ह्या निद्यानाला क मूंह न म्लान।

कुमान विश्वास साहित्य क संग नानी सौंदर्य क दिवाना नहगन। वा हमशा सुंदन नानी स घिनल नहगन। चाह वा प्राध्यायिका नह वा छात्रा। हुनका काना काना स वासनात्मक संवंधा नहय। यीड़चडी कमनाली ड़गा छात्रा त शिकायत कनैल नह। यनंतु हिनकन निष्ठा आ उच्च संयर्क क आगे शिकायत निनस्त हा गेल।

प्रारुसन कुमान क यत्नी नह कामिनी। उच्च कुल क वटी। वावू ब्लाक क वड़ा वावू। कामिनी स्नातक नह। खुव सुन्नन। साऊन कामिनी।

परंतु कामिनी सब बीस नहि ताकर छोट बहिन काम्या। काम्या एम ए मैथिली मे कुमार विश्वास क छात्रा छलि। सौंदर्य क प्रतिमा स सौंदर्य क फूल कंदू बच क नहि सकैय छल। कुमार स काम्या बच न पायल। प्रतिमा जगे फूल क चाहैत छल, ताकर फूल प्रतिमा क चाहैत छल। प्रेमी लूट चाहय छल त प्रेमिका लुटाय। दुनू क परस्पर विवाधी आकर्षक संबंध छल।

जहल कामिनी क विवाह क बाद त उत्त कुल आ कुमार विश्वास क विद्वता बाधक। समाज मे विद्वान क गलत काज क विरोध करै मे समाज असमर्थ भ जाइ छय।

छाउं वा विद्वान छथि, हुनका लेल एकटा खून माफ छय।

त कुमार एगो खून क देलन। नहियमय खून। जेहेन खून न बहल। कुमार विश्वास अपना सानी आ छात्रा क विआह अपन स्वजातीय छात्र शेखर स करा देलन। आ ताकर हृया क स्वतंत्र रखलन।

एकांत मे कुमार बजलन-काम्या अब हम दुनू लोगन बिना लाग लपेट क साथ रहब। लिव इन रिलेशनशिप।

काम्या बाजल-बाबा। जीजा जी।

कुमार बाजल-अंहा क मनमोहनी बिस कथ्या बन पडत। अंहा जाग मे अपना दूल्हा क दूध मे जहर मिला क पिला दूं। आगा सब हम देखि लबय।

काम्या वाजल-जीजा जी। अंहा सौंदर्य क खानदानक खिलाडी छी।

कुमान वाजल-काना अंहा कम खल्लाडि छी।

काम्या वाजल-वश जीजा जी।

काम्या आइ नाग विस कथ्या वन गेल। अपन सौंदर्य जाल म समटिग शेखन क जरुन मिलायल दुध यिआ दलक।

सवन शेखन निछावन यन मृग यायल गेल नाना नाहट एल। कुमान निश्वास क यहल यन यूलिसा क सूचिग न कैल गेल। वागं खगम ए गेल।

कामिनी ग अपन मूंह वंद क ललक। कुमान निश्वास आ निधना काम्या लिन इन निलशनशिय म नह लागल।

आइ लाग कहय हय कुमान जगव निह्वान हय डागव कमीना इंसान हय।

-आचार्य नामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढी, *सवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०नाजश्वन मंडल, यत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवनी १९६० याग्यता- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लखन आ आलेख। प्रकाशित पाथी - मैथिली कविता संग्रह हासा क न वांटिया। २०२२ प्रकाशित नचना - समिया कविता*

संग्रह पाथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाना २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घन -वारून आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, तुमना, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपना बिशनपुर थाना-पचिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपना सदन,मुनलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी नाका-विहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal 001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन

मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.६.डा. किशन कारीगर-मैथिली साहित्यक ओलीट बानविलाक आ सर्वनाशी दलाल



डा. किशन कारीगर

मैथिली साहित्यक ओलीट बानविलाक आ सर्वनाशी दलाल

मैथिली साहित्य, मैथिली साहित्यकार, अकादमी पुरस्कार, मैथिली नन्न तँका पिटा नहलै बलू ओ सब कागज छथि? जनता लक, लोक काज मं लोक नवहान मिथिला समाज मं कतौ छथि की मैथिली साहित्य? हँ मैथिली साहित्यक गिरहकाटी दलाल टा एक जनून छथि आ ओकरा सब छोड़िक मिथिला लोक समाज एक मैथिली साहित्य कतौ ने नहलै आ ने लोक क मान रखै छै? कारण कोना

छै आ सभ स बेसी दुर्गंध मचौने छैथि ओलीट बालविलास आ सर्वनाशी यटयासूआ दलाल सभ? ओकर सभ स जनता जनार्दन ललकारैत क पूछै न ज बलु कतए छैथि ककरा सभ लक गिनती बढ़ाओल छैथि मैथिली साहित्य? जनता आ समानांतर साहित्यकार सभ ओकरा सभक खिलाफ शुरू कर ग जबाब दे बल बखान हुनक रस जौ की. मुदा लोक अहिनुचि कम हुवाक कारणे अछैथि दलाल ओलीट बालविलास सभहक मनमाहिक साहित्यिक दलाली खूब हुलासल रस नहलै की.

ओलीट बालविलास मान साहित्य अकादमी नाम यरामर्शी, संयोजक, ज्ञानी, सलाहकार, मैथिली राजपूनी अकादमी, मैथिली अकादमी म सदस्य बनि मैथिली साहित्यक नाम ज सरकारी नाशी, पुरस्कार, यद, क हनयुन हायदा उठा बालविलासयनी करत आ अयन यट हनत आ अयना साहित्यिक गिराहक दलाली चमकौने रहित आ बनिष्ठ मैथिली साहित्यकार हवाक दावीओ निशा मे चूर नहत. जबकी ओकरा सभक लिखल साहित्य ओकरा गिराहक लोक छुटभैया साहित्यकार छोड़ैत आन कोइ गसन लोक आम जन सभ न यढै छै. दासन दिस सर्वनाशी यटयालूआ दलाल सभ सहा खूब उत्पात मचौने अछि की. चंदाखोरी क छैथि दलाल सभ साहित्यिक आयोजन क खूब अननुआ उंका पीटत पुरस्कार बांटत अयना पुरस्कार नम बटारत आ छैथि उकरा सम्मानित करत उ उकरा हला बिलां क आ बिल्ला मा हल्ला मां क सम्मानित क साहित्यकार हवाक उंका दशमी क उगन उंका तुग तुग क दत की करा दत आन कोना लेखक ना की आन गिराहक लेखक क साहित्यकार मानै काल दस टा बहन्ना बनिआओत. आरोसी यटल यत ओकरा सभहक कुकृत्यक विनाध हला

𑒣𑒩 𑒄 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒮𑒥 𑒋𑒏 𑒂𑒡 𑒥𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑓂𑒨𑒥𑒰𑒨𑒲 𑒧𑓀𑒛𑒪/ 𑒑𑒱𑒩𑒑𑒱𑒙𑒲𑒨𑒰 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒫𑒰 𑒫𑓂𑒨𑒥𑒰𑒨𑒲 𑒔𑒪𑒰𑒏 𑒖𑒰𑒠𑒢 𑒧𑒯𑒪𑒰 𑒏𑒰𑓀𑒣𑒢𑒱 𑒪𑒰𑒋 𑒂𑒠𑒲 𑒏 𑒣𑒴𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒠 𑒁𑒢𑒒𑒼𑒪 𑒏𑒩𑒰 𑒖 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒕𑒱𑒨𑒻? 𑒁𑒮𑒪 𑒧 𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒣𑒙𑒨𑒰𑒮𑒴𑒁 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒂 𑒩𑒯𑒞𑒻.

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒩𑒴𑒣 𑒮 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒙𑒰 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯 𑒧 𑒥𑒿𑒙𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒻/ 𑒯𑒄 𑒏.

1. 𑒃𑒪𑒲𑒙 𑒥𑒰𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒅 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯-

𑒁𑒄 𑒑𑓂𑒩𑒳𑒣 𑒧 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒅 𑒮𑒥 𑒮𑒧𑒴𑒯 𑒧 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒧𑒪𑒰𑒄 𑒐𑒢𑒰𑓀𑒞 𑒨𑒻𑒯 𑒮𑒥 𑒔𑒰 𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒻. 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒃𑓀𑒮 𑒢𑒻 𑒯𑒳𑒁 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻 𑒂 𑒣𑒩𑒰𑒧𑒩𑓂𑒬𑒲 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒖𑒏 𑒗𑒰𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒪 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒯𑒩𑒠𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒏 𑒐𑒴𑒥 𑒧𑒾𑒖 𑒅𑒛𑒥𑒻𑒨𑒻𑒞 𑒂 𑒐𑒴𑒥 𑒪𑒼𑒏 𑒏 𑒠𑒱𑒂𑒮 𑒠𑒱𑒨𑒾𑒪𑒏 𑒖 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒕𑒱𑒨𑒾 𑒂 𑒤𑒰𑒨𑒠𑒰 𑒙𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒼𑒞𑒾. 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒣𑒩 𑒞 𑒏𑒞𑒹 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒰 𑒖𑒞𑒾 𑒂 𑒪𑒱𑒐𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒱𑒩𑒪𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒏 𑒪𑒰𑒖 𑒏𑒟𑒲 𑒏? 𑒥𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒯𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒞𑒃𑒨𑒰 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒢𑒩𑓂𑒥𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒂𑒧 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒢𑒏 𑒁𑒩𑒳𑒔𑒲. 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒰𑒮𑓂𑒯 𑒂𑒠𑒲 𑒄 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒰𑒟 𑒯𑒮𑒼𑒃𑒞 𑒪𑒹𑒑𑒰 𑒂 𑒐𑒴𑒥 𑒖𑒨𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒅𑒠𑓂𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰 𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒞𑒾.

2. 𑒣𑒙𑒨𑒰𑒮𑒳𑒁 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯:-

𑒄 𑒯𑒰𑒯𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒥 𑒞 𑒃𑒪𑒲𑒙 𑒑𑓂𑒩𑒳𑒣𑒏 𑒐𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑓀𑒔𑒪 𑒐𑒳𑒔𑒪 𑒯𑒳𑒄

वाऽऽस खा मैथिली साहित्यक दलाली कनन छिना. लाक राषा मैथिली क मानकी नाम यन शुद्ध अशुद्ध यैठमाहा दैठघाहा नाउ कासिकह्मा मं वाँटि अय्यन मानकी दाउ सृगानै नहलै. ऽऽी सव काना लाक शैली क छयना कला संयादिग कन मानकी कन दगै. ऽऽी मानकी दलाल सव अयन गिनाह टा लाक क साहित्यकान मानगै अनका वन मानकी वहन्ना वगिआउ लगगै. ऽऽी सव मैथिली साहित्य यन कत्ता दृआन यत्र यत्रिका छयगै समीगि संगOन वना साहित्यकान हवाक टैग दृआन मैथिली म हमन टा वयौगी वनल नहेउ गऽऽ दृआन की सव खल न खलगै आ समानांगन निवान नला आधुनिक साहित्यकान सवहक उनट विनाध कनगै आ गै काज म दु वानि टा यिछलगुआ हाहकानी सव क सहा गिनाह म नखगै ज वलु कहुना मृख्य धाना क साहित्य क कमजान कनै जाऽऽ.

3. अगुआ यिछलगुआ हाहकानी गिनाह:-

अऽऽी गिनाह म हानल वानल वाऽन आ यिछलगुआ सालकन सव नहलै ज सव दिन स ऽऽलीट आ मानकी दलाल गिनाहक वंचलाहा खांचलाहा आऽऽीट खुंट खा उकना दुनु क हँ म हँ मिलवैग नहगै आ मैथिली आयाजन म खुव हा हा कनै जगै ज मैथिली साहित्य ग सवहक हऽऽी आ मैथिली समानांगन आयाजन क कमजान कनै म वमगलवा हसवुकिया घांघाउज कनै जगै. ऽऽी यिछलगुआ सव सहा उनट मृख्य धाना क समानांगन साहित्यकान विनाध कनगै. हँ ऽऽलीट दलाल सवहक कुकृत्यक विनाध वन ऽऽी हहना सव काOी दाग गन नुका जगै की. विनाध कनला यन ग यूनुस्कान वन नाम कट जगै ऽऽह उन ऽऽी सव सवदिस्मा दलाल वनल वाऽन सालकन सव दिस

रहलौ की. जखन लोक पढ़त ता ता. ओही हाहाकारी दलाल सब त मैथिली नाम हुआ हुआ नढ़िया क रूल कर देतौ.

4. समानांतर विचार धारा मुख्य धारा क साहित्यकार:-

अही म नव विचार धारा वाला सालकर दुनू साहित्यकार सब अपन स्वतंत्र रूप मैथिली साहित्य क विकास म काज क रहलै जे मैथिली आम लोक जन स जुड़लै. एकरा सबहक कोना गिनाए नै हुँ सब अपना सामर्थ्य स्वतंत्र रूप मैथिल ऑलीट वानविलाउ हाहाकारी दलाल सबहक कुकृत्यक दरबार क रहलै. अहि दुआर त मैथिली मुख्य धारा क साहित्यकार सब मैथिली मंच पुरस्कार सब म वारल रहल आ ऑलीट सब सूनयाजित प्लान बना वर्चस्वक बल साहित्य अकादमी बल मुख्य धारा साहित्यकारक रस्ता अटकौने छिना. विरोध करला पर त ऑलीट ग्रुप सब उनट अपन कुकृत्यक साँथे म रहत आ मुख्य धारा साहित्यकार क कुंठित मंचलारी कौर हा हा करत. मुदा तऽऽया नव विचार धारा साहित्यकार सब डिजिटल तकनीक रूप साउ जुटा अही एलीट दलाल सबक नांगट क दरबार विद्वान क दे छै.

मैथिली साहित्य क असलियत ताना अनु बूझ गेलहा. एना विरोध हाला पर तरा ओ एलीट वानविलाउ सब अपन दाउ सुताऽऽउ लै छहा आ अहिया मैथिली साहित्य पर एकरा अनु क वयौती कहा हो. तांऽऽी अनु मुख्य धारा क साहित्यकार सब संगठन बना वैचारीक कानूनी आम जनता सब रूप अही एलीट दलाल वानविलाउ सबक खिलाफहा विरोध करहा रस्ता धन हिसांव करहा तव मैथिली साहित्य

लाक जन सनाकान गक यहूँचवी आ नै ग ॐी सर्वनाशी दलाल ॐीलीट सव मैथिली साहित्य क सयानाश कन क नखलकौ आ नखन नहलौ.

अयन मंगाव editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.१०.लाल दन कामग- सूनैना वटी- मैथिली सामाजिक उयन्यास (समीक्षा)



लालदेव कामत

सुनैना वटी- मैथिली सामाजिक उपन्यास (समीक्षा)

मैथिली साहित्य क' दीर्घ कथा कर आंशिक रूप थीक उपन्यास। उपन्यास विधा मेँ वरिष्ठ साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल जी अगुआयल छथि। हिनक दर्जनां उपन्यासमे ' पंगु' कँ मैथिली भाषा मूल पुरस्कार साहित्य अकादमी द्वारा भेट चुकल छन्हि। सद्यप्रकाशित "सुनैना वटी" उपन्यास पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल एहि 116 पृष्ठक पोथीक किमत 250 टाका छैक। ई एकटा नव ऐतिहासिक सामाजिक उपन्यास थीक। ऐ गरहक परिजात वर्गक वा कहु पैघौग पनिहार क' व्यथा-कथा पर आधारित उपन्यास क' चलन मिथिलामे आबि रहल अछि। स्वयं मंडल जीक काका उपन्यासक कथ्य निम्न एक गरहक देखमे आयल अछि। ऐ उपन्यासमे नव बात देखयमे ज आएल अछि से मानसिक

रचना कँ मनोवैज्ञानिक रूपेँ देखाओल गेल अछि। कथानक आगू बढ़ैत एक पनिहारक गीत पृष्ठभूमि क' किसान समाजेल अछि। किरपुर गाममे एक नवकान्त बाबू आ हुनक पत्नी सविता रहैत छथीन। नवकान्त जीक अपन शिक्षा- दीक्षा मातृकमे भेल रहनि। ओ लगभग प्राइमरी स्कूलक मास्टर रहथि। अपन किसानक बेटा मास्टर गामसँ पाँयपैदल नौगाम 5 किमी0 चलिकय आध घंटा पहिल जाथि आ पढ़ौनीक आध घंटा बाद ओतय सँ प्रस्थान करथि। एनाम दिन अपनत्व सँ सदा तमाकुल खाथि सदा कुशलताक समय ओसरानि। एहन स्फूर्ति जकाँ दैनिक दिनचर्या नम्हमआहरेण आदि रहल छथि। हुनका पुत्ररत्न रूपेँ नविशंकर जन्म लेने छन्हि। ओ पढ़ि-लिखिकय उद्याम शिक्षा पटना बीएन कॉलेज सँ सकेण्ड क्लास एम ए करय छैक। एक बड़ कालेजमे प्राइमरी क' नौकरी करय लागल पर करैत छैक। स प्रा0जीक विवाह विधिवत डाक्टरनी सुरेखा सँ भेल छैन। डाक्टरनी कँ सरकारी नौकरी आ अपन प्राइवेट क्लीनिक सँ खूब बिकन आमदनी होइत छैक। डॉ0सुरेखा कँ पुत्र भेलनि जकर नाम पड़ल रतनाथ। रतनाथ जीक पढ़ाय - लिखाय आनन्द सँ नीक स्कूलमे बाहर होअय लगलैक। ओतय अपलाद आवैत शराब पीवाक चसक लगलैक। माय बाबू डाक्टर बनबाक अभिलाषा मेँ लागल। ताहि बीच शहरक देखा-देखी अपनो धन पनिहारमे बर्बाद आ मैनज ओ नहिँ मनोनि नरेक स एहिवन बिनाद कन पछुहम् वर्षगाँ0 मनवाक ओनियानम झटलीह। कानहाँ नहय , जिनकर राज खायब गँ खुँवाक सदा चाँकि नाखय पड़ैत छैक। आब डाक्टर सुरेखा चाहैत छथीन, पर्दाक रीतन सँ संकेत रूपेँ अपन असल बिचार नाखथि ओ पनि बैसल - बैसल उदास समय बितबैत

छथि से नहि समयक उपयोग विद्यार्थी गणकेँ ट्युशन पढ़ाकय टाका सँ बेसी कैंचा कमाबथि। मुदा प्रो० साहेब तुष्टिकरणक लेल ई एक शिक्षक पुत्र आ अपना केँ एक अलग बढ़य छाप छोड़यवाला साबित करयमे अपन संकल्प केँ शिथिल नहिं करय चाहैथ । प्रतिष्ठित लोक प्राइवेट ट्युशन पढ़ौनाइ केँ आखिर अपनाय बूझैत छथि। ओना पत्नी सँ सम्मानो भेटनि , सुरेन्द्र हुनकाम अर्धनारीश्वर कर परिणत अंकन रहथिन। मुदा नाती क' बालक आ नौकर सह कम्पाउन्डर कर पगार स्वयं दैत रहलीह। एक गरीब घरक सुनयना सँ भवनाथक बियाह घटकक बिचार समय सँ सम्पन्न भेल। सुनैनासन पुतहु पाबि सासु-श्वसुर निहाल भेलैक। पति क यथामान्त घर - परिवार मे सुनयनाक लक्ष्य कान्ह बड़ सुन्नर रहल। पा०क उपन्यास पढ़ैत-पढ़ैत जहन आ०म पढ़ाव पर पहुँचैत तहन सुनैना बेटी विषयमे जानवाक प्रसंग भेटल। एक दिन प्राध्यापक साहेब मायक निष्ठाह उदासता सँ बहकल बेटाक प्रति विरक्ति हाइलत ज सावलाह; भताव अहूजक पीवक वोआ भवनाथ वस्त्र बाट-नालीमे खसल पड़ल देखाइत ने लोकलाज सँ गति जाइब,मूँह ककरा देखा पाइब! ईपह सांचे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ैत छैन। पुतोह केँ सुनयना बेटी सम्बोधित करैत अपन व्यग्र मनक आकुलता व्यक्त करैत रहथि। एक दिन बेटाक किनदानी पर सांचे आ अलमीरा वा घरक गहस- नहस स्थिति पर नजर थिन नहिँ कय पौलीह ताकन साहिवा। आ मूर्छित पति (गेलीह ने पुतोह सम्हारलखिन। उपन्यासमे 55*60 साल पहिलुका समाजक परिवेश केँ एक आकलन मुल्यांकन नूपँ कयल गेल अछि। ओहिमे ग्रामीण उपक नितिनाज क' चर्चा भेल छैक। कोशिकाक टाँट मालिक

गाम पतल दलानि जाहिमे चार आ हाथीक चलनाइ बहुत कष्टप्रद लागै - दृश्य उपस्थित भेल अछि। एखन पटौनीक साधन रहट करीन आ एकर सब पारपुर्जा क चर्च भेलैक अछि। ई शब्द सब सँ नव पिढ़िक लोक अपरिचित रहत वा नहि रहत। कारण आब सिंचाइक साधन बोरिंग पम्प सेट ,ट्युब बोरिंग आ चैनीज दमकल आ विद्युत मोटर सँ गामे गाम उपलब्ध छैक।

ई उपन्यासमे सुखान्त अध्याय सँ आरंभ तथा दुखान्त अध्यायमे जाकय समाप्त होइछ। एखन अथवा मिथिला मे 50 साल सँ कम वयक्रम क 75% आबादी छैक। एकरा मे उपन्यास पढ़िकय किछु लोका संदेश नहिं उत्प्रेरित करैछ। शेष बाँचल 25% जे अधवयसू आ वृद्धजन छथि , हुनक निजी जीवन व्यस्तता मे छैन। आ अहिमे साक्षरता दर लगभग 50% रहित महिला मे महिला जे पुरुष वर्ग सदृश पोथी, पत्र -पत्रिका सँ उदासीन मे रहैछ। अपनादम सेवानिवृत्त लोक स्थानीय आउन विशेष कय हिन्दी -अंग्रेजी उपन्यास पढ़ैमे रमल रहय छैक। ई सुनैना बटी सन मैथिली उपन्यासक' बढ़ स्थान पढ़ाकू पाठक पढ़ैत गुनैत छथि। उना पुस्तकालय केर शोभा बढ़ावय लल ओहि प्रवृत्तिक उपन्यासकार सत्तक पोथी जाक लागल अलग्य रहैछ। ई जगदीश बाबू क' प्रकाशित पोथी सत "सगर राति दीप जरय" कथा गोष्ठीक अवसर पर हुन तीन मास मास आगन्तुक बीच बेन विलहल जाइछ। ओहि सँ पोथीक उपादेयता बढ़ैछ , दलान दुनायन राखल पोथी देख परपाहुन मानाइल राखि हुलैसक नवपोथी उत्सुकता सँ देखैत अछि।

-मो०7631390761

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- न्यूटन्स लॉ



कुन्दन कर्ण

मैथिली बीहनि कथा- न्यूटन्स लॉ

कामना ३ बरखक बेटा शोभित के उर पकाउ निकलि गेल छल पति के घर सँ बिना कोनो अधिकार जान, कहियो कोनो प्रयास नहि कयलक अपन कानूनी अधिकार लेबाक। अपना दम पर नौकरी करैत शोभित के डॉक्टर बना देलकै। शोभित के समय समय पर ओकरा लेल कयल गेल त्याग परिश्रम के कथा सूनबैत रहलैक। संगहि पति द्वारा कयल गेल तिरस्कार आ अत्याचारक खिस्सा सेहो। शोभित के सफलता सँ कामना के बुझलैक जे ओकर संघर्ष सार्थक भेलैक।
कामना के खबरि लगलैक जे शोभित नुकाक' अपन पिता सँ भेंट करय जाइत रहैत छै।

कामना के लगलैक जे ओकर प्रयास पर पानि फेरि गेलैक अछि!! कामना अपन रामसँ पुछलकै - हमर प्रयासमे कोन कमी रहि गेल?

राम बुझलकै "अहाँ न्यूटन के थर्ड लॉ □९ मानब बिसरि गेलियै!"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-रामकृष्णवा

४.२.कामिनी चौधरी- प्रश्न रामसँ

४.१.राज किशोर मिश्र-रानहनवा



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (सी), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अन्धरा ठाढ़ी, पो. अन्धरा हाट, मधुबनी

रानहनवा

गा ८ खुव द्दा ॢॢग ࣂगल ि मि न,
आ, द्दा ॢॢग ࣂगल मा चन्धु,
ॢॢजा गक ना ज -या ट ष्ठी नि ,
दS नव्दल अछि ञाकन दन्धु।

यनञ्च, ७खना सगन अका स म,
छि ि आ७ल अछि ॢॢजा गक ला वा ,
यी वि नव्दल चा ननि क ॢॢजा ग,
गा छ यन लटकल अह्वा नक मा वा ।

सुनु ट्गजा गनी क सिं द्द्धनि ,
गमस्रि नी क ॢॢला का म,
दS नव्दल अछि नध -चूनी गी ,
वूवूआॢॢग शगमख, ना का म।

मूदा , टसमस न टS नव्दल अछि ,
सा म्रा ग्रा यसा नन या मि नी ,
का ना क' नि नत्र वज्ञाया ग
द्दा ७ग, आ चमकग दा मि नी ?

जा गग ,सूगल ॢॢजा ग, गखन
टा गग ॢॢी अह्वनि आ,
नहि गS ७हि ना द्दूआँ -द्दूआँ,
कनेग नव्दग सट नहि आ।

अह्ना न सँ की ह्ना नि कs,
असा थकि ग अछि स्ल ॅ्जा ग?
गमि स्मा -समुद्र म उगन७ गs,
ना ह्रि उाटा का ना ग्रका स-या ग।

अह्ना नक जना आ७ल अछि वा ७ ,
दह्ना ७गल सस्टा ,ग्रस्रा -यू ॐ,
गमक' ग्रलय आव गs नूकअउा,
उगअउा नट -नृ ऊ यन ग्नि षा -कृ ॐ।

दखि उा, गह्ना ७ल ॅ्जा ग,
नृखि अलग अछि यूनव स्न,
स्कुआ७ल नि न म नि स्रा -ग ज,
व७ल ऊि ि ज यन ,यह्न -यह्न।

अलसा ७ल नि ह्ग,
खा ललक आँखि ,
नहुँ -नहुँ,
ह्७ह्७लक याँ खि ।

अह्ना नक ४उाना खसल जा ॅ्ठ,
ि ह्व सन आँखि , ४सल जा ॅ्ठ।

गा ना सए वह्लक मा टा -चा टा ,
प्रचण्डि नी नि श्री थि नी रलि मद्वि म,
रा नरुनवा का ल, यहूँवउ वला ,
अह्वा न -ञ्ञा गक' सधि म- वधि मा

नि रा वनी क सा म्रा य्रा आव
टूटल जा नरुल अछि ,
समय -या ग्र म, अह्वा न, जा गि सँ,
कुटल जा नरुल अछि ।

सि हुन सन ला ल आँखि लन,
यसनल जा ञ्ञछ ञि गि ज यन ञ्ञा ग,
आवि गेलहूँ रुम ; सृष्टि कँ,
दउ नरुल जा गि , रुका न आ' थ्याँ गा

आउल अनसन नकि म -कि नि नक,
नघा यउल ञि गि जक कया न,
अहि वा गी सन सुरगा नसुधा ,
अछि गना यदि नन जा गि क रहा ना

कि नि नक वनठी सँ वधल अह्वा न,
नहि जा नि यउा गेल, का न या न?

ञ्ञा ग -गम क गुमूल यूद्व म,

र्‍ग नरु्नवा ,ञा ि क शंखना द,
कावा घा न नध र्‍ल मूदा ,
प्रका शक जय र्‍ल, नि र्नि ना द।

सा ग अश्लक नथ यन चरि कs,
आवि ाला रु अछि वि नम्रा न्,न्
ञा ि -सनस लs र्‍ग नरु्नवा ,
ञा यहि न सँ ठल, कञ कमा न।

ा मस- ह्रा मस- ॐनखा क' अह्रा न,
ई ठा ि मा न, चलि ञा ७ वहा न।

सगन मनस् अछि ॐञा ग सँजगमग ,
या य -ि मि न -नि धी , कन७ ञगमग।

जा७ ञा ि , अह्रा न नहि 0रुना,
ि ह्रा गुञका न देग ञा ससना।

ञा ि र्मय रुम वनी स्नयं,
घमि ञा ७ा जमल या य क गम।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठा।**

४.२.कामेश्वर चौधरी- प्रश्न नामसँ



कामेश्वर चौधरी

प्रश्न नामसँ

प्रश्न, रामसँ

आबि गरिमा सुनाबी अपन गामसँ,
प्रश्न पूछै छी हम एकटा, रामसँ।

हम पियासल धरासँ सिनेहक कमल,
जाहि जनलहुँ आ पोसलहुँ, कौलहुँ [illegible]
अर्पण केलहुँ अहाँ के लगा आरती, रामसँ।
मोन [illegible] प्रश्न पूछै छी हम एकटा रामसँ।

तोड़ि धनुषा अहाँ देल परिचय अपन,
दूर केलहुँ कठिन प्रण, आ जनकक वचन,
धुल भेलै विदेहक ई पुलकित नगर
जानकी नाथ देलनि से अपन प्राण सँ॥
प्रश्न पूछै छी हम एकटा रामसँ॥

हम सोचलहुँ जे, सीता अवधकेँ रानी हेतीह,
कहाँ जानियो लागल जे ओ जङ्गल जेतीह,
कोन मायक दे [illegible] अहाँ कोखि,
हम उपराग दैछी, [illegible] नामसँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा रामसँ॥

शक्ति सँ पूर्ण मिथिला [illegible] भेलीह
सीता, मिथिला-अयोध्या दुहू सँ गेलीह
आबि [illegible] पुनि [illegible] गेलीह,
पैर मर्यादा के प्रश्न [illegible] सँ
प्रश्न पूछै छी हम एकटा रामसँ

- [illegible]

